

राजस्थान के ऐतिहासिक ग्रन्थों का सर्वेक्षण, भाग-३

राजस्थान के ऐतिहासिक ग्रन्थों का सर्वेक्षण

भाग-३

डॉ० नारायणसिंह भाटी

निदेशक

राजस्थानी शोध संस्थान, चोपासनी, जोधपुर

राजस्थानी ग्रन्थागार, जोधपुर

प्रकाशक
राजस्थानी प्रयागार,
सोजती गेट के बाहर, जोधपुर

सस्करण जून, १९८६

सर्वाधिकार डॉ० नारायणसिंह भाटी

मूल्य चार सौ रुपये (तीन खण्डों के)

मुद्रक
भारत प्रिण्टस
जोधपुर

प्रस्तावना

सर्वेक्षण के इस तीसरे भाग के प्रथम अध्याय में मारवाड़ से सम्बन्धित कुछ ख्यातो बातों आदि का परिचय दिया गया है जिनका उल्लेख प्रथम व द्वितीय भाग में नहीं है। ये ख्यातों न केवल राजघराना से सम्बन्धित हैं अपितु स्थानीय जागीरदारों और परगना सम्बन्धी जानकारी से युक्त हैं इसलिये इनका सामान्य ख्यातों से अलग महत्त्व है।

दूसरे अध्याय में विगत, हाल, हकीकत आदि से सम्बन्धित प्रथा का लिया गया है। इनमें मारवाड़ में राठौड़ राज्य के सस्थापक राव रिडमल, चूडा आदि के परिवारों की विगत विस्तार से दी गई है साथ ही कूपावत, उदावत धूहड़, सीपल, जतमालोन आदि राठौड़ों की खापा पर भी इसमें प्रकाश डाला गया है। मारवाड़ में नमक की खानों की विगत प्रथाक ३३ में दी गयी है। उस समय राज्य की ओर से अनाज जमी आवश्यक वस्तुओं का भाव निश्चित कर दिये जाते थे, इसका वृत्तान्त भी प्रथाक ३४ में दिया गया है।

तीसरे अध्याय में जोधपुर राजघराने के रनिवास की गनिया सम्बन्धी कुछ बहिया का परिचय है वही अदालती मुकदमा के फसला तथा कर व हासल आदि से सम्बन्धित बहिया की भी जानकारी दी गयी है। इसमें जोधपुर राजघराने के कपड़े के बाठार की बहियों तथा तापाखान की बहियों भी है जो उस समय के वस्त्र, आभूषण आदि की जानकारी करन हेतु बड़ी उपयोगी है।

चौथे अध्याय में मारवाड़ रियासत के अंग्रेजों के साथ सम्बन्ध पर प्रकाश डालने वाली सामग्री समाहित की गयी है, वही अंग्रेजों के आने के बाद यहाँ राजकीय

व्यवस्था म जो परिवर्तन हुय उनका बतात भी कुछ बहियो म है। एक मराठी तथा दूसरी पंजाबी म लिखी इतिहास मे सम्बन्धित पुस्तका के अनुवादित मस्करणों का भी इसमे परिचय दिया गया है।

पाचवे अध्याय मे विषय रूप से मारवाड मे एक प्रमुख ठिकान पोकरण के रिवाड की सामग्री है जो उस समय मे मारवाड के शासक व जागीरदार के बीच सम्बन्धो पर प्रकाश डालती है वही राजवाय मे पोलिटिकल एजेंट के बर्तन हुए दखल और स्थानीय राजनीति को समझने हेतु उपयोगी सामग्री जो विविध रूपो मे मिलती है का उल्लेख किया गया है। साथ ही मालानी, उमरकोट, ईडर, अहमदनगर, किशनगढ आदि के शासकों की वशावतिया से सम्बन्धित ग्रन्थ भी इस अध्याय म दिय गये हैं। इस अतिरिक्त श्रीरामदवजी के मेले तथा तोपाखाना, मन्दिरा की प्रतिष्ठा आदि से सम्बन्धित विविध जानकारी भी इस अतगत है जा यहा क राजनैतिक और सामाजिक जीवन को समझने म बड़ी उपयोगी हैं।

इस भाग म विषय रूप स जाधपुर राजघराने के जनानी डयोढी की बहियें जो किले मे स्थित महाराजा मानसिंह पुस्तक प्रकाश (पु०प्र०/जो०म०) म सुरक्षित है पोकरण हाऊस सग्रह (पो०हा०) जोधपुर तथा जोधपुर बकिराजा का सग्रह (जो० क०) (वर्तमान सीतामऊ नटनागर शोध संस्थान) आदि व्यक्तिगत सग्रहो की चुनी हुयी सामग्री का भी परिचय प्रपित किया गया है। अत इनके अभिभावका व व्यवस्थापको के सहयोग व सौजय के लिए हम आभारी हैं।

जनानी डयोढी सम्बन्धी बहियें जो महाराजा जोधपुर की निजी सम्पति है। अलग अलग कमरा म बन्द पडी थी। मेरे निवेदन पर मेहरानगढ म्युजियम के जनरल मैनेजर महाराज प्रह्लादसिंहजी ने न केवल उन बहिया को देखने की अनुमति दी अपितु मेरे परामश पर ये बहिय पुस्तक प्रकाश मे व्यवस्थित रूप से रखवा दी गयी। बाद मे भारतीय इतिहास अनुसंधान परिषद की वित्तीय सहायता से मेरे निर्देशन म इनके सूचीकरण का काय भी अब सम्पन्न हो गया है। जिसस इतिहास के शोध विद्यार्थिया का काय अब सुगम हो गया है और ये बहिये भी ठीक ढंग से सुरक्षित हो गयी हैं। इन बहियो म न केवल यहा के रीति रिवाज अपितु कला, संस्कृति उद्योग, रहन-सहन और सामाजिक मायताओ स सम्बन्धित बहुत उपयोगी और प्रामाणिक सामग्री अंकित है। इन बहियो की

सख्या पाज हजार के करीब है। इनमें कपड़े के कोठार और तापाखान की बहियो का विशिष्ट महत्व है क्योंकि इनसे मारवाड के पारम्परिक उद्योग व विभिन्न वस्तुओं के भावो तथा लोचरुचि पर भी प्रकाश पडता है।

इस प्रकार कुल १२० ग्रथा का सर्वेक्षण इस भाग में प्रस्तुत किया गया है। इन ग्रथा व बहिया की सामग्री जितनी विविधतापूर्ण है उतनी ही आधुनिक शोधकर्ता के लिय उपयोगी भी है, क्योंकि इनमें न केवल राजनतिक अपितु सामाजिक, प्रशासनिक व सांस्कृतिक महत्व की मूल्यवान सामग्री सामाहित की गई है। अंग्रेजा के यहां आन के बाद मभय-समय पर प्रशासनिक व सामाजिक सुधार की दिशा में जो कदम उठाये गये उनकी विगत भी इस सामग्री में मिलती है। राज्य व कोष में शामिल होने वाली राशि किम प्रकार सच की जाती थी इसका अध्ययन भी अनेक बहिया के आधार पर किया जा सकता है। साथ ही राज परिवार के ऊपर विभिन्न रूपों में कितना व्यय होता था तथा विशिष्ट अवसरों पर खर्च किया जान वाला धन किस प्रकार यहाँ के कामगरो तक पहुँचता था उसका प्रामाणिक लेखा जोखा भी इन बहियो व कागजातो में सुरक्षित है जिससे उस समय की आर्थिक व्यवस्था और उनकी आत्म निर्भरता पर भी विचार किया जा सकता है।

इस भाग के सर्वेक्षण में भी हुजूमसिंह भाटी न जहा पूरी लगन से धर्म किया है वही दूसरे गवपक श्री भरसिंह न भी अपना सहयोग दिया है। सर्वेक्षण में प्रस्तुत सामग्री को छांटने के अलावा जनानी डयोडी की बहियो का व्यवस्थित करने में भी इन्होंने अपना समय देकर इस उपयोगी कार्य में हाथ बटाया है, जिसके लिये ये धन्यवाद के पात्र हैं।

सर्वेक्षण के तीना भागो का मुद्रण-कार्य भारत प्रिण्टस जोधपुर न सुदृचि पूर्ण ढग में किया है। अतः प्रेस के व्यवस्थापक के अतिरिक्त कम्पोजीटर भवरलाल सुधार भी धन्यवाद के पात्र हैं, जिसने इस कार्य को उत्परता और सतकता पूर्वक सम्पन्न किया।

विषय सूची

प्रथम अध्याय

ख्यात, बात सग्रह

- १ ठाकुरा चनदानजी की ख्यात बही १
- (१) परगना सीवाना की फरसत १, (क) करणोत खाप २, (ख) गाव सुरपुरो की रेप ३, (ग) गाव तरगटी पट्टे की रेख ३ (घ) पाप जोधा ४, (२) सीरवार जाळोर रा गावा की फरसत ५, (३) तर्फे मेवा (मेहवा) रा गाव की विगत ६, (४) परगना साचोर रा गावा की विगत ६, (५) सोजत परगने की फरसत ६, (क) देवस्थाना की विगत ६, (ख) सैर मे कुवा बावडिया धरठ निवाण की विगत ८, (ग) कसवे सोजत र घरा की विगत ९, (घ) कसवा रा धरठ माळ हळा की विगत ९, (ङ) सैर तथा कोट रा दरवाजा, बुरजा तथा कागरा वगैरे की विगत १०, (च) सोजत रै नवै कोट की विगत १० (छ) प्रगना सोजत जमा वगरा लाग तीण की विगत १८८२ रा ११, (ज) सोजत रा बेरा, पेत ईनायत हुवा तीण की विगत १८८२ रा ११, (७) परगना प्रवतसर की गावा रेधा वार फरसत १८२७ वरस की ११, (८) परगने जाडोद रा गावा की फरसत १८२५ रा वरस १२ (९) याददास्त श्री हजूर मे पालसी तीण की १८२२ रा १३, (१०) पटायता रै गाव की विगत मुकरडै (स० १८२२) रा १३, (११) याददास्त जोधपुर राजस्थान रै पट रेधा की विगत १३, (१२) गढ जोधपुर रा २२ परगनो की रेधा की फरसत १४
- २ ख्यात बात सग्रह १४
- (१) फलोदी की ख्यात १५, (ख) ब्रह्म चन्द्रका अलकार की ग्रथ (बाकीदास

कृत) १५, (ग) सिकन्दर नामा की उक्ता १६, (घ) कुरेसी मुसलमानों की ख्यात १६, (ङ) चादा वीरमदे की हाल १६, (च) किसनगढ़ की ख्यात १६

३ फुटकर बातों की सग्रह १७

४ महाराजा जसवर्तसिंह (द्वितीय) की ख्यात १६

५ राठौड़ राजाओं की ख्यात १६

(अ) राव जोधा सू गागा तक की ख्यात १६, (क) राव जाधा का वृत्तात १६, (ख) राव सूजा का वृत्तात २०, (ग) करमसी को खीवमर मिलने का वृत्तात २० (घ) उदा सूजावत का वृत्तात २१ (ङ) नापा सूजावत का वृत्तात २१, (च) नरा सूजावत का वृत्तात २१, (छ) राव गागा का वृत्तात २१, (झ) राठौड़ा की वशावली २२, (व) राव सीहा का वृत्तात २२, (ख) आम्थान का वृत्तात २२, (ग) घूहड का वृत्तात २२, (घ) रायपाल का वृत्तात २३ (ङ) राव कनपाल सू महाराजा गजसिंह का वृत्तात २४, (ङ) राव मालदेव आदि जोधपुर राजाओं के परिवार की विगत २४, (ई) चापावता की विगत २५

६ ख्यात बात सग्रह २७

(१) जालार ग घणी सोनगरा चहुवाणा की पीढिया २६, (२) परगनों की विगत २७, (३) मडलक गुजरान के पातसाह की बटी की बात २७, (४) बरसिध जोधावत की वार्ता २८, (५) सीधला की पीढिया २८, (६) ईसरदास कल्याणदास की प्वाल २८, (७) नैणसी का वृत्तात २६, (८) पारकर सोढा की जुनी बात २६, (९) मिरोही की ख्यात २६, (१०) राव सुरताण का वृत्तात ३०, (११) महाराजा जसवर्तसिंह का वृत्तात ३१, (१२) उदयपुर की बाता ३१ (१३) शिवाजी सम्राज्ञी की बाता ३१

७ राठौड़ों की ख्यात घर वशावली ३३

(१) राठौड़ों की ख्यात ३३, (२) राठौड़ा की वशावली ३३, (३) उगावती की विगत ३३, (४) मालदेव के परिवार की विगत ३३, (५) मेढतिपो की विगत ३३

- ८ जोधपुर से ख्यात
- ९ ख्यात बात तथा वीर गीत संग्रह
- १० जमींदारों र पट्टे गांवों से तरजमो भर चीन से तबारीख
(१) जमींदारों र पट्टे रे गांव से तरजमा ३५, (२) तबारीख चीन ३५
- ११ महाराजा मानसिंह (जोधपुर) से ख्यात ३५
- १२ ख्यात बात कबिता संग्रह ३६
- १३ महाराजा विजसिंह भीमसिंह से ख्यात ३७
(१) महाराजा विजसिंह से ख्यात ३७, (२) महाराजा भीमसिंह से ख्यात ३८
- १४ भोजसिंह भूमयसिंह बखतसिंह से ख्यात ३९
- १५ महाराजा तखतसिंह से ख्यात ४०
- १६ पुनीयात से ख्यात ४०
- १७ जूनी ख्यात ४१
(१) जसलमेर से ख्यात सहित कुल ५१ कृतियों ४२
- १८ उपाध्यायों से ख्यात (उपाध्याय जसराज से तबारीख) ... ४३
- १९ सूबेद्व हवा तिला से ख्यात ४३
- २० महाराजा भोजसिंह सू बखतसिंह तख से ख्यात ४३
(१) लखनऊ से तरफ से हकीमत (महाराजा जसवतसिंह के मृत्यु के समय की) ४६ (२) महाराजा भूमयसिंह, बखतसिंह तथा रामसिंह का वृत्तांत ७६

दूसरा अध्याय

विगत, हाल, हकीकत आदि

- २१ राठौड़ राजाओं र वंशजों से हाल ८१
(क) मालदेव रा वंशजों से हाल ८१, (ख) उदावतो से विगत
(ग) नरावतो से विगत ८३

२२	सिसोविया, गेसावत, भाटी, घट्टयान तथा पवार सरदारो र जागीर र गांवों की रेप की विगत	८४
२३	रूपीया आया उपडिया की विगत	८१
२४	सरकारी सच ने केफीमतां की विगत	८१
२५	जोमपुर रा कमठों की विगत	८६
२६	राठोडों र लांपों की विगत	८६
२७	राठोडो की पापां घर पट्टे र गाव की विगत	८७
२८	जमींदारो र पट्टे रा गांवों की रेप की विगत	८८
२९	रेप घाकरी की विगत घर वेद पुराण आदि	८८
३०	गांम सेड की विगत	९०
३१	राठोडों र लांपो की विगत	९०

राठोड अर्जराज रिडमलात के वशजा की विगत ९१, पचाइण अखेराजोत की परिवार ९१, (१) अचला पचायण ९१, (२) जैता पचायण ९१, (३) मानसिंह जैतावत का वृत्तात ९२, (४) उदैसिंह जतावन का वृत्तात ९२ (५) पृथ्वीराज जैतावत का वृत्तात ९२, (६) पूरणमल पृथ्वीराजोत का वृत्तात ९२, (७) सूरजमल पृथ्वीराजोत का वृत्तात ९२, (८) राधादास सूरजमलोत का वृत्तात ९२, (९) वैरसल पृथ्वीराजोत का वृत्तात ९२, (१०) बाघ पृथ्वीराजात का वृत्तात ९२, (११) गोयददास बाघात का उल्लेख ९३, (१२) कु भकरन बाघोत का वृत्तात ९३, (१३) जयनाथ बाघोत का वृत्तात ९३, (१४) देईदास जतावत का वृत्तात ९३, (१५) आसकरन देईदासोत का वृत्तात ९३, (१६) भोपत देईदासोत का वृत्तात ९३ (१७) सक्तसिंह भापतोत का वृत्तात ९३, (१८) साईदास पचायणोत की परिवार ९४, (१९) भोजराज पचायणोत ९४

अखेराज की परिवार ९४— (१) राणा अखेराजोत की परिवार ९४, (२) सिधण अखेराजोत की परिवार ९४, (४) रावळ अपेराजोत की परिवार ९४ (५) राठोड सूरि अपेराजोत की परिवार ९५, (६) राठोड सोहा अपेराजोत की परिवार ९५ (७) नगराज अपेराजोत की परिवार ९५, अर्जराज राठोड ९५

मदा पचायणोत ६६— (१) लिपमण भदावत का वृत्तात ६६, (२) जसा लिपमणोत का वृत्तात ६६

कूपावत राठीडो री विगत ६६— (१) माडण कूपावत का वृत्तात ६७, (२) घोवो माडणोत का वृत्तात ६७, (३) राजसिध पोवावत का वृत्तात ६७, (४) रतन राजसिधोत का वृत्तात ६७, (५) नाहरपान राजसिधोत का वृत्तात ६८, (६) काहा पोवावत का वृत्तात ६८, (७) मानसिह पोवावत का वृत्तात ६८, (८) किसनसिध पोवावत का वृत्तात ६८, (९) गोयददास पोवावत का वृत्तात ६८, (१०) पूरणमल माडणोत का वृत्तात ६९ (११) माघोदास पूरणमलोत का वृत्तात ६९, (१२) वैणीदास पूरणमलोत का वृत्तात ६९, (१३) महेस कूपावत का वृत्तात ६९, (१४) सादूल महेसदासोत का वृत्तात १००, (१५) किसनसिध जसूतोत का वृत्तात १००, (१६) गोवधन चादावत का वृत्तात १००, अखेराज री परिवार १००, माला अपराजोत का वृत्तात १००

रिडमल के वशजो की विगत १००— (१) साडावत राठीड १००, (२) राठीड वरा रिणमलोत री परिवार १०१, (३) पतसी जगमालोत री परिवार १०१ (४) अडवाल री परिवार १०१, (५) जतमल रिणमलोत री परिवार १०१, (६) सकतावत रिणमलोत री परिवार १०१, (७) नाथु रिणमलोत री परिवार १०१

राव चूडा के वशजो की विगत १०१— (१) राठीड भीवोत री परिवार १०१, (२) अरडकमल चूडा री परिवार १०२ (३) वैरसल भीवोत री परिवार १०२, (४) राठीड सहसमल चूडावत री परिवार १०२, (५) राघवदास का वृत्तात १०३, (६) लूणा सहसमलोत के पुत्रो की विगत १०३, (७) रणधीर चूडावत री परिवार १०४, (८) राठीड काहा चूडावत री परिवार १०५

घडसी के पुत्र महेस का वृत्तात १०५— (९) राठीड पुनपाल चूडावत री परिवार १०५ (१०) राव सता चूडावत री परिवार १०६, (११) जोगा वैरसलोत का वृत्तात १०६, (१२) राठीड राजधर चूडावत री परिवार १०७

माला सलखावत री परिवार १०७— (१) जगमाल के पुत्र भारमल का वृत्तात १०७, (२) मल्लीनाथ के पुत्र जगमाल का वृत्तात १०८

३८	महाराज श्री मानसिंहजी साहब के राजलोक श्री चावडीजी साहब की सरकार तालुके दोडी तालके रोजनावा री बही	१२०
३९	बडा महाराजाजी श्री मानसिंहजी र नित हुकीकत री बही	१२१
४०	अदालत मुकदमा र फसला री बही	१२२
४१	खाता बही	१२३
४२	जन्ती री बही	१२४
४३	जमा खच री बही	१२४
४४	विसूख र लेखे री बही	१२५
४५	चाकर राख्या अर हिसाब री बही	१२६
४६	कागजो री बस्तो	१२७
४७	कागदो र नकला री बही	१२७
४८	पट्टा बही	१२८
४९	कागदा री कडियो	१२८
५०	हासल अर गेहूँ र बचान री बही	१२९
५१	दस्तावेजो र सूची री बही	१३०
५२	जमा खच री बही	१३०
५३	हासल री बही	१३१
५४	श्री महाराजाधिराज माहाराणीजी श्री लाडी राणावतजी सायबा री सीरकार रा अर रा कोठार ता० रो पातो	१३१
५५	महाराजा श्री मानसिंह जी साहब के राजलीक श्री तीजा भटियाणी जी तालके गाव ४ री जमा बधी री नकल	१३३
५६	महाराजा श्री मानसिंहजी साहब के राजलोक श्री जसलमेरी साहबा सरकार तालुके दोडी तालके जमा खच री बही	१३६
५७	महाराजा श्री तख्तसिंहजी साहब के राजलोक श्री बडा देवडीमी साहब की सरकार, तालुके नौपरियो री लेखा बही	१३७
५८	श्री महाराजा मानसिंहजी साहब के राजलोक श्री तीजा भटियाणी जी साहबा के सरकार के बाजार वाळा री लेखो	१३८

- ५६ श्री महाराजा मानसिंहजी के राजलोक श्री तीजा नटियाणी जी साहबा की सरकार का जमा खच का रोजनामा बही १४०
- ६० महाराजा श्री तखतसिंहजी साहब की सलामती मे ब्याह के खच की बही १४२
- ६१ विहाव तालके महाराज श्री तखतसिंहजी साहब की सलामती में बाईजी श्री किलयाण कवर बाईजी सा परणीजीया न सासरे बूदी पधारिया तथा वापस पधारिया तिए री जमा खच १४४
- ६२ महाराज मानसिंहजी साहब के राजलोक श्री बडा नटियाणीजी साहबा की सरकार तालुके जमा खच री नावो १४५
- ६३ महाराजा श्री मानसिंहजी साहब के राजलोक श्री कछवाईजी साहबा की सरकार तालुके जमा खच आकडा मेल १४६
- ६४ नित हकीकत की बही—महाराज श्री मौंसिंहजी साहब की सलामती की १४७
- ६५ महाराज श्री मानसिंहजी साहब के राजलोक श्री तीजा नटियाणी जी साहबा सरकार ता० जमा खच री जमा वधो १४८
- ६६ महाराजा श्री मानसिंहजी साहब के राजलोक श्री तीजा नटियाणी जी तीरथा पधारिया, धम पुन कियो तिए बाबत १४८
- ६७ महाराज श्री मानसिंहजी साहब के राजलोक श्री कछवाई साहबा की सरकार तालुके परगने सोजत री गाव बीलावास री आमदनी री चौपनियो १४९
- ६८ महाराजा श्री तखतसिंह साहब के राजलोक श्री ताडी राणावतजी साहबा की सरकार तालुके कपडा र कोठार तालुके जमा खच री नावो १५०
- ६९ नित हकीकत बनानी बोडी माय सू डावडीया बगरे चीज बस्त नीचे ले जाये जिस बाबत थाबदास्त १५२
- ७० महाराजा भीमसिंहजी के महाराणी बेराबरजी नटियाणी रे सरकार तालुके गाँवो री आमदनी बगैरा री जमा खच १५४

७१	महाराज मारुसिंह साहब के राजलोक महाराणी भटियाणी सायबा के सरकार तालुके जमा खच री बही	१६०
७२	महाराजा भौर्वासिंह के चावडी रानी के सरकार तालके जमा खच री बही	१६१
७३	महाराजा तखतसिंह की रानी राणावत साहिबा के कपडों के फोठार की बही	१६४
७४	महाराजा भीरुसिंह के राजलोक आडीजी (हाडीजी) साहबा के सरकार तालके खच री बही	१६५
७५	बियाव शादी महाराजा श्री तखतसिंहजी की सलामती मे-महाराज कवर बडा श्री जसवतसिंहजी साहब की	१६५
७६	नजर निधरावळ सिरोपाव री बही	१६६
७७	व्याव रे रोकड नावा री बही	१६७
७८	तोसापाना रं जमा परच री बही	१६८
७९	निजर निधरावळ मुकाता री बही	१६८
८०	गाव हुदा रे वाडे तथा पाता रं वाड र नाव री जमा परच री बही	१७०
८१	व्याव रं रीति रिवाज री बही	१७२
८२	साढा री हाजरी री बही	१७३
८३	व्याव री बही	१७४
८४	गोडवाड रं परगने खौवाडे री ख्यात	१७५

(१) चापा का वृत्तात १७६, (२) भेरुदास का वृत्तात १७७, (३) जंसा चापावत का वृत्तात १७७, (४) माडण चापावत का वृत्तात १७७, (५) गोपालदास चापावत का वृत्तात १७८, (६) विठलदास चापावत का वृत्तात १७८, (७) लखधीर चापावत का वृत्तात १७८, (८) अक्षेसिंह उदयसिंह चापावत का वृत्तात १७८, (९) राजसिंह चापावत का वृत्तात १७८, (१०) मेमसिंह चापावत का वृत्तात १७९, (११) जगतसिंह चापावत का वृत्तात १७९, (१२) नवलसिंह चापावत का वृत्तात १७९, (१३) ग्यासिंह चापावत का वृत्तात १७९, (१४) गजसिंह चापावत का वृत्तात १७९

- ८५ फोकनन चापावतों री ह्यात १८०
- (१) गोपालदास चापावत का वृत्तात १८१, (२) विठलदास चापावत का वृत्तात १८१, (३) सबलसिंह चापावत का वृत्तात १८१, (४) सवाईसिंह का वृत्तात १८१, (क) सुबचंद सिंघवी को मरवान का वृत्तात १८२, (ख) महाराजा विजयसिंह के पासवान गुलाबराय को मरवाने का वृत्तात १८२, (ग) सूरसिंह सावतसिंह आदि राजकुमारा को मरवान का वृत्तात १८३, (घ) फोकनन ठाकुर सवाईसिंह चापावत और भीवसिंह के जोषपुर राज्य की सेना से मुद्ध करने का उल्लेख १८३, (ङ) टालपुग के मुद्ध का वृत्तात १८४, (च) महाराजा विजयसिंह भीवसिंह व मानसिंह द्वारा सवाईसिंह को सिरोंपाव प्रधानमी देने का वृत्तात १८४, (छ) सवाईसिंह का पत्र हिम्मतसिंह भारथसिंह के नाम १८५, (ज) सवाईसिंह को मरवाने का वृत्तात १८६, (५) सालमसिंह चापावत का वृत्तात १८६, (६) चापावत भवूतसिंह का वृत्तात १८७, (७) गीत राणाजी र वशाजो री १८७

चौथा अध्याय

अहवाल याददास्त सग्रह

- ८६ अघेजों री अहलवाल १८८
- ८७ बक्षिण री अहलवाल १८९
(मराठी पुस्तक का राजस्थानी म रूपान्तर)
- ८८ अब्दुल करीम पजाब रा अहलवाल री किताब री तरजमो १८९
- ८९ बखतावरसिंघजी री अहवाल १९०
- ९० साहब बहादुर रं लिखी शिकायत री याददास्त १९१
(क) साहब बहादुर रं कागद री याददास्त १९०, (ख) गाव मढायामा जवत करण मे १९३, (ग) गाव १० माहामीदर दाबीया १९३
- ९१ बागरा रा डेरा री याददास्त १९३
- ९२ उमरावों मुतसदियों खयाल पासवानों आदि र बढोवस्त री याददास्त १९४
(क) जनाना तालके १९५ (ख) उमरावा र १९५, (ग) मुतसदीया रं १९५, (घ) बवास पासवानों मे १९५, (ङ) परगन १९६, (च) कारपाना १९६, (छ) परदेसी सोक १९६

६३	अदालत दीवानी व फौजदारी रा नवा दस्तूर री याददासत	१६७
	अदालत दीवानी को दस्तूर १६७	
६४	रेख चाकरी सरणागत र मुद्दो री याददासत	१६८
६५	तबेला र सामान री याददासत	२००
६६	राज र ओघा री याददासत	२००
पाचवा अध्याय		
फुटकर सग्रह		
६७	अपेसिध री कही हकीकत री नकल	२०२
६८	साहब बहादुर कलमा लिखाई जीण री विगत	२०३
६९	महाजना कलमा मडाई	२०४
१००	पोलिटिकल एजेंट जॉन लडलू र नाम ठाकुरा री शिकायत री नकल	२०६
१०१	रेष री भरतिपा री नकल	२१०
१०२	ठरडे रा पोकरणा लीपत कर दीनी उण री नकल	२१०
१०३	पोकरण री रेख भरिया री नकल	२११
१०४	महाराजा तखतसिंह व अंग्रेज सरकार र कोलनामा री नकल	२१२
१०५	बभुर्तसिंह र नाम पटा री नकल	२१२
१०६	अरजीमा लीषावे जीण रा मसोदा री नकल	२१३
१०७	आत्मघात, सती समाध आदि र हुकम री रुका री नकलो (१) गाव रें बदोबसत री रुको २१४, (२) आत्मघात रोकण सारू रुको २१६, (३) सती समाध न रोकण री रुको ४१६, (४) बावरियो नै वाढण री रुका २१६	२१४
१०८	रामदेवजी महाराज रें विगत री नकल	२१७
१०९	पोकरण ईलाके री चोरियो री नकल	२१८
११०	चाकरी री लीपत	२१८
१११	दूगजी बाबत लीषाबत	२१९
११२	गुमानसिंह खाबाबत र छोळे लेवण री लीपत	२१९
११३	जोधमल री अरजदासत	२२०

११४	इबराज री अरज अमूर्तसिंहजी र नाम	२२२
११५	तिलपाहे रा सोढ़ा री कुर्तानामा	२२२
११६	माताली री कुर्तानामो	२२३
११७	जोषपुर ईडर, अहमदनगर बीकानेर अर बिजनगढ़ री कुर्तानामो	२२३
	(१) जोषपुर राजामा री पीढियां २२३, (२) महाराजा अजीतसिंह रै राज कुबरा री याद २२३, (३) महाराजा विजयसिंह रै राज कुबरा री याद २२३, (४) ईडर री पीढिया २२३, (५) अहमदनगर री पीढिया २२३, (६) बीकानेर री पीढियो २२४, (७) बिजनगढ़ री पीढिया २२४	
११८	खरों री घोपनियो	२२४
११९	कूतं री बही	२३०
१२०	थी रामवेयजी रे मेळा ऊठा रं डाण री बही	२३१
१२१	गंगा कपडा तरवारों वगेरा की बही	२३२
१२२	तोपाखाना रं कपडों री बही	२३३
१२३	बही तोसापाना तालके जमा परच री	२६४
१२४	बही तोसापाना तालके रोकड जमा परच री	२३५
१२५	जैन मंदिरों के प्रतिष्ठा सम्बन्धी विवरण	२४१
१२६	सिवाना और फलोदी के बघ मेहता (घोसवाल) का कुर्ताना नाम	२४२
	ज्ञान सुंदर	
१२७	चीरा री बही	२४३

पहला अध्याय

ख्यात, बात संग्रह

१ ठाकुरा चैनदानजी की ख्यात बही

१ ग्रथ का नाम व कर्ता—ठाकुरा चनदानजी की ख्यातबही, २ प्राति. स्थान—रा०शो०स०, ३ प्रयाग—१४२६८, ४ माप—६५×२५ सेमी०, ५ पत्र सख्या—६०, ६ पक्ति सख्या—३०-३४, ७ लिपि समय—वि० स० १६०६, ई० सन् १८४६, ८ लिपिकार—अनात, ९ भाषा—राजस्थानी, देवनागरी १० विशेष विवरण—प्रस्तुत ख्यात में मारवाड के कुछ परगनों (सिवाना, जालोर, साचौर, सोजत, परवतसर आदि) में पढ़ने वाले गावों की रस, जामीरदारा के नाम इत्यादि राजस्व सम्बन्धी जानकारी दी गई है। ख्यात के प्रारम्भ में परगना सिवाने की वार्ता दी है जो विगत^१ से मिलती जुलती है।

प्रारम्भ—

“श्री परमेश्वरजी सत्य छ

परगने सिवाना की बात—सिवाणा जोधपुर था कोस २८ नीरत वूण म छै न जालोर था कोस १५, ने जसोल था कोस १० छ। आदू पवार की करायो गढ छै ” (पत्र १३)

१ परगना सिवाना की फरसत -

मूल ख्यात का प्रारम्भ यहाँ से हुआ है—

‘ ॥ श्री जलधरनाथजी सत्य छै ॥

प्रगना की फरसत प्रगने सोवाणी, मैबी, साचौर, जालोर, प्रगना की फरसत महाराज श्री वपतसिधजी श्री विजैसिधजी राज में रेपा तथा पटा तथा तालकै तिणरी विगत की फरसता छै १८२३ रा वरस सुळ आगळी प्रसता की बही जुनी हुय गइ तरै

१ मारवाड रा परगना की विगत स० डॉ० नारायणसिंह भाटी, रा० प्रा० वि० प्र० भाग-२
पृ० २१५

इण बही म नकल उत्तारी १६०६ रा भादवा वद १३ मु जारावरमल देवकीएजी री बटी वाय बाहाली गोडवाड री नै हमार अठै रहै ठाकुरा चैनदानजी री स्यात री वही छै । १६०६ रा प्रगना सिवाणा री फरसत स० १८३२ रा बरस मे”

८ पालसा

१ कसबै सीवाणी पालसो रेप ५००

१ गाव बालोतरा पालसै रेप १०,०००

इस प्रकार सिवाना परगने के विभिन्न गावों की रक, जिन ठाकुरों को गाव आदि जागीर में मिले हुए थे उनके खापानुसार नाम दिये हैं । ग्वालस, सासन घोर वीरान गावा का भी जिक्र यथा स्थान किया गया है ।

कुछ गावों की रक इत्यादि की जानकारी स्वरूप उदाहरण प्रस्तुत है—

(क) फरसत पाप

४७५।।। =) ३ गाव बाणाणी न मोरडा कलीया बेरी
पडा २ दुसापायो कोस ५ पटे रा० रामकरण
करणीदान फतकरणात रप १२०००
गाव बतलब कदीमी

४७६।।। =) जमावा लागी गाव बतलब जिण मु जागीदार लवे
१७७।।। =) लीपाई बाब रा
१४२ असल रा
३) अकराई बाट रा
२ भरोती दसतुर रा

१४७।।। =)

१८१) रसत परणा रा माहजनी न लाग
१० फुरमास घास बगरे फुटकर
३०० दाण मासर

४७५।।। =)

१ सावणु साख हसो ४ लाग
१ उनाली बरा री गुधरी उघडी (निदिचल) लागे
१ भौम इनामी नही

१ डोली पार जमी

- २ बि० सोढार जमी रो दत्त राणा देवीदास बीजावत रो
 २ ध्यास जीवण वेरा २ रो दत्त राणा देवीदास बीजावत रो
 ३ बि० मढसीयार वरा ३ रो दत्त राणा देवीदास बीजावत रो
 १ बि० कीसाण रँ बेरो १ दत्त राणा देवीदास रो
 ५ स्यामी सुरजगीरजी रँ वेरा ५ रो दत्त राणा देवीदास बीजावत रो
 ४ भाटा रे वेरा ४ दत्त राणा देवीदास बीजावत रो
 १ वेरो १ सीरोमलजी रा सेभोण रँ तीण रो दत्त करणोत अन्नकरण
 दुरगदासोत महाराज श्री अभयसिंह रा राज मे दीयो ।

१८ कुल वेरा अठारा

(ख) ४४१ -) गाव मुरपुरो पट करणोत उदयकरण वपतकरणोत रँ ईक सापीयो
 रेप १६०० वेतलव

४४१ =) जमा बाब रा लागे

३२ लीपाई बाब रा असल अकराई वट रा भरोती दसतुर
 २८ III) २II =)

१२ दाण आसत मास १२ रो

४४१ -)

गाव वेतलव जीए सु जागीरदार लेवं सो कचेडी भरीज ।

१ सावणु साप रो मुकाता लागे

१ उनाळु साप नी, पाणी समदडी पीव

१ भोम इनामी नही

१ डोली पारजमी

१ स्वामी सतोप भारती रे पेट १ हळ ७ रो दत्त भाटी
 नारवा रो महाराज श्री अजीतसिंघजी रा राज म ।

१ बि० हरकिसन रँ पत १ हळ २४ दत्त भाटी नारवा रो

(ग) ७III) गाव तरगटी पटै करणोत बल्याणसिंह भीमसिंघ सिरदारसिंघोत रँ
 ईकसापीयो रेप ४००) तलबी गाव वदीम ।

७III) जमावा लागे

७III) लीपाई बगेरा ने १७III -) लागे ता सु श्री महाराज विजयसिंघजी

रा राज सु इण माफव लाग असल अकराई वट रा भराती दसतुर
५ =) २॥ =)

- १ दाम कचेडी भरीज गाव एतलवी जीण सु
१ सावणु साप री हसा ४ लागे केईक पेत मुकाता लागे
१ उनाली साप वरा १ तीण रा पाणी पारो सु मेह (वर्षा) घणा हव
तरं गेहूँ हवें भोग उघडी घुघरी लागे
१ भोम ईनामी जमी नहीं
१ डाळीया नहीं

(घ) थाप जोधा -

गाव पाटोदी, पट्टे राठीठ भारथसिध जवानसिध जालममिघोत र

१ सावणु साप री हसो आठमी लाग तीण री कुतो हवेला, बैजवाज
मे लेवे जीण सु हेसा पाचवा पडे ।

१ उनाळी साप वावा सु गेहूँ हवें

१ भोम ईनामी नहीं

१ डोळिया छँ आदि ।

वि० सं० १८८२ मे (सिवाना परगने) विभिन्न खापो के सरदारों के पास
किनने गाव थ और उनकी गेव क्या थी इसकी सूची इस प्रकार अंकित है—

रेप	गाव	आसामी	रप	गाव	आसामी
२१५००	७	पालसा	८६२५	६	सरुपा (नाथ) र पटे
१४७५०	६	थाप चापावत	२२४००	७	थाप करणात
४०००	४	थाप जोधा	१०१५०	१३	थाप बालावत
३४२५	८	थाप मएचा	११४५०	१८	थाप धवेचा
४००	१	थाप जुजणिया	२००	१	थाप चु डा
२१५००	१४	थाप चवाण	११५००	७	थाप भाटी
६०००	१४	थाप भाएल	१२५०	१	थाप सोडा
१०००	३	पवास पासवान	२०००	१	मुतसदीयार
३७५०	३	चारणा र पटे	१०३००	२७	चारण वीरामण सासण

१५४२०० १४३

१४ १३

(पत्र-४२)

२ सोरकार जालोर रा गावा रो करसत -

प्रारम्भ मे जालोर परगने के गावा की सूची दी है फिर खापानुसार पट्टे के गावों का उल्लेख किया है।

यथा—

६१३७५)४४ पटी दयावटी रा गाव

४६५००)३४

३०००) १ गाव गाळ रेप ३०००) री

२०००) १ गाव झंहालाणी रेप २०००) री

१०००) १ गाव डागरो रेप १०००) री

अन्त मे एक सूची दी है जिसमे रेप, विभिन्न पाप के सरदारों के मधीनस्थ गावों की सख्या आदि प्रकित है—

सिरकार जालोर रा गावों रो गोसवारों १८२३ रा

रेप	गाव	आसामी	रेप	गाव	आसामी
२२३७५	१४	पालसै गाव			
३४१६००	२३०	पटायता रै पाप वार			
८५१२५	३६	पाप चापावता रै	५५००	४	पाप कूपावता रै
५३७५	४	पाप उदावता रै	३६१७५	२३	जैतावता रै
१०००	१	पाप भदावता र	२८५००	११	जोषा रै
७५००	५	पाप करणोता रै	५१५०	५	करमसोता रै
२६३००	१५	पाप उडा र	१००००	८	बाला रै
३६५००	२४	पाप धवचा रै	३०००	१	मैवचा रै
१०००	१	भीवीता रै	३७५०	१	मडला र
१०००	१	पाप बाहुडमरा रै	३०००	३	पाप सीधला रै
१७१२५	२४	चहुवाणो रै	१५०००	६	पाप भाटियो रै
६२५	१	देवडा रै	८०००	११	बालोता रै
१४०००	२७	बाबा र	१५२५०	८	बोडा रै
३००	१	मुसदीया र दीवाण	२५००	३	प्रोहितो रै बास
		सुरतराम र	२५००	१	सागड पँसो रै
		सावपुरो	८६२५	८	सीपा रै

६ राजस्थान के ऐतिहासिक ग्रन्थों का सर्वेक्षण, भाग ३

३ तर्फ मेवा रा गाव की विगत -

इसमें केवल गावों के नाम, जागीरदार तथा रीप के आकडे अंकित हैं—

प्रारम्भ—

तर्फ मेवा रा गाव १०० रीप रु० ४५०६७

गाव रीप जसोल वगेर

१८ १३०५०

७ गाव जसोल पेडा सात सु रीप रु० ३७५०

(पन्ना-१३)

४ परगना साचोर रा गावा की विगत -

साचोर परगना में पडने वाले विभिन्न गावा की रेखा तथा सासन व खालसा गावा की विगत है।

प्रारम्भ—

परगना साचोर रा गाव १८३० रा बरस सु

१३ पालसा रा गाव

१ बसबो साचोर १ गाव गोलासण आदि।

(पन्ना-४)

५ सोजत परगने की फरसत -

वि० सं० १८३२ में सोजत परगना के विभिन्न गावा की रेखा, पट्टे के गाव इत्यादि की विगत दी है।

रीप	गाव	आसामी	रीप	गाव	आसामी
२६६००		गाव पालसा			
६६००	२	बसबो सोजत	७००	४	गाव दुधोड
५०००	१	गाव धनावस	५०००	१	गाव बीलावस आदि।

अथ कृतिया का विवरण इस प्रकार है—

(क) देवस्थानों की विगत -

एक स्थान पर सोजत के देवस्थाना की सूची इस प्रकार है—

४५ त० श्री देवस्थाना रा मीदर ईसा मुजब (स० १८२३)

७ श्री ठाकुरजी रा मीदर

१ श्री चुन्नमुजजी रो काट रा मोला रो पाळ ऊपर विराज।

१ श्री श्री लियमीनारायणजी रो जोधपुरीय दरवाज।

१ श्री नरनिघजी भापरी ऊपर सेर मु पाव कोत।

- १ श्री मूलनाथजी पावटा ऊपर मोचियो मे विराजें ।
 १ श्री नागकल्याणदास रा असतल श्रीजी विराजें नवा वास म ।
 ६ श्री माताजी रा मोदर
 १ श्री सैजल माताजी नवावास म बुरज मे विराजें ।
 १ श्री चावडा माताजी सेर सु बारें ग्रधकोस भापर रै ऊपर ।
 १ श्री मा० त्रिपतीजी सीरोलिया रा बडा वास मे पोळ कने ।
 १ श्री सीतला माताजी सीलवाडी म विराज ।
 १ श्री वाराई माताजी भवसतिया रा वास म ।
 १ श्री राजेश्वरीजी तळाव रा मेल व माहै मोदर १८६० रा बरस ३
 करायो छं पुजारी विरधिचद छै ।
 १० श्री माहदेवजी रा मोदर
 १ श्री माण बेसरजी राव भालदेजी रा कराया ।
 १ श्री नीलकण्ठजी भावसतोया रा वास कने
 १ श्री मादेवजी सीरमालिया रा बडा वास कने विराजें ।
 १ श्री भुतेश्वरजी सतीया री छत्रिया कने
 १ श्री केपीतेश्वरजी जालोरी दरवाजे कने विराजें ।
 १ श्री सनेचरजी सीरमालीया रा बडा वास कने
 १ श्री भक्तेश्वरजी कोटवाळी चातरा विराजें ।
 १ श्री सुरसुरजी पालेळाव री पोळ ऊपर मोदर म विराजें, महाराज
 श्री सुरसिधजी रै करायो देवरो छ ।
 १ श्री मलकेश्वरजी राज दरवाजा बार विराजें ।
 १ श्री महादेवजी री मोदर भापरो ऊपर ।
 ६ श्री पेत्रपालजी रा मोदर
 १ श्री बेसरदीयाजी करिया कुवर ऊपर विराजें ।
 १ श्री चाचरियाजी मोचिया रा वास म ।
 १ श्री गोरामी मडारीया रा वास मे ।
 १ श्री सोनाणजी वाघेराव रै भ्रागर मे ।
 २ श्री कालाजी, श्री गोरामी जतारणीया दरवाजे बारें विराजें ।
 १ श्री हड्डमानजी राज दरवाजा बारें विराजें ।
 २ श्री गुणोसजी रा मोदर
 १ श्री गणोसजी मा० जंतमाल री पोळ कने विराजें ।

८ राजस्थान के ऐतिहासिक ग्रन्थों का सर्वेक्षण, भाग-३

- १ श्री गणेशजी की देहरी नवा वास में पातीया रा घर बन ।
 ६ श्री जैन रा भीदर
 १ श्री गोठी पारसनाथजी बाजार मे विराजें ।
 १ श्री सधनाथजी नवा उपासरा बनै विराजें ।
 १ श्री धरमनाथजी पर उपासरा कर्नै ।
 १ श्री महावीरजी चातरा कर्नै पोसाल मे विराजें ।
 १ श्री विमलदासजी सि० सुरदासजी की पोळ कर्नै म० दुरगादास की
 करायी सोभत हाकम थो जद ।
 १ श्री श्राद्धसुरजी बसी रा वास म ।
 ३ जुम्हार राठौड विरमदेजी की थापना
 १ श्री गढ ऊपर मेल म विराजें ।
 १ बाजार म, आळा म तबोलण रा घर म ।
 १ भोजगा रा वास कर्नै नीव मे पुजीजें ।
 २ श्री रामदेवजी रा देहरा
 १ श्री जालोरी दरवाजा बारै विराजें ।
 १ चवड पोळ कर्नै १८२७ म जटीया करायी ।
 २ श्री पावूजी रा भीदर

४५

- (ख) सर मे कुवा बावडिया अरठ निवाण की विगत -
 सोजत शहर म स्थित जलाशयो की सूची इस प्रकार है—
 १ अरठ पावठी नागोरी दरवाजा कानी अचाल पाणी ।
 १ मोण बाव जोधपुरिये दरवाजे लिपमीनारायणजी रा देहरा कर्नै ।
 सु सीरमाली भोवण बाव कराई ।
 १ हाडियो कुवो कुमारा रा वास मे ।
 १ नाग बीलाणदास की कुवो नवा वास म ।
 १ कुवो बेलियो सुराणा रा वास कर्नै मसीत नीचे ।
 १ जैमल कुवो कलरा रा वास मे ।
 १ कुवो १ कमाल सारत बीया मे जैतारणीया दरवाजें ।
 ४ नोट हुवा ईतरा नीवाण मालिया
 १ पावटो १ तापावो, १ पावटी, पुरमीयो

१ अरठ भोजवो, नरसिंघदास रो, पान बावडी

१ १

१ तळाव रामेळाव कोट वने ।

१ रडील बुवो मेरा रा वास म ।

(ग) कसबे सोजत र घरा रो विगत -

सोजत शहर मे स्थित विभिन्न जातिया के घरा की सख्या दी है, यथा—

५७ भडारिया रा घर

३४ पाल म एक जगे, ८ काट म, १५ फुटकर

५७

३५ भाणोता रा घर

१ वाघमलजी बणमलोत रो

११ फुटकर काट म तथा सर म आदि ।

(घ) कसबा रा अरठ माळ हळा रो विगत -

विभिन्न कुए जिन पर अरठ की मालाएँ लगी हुई थी, जमकी विगत इस प्रकार अंकित है—

अरठ	माळ	हळ	आसामियो
१५	२१	६८	अरठ पारचीया नदी पार घाचियो रे गेहू
३२	३५	०	हुव ती० लाटी हुव जबती रा दाम मडे डोरी मणे अरठ भीठवाणिया चीपा रे तथा फलाला रे ।
२०	२५	१४	सीरविआ रे पारचीया तथा भीठवाणीया
४५	५०	०	माळिया र अरठ वाडिया बगैरा तठ गेहू तथा तीजारो, अजमो, ईसबगुळ, तरकारी बगैरे हुव ।
५	०	०	अरठ मुकातीया रे सदामद माफक ।
२१	२३	०	अरठ सासणीक डोळिया नीचे ।
४	०	०	पसायता रे— १ अरठ रामसागर भडारीया रे १ अरठ सापटो सि० भीवराज लिपमीचदोत रे तथा सि० देवीचद पेमीदासीत रे ।

१० राजस्थान के ऐतिहासिक ग्रन्थों का सर्वेक्षण, भाग-३

१ भरठ जुमावो लालजी दीवाण पचोली है तीना रै।
१ भरठ तिथि कोट मे तारै मादेवजी कन।

४

१ ० ० भरठ राकी भोजग हुकमी नै, माराज श्री विजसिधजी
असाठ सुद २ पटो सीवाडा मुघा (भरठ की भूमि
सहित)

१४३ १५४ ८२

(ड) सर तथा कोट रा दरवाजा, बुरजा तथा बागरा वगरे रो विगत -

७ दरवाजा

१ जोधपुरीयो दरवाजो २ राज दरवाजो ३ जंतरणीयो दरवाजो

४ नागोरी दरवाजा ५ चावड पोळ ६ राम पोळ

७ जाळोरो दरवाजो

४१ बुरजा नग ईगताळोस

३६ सैर रा कोट रो २ भापरी गढ रा नाका मुधि

३५ सफीला पतीस (सीवारें)

३२ सैर रा कोट रो ३ भाडी भीत सपरी ऊपर

बुरज सु गढ रा नाका मुधि तळाव रामाळाव रै जतन रै वास्त न एक
बारी रापी।

२७६२ बागरा कोट रा रो विगत

२६७० काट सु सात दरवाजा नै बुरजा मुघा।

१२२ भापरी बुरज सु गढ रा नाका मुधि।

तलाव रामेळाव रै उठै बारी एक रापी सु असवार गाडी निक्ते जीसी
रापी छ।

(घ) सोजत रै नव कोट रो विगत -

सोजत के पुरान कोट की मरम्मत और नवीन बाट के निर्माण मे जो धन
व्यय हुआ उसका ब्योरा दिमा गया है। इसके बारे मे लिखा है—

सोजत रो कोट नवो बणीयो तथा भागला रो मरम्मत हुई
महाराज श्री विजसिधजी र राज नै हाकम सि० जोरावर बारकुन, मो० उगरभेए
नै पद्य हाकम सि० वरधमाता मूत्तचदात न, बारकुन म सीवसन साननमिधोत जोग

समै कोट हुवौ स० १८२१ रा वँ० वद १४ सू तगाय १८२५ पोस वद ३ सुधी तीण रा रूपीया लाग़ा तिण री विगत—

२७८ -)॥ जुना कोट री पदल हूई तीण नै लाग़ा ।

२८१६४ -)॥।। सैर काट नवा वणीयो तीण री तजारी काम तथा चूना रो काम कोट दोळो दीरायी जिण सुधा लाग़ा ।

(छ) प्रगना सोजत जमा बगैरा लाग़ तीण री विगत १८८२ रा -

इसमे विभिन्न लाग़ता का उल्लेख हुआ है—

यथा—

आसामिया ह कुल सेराठो जोड ऊन अघोडी परषर पानपाला सरूपात लगावै

पालासणी रा आसपत

गाव पारो सोडा रो ४६॥) ३५॥॥) ६॥) १ १ १

गु साई श्री बीज-

भारथीजी रै गाव

नीबली मात रो ६२॥) ६२॥) ० ० ० ०

इस प्रकार की सूची करीब १५० गावा की दी है ।

(ज) सोजत रा बेरा, घेत ईनायत हुवा तीण री विगत १८८२ रा -

इनाम के रूप म दिये गये कुट्ट कुए एव भू खण्डा का विवरण दिया है—

गाव धनेडो

सि० चंद्रभाए रै बेरी १ स० १८३५ रा बरम सु

कसबा रा सहैदे अकबर अली सेरअली रे बेरी ।

गाव रीसाणीयो जैतावत उरजनसिध रे पेत बीगा २०० (१३-१६)

७ परगना प्रबतसर री गावा रेवा वार फरसत १८२७ बरस री -

इसमे परबतसर परगने के विभिन्न गावा की रक्त इत्यादि की जानकारी दी गई है ।

प्रारम्भ—

विगत गावा री

गाव १८६

५४ परबतसर री पटी रा गाव

५ वाहल रा गाव

४२ बवाल रा गाव

८५ तोसीणा रा गाव

विगत तफसीलवार

३५००)२ श्री गुसाईजी महाराज र भेंट

२५००)१ गुसाईजी श्री गोकलसाजी र प्रबतसर री गाव
मालावास भेंट १८०७ रा साप उनाळी ।

१०००)१ गुसाईजी श्री दुबरेश्वरजी बवाल री गाव
मानपुरीयो स० १८२६ रा वरस री माप
सावणु धा भेंट कीयी ।

३५००)२

११५००)३ पालसँ गाव रेघ साढा ईग्यार हजार री

१००००)१ कसबो प्रबतसर पास नै बारा री वास ।

१५००)१ बहुजी श्री चुडावतजी री गाव घोळीयो
१ गाव कलवा मे वरस १ रा ईजारा रा
रु० १०१ देवे रेघ

१५०००)३

इसके बाद में विभिन्न खाप के सरदारों इत्यादि को जागीर में मिले गावों की सरया और रेख आदि का विवरण इसी प्रकार दिया है । (पत्र-५)

८ परगने जाडोद रा गावा री फरसत १८२५ रा वरस री -

जाडोद परगन के अतगत पडने वाले विभिन्न गावा की रेख दी है ।
जागीरदारों के नाम नहीं दिये हैं ।

यथा—

रेघ रा रूपया	गाव	आसामिया	रेघ रा रूपया	गाव	आसामिया
२०००)	१	कसबो दौलतपुरो	१५००)	१	कसबो भाडोद
१५००)	१	गाव आसलसर	८०००)	१	गाव वासा
६०००)	१	गाव मोलासर	६०००)	१	गाव डागणी
७०००)	१	गाव धणकौली	६०००)	१	गाव नीबोद

आदि ।

इस प्रकार करीब ५८ गावा की रेख की जानकारी दी है जो वि० स० १८२५ में सागू थी ।

६ मादवास्त श्री हजूर में षालसी तीरा री १८२२ रा -

इसमें जोधपुर, नागौर, मडता, जालौर, सोजत, जंतारण, फलोदी तथा परवतसर आदि परगनों के खालसा गावा की उपज (आय) भक्ति है।

यथा—

१०६८०१)५५ =

प्रगना जोधपुर रा गाव री पैदास

१७६६०)२२	तफे हवेली रा २२	२४४००)५	तफे पीपाड रा गाव
२६०००)४	तफे विलाडा रा ४	६०००)२	तफे बहाला रा गाव
१३७७६)१२	तफे पाली रा गाव १२	१०८६५)१६	तफे दुधाडा रा गाव
६५०)	तफे जोसिया तीजी	२१००)१	कसबे लवेरा रा गाव
	पाति री हमा	५००)१	सीवाणो
		१२५०)१	तफे भादराजूण

१०६८०१)५५

(पत्र-३)

१० पटायता र गाव री विगत मुकरड (स० १८२२) रा -

इसमें राठीडा भाटिया, चौहाना इत्यादि राजपूत शाखाभा प्रशाखाओं के सरदारों को गाव जागीर में मिले हुए थे उसकी रेल का विवरण दिया है।

यथा—

५७६८५०)२४२	पाप चापावत रै		
२०४१७५)६०	आइदानोता र	१५२०७५)४६	बलुवोता रै
७८३२५)३२	वीठलदासोता रै	६६३५०)२३	भोपतोता रै
२१७००)१३	जंतमालोता र	१३७५)२	नरहरदासोता रै
८०००)२	हरीदासोता रै	१०००)२	कीलाणदासोता र
६७५०)५	रायमलोता र	१०७५०)६	पतसीयोता रै

आदि ।

(पत्र-२)

११ मादवास्त जोधपुर राजस्थान र पट रेपा री विगत -

इसमें मारवाड के विभिन्न गावों (खालसा, सासण, वीरान पट्टे के गाव) की उपज एवं उनकी रेल इत्यादि की जानकारी दी है।

आसामी वार गावा की पदास री मेळ रेप गाव

१४७५३०६)१४६६

गठ जोधपुर रा गाव १४७५३०६) १४६६

११६७००)५६

गाव पालमें

११६७६०४) ६०१ पट्टे ग

५६७००)२०५

सासण

६२७००) १६० जार तलब पीनररएमि

११५२५) ११० वीरान मूना

१४७४३०६) १६६६

(पत्र-१३)

१२ गढ जोधपुर रा २२ परगनों की रेखा की फरसत -

ग्रन्थ के अन्त में एक सारणी दी है जिसमें जाधपुर के २२ परगना के अन्तर्गत विभिन्न मासपिक एवं वीरान तथा पट्टे के रूप में मिले गावा की रक कितनी थी, अंकित है।

प्रारम्भ—

गढ जोधपुर रा प्रगना २२ की रेखा की फरसत १६०६ रा आसोज वद ७ ने उतारी ने आगली फरसत १८८४ रा फागण वद १ की तीण २ देया देय रेखा कुल परगना की १५४४५४५) १४८२

गढ जोधपुर रा गाव १४८२ रेय ह० १५४४५४५)

रेय	चातरा नग	पटायत	सासण	वीरान	पटीमा रा गाव
३०१७५५	८७१०	२५४६१५	३७६४०	७६०	तफे हवेली रा गाव २८८
२२०६३०	०	२०६५३०	११४००	०	तफे पीषाड रा गाव ८४
४४६५०	०	४२७५०	२२००	०	तफे बीलाडो गाव १५
३३८२५	०	३०६२५	१२००	२०००	तफे बाहाली गाव ६
३१२००	०	३०६००	६००	०	तफे रामठ गाव २०

आदि।

महाराजा बख्तसिंह व विजयसिंह के राज्यकाल (वि० स० १८०८-१८५०) में प्रचलित राजस्व सम्बन्धी नियमों इत्यादि के सम्बन्ध हेतु सामग्री उपयोगी है।

ग्रन्थ एक ही व्यक्ति के हाथ से लिखा गया है। लिपि अस्पष्ट है। ग्रन्थ पर गता नहीं है। पत्र हाथ के बने हुए हैं।

२ श्यात बात संग्रह

१ श्यात बात संग्रह, २ जो० क० संग्रह ३ १०६, ४ ४५×१५ सेमी०, ५ ५६, ६ १८२०, ७ १६वीं शताब्दी का मध्य ८ प्रजात, ९

राजस्थानी, देवनागरी, १० प्रस्तुत वही में सक्लित वृत्तियां वा विवरण क्रम इस प्रकार है—

(क) फलोदी की ख्यात -

ग्रंथ का प्रारम्भ एक श्लोक के बाद फीच ग्राम के सरदारों की सूची से किया गया है।

प्रारम्भ—

“सात बेटा राव लालजी रें हुवा ज्या म बडो हरीसिध ग्राम फीच की घणी हरीसिध १, हठीसिध २, फतेहसिध ३, पुमाणसिध ४, यानसिध ५, सिग्दरसिध ६, जगतसिध ७।

फलोदी की ख्यात में लिखी कुछ बातों के उदाहरण प्रस्तुत हैं—

(१) रावळ अर्पराज फलोदी रें धरो दिव्यौ जोगीदास रा बेटा हठीसिध अनूपसिध दोनू फलोदी रा किला माहू सू नीमर गया ३० जणा सू जोगीदास पातावत फलोदी रा गढ आग काम आयो ७१ वष री उम्र।

(२) जोगीदास की बेटा री सगाई रावळ प्रपसिध सु कीवो धी सो रावल कैयो—डोली जसलमर लावो, जोगीदास कहायो—आप चापू आय परणो, रावल था वात न मानी, विरोध पडिया।

(३) फलोदी रे किला आगे जोगीदास की लोस्टी है।

(४) फलोदी लटियाळ की बाडी न नीलकठ रा बाडी भ्रमावस रें दिन बावीजं दोनू नारता।

(५) महाकाळी फलोदी पजडा हटे बिराजिया जद लटियाळ नाम बिराणो, लटियाळ की सेवा फलोदी डूम कर है।

(६) जाडवा हमीर रा बेटा तीन राव पगार १, साहिव २, राहिव ३। जाम रावळ रें नै राव पगार रें बडा जग हुआ। जैठू इणानू मार नै हाला हर गाम चार हजार दबाया।

(७) त्यागराज विस्नु की मंदिर चौलेद्र करायो, एक सौ आठ मंदिर विस्नु रा, एक सौ आठ सिव रा, एक रात में देव कृपा सू चौलेद्र कराया द्रविडे ॥ १ ॥

(पन्-५)

(ख) ब्रह्म चंद्रका अलकार की ग्रंथ (बाकीदास वृत्त)

प्रारम्भ हुआ—

जूलत प्रताप दिनेस जिमे बदे थाम अवाम

ससिजै होऊ जलसु जसा राज तएँ नृपराम

(२२ दोहे)

(ग) सिक्खर नामा की उक्तियाँ -

इसमें सिक्खर महान् की मुख्य उपलब्धिया का वृत्तांत है ।

प्रारम्भ—

धन प्राप्त जहाँ आवे तहाँ धनी नु बलावे ॥ १ ॥

इसी वाग में विसी वृद्ध है जिण रँ चागवान री कुहाही नही लागी ॥१॥

(घ) कुरेसी मुसलमानों की ख्यात -

इसमें मुसलमानों की प्रसिद्ध शाखा कुरेसी की जानकारी दी है तथा उनके कुछ विशिष्ट व्यक्तियों का विवरण दिया है ।

प्रारम्भ—

'ख्यात—सदीकी हासमी, फरकी ए तीना जात कुरेसिया सपा री है मजर री जीलाद रा कुरेसी सेपदे करस मुलक म रेण बाळा कुरेसी ताजीक तुरकए दोया जात मुगला री है ।

(ङ) चादा वीरमदे री हात -

एक म्यान पर नागौर के नवाब तथा वीरमदे के पुत्र चादा^१ मेडनिया क मारे जाने की घटना इस प्रकार दी है—

चादा वीरमदेओत नै पटे आसोप धी, सो नागौर बुलाया तरै गया, नवाब बुरज माथे बठी थो सो उपरवाडे नीसरणी चादोजी नै बुरज माथे लिया, बेली हेटे उभा रहगा । चादाजी ऊचा गया तरै नवाब र पिजमतगार तरवार चलाई सो चादोजी री माथो कट पडियो निसरणी ऊची पाच लीवी नीसरणी रा उपरला पगोतिया माथे चादाजी था सो सिर कटियो अर निसरणी ऊची पाची तर नवाब री पलवट माथे चादा री हाथ पडियो सो नवाब नै चादो दो सामे नीचा आय पडियो जेडे पडते पडते तीन कटारी नवाब रँ चादे बाही जीसू नवाब मर गयो ।

आ बात सुण अकबर सिपाहिया नु केयो—पडबूजा रँ तीन कटारी लगावो बेरा (कुए) मे पडता, पण किण ही सू लागी नही ; (पत्र-६)

(च) किशनगढ की ख्यात -

इसमें मोटा राजा उदयसिंह के पुत्र व किशनगढ के स्थापक किशनसिंह की मुख्य उपलब्धिया व उनके सतति का विवरण दिया है ।

१ इसके बगल पत्तवत मेडनिया कहलाये ।

प्रारम्भ—

माटा राजा उदयसिंघजी रा वेटा श्री विमनसिंघजी रुद्धवाहा रा भाखोज राणी मनरगद रं पेट रा १६३६ रा जेठ वद री जनम किसनसिंह री ।

राठौड किसनसिंह द्वारा महाराजा सूरसिंह के प्रधानमंत्री गोयसूक्त भाटी की हत्या का उल्लेख इस प्रकार प्रकृत है—

सूरसिंघजी र डेरा भेळी गोयददास री डेरी था तिग उपर पाछा रात रा किसनसिंहजी आया सु गायददास भाटी नं मारिया स० १६७१ जेठ वद ८ दिन उगता ।

सत्पश्चात् सूरसिंह के सरदारों द्वारा किशनसिंह भी मारे गए। भारमल किशनगड की गद्दी पर बैठे। उसके पुत्र रूपसिंह न रूपनगर बसाया। रूपसिंह का बादशाह की ओर से मिले किशनगड व अजमेर के जागीर के गावों की सूची दी है।

इन प्रकार किशनगड के शासक पृथ्वीसिंह तक सक्षिप्त विवरण दिया है। पीढिया इस प्रकार है—

१ उर्दसिंह	२ किशनसिंह	३ भारमल	४ रूपसिंह
५ मानसिंह	६ राजसिंह	७ बहादुरसिंह	८ वीरसिंह
९ प्रतापसिंह	१० कल्याणसिंह	११ मोहलसिंह	१२ पृथ्वीसिंह

(पत्र-१३)

इसके अतिरिक्त व्युत्पत्ति सहित शब्द, ब्रियाचत्र शब्द, कवित्त जोधाण रा, आदि कृतिया लिपिबद्ध हैं। ग्रंथ किशनगड के इतिहास के लिए विशेष उपयोगी है।

ख्यात एक ही व्यक्ति द्वारा लिखी गई है। लिखावट भारघदानजी की प्रतीत हाती है। कुछ पत्र छोड़ कर किशनगड की ख्यात किसी अन्य व्यक्ति के हाथ से लिखी गई है। लिपि साधारण है। ग्रंथ पर कपडे का गत्ता मटा हुआ है।

३ फुटकर बातों री सग्रह

१ फुटकर बातों री सग्रह, २ जा० क० सग्रह ३ १४७, ४ ६६ × १६ सेमी०, ५ २०, ६ एकसी नहीं, ७ १६वीं शताब्दी का मध्य, ८ अज्ञात, ९ राजस्थानी, देवनागरी, १० एक दूसरे के ऊपर फोल्ड किये इन पत्रों में अनेक फुटकर नोट के रूप में लिखी ऐतिहासिक बातों के अतिरिक्त कुछ पत्रों की प्रति लिपिया भी दी हैं। राठौड दुर्गादास तथा सोनग द्वारा मीया फरासत को वि० स० १७३७ में लिखे एक पत्र की प्रतिलिपि यहाँ प्रस्तुत है—

“स्वरूप श्री जाधपुर गण महा दुरगे भोया श्री करामतपानी जाग्य तसकर था राज श्री दुरगाणासी श्री सोनगजी लिपावतु जुहार वाचजी, छठारा ममानार श्री महाराजाजी र प्रताप सू भला है, राज रा मदा भना चाहीर्ज, महाराज धणी बात छै राज उपरात कोई वान न है, राज सू बासू मनवार लिपा राज सदा दया रापी छी जिण था विशेष रापजी, अपररच राज नू तवाय सहवरया श्री पानमाहजी रै हूयम सू श्री महाराज रै बटा नू मनमय देण रै वामते बुलाया छै सु राज कबूल कीजो, राज चलावा नै धरती री सिछाद मटा नै जा गज नु मह मोहनू बटा दिपावा ता राज बहजी ठिपाणा पाछा आम हाजर हुमी, बळ बागळ समाचार सग देजा, आसाज मुद ४ गुरुवार सवन १७३७ रा ।”

उदाहरण स्वरूप कुछ एतिहासिक बातें प्रस्तुत हैं—

(१) विर्जमिधजी मडतिया वीरमदे विमतमिध नै बुलाय हाथी २ दिया, सिरपाय दिया, तरवारा बघाई पटा आपरा नाम न लिप दिया ।

(२) १७२८ जसवतसिध नै गुजरात री मुयो हुआ तरं पटण वीरगाम रा परगना हजूर न दिया, हसार रा परगना तागीर किया पातसाह २ वष री गुजरात री सूवा रयो ।

(३) फरखसेर अजन नै गुजरात दीवी जद भडारी विजयराज सूव रयो ।

(३) म्हुमदसा अहमदाबाद अजन नै दीवी जद रघुनाथ भडारा री बटो जनोपसिध सूव रयो ।

(५) पडियारा बना सू रामपाल भडावर तियो थो पण छुट गयो ।

(६) म्हुमदसा अमसिधजी न गुजरात दीवी जद भडारी रतनसी सूवे रयो ।

(७) धिराज वही—अमकरण दुग्गदामोन ससार नही जरै सिणमार चौकी म्हारो आवणो हुआ है ।

(८) भाटी केल्हण जलाल पोषू मुल्तात रा पातमाह रा हुकम सू नागोर माथे आया, चू डोगी सामा जाय जग कर माराणा, नागोर री राव कानो हुवो ।

(९) नागार सू बोस २३ रिणमलजी री मामो राणो पुनपाल मापसा जागलु री धणी, जिण माथ कानो गयो, पुनपाल माराणा ।

(१०) सवत १५१५ आसोन के फलोधी बसी ।

इसम सकलित अधिकाश बातें बाकीदास की रूयात स ला गई प्रतीत होती है ।

अधिकांश पद एक ही व्यक्ति द्वारा लिखे गये हैं ।

४ महाराजा जसवतसिंह (द्वितीय) की रियासत

१ महाराजा जसवतसिंह (द्वितीय) की रियासत, २ जो० व० सग्रह, ३ ६०, ४ ६६ × १७ सेमी०, ५ ६० ६ ४५-६८, ७ १६वीं शताब्दी का उत्तरार्ध, ८ अनात, ९ राजस्थानी, देवनागरी, १० इसमें जोधपुर के शासक महाराजा जसवतसिंह द्वितीय के राज्यकाल की घटनाएँ लिपिबद्ध हैं जो उक्त महाराजा की दिनचर्या को व्यक्त करती हैं।

प्रारम्भ—

॥ श्री हरि ॥

स० १६३६ की हकीकत

सावण आसाठ री मह घणो हमार पवन बाज धान री भाव गहू बाजरी मोठ आदि।

अनेक पत्रों की प्रतिलिपियाँ तथा मुरारदान के राजकीय कार्यों का वृत्तांत भी दिया है। प्रथम महाराजा जसवतसिंह (द्वितीय) के इतिहास अध्ययन हेतु उपयोगी है।

यह ग्रंथ अनेक व्यक्तियों का हाथ से लिखा गया है। बीच में अनेक पत्र खाली पड़ें हैं।

५ राठौड़ राजाओं की रियासत

१ राठौड़ राजाओं की रियासत, २ जो० व० सग्रह, ३, १५४, ४ ६५५ × २५५ सेमी०, ५ १६२, ६ ३० ३२ ७ १६वीं शताब्दी का प्रारम्भ, ८ अनात, ९ राजस्थानी, देवनागरी, १० प्रस्तुत रियासत में मारवाड़ के राठौड़ राजाओं का सरदारों का वृत्तांत है। इसे हम निम्नलिखित भागों में बांट सकते हैं—

(अ) राव जोधा से रागा तक की रियासत -

ग्रंथ के प्रारम्भ में जोधपुर के शासक राव जोधा से राव रागा तक के विभिन्न राठौड़ राजाओं का संक्षिप्त विवरण दिया है।

(क) राव जोधा का वृत्तांत -

प्रारम्भ—

“राव जोधा बड़ो आपड सिध गई भीम री बाहूँ डूवो, असरय प्रवाडा किया वर बाहर हुआ, जत बादी हुओ। राव राणगदे री दोहीतरौ कोडमदे भटियाणी र पेट री। स० १५०० जेठ तथा असाढ़ में राव रिडमल नू चीतौड रा गट उपर राणे वूमे चूक कराय मारियो आदि।

प्रारम्भ में राव जोध के विरुद्ध का वृत्तांत है तत्पश्चात् उसके द्वारा महीर पर अधिकार किये जान का उल्लेख है विवरण त्रम इस प्रकार है ।

(१) राव जोध द्वारा बहलोलखा से युद्ध कर उसे पराजित करने का उल्लेख इस प्रकार है—

राव जोध रे उपर बहलालपान आया जोधो वेढ कीवी, पातसाह बहलोलपान हारियो राव जोधा वेढ जीती तिण साख री दुहो—

ए दीहा जोध तणा, ए कीज परियाण ।

दळ भगा दिल्ली तणा, व गजिस सुरताण ।

(२) राव जोधो का राणा कूभा से वि० स० १५१२ में वैर समाप्त होने का उल्लेख है ।

(३) राव जोधा द्वारा लड़ विभिन्न युद्धों का संक्षिप्त विवरण दिया है ।

(४) तत्पश्चात् उसके द्वारा चारण, भाटा, ब्राह्मणा इत्यादि का सामण के रूप में दिय गये गावों की विगत दी है । यथा—

“ग्राम थोभ तरो ओयसा सर सू कोस १४ रेप ६० १०००) री प्रायत दामा रा वेढा उदा दमावत नु दिया ।”

‘ग्राम सैपाउम्रो री वासणी सैर सू कोस ८ रेप ६० २००) री तफ बहलवा प्रोयत भवण रामावन सैणाउत नै दियो, हमै किसनो लिपावत वसती हिमावत छ ।”

(५) अतः में जोधा के रानिया, कुवर कुवरियो की विगत दी है साथ में उनका संक्षिप्त परिचय भी दिया है । एक स्थान पर जैसा भाटी जैसलमर से जाधपुर किस प्रसंग से आये अंकित है—

“राणी लिपमी भाटी जैसा री वेटी सापला हरभम री दोहीती, सूजा री राणी थी इण रे प्रसंग सू भाटी जैसा जोधपुर र दरबार आया ।”

(ख) राव सूजा का वृत्तांत -

राव सूजे का जन्म (वि० स० १४६६ भादवा वद ८ गुरुवार) राज्यभिषक (वि० स० १५४८) और मृत्यु सवत (वि० स० १५७२ कार्तिक वदी ६) आदि दिय हैं । इसके बाद राव बीका और वरसिंह जोधावत का वृत्तांत दिया है, फिर राव सूजा के पुत्रों की सूची दी है ।

(ग) वरमसी को खोंबसर मिलने का उल्लेख -

‘वरमसी री बहन भागा बाई नागोर घणी घान नु परणार्ई तद नागोरी पान वरमसी नै पीवसर गाम, पीवसर आसोप जोधपुर तार घताणा सा अजस छै ।”

(घ) उदा सूजावत का वृत्तांत -

राव सूजा के पुत्र उदा जिसके वंशज उदावत राठीड कहलाये, सक्षिप्त विवरण दिया है।

“उदा सूजावत सूजे नू जंतारण दीवीरुतिण सू उदावत जतारणिया कहीजे छे ।

(ङ) नापा सूजावत का वृत्तांत -

राव सूजा के पुत्र नापा का सक्षिप्त विवरण है जिसे खेरवा ग्राम मिला था।

‘नापा सूजावत रे परवो पटा थो, नापा रो वेटी पदमा बाई रावळ मालदे (जंसलमेर) परणियो थो तिण रो वेटा हरराज अर भगवान ए नाप रा दोहीतरा ।”

(च) नरा सूजावत का वृत्तांत -

राव सूजा के पुत्र नरा के बारे में लिखा है—

‘नरा नु सूजे फलादी दी तठै नरो गयो पिण नरा रो मन फलोदी टिके नही पोकरण जगमाल मालावत रो पीवा बरजागात नू हूतो सा सूजाजी रे कहण सू पोकरण नरा लीवी ।

(छ) राव गागा का वृत्तांत -

प्रारम्भ में गागा के जन्म (वि० स० १५४० वसाख सुदी ११), राज्याभिषेक (१५७२ मागशीप सुदी ३) तथा मृत्यु सबत् (१५८८ ज्येष्ठ सुदी ५) दिये हैं। प्रारम्भ—

“राव गागो वाघावत वडो आपडसिध रजपूत थो अर दातार जू म्भार वडो प्रतापीव ।”

गुजरात के बादशाह मुज्जफरसाह से गागा और राणा सागा द्वारा ईडर हस्तगत करने का उल्लेख इस प्रकार है—

गुजरात पातसाह मुज्जफरसाह राठीड कना नू ईडर ले लीवी जद राणा सागो वागडिया डूगरसी वालावत नू जाघपुर गागाजी वन मिळियो सो मास ६ जोघपुर रहि नै डूगरसी राव गागा नू ले गयो तरै राणा सागा न गागा दानू भेळा ईडर छोडावण सारु गया सो अहमदनगर सू वेडा हुई गागा सागा रो फतै हुई।

गागा गोत गुभाळा ईडर ऊपहिया तरौ

सोहू ती सुपपाल वडो प्रवाडो वाघउता ॥

गागा द्वारा सोजत पर आक्रमण करने का उल्लेख है—

'स० १५८८ राव ने कवर मालद फौज ले साजत माथे गया मुहते रायमन वजार मे सामो आय बाज नै काम भायी तठे रायमन री छरी है, वीरमदे नू दालिया सूधो उपाड परब मेल आया ।

आगे राव बाधा क पुत्र वीरमदे और खेतसी का बहुत संक्षेप म वरण किया है तत्पश्चात् जाधा और बाधा क पुत्रों की नामावली दी है ।

आ) राठौडो री वशावली -

आदि नारायण से मारवाड के संस्थापक राव सीहा तक वशावली दकर महाराजा गजसिंह तक विभिन्न राठौड राजाओं का वृत्तत दिया है ।

(क) राव सीहा का वृत्तत -

वशावली मे सीहा का १४४वा नाम है । सीहा की द्वारिका याथा, ब्राह्मण द्वारा आग्रह किये जाने पर सीहा के मारवाड म आने और भीनमाल मुसलमानों से हस्तगत करने जिसमे शत्रु पक्ष के २४ हजार व्यक्ति मारे जाने तथा अनेक युद्ध करन इत्यादि बातों का वृत्तत है ।

(ख) आस्थान का वृत्तत -

इसमे मुख्य रूप से आस्थान द्वारा भीलों से ईडर हस्तगत करने का विवरण दिया है जा इस प्रकार लिखिबद्ध है—

'ईडर री राजा भील छै, सु आदु कामदार नागर ब्राह्मण छै । वोहरा पिण छ । पिण ठकुराई री मुदार सारी नागरा माथ छै । सो कितराक दिना पूठी (बाद म) नागरा रै विवाह मडियो तने भील सगळा ही आया नागरा री बहू बेटी दीठी तरै मन मे पाप आण नागरा नू कयो—धाहरी बेटी महान परणामो नही तो म्हे जोरावरी सू परणसा पछे नागरा आय आस्थानजी न आ वान कही आस्थानजी केयो—इडर म्हाने विरावजो आस्थानजी केयो—भापर कने मडो बघाय नै रापजो धर भीले नै नाळेर मल दीजो, कितरीक डोलिया करावजो, भूजाई करावजो, महुडा रा दास कठावजो लगन रै पहले दिन म्हे पिण आवा छा पछे डोलिया म बेस राठौड गढ ऊपर गया तरवार बजाई इण ताब जुदा जुग भील मारिया ।"

(ग) घूहड का वृत्तत -

इसमे राव घूहड द्वारा कर्नाटक से चर्चवरी की स्वण मूर्ति लान का उल्लेख है, फिर उसके पुत्रों की विगत दी है ।

(घ) रायपाल का वृत्तात -

रायपाल न यादववंश राजपूत मागा का मवस्व घन द अपना भिक्षुक बनाया, मागा का बेटा चंद हुआ जिम्मे वंशज राहडिया बारट कहनाये इत्यादि घटनाएँ अंकित हैं।

(ङ) राय वनपाल सू महाराजा गजसिंह का वृत्तात - 10979
314192

इसमें राय वनपाल जालणसी लाडा लीडा सलखा, घोरम पूडा रिडमल, उदयसिंह, जोधा बीका सातल सूजा, मालदेव चद्रसेग, मूरसिंह और गजसिंह का वृत्तात है जिसमें इनको जीवन घटनाओं और सन्नि आदि का हाल दिया है जो ग्रन्थ ह्यातों, वाता स मिलता जुलता है। कुछ राजाओं द्वारा दानस्वरूप चारणा एवं ब्राह्मणों को गाव आदि सासण म दिय उसका व्यौरा भी दिया है। राठौड अमरसिंह नरा सूजावत और रायसिंह इत्यादि कुछ विशिष्ट व्यक्तियों का वृत्तात अलग में दिया है जो उनके इतिहास अध्ययन हेतु उपयोगी है।

राठौड अमरसिंह के पुत्र रायसिंह का वृत्तात त्यात की भाषा में इस प्रकार लिखिवद्ध है—

“सवत १६६० आमोज सुद १० राय रायसिंह अमरसिंहोत री जोधपुर माह जम श्री भाणोज कछवाहा री स० १७०२ राय रायसिंह पातसाह रै चाकर रयी तरै पातसाह ४ पटी पट नीधी—

१ रण, २ धायल, ३ कीलू, ४ उदपुर पछ सवत १७१५ नागौर पायो च्यार लाप माहै ।

रायसिंह आछी तरवार बजाई मूजो भायो श्रीरगजेव री फतै हुई तर श्रीरगजेव रायसिंह नै इतरी दियो हाथो १, हथणो १ मोत्या री माळ १ गुदगुदी १, घोडो १, सिरपाव १ ।

औरग रै न दारा र अजमर लडाई हुई तरै रायसिंह सपरी हुआ, दारा भायो औरग फतै हुई पछे साडी चार हजार री मनसब पायो राय सू राजा हुआ ।

पछ १७२७ फागण वद ७ नागौर सू बहादरया री ताबीन में दिपण नू चालिया मामला पाच सात दिपणियो सू हुआ तठै फतै हुई ।

पछ असाड वद १२ वार सोम घडी १६ पल २० रायसिंह काळ कीधा, कुसो सो भाग मुहणोता नै आयी ।”

वशावली का अन्तिम भाग—

“बह भटियाणी लाखलदे रावळ कलै री बेटी रामकवर वाई स० १६६८

जैसलमेर रावल भीब 'याव कियो गोयददास जान गयो था, १७०६ पोकरण देह
आगली मडप करायो पाछ स० १७२४ मथुरा राम कह्यो ।' (पत्र-६६)

(ई) राव मालदेव आदि जोधपुर राजाशाही परिवार से विगत -

वशावली के बाद राव मालदेव और राव बाधा इत्यादि जोधपुर शासनो
व शजा का विवरण दिया है, जिनमें से कुछ सरदारों के नाम उद्धृत हैं—

१ जैतसिंह उदैमिघोत	२ किसनसिंह उदैमिघोत
३ जगमाल किमनसिघोत	४ नारमल किसनसिघोत
५ रूपसिंह भारमनोत	६ हरीमिह किसनसिघ
७ जैतमल किसनसिघात	८ जसवत उदैमिघात
८ केसोदास उदैमिघोत	१० राम मालदेवोत
११ करन रामोत	१२ भाव करणोत
१३ राव कला रामोत	१४ जसत कलावत
१५ जगनाथ जसवतोत	१६ गोपीनाथ जमवतोत
१७ विसनदास जमवतोत	१८ पूरणमल रामोत
१८ भोपत रामोत	२० नारायणदास रामोत
२१ माधोसिंह भमरावत	२२ महेसदास रामोत
२३ सावलदाम महेसोत	२४ अक्षेराज महेसदासात
२५ सुजाणसिंह अयेराजोत	२६ लखमण महेसदासात
२७ सक्तसिंह महेसदासात	२८ राव गयसिंह चद्रसेणात
२८ उग्रसेन चद्रसेनोत	३० करमसेन उग्रसेनोत
३१ रामसिंह करमसेनोत	३२ कुशलसिंह करमसेनोत
३३ काहा उग्रसेनोत	३४ गोहददास कल्याणदासात
३५ रायमन मानदेयोत	३६ कल्याणदास राममलोत
३७ ईसरदास कल्याणदासात	३८ नरहरदास ईसरदासात
३८ बिहारीदास ईसरदासात	४० नरसिंहदास कल्याणदासात
४१ केसरीमिह नरसिंहदासात	४२ माधादास कल्याणदासात
४३ कुसलसिंह माधोदासात	४४ प्रतापसी रायमलोत
४५ जसदूत प्रतापसी	४६ देईदास बलिभद्रोत
४७ अक्षेराज काहोत	४८ गोपालनाथ काहोत
४८ मुरतान रतनसिघोत	५० मादूल रतनसिघोत
५१ कचरो सादूलोत	५२ भोजराज मालदेवोत

५३ सावळदास भोजराजोत	५४ स्यामसिंह परमसिंघोत
५५ ईसगदास भोजराजोत	५६ विज्रमादित्य मालदेवोत
५७ अचळदास विज्रमादित्य का	५८ महेश मालदेवोत
५९ रामदाम महसोन	६० तिलोक्सी मालदेवोत
६१ कल्याणदास तिलोक्सी	६२ पृथ्वीराज मालदेवोत
६३ गोपालदास भ्रासदेवोत	६४ डूंगरमी मालदेवोत
६५ लिंगमीदास मालदेवोत	६६ रूपसी मालदेवोत
६७ नरहरदास मानसिंघोत	६८ राघोदास नरहरदासोत
६९ जसवत राघोदासोत	७० राजसिंह जमवतोत
७१ वीरमदे बाघावत	७२ प्रतापसी बाघावत
७३ बेसोदाग बलावत	७४ भोपत बलावत
७५ सोधण बाघावत	

आदि ।

इन राठीड सरदारों ने जोधपुर राजघराने अथवा गाही मेवाणा में भाग लिया उसका विशेष रूप से विवरण दिया है । एवं स्थान पर मोटा राजा उदयसिंह द्वारा अपनी पुत्री की शादी शाहजादे सलीम के साथ करने पर रायमल के पुत्र कल्याणदास द्वारा विरोध प्रकट करने का उल्लेख इस प्रकार हुआ है—

“लाहोर पातसाही चाकरी में १६४४ मोटे राजा मानी बाई नू साहजादा साह सलेम नू परणाई तरँ कल्याणदास बकियो—कैयो तुरका नू बन बेटी क्यू परणाओ छो हँ साधजादा नू नै मोटाराजा नू मारनाप सू, पछ गे समाचार पातसाह नू मोटे राजा कैया । (पत्र-२६)

(ई) चापावता की धिगत -

इसमें चापावत राठीडों के मूल पुरुष चापा और उसके वंशज का संक्षिप्त विवरण दिया है ।

प्रारम्भ—

१ चापो—चापा ने राव जोधे प्रगने जोधपुर की गाव कापरडो में बणाड पटे दीया था । चापो उमर २० की उमर में सीधला सू जग हुवो जठे काम आयी सिधल राठीड है आसथानजी रँ भीलाद रा ।”

उदाहरण स्वरूप बखतावरसिंह चापावत का विवरण प्रस्तुत है—

“बपतावरसिंह महाराजा मानसिंहजी रँ जालोर जोधपुर रा घेरा की बदगी पोहोतो जँपुर घेरो लगायो तिण सू महाराज मानसिंहजी १८६५ श्रावण सुद ११ परधानगी दीवी नै बधारी दीयो ।”

अंतिम भाग—

१७—मगतसिध पाहाकरण मौजूद है। राठीडा री खापा मे चापावती रा अरव दरजी है। गिरं दरवाग हूवं तरं महाराज री निजर निछरावळ पता चापावता गे हूवं ।” (५५-२)

जोधपुर के विभिन्न राठी गजाआ और सरदारा व इतिहास ग्रन्थयन रहु ग्रथ उपयोगी है।

यह बहुदाया ग्रथ समय-समय पर अनेक व्यक्तियों व हाथ मे लिखा गया है निम्बावट साधारण है। ग्रथ पर चमड का गत्ता चडा हुमा है, पन हाथ क बन प्रतीत हान ह। बीच-बीच म अनेक पथ रिक्त पड ह।

६ ख्यात बात सग्रह

१ ख्यात बात सग्रह ० जा० व० सग्रह, ३ १५६, ४ २१५×२३ समी० ५ २७२, ६ ११-१४, ७ १६वीं सताब्दी का प्रारम्भ ८ अनात, ९ राजस्थानी दवनागरी, १० यह विवध ऐतिहासिक वाता, पीडिया आदि का समृद्ध सग्रह है जिनका सम्बन्ध प्रसिद्ध राजपूत गासका व सरदारा के अतिरिक्त मराठा साम ता इत्यादि के ऐतिहासिक तथा काल्पनिक वतान मे है। घटनायें क्रमबद्ध नहीं है। सामान्य रूप स यह माना जाता है, “इण बानो मे साच घुडा न भूठ घणा” ग्रथ के प्रारम्भ मे हास्य सम्बन्धी कुछ दोह प्रकित है।

श्री गणेशायनम ॥ अथ दूहा लिपते ॥

सगा सगा मिळिया सही, दुरस्त नैमलाह

जाणक कु भठहधिया, ठाना सू ठालाह ॥

ऐतिहासिक कृतिया का विवरण क्रम इस प्रकार है—

१ जालोर रा धणी सोनगरा चहुवाणो री पीडिया -

जालोर के शासक सानगरा चौहाना की वशावली इस प्रकार प्रकित है—

१ काहडद	२, मूखानी मान्ते	३ साली
४ बीकमसी	५ सगरामसिध	६ पानी
७ वगडो वरजाग	८ जयमिघ	९ नीवा
१० राणो	११ म्हैकरण	१२ सामतसी
१३ बलू	१४ जुगतसिध	१५ दबीदान
१६ मातदान	१७ बीरमद	१८ आणदसिध
१९ पदमसिध हमे चीतलवाण धणी है।		

इस वगावली के बाद मोतगरा शागका के बारे में कुछ घटायें दी हैं जो इस प्रकार हैं—

“भूछाळा मालद सु जालोर हुटी उटी साली माचार रा घणी
का मालमा परमार ज्वारै परणिया तरै परमारो साचोर रो गाव सेवाडी साला न
दिधी । माला रो बटा बीवममी कवणद मामा नै मार साचार लीधी सो जुगतसिध
सु हुटी । महाराज अजीतसिंहजी चहुवाणा का सु साचोर लीधी नै वयालीस (४२)
गामा सु साचोर रा परगना रो गाव चीनलबाणो चहुवाणी नै दीधी ।

साला रो दूजी बटो हापी मूराचद राणुवा रो भीण्जेज हुती तिण आपरा
मामा राणुवा मार सुगचद लीधी ।”

जालार इत्यादि के गाव सामण के रूप में चारणा का दान का उल्लेख है ।

यथा—

“जालोर रा गाव नरील पड्यीया सारग नै विहारिया सासण दियो ।

‘ साचार रो घणी राव वरजाम मइया सीडा न गाम गामैई सासण दियो ।’

लाळस पचायण जूदिया वाळा न राव वलू गाम जाजोसण सासण दियो ।”

‘आ साचोर रा सामण री ख्यात लूणीया हण रै मीमण जगमालजी चीतल-
वाणा री पीडियो सहित मडाई छ ।

इसके बाद कुछ अन्य सासण में दिये जाने वाले गावा का उल्लेख है ।

(पत्र-८)

२ परगनों की विगत -

वि० स० १७१८ को जोधपुर मेडता परगन के विभिन्न गावा की उपज का
ब्यौरा दिया है तथा महाराजा जसवतसिंह के कुछ परगना व गाव जागीर में मिल
उसकी विगत दी है ।

(पत्र-४)

३ मडलक गुजरात र पातसाह री बेटी री बात -

लिपिभार ने लिखा है कि यह वार्ता बारट नरहरदास लखावत ने कही ।

प्रारम्भ—

‘अहमदाबाद र पातसाह री बेटी घटा रा पातसाह न् परणाई थी सा
मेहवा र तलवाडै प्राय उनरी थी ।”

वार्ता में लिखा है कि अहमदाबाद के बादशाह ने अपनी पुत्री की शादी चट्टा
के बादशाह से की थी, नववधु माग में जाते समय तिलवाडे आ ठहरी जगमाल के
पुत्र मडलोक उसे उठा अपने घर ले आया । लोगों के फटकारन पर मडलोक ने
अलग घर में रखन की व्यवस्था की, फिर वहा से निकाल दी गई गई और वह अपने

पिता के पास पहुँची और वहाँ जह्नू खाकर मर गई। गुजरात के बादशाह न विशाल सेना सहित मडलीय पर चढ़ाई की मडलीय की चारों ओर घेर डकमल बुझाने रहता था उसने तुरका का सामना किया और लखे भाटी द्वारा घेर डकमल मारा गया, मडलीय बादशाह के हाथ नहीं आया, फिर घोष से मडलीय को पकड़कर मरवा दिया। (५७-२)

४ बरसिंध जोधावत की वार्ता -

इस वार्ता में दिया है कि माडवा के बादशाह का उमराव मलूखा अजमेर के सूबे में रहता था। वह मडत बरसिंह जोधावत पर आक्रमण करने आया तो बरसिंह पीपाड फिर कोसाले आया मलूखा भी पीछे आया यहाँ उसकी लड़ाई सातल तथा सूजा से हुई तथा वह हार कर चला गया फिर बरसिंध की मलूखा ने घोषे से मरवाया। यह वार्ता नरहरदास ने भडारिया की पुस्तक में से लिखवाई।

५ सोयला की पीढियाँ -

रायपुर भाद्रजण और कुहला के सोयन राठौडा की पीढियाँ इस प्रकार हैं—

रायपुर

१ अस्थ्या	२ जापसा	३ सोयल	४ उदो	५ कावू	६ बाहू
७ सती	८ लापण	९ आमत	१० नैणा	११ करन	१२ वीरम
१३ रायमल	१४ पगार	१५ सीहो	१६ सुजी	१७ बीदो	१८ बाघ

भाद्रजण

१ नैणो	२ करन	३ भरजन	४ भारमल
५ सती	६ रामो	७ बीरो	८ बीसल
९ तजमन	१० तोमो	११ भाडण	

कुहला

१ नणो	२ करन	३ बीरम	४ सीधण
५ भाडो	६ जैतो	७ मालो	८ रायसिंह
९ जसवत	१० मुरताण		

६ ईसरदास कल्याणदास की ऐवाल -

इसमें मालदेव के वंशज ईसरदास को बादशाह की ओर से कुछ परगना मिलने का उल्लेख इस प्रकार है—

“राव मालदे रो बेटो रायमल रायमल रा कल्याणदाम, ईसरमल, कल्याण दामोत रै पातसाही तरफ सू ए परगना हुता—

१ भिण्णाय २ केकडी ३ माडल

४ भगवतगढ ५ तोडा (अमल नही हुवो)

दिएण परगना श्री पातसाहजी ईसरदास नै दिया—

१ मिलकापुर २ वडनरी ३ पाबूजी पातर (पत्र-४)

७ नणसी का वृत्तात -

इसमे नैणसी द्वारा लगान कम करने का उल्लेख इस प्रकार है—

“सवत १७१४ रा जेठ वद १ मुहणोत नैणसी नै देस री पिजमन सूपी तरै नागत छोडी—मोटा गामा वरसालू, उहालू दानू साप रा १७ लापता, सो सवत १७१५ सू मोटा गाम वन ६० १० ने छोटा गाम वन ६० ५ लणा ठहराया ”

८ पारकर सोडा री जुनी बात -

यह वार्ता नैणसी की रयात^१ से मिलती जुलती है ।

प्रारम्भ—

“परकर छोटी सी भापरी पर सोडा चदण री करायोडो गढ छै तेरे साडा रा घर छै गढ माहे सपरी ईमारत है एक बावडी है सहर है भापरी रै हटे वस छै ।”

पारकर के आसपास के गावा की सूची दी है जिसमे पारकर से उसकी दूरी भी लिखी है । तत्पश्चात पारकर साडा की वशावली दी है जो अपूर्ण है ।

१ राणा वैरमल २ राणी भापर ३ राणी गागा

४ राणी अणौ ५, राणी माणकराव ५ राणा देयो

आदि ।

पारकर के आसपास के पहाडो, नदियो तथा कुछ गावा मे होने वाली फसलो का विवरण दिया है । बाडमेर से दूर २५ कोस पर एक छोहटण नगर का उल्लेख है जिसके निचे २३५ गावा का होना लिखा है । इस पर पहले चौहाना का अधिकार था । जगमाल के पुत्र मडनक ने चौहाना से हस्तगत किया । यह वृत्तात नैणसी की रयात मे नही दिया है । (पत्र-२)

६ सिरौही री रयात -

इसमे सिरौही के देवडा शासक रायसिंह, दूदा, उदमसिंह, मानसिंह, राव सुरताण, राजसिंह, अखेराज इत्यादि का वृत्तात दिया है ।

प्रारम्भ—

“राव रायसिंह असेगजात भीनमात माराणा, दबडा पृथ्वीराज र हाथ रो तिण मू रायसिंह मूमो, रायसिंह र बटी उदैसिंह वगस २ रो था, रायसिंह मारोणा तरै रायसिंह रजपूतो न केयो—म्हारा बटा ना-हा है, धरतो इण मू रपवालीज नही सो थे टीको म्हारा भाई दूदा नै देजो ।

इसमें वर्णित है कि दूदा जल्द ही मर गया उसका बाल उदयसिंह गद्दा पर बैठा और दूदा के पुत्र मानसिंह को लोहियाणा की जागीर दे दी, फिर उदयसिंह ने मानसिंह से लाहियाणा छीन लिया ता मानसिंह उदयपुर गणा के यहाँ चला गया । शीतला रोग से उदयसिंह का देहान्त होने पर मानसिंह सिरोही का शासक बना । यहाँ इतना ही विवरण दिया है फिर अथ वृत्तिया के बाद फिर से मानसिंह का वृत्तान्त दिया है । उसमें उसका द्वारा कोत्तिया पर सना भोजन २२ थाना पर अधिकार करने का उल्लेख है, जिसमें १० थानों के नाम दिये हैं । तत्पश्चात् मानसिंह द्वारा अपने प्रधान पचायण का विय देकर मारने पर पचायण के भतीज काला द्वारा मानसिंह की हत्या करने का उल्लेख है ।

१० राव सुरताण का वृत्तान्त -

मानसिंह के बाद अल्प आयु में राव सुरताण के उत्तराधिकारी हान महागव शिवभाण के भाई गज्जा के वंशज बीजा के हाथ राजसत्ता होने, म्हााराणा प्रताप के भाई जगमाल जो सिरोही राव मानसिंह का दामाद था उसको अकबर द्वारा आधी सिरोही का हक देना, फिर जगमाल द्वारा राव सुरताण देवड का सिरोही से खदेड़ने व दताणी के युद्ध में जगमाल व रायसिंह (जोधपुर राव चंद्रमेन का पुत्र) के मारे जाने तथा सुरताण का सिरोही पर पूरा रूप से अधिकार होने का वृत्तान्त दिया है ।

घटनाएँ नैणसी की ख्यात से मिलती जुलती हैं । राव सुरताण की मा से संबंधित एक नवान् वार्ता उल्लेखनीय है—

“पहली सुरताण री मा रो डोळी बीकानेरिया राठीड नखनगर ले जावता था, नवा नगरा रा धणी बाम्हणिया मू परणावण साठ, सो गाम मडाड डेरा कियो हुतो तरै बाम्हणियो मू आ री पबर आई तरै राठीडी कयो हू बळसू तरै साये आदमी हुता ज्या केयो वू कुमारी छे याने वाळसू नही कुवारी नै सत करणी वरजियो छ पछे रजपूता देवडा भाण नै आ परणाई पछे भाण र इण राठीडी रै पेट बेटी सुरताण जनमियो ।”

राव सुरताण के पुत्र राजसिंह, राजसिंह के पुत्र अखेराज व अखेराज के पुत्र उदयसिंह का वतात दिया है जो नैणसी की रयात के समरूप प्रतीत होता है ।

(पत्र-२०)

११ महाराजा जसवर्तसिंह का वतात -

घरमाट के युद्ध में जसवर्तसिंह की ओर से वाम जाये कुछ व्यक्तियों के परिवारों का शाही पट्टे इनाया हुआ उससे संबंधित कुछ पत्रों की जानकारी इस प्रकार दी है—

१ ' कागल उकील मनोहरदास रो आयो पातसाही उमराव काम आया तिणा रा वेटा नू मुनसब दियो पातसाही तिणरी

१ राव भावसिंध मन्मालीन तीन हजारी जात तीन हजार असवार बू दो रा घणी हाडा ।

१ मानसिंध रूपसिंधोन दाड हजारी जात आठ मा सवार विशनगढ तथा रूपनगर रा ।

१ गौड सिवरामोत एक हजारी जात हजार असदार

१ राठोड सरसीध रामसिंधोत हजारी जात हजार असवार

२ 'कागद मू० सुन्दरदास पचाली बसरीसिंध रा आयो तिण म तिपियो उजेण रो राड म काम आया तिणा रा भाई भतीजा न पट्टी बगसियो छो तिणरी लिपाई लिजो मती श्री महाराजजी रो हुकम छै ।'

३ भण्डारी लालचन्द रा कागद आया साड ८८ सोठे ने दे लोधी १३ कीटणोद सू ४० जाणियाण सू ३५ लालण सू ।'

ग्राम पोकरण के भाटिया पर चढ़ाई करने हेतु मुहणोत नैणसी के साथ भेजे गये करीब ६२ योद्धाओं की सूची देकर युद्ध का हाल लिखा है ।

अतः में जोधपुर के अथ शासका व उमक बंशजों का संक्षिप्त विवरण दिया है जो क्रमबद्ध नहीं है ।

(पत्र-१८)

१२ उदयपुर की बात -

इसमें हरमाडा (हाजीखा व उदयसिंह के बीच) हल्दी घाटी (मानसिंह व प्रताप के बीच) तथा बादर और सागा के बीच लड़े गये युद्धों में मार गये उदयपुर पक्ष के यादगात्रा की सूची दी है ।

(पत्र-४)

१३ शिवाजी सभाजी की बातें -

इसमें शिवाजी व उसके बंशजों से संबंधित ऐतिहासिक घटनाओं को लेकर नोट के रूप में प्रकृत है ।

प्रारम्भ—

शिवाजी रे बेटो सभाजी ज्या घोडो राज कियो पछे श्रीरगजेव सभाजी न पकड मार नापियो । सभाजी रो बेटो साहूजी बडो प्रतापीक साहू रे बडा नापा थो ।'

शिवाजी साहू तथा अन्य अधिकारियों की मोहरों की प्रतिलिपिया इस प्रकार अंकित है ।

शिवाजी महाराज की मोहर की नकसो ॥श्लोक॥

प्रतिप चद्रेपववधिस्नु विद्व वदित

महा मूनो सिवस्ते सो मुद्रा मद्रा विराजते

साहू रा प्रतिनिधि श्रीपतिराव की मोहर की नकसो—

श्री आयादि पुरस श्री राजासाहू छत्रपति श्यामी कृपानिधि

तस्य श्री निवास परसरामा पण्डित प्रतिनिधि

राजा साहू की मोहर की नकसो ॥ श्लोक ॥

वधिस्नो विक्रमो विस्नु सा मूर्ति रविवामनी ।

सभू सूनार सोमद्रा सिवराजस्य राजपते ।

साहू की असलन नाम सिवो थो सो श्रीरग सिवा की नाम न लेव जद मां धाजियो ।

सेनापति की मोहर—

श्री राज साहू छत्रपती जसवतराव दाभाडा सेनापति

राम राज की मोहर—

सभू गोरी वर प्राप्त, राज्य साम्राज्य सपदा ।

सिव मूनोर सामुद्रा राम रामस्य राज्यते ॥

पेसवा प्रधाना की मोहर पानघटी गोल

श्री राजा साहू नरपति ह्य निधान ।

बालाजी बाजेराव मुख्य प्रधान ॥

(पत्र-५)

बाकीदास की ख्यात की भांति फुटकर नोट के रूप में अनेक ऐतिहासिक पुरुषों से सम्बन्धित बातें भी सप्रतीत हैं जो सम्बन्ध नहीं होने से इनका विवरण प्रस्तुत करना सम्भव नहीं है । ग्रन्थ के मध्य भाग में ईरान व रूस की भी वार्ताएँ दी हैं । इसके अतिरिक्त कवित्त, दोह, कुण्डलिया भी लिपिवद्ध की गई हैं ।

ग्रन्थ एक से अधिक व्यक्तियों के हाथ से लिखा गया है, लिखावट साधारण है, कागज हाथ के बने हुए है। ग्रन्थ पर चमड़े का गत्ता मढ़ा हुआ है, अन्त के कुछ पन्ने रिक्त पड़े हैं।

७ राठीडों की ख्यात अर वशावली

१ राठीडा की ख्यात अर वशावली, २ जो० क० मग्रह ३ ५५, ४ ६४ × २६ सेमी०, ५ १८२, ६ २८३० ७ १९वीं शताब्दी का मध्य, ८ अनात, ९ राजस्थानी, देवनागरी १० विवरण ब्रज इस प्रकार है—

१ राठीडों की ख्यात —

प्रारम्भ में जोधपुर क संस्थापक राव जोधा से राव गागा तक के शासकों का हाल दिया है, ग्रन्थक १५४, क० स० से मिलता जुलता है।

प्रारम्भ—

' राव जोधा बड़ा आपडसिध रजपूत, गई भोम रो बाहरु हुवो, असएय प्रवाडा किया, वैर बाहरु हुवो, जतवादी हुवा आदि ।

२ राठीडों की वशावली —

आदिनारायण से राव सीह तक वशावली देकर राव मालदेव तक के राठीड शासकों का विस्तृत विवरण दिया है। राव मालदेव का हाल अधिक विस्तार से दिया गया है। विवरण ग्रन्थक १५४, क० स० से मिलता जुलता है।

३ उदावतों की विगत —

अन्तिम भाग में उदावत राठीड सरदारों की मुख्य उपलब्धियाँ, पट्टे के गाव आदि का विवरण दिया है।

४ मालदेव क परिवार की विगत —

राव मालदेव के पुत्रों व उनकी सत्तिल इत्यादि का अलग से विवरण किसी अन्य व्यक्ति के हाथ से सुन्दर लिपि में लिखा गया है।

५ मेडतियों की विगत —

इसमें राव दूदा के वशावली का संक्षिप्त विवरण (घसीट लिपि में) दिया है। मूल ग्रन्थ एक ही व्यक्ति के हाथ से लिखा गया है। ऊपर चमड़े का गत्ता चढ़ा हुआ है।

राठीड राजाओं एवं सरदारों के इतिहास अध्ययन हेतु उपयोगी है।

इस प्रकार की वशावलियाँ मारवाड की ख्यात का आधार रही हैं।

८ जोधपुर की ख्यात

१ जायपुर की ख्यात २ जा० व० सग्रह ३ ६३, ४ ३५ × २६ समा०, ५ १६ ६ २०-२४, ७ १६ वीं शताब्दी का मध्य, ८ अज्ञात, ९ राजस्थानी, देवनागरी १० इगम जोधपुर के शामक राव गांगा से महाराजा मानसिंह तक का सक्षिप्त विवरण दिया है। राव सींह से राव मूजा का विवरण पत्र लुप्त होने से अप्राप्य है।

प्रारम्भ—

दुलवर डड लीया समत १६१३ रा फागण वद ६ कु वीरमन् का बटा जैमल क पास पीछा मडता ले लिया सा समत १६१८ रा फागण व ६ कु बादशाह मकबर की फौज लाकर जैमल ने फेर मेडता चूडवा लीया ।”

ख्यात अति मक्षिप्त है और किसी हिन्दी प्रेमी ने ख्यात करन का प्रयत्न किया है एसा प्रतीत हाता है।

प्रारम्भ क ६ पत्र लुप्त हाने से अप्रप्य अपूरण है, पत्र सत्र लुप्त है। जायपुर इतिहास क अध्ययन हेतु उपयोगी है।

९ ख्यात बात तथा वीर गीत सग्रह

१ ख्यात बात तथा वीर गीत सग्रह, बाकीनाम आदि, २ जा० व० सग्रह ३ ६६, ४ ३३ ५ × २२ समी०, ५ ४५४ ६ १८ २१ ७ १६वीं शताब्दी का उत्तरार्ध ८ अज्ञात, ९ राजस्थानी, देवनागरी, १० प्रस्तुत ग्रंथ म बाकीदास कृत अनक प्रशस्ति गीता और ऐतिहासिक बाता के अनिरिक्त 'जायपुर की रमात नसीहत' और शास्त्रग्रंथ इत्यादि कृतियाँ भी संकलित हैं।

प्रारम्भ—

“श्री गणेशाय नमः अथ शास्त्र ग्रंथ लिपत

लक्षमण १, हनु २ जकि आदि ।’

साहित्यिक परम्पराजा की जानकारी क लिए ग्रंथ बडा उपयोगी है।

एक से अधिक व्यक्तियों द्वारा लिपिबद्ध है, लिपि यशुद्ध है तथा कपडे का गत्ता मडा हुआ है।

१० जमींदारों के पट्टे गावों के तरजमों और चीन के तवारीख

१ जमींदारों के पट्टे गावों के तरजमों और चीन के तवारीख २ जा० व० सग्रह ३ ८०, ४ ३६ × ३० समी०, ५ ८६ ६ ३० ३६, ७ १६वीं शताब्दी

का उत्तराद्ध, ८ अनात, ९ राजस्थानी, देवनागरी, १० इस बहदावार ग्रंथ में कृतिया का विवरण-क्रम इस प्रकार है—

१ जमींदारी रं पट्टे रं गाव रं तरजमौ -

इसमें जोधपुर के विभिन्न जागीरदारों के जागीर के गावा की संख्या उनकी रेल नय मिले गावा की संख्या व उनकी रेल तथा पुरान खेडों की संख्या वि० सं० १८६६ में थी उसकी एक लम्बी सूची है।

प्रारम्भ—

“नवल सवत १८६६ री साल में जोधपुर रा कपतान जान लडलू साहब बहादुर अजट राज मारवाड जोधपुर रा जमींदार नू गाव राज नू न पट कीवी नै गाव गाव लिपोजिया निणरी तरजमौ उतारियो—

आसामी नै ठिकाणा	गाव रप	गाव नवा	रेप जु	रेप जु	पडा
घाप चापावत रा	८५ ५६८४३	१३	२०१६५	७६६०८	६८
कमुतसिंह पोरकरण					(पत्र-३८)

महाराजा मानसिंह कालीन मारवाड के गावा और रेल की जानकारी के लिए यह वृत्तान्त उपयागी है।

२ तवारीख चीन -

इसमें चीन देश का इतिवत्त दिया गया है साथ ही उस देश की कुछ भा यताया पर भी प्रकाश पडता है।

प्रारम्भ—

“अकल और विचार वाले तारीफ के इलम का दूसरे इलमा पर इस वास्त बडाई देते और आछा जानते हैं के लोगो की पीछाएण और अजभावस का जो मुलक है उसमें पोचने का रसता है और जिसने थोडा सा भी वहा का सफर किया वो कुछ होई रहा ।”

अन्तिम—

‘ पता की बादसाह के बनेवसत का जियाना साबित करना ।”
(पत्र-७५)

यह तक्कन अपूरण है आगे पत्र खाली पडे है। ग्रंथ पर कपडे का गत्ता चढा हुआ है।

११ महाराजा मानसिंह (जोधपुर) री ख्यात

१ महाराजा मानसिंह (जोधपुर) री ख्यात, २ जो० न० संग्रह, ३ ५८ ४ ४१ × ३५ सेमी०, ५ ३१३, ६ १६-१७, ७ १६वीं शताब्दी का

उत्तराढ़, ८ अनात, ९ राजस्थानी, दवनागरी १० प्रस्तुत स्थान में जोधपुर के शासक महाराजा मानसिंह के शासनकाल का पूरा हाल दिया है। घटनाएँ प्रयाग १०६१०, रा० शो० स० से मिलती हैं। ग्रन्थ का आकार व लिपि भी एक जगह ही है।

प्रारम्भ—

॥ 'श्री जलधरनाथजी ॥

महाराजा श्री मानसिंहजी समत १८३९ रा महा सुद ११ दुतीक गुफवार की जनम नै समत १८६० रा मिंगसर वद ७ जाधपुर गढ दापल हुवो न समत १९०० रा भादवा सुद ११ सामवार नै पाछली रात पोहर एक रमा मडोवर म देवलाफ हुवा ।'

शक्तिम—

'महाराजा श्री विजयसिंहजी रै महाराज कवर फतेहसिंहजी बीहा (हुए) सा चानिया पछै पासवानजी अरज करने कवरजी सेरसिंहजी नू जुगराज पदवी तिराई नै पासवानजी बाभा तजसिंहजी चल गया प्रादि ।'

दि० म० १८९६ में जागीर के गाव, रेख तथा खापानुसार जागीरदारों की एक लम्बी सूची दी है। तत्पश्चात् भाटिया, चहुवानों के विभिन्न खापों इत्यादि का भी विवरण दी है।

जसा भाटिया क मूल पुरुष जंसा^१ के बारे में लिखा है कि वह हरभू साखला का भानजा था। हरभू सुगनी था, जोधपुर गढ की नीव उस पूछ कर दितवाई थी। जाधा न उसके पुत्र को उस समय वहाँ बुलामा, पुत्र तो नहीं आये पर भाटा जसा आया उसने अपना हक समझ बट मागा ता जाधा न उसे व उसकी सत्ति को बालरवा चामू रायमलवाडा खुडियाला तथा लवरा ग्राम हाय क कुरव सहित दिय।

मानसिंह के राज्य काल का बहुत विस्तार से बखान इस ग्रन्थ में है।

ग्रन्थ एक ही व्यक्ति क हाथ से लिखा गया है। ऊपर चमड का गना बना हुआ है।

१२ रघात वात कवित्त सग्रह

१ रघात वात कवित्त सग्रह, बानीदास, ० जो० क० सग्रह ३ ८२
४ ३५ X २३ सेमी०, ५ ३४२ ६ १९ २१, ७ १९वीं शताब्दी का उत्तराढ़,

१ यह जैसलमेर के अध्यावर राजत कहर क पीत क कलारण का पुत्र था।

८ अज्ञात, ९ राजस्थानी, दवनागरी १० प्रस्तुत ग्रन्थ में बाकीदास कृत राणा भीमसिंह के कवित्त, मान जसो मङ्गण चन्द्रदूषण दपण इत्यादि कृतिया सग्रहीत हैं । प्रारम्भ में लोद्वे सम्बन्धी वार्ता दी है ।

प्रारम्भ—

श्री गणेशायनम लाद्रवो रा सिध देवराज सू आ ख्यात—अगरेज ता घोडो परीदे नही पूरी असवारगी नही जिण सू ओ पिनाण नामो ।

महाराजा मानसिंह के जनक आश्रित प्रसिद्ध कवि बाकीदास की कुछ अज्ञात कृतियों का इससे पता चलता है ।

इसके अतिरिक्त अनेक छोटी मोटी ऐतिहासिक बातें भी लिपिबद्ध हैं । लिखावट अशुद्ध है । अनेक व्यक्तियों द्वारा लिपिबद्ध किया गया है ।

१३ महाराजा विजसिंह भीमसिंह की ख्यात

१ महाराजा विजसिंह भीमसिंह की ख्यात, २ जो० क० सग्रह, ३ ५३, ४ १६ × १७ सेमी०, ५ १८८, ६ १६ १७, ७ १६वीं शताब्दी का मध्य ८ अज्ञात, ९ राजस्थानी, देवनागरी १७ प्रस्तुत ख्यात में जोधपुर के शासक विजसिंह व उसके पौत्र भीमसिंह व राज्यकाल की घटनाओं का विस्तृत वर्णन दिया है ।

१ महाराजा विजसिंह की ख्यात -

प्रारम्भ—

“॥ श्री हरि ॥

महाराजा श्री विजसिंहजी समत १७८६ रा मिंगसर वद ११ ब्रह्मसप्तवार की जनम समत १८०६ भादवा नू महरौठ में टीके विराजिया । १८०६ रा माहा वद १२ मंगलवार जोधपुर पघार सिणगार चौकी राज तिलक विराजिया, समत १८४६ रा आसाढ वद देवलोक हुआ ।

मुसायवी पीची गोरधन नै दिवाण बपसी बडा महाराज रापिया वा सु सर रापीया समत १८०६ श्री महाराज महारोट सू कूच कर भेडते पघारिया मेहला दापल हुवा ।

राज किशोरसिधजी वणै डेरा मगरा री साथ वगरे भेळी कर भिणाय अमल कीयो आदि ।”

इसमें मुख्य रूप से महाराजा के मराठा से मघप, मुठ म लडे योडाओं की मुची, विरोधी सरदारा का दमन, राजताका की विगत, निर्माण काय प्राप्ति का विवरण दिया है।

अंतिम भाग में राणा भद्रमी द्वारा गोडवाड का परगना विजैसिंह को ग्रिय जान के २ रूबा की प्रतिलिपिया दी है (वि० स० १८२७) फिर उमरकोट टालपुरिया से महाराजा द्वारा हुस्तगत कर बीजट को चूक से मरवान की विगत दी है। सारा वृत्तात जोधपुर राज्य की रूपात में मिलता जुलता है।

अंतिम भाग—

‘पद्यै समत (१८६६) म हाकम मडारी सिवचद सोभाचदोत तातके लाने कामती मादी भजबनाथ थो नै मारवाड में काळ नै विपे रा सबब नू परचा पाहची नही नै माह समान पिए नही जिण री पवर टालपुरा न हुई सो उमरकाट पाछे दुडाय लीयो जिण दिन नू उमरकोट मारवाड नू द्यटी है’।

इति महाराजजी विजैसिंहजी”

(पत्र-१७१)

२ महाराजा भीमसिंहजी की रूपात -

इसमें जोधपुर महाराजा भीमसिंह के राज्यकाल का वृत्तात दिया है। प्रारम्भ में महाराजा विजयसिंह की मृत्यु के पश्चात् भीमसिंह के उत्तराधिकारी होने का वृत्तात इस प्रकार दिया है—

‘समत १८२२ आसाढ सुद १२ री जम नै समत १८४६ रा आसाढ सु १२ राजतिलक विराजिया नै समत १८६० रा काती सुद ४ ऋवलोक हुवा।

महाराजा श्री भीमसिंहजी पोहकरण सू जैसलमेर परणीजण पधारिया था उठे महाराज श्री विजैसिंहजी देवलाक हुवा री पवर पाहची तरै ताकीद सू नूच कर पोहकरण पधारिया नै पोकरण सू सातरा ऊठ ल मटाराजा नै सवाईसिंहजी चनिया सो सीगोडिया री बारी होय आसाढ सुद ६ रात रा लापणपाळ पधारिया तर घाम भाई सिमुदान न दिवाण मडारी भानीदास नै बगसी सिंधवी अपराज न सिरिमाती आभो रामदत्त बगैरे नियणापोळ आय भुजरा किया नै भ्रज करी के महाराज भी विजैसिंहजी रा कवर सेरसिंधजी, सावतसिंधजी, सूरसिंहजी न महाराजा भ्रजीन सिंहजी रा कवर प्रतापसिंहजी जिणा नै जीव जोयो होवै नही जणा हज़र बचन दिया तरै गढ री पाळा थोत्री आदि।’

१ यह घटना महाराजा मारसिंह के राज्यकाल की है। वि० स० १८६६ (६ सन १८१२) में उमरकाट पर पुन टालपुरिया का अधिकार हा गया था।

महाराजा के जयपुर सवाई प्रतापसिंह की बहिन स शादी करन के लिये जाने, बरात मे चले सरदारो की खापानुसार मूची, मानसिंह द्वारा पाली सूटन आदि घटनाआ का हाल दिया है ।

भीमसिंह के राजलोक व सतिया की सूची तथा गुमानसिंह व विजयसिंह के कुवरा की विगत के साथ ख्यात समाप्त हो जाती है ।

ख्यात का अन्तिम भाग—

“१ मवरजी श्री मानसिंहजी समत १८३६ रा० सुद ११ दूतीक गुरुवार री जनम ।”

घटनाए क्रमबद्ध वर्णित की गई है जिनके सबत तिथि और वार इत्यादि भी अंकित है । मराठा का मारवाड म दखल आदि के इतिहास हेतु विशेष रूप से ख्यात उपयोगी है ।

ख्यात एक ही व्यक्ति के हाथ से लिखी गई है । ग्रथ पर चमडे का गत्ता चढा हुआ है ।

१४ अजीतसिंह अभयसिंह बखतसिंह री ख्यात

१ अजीतसिंह अभयसिंह बखतसिंह री ख्यात, २ जो० क० सग्रह ३ ५२ ४ ४० X ३४ सेमी०, ५ २५७, ६ १५२०, ७ १८वीं शताब्दी का उत्तरार्द्ध, ८ अनात, ९ राजस्थानी, देवनागरी, १० प्रस्तुत ख्यात मे जोधपुर के शासक महाराजा अजीतसिंह, अभयसिंह, रामसिंह व बखतसिंह की जीवन घटनाआ का विस्तृत वर्णन दिया है, जो अथवा १५८ जो० क० सग्रह से मिलता जुलता है ।

प्रारम्भ—

“महाराजा श्री अजीतसिंहजी समत १७३५ चैत वद ४ री जनम लाहौर मे हुवो समत १७३५ लगाय समत १७६३ ताई विपौ रेओ, जोधपुर अमल नै समत १७८० आसाढ सुद १३ बँकूठवास । समत १७३५ रा पोस वद १० महाराज जसवतसिंहजी देवलोक हुवा, पोस वद ११ राठीड रिणछोडदास मूरजमल सग्राम सिंह ।”

ग्रथ जोधपुर क इतिहास की दृष्टि से उपयोगी है ।

ग्रथ एक ही व्यक्ति के हाथ से लिखा गया है । लिखावट साधारण है । ग्रथ पर चपडे का गत्ता मढा हुआ है ।

१५ महाराजा तख्तसिंह की रियात

१ महाराजा तख्तसिंह की रियात, २ जो० क० संग्रह, ३ ११, ४ ५४ × १८ सेमी०, ५ ४२ ६ २५ २८, ७ २०वीं शताब्दी का प्रारम्भ, ८ अज्ञात ९ राजस्थानी, देवनागरी, १० प्रस्तुत ग्रन्थ में जोधपुर के शासक महाराजा तख्तसिंह के राज्यकाल की घटनाओं का विवरण लिपिबद्ध है। इन महाराजा के अतिरिक्त राजस्थानी रजवाड़ा के अग्र्य शासकों का ब्रिटिश अधिकारियों से मिलने इत्यादि घटनाएँ वर्णित हैं जो क्रमबद्ध नहीं हैं। कुछ राजाओं के सतर्क आदि का भी उल्लेख हुआ है।

प्रारम्भ—

“॥ श्री माताजी ॥

स० १६२७ रा सावण रा मास सू पात इण मे ।”

लिखावट घसीट में है सबसाधारण के पढ़ने में नहीं आती, पत्र लुप्त होने से ग्रन्थ अपूर्ण है।

ग्रन्थ महाराजा तख्तसिंह के इतिहास अध्ययन हेतु उपयोगी है।

१६ पुनीयात की रियात

१ पुनीयात की रियात आदि, २ जो० क० संग्रह, ३ १५, ४ ६६ × १७ सेमी०, ५ २६ (२० पत्र रिक्त), ६ २८-३०, ७ १९वीं शताब्दी का उत्तरार्ध, ८ अज्ञात, ९ राजस्थानी, देवनागरी, १० जाधपुर राजकवि के मरणोपरान्त पुण्याथ रूप्य दिये जाने वाले व्यक्तियों की सूची दी है।

प्रारम्भ—

“श्री जलधरनाथजी रिया छे

श्री बडा कवराजजी सा देवलोक् हुवा तरा पुनीयात रा इण मुजब आया रो विगत १६२१ रा मिंगसर म

११५३॥) कुल जमा इण मुजब आया

२००) श्री हजूर सायबा रा

२००) पोकरन ठापुरा रा बीरसाही अयेसाही

१३२) ६८)

बि० स० १६२३ म विभिन्न गावों का जो हामल जमा हुआ उसका म्यौरा भन्त में दिया है। उस समय उपज का छद्दा हिस्सा लिया जाता था।

ग्रन्थ में बहुत से पत्र रिक्त पड़ हैं। एक ओर चमड़े का गत्ता चढ़ा हुआ है। तत्कालीन धार्मिक भावनाओं और राजस्व सम्बन्धी जानकारी हेतु नामची उपयोगी है।

१७ जूनो रयात

१ जूनो रयात, २ जो० व० सग्रह, ३ ८४, ४ ३३ X २४ सेमी०, ५ ६०४ ६ १७ २१, ७ १६वीं गतादी का मध्य, ८ प्रगात, ९ राजस्थानी, देवनागरी, १० प्रस्तुत बहुदाकार ग्रन्थ राजपूत राजाओं एवं सरदारों, दादूपणिया, ब्राह्मणों, चारणा तथा दिल्ली के बादशाहों इत्यादि की ऐतिहासिक सामग्री का संग्रह एवं समृद्ध संग्रह है जो नणमी की रयात से काफी भिन्न है।

प्रारम्भ—

“श्री गणेशायनम अथ श्रीसादिया री बात पात लिपते—भाट मगड वागडी सोलकिया री पीळपात तिणनू कित्तराइव को रणिया देन राणो हमीर सोलकिया री बिरद मोल लियो आदि।”

यहाँ प्रत्येक कृति का विवरण प्रस्तुत करना बहुत समयमाध्य है अतः ग्रन्थ में मकलित महत्वपूर्ण कृतियों की सूची दी जा रही है—

१ वरवै छतीसी	२ बंद वचन
३ साधारण रयात	४ साधारण शास्त्र
५ देवलीया राणावतो री रयात	६ दिल्ली री पातसाहा री रयात
७ गोडा री रयात	८ गोहिला री रयात
९ चहुवाणा री भाणोजा री रयात	१० कायस्था री रयात
११ कदवाहा री रयात	१२ गड कोटा री रयात
१३, पवार-सोडा री रयात	१४ नगर प्रसंग
१५ दादूपणिया री रयात	१६ कृपावतो री रयात
१७ मेडतीया री रयात	१८ महेचा री रयात
१९ जोधपुर री रयात	२० सोलकिया री रयात
२१ वैष्णवो री रयात	२२ भालो री रयात
२३ हाडा, देवडा, चहुवाणो री रयात	२४ खीचियो री रयात
२५ परमारो री रयात	२६ बारे पथ जोगेश्वरो री रयात
२७ सयासिया री रयात	२८ जाडेचो री रयात

२६	राणावता की ख्यात	३०	वासवाता झुगरपुर रावता की ख्यात
३१	सेखावता की ख्यात	३२	पाटोदी के जोषा की ख्यात
३३	नामभेद निरणय (बाबोदाम वृत्त)	३४	बगदाद का खतिफा की ख्यात
३५	मंडतियो की ख्यात	३६	प्रथीराज रामो की ख्यात
३७	वाभेणा ख्यात	३८	दिसणु का राजाओ की ख्यात
३९	विमानगढ रूपनगर का राजाओ की ख्यात	४०	सिकन्दर की ख्यात
४१	वीकानेर राजाओ की ख्यात	४२	देव देवी प्रसंग
४३	चारणो की ख्यात	४४	पत्रिया का विरद
४५	किताबा की रिजक	४६	पातसाही उमराओ की ख्यात
४७	हकीमा की ख्यात	४८	सिध की ख्यात
४९	प्रस्ताविक दोहा	५०	वीर गीत कवित्त भाषि

इसमें कुछ एक ख्यात केवल एक आध पत्रों में ही लिखिबद्ध है तथा कुछ ख्यातों के अर्ध्याय ४५ पत्रों में भी वर्णित हैं। कहीं कहीं एक ख्यात से सम्बंधित २३ स्थलों पर विवरण प्राप्त है।

५१ जसलमेर की ख्यात -

इन उपयुक्त ख्यातों के बीच-बीच में भाटी शासकों का इतिहास लिखिबद्ध है, लिखावट के विराज भारयदानजी की प्रतीत होती है।

प्रारम्भ में जसलमेर राजघराने के सम्बन्धों की विगन का है। प्राग्विक राज चूडाला के उसके पुत्र देवराज के वृत्तांत में उनके द्वारा बरहिया को अपने पिता का वंश लेने, देरावर गढ का निर्माण करने तथा पवारा से सुद्रवा हस्तगत करने आदि घटनाएँ विस्तार से दी हैं।

एक स्थान पर जसलमेर में भाटी राजाओं के राज्याभिषेक की रस्म अदा करने का विवरण इस प्रकार दिया है—

"बाबा की आसण है जसलमेर में नैं सात आठ जोगी है उण आसण में रता रा बस रा रोज रूपयो पावै है नैं नित राबळजी के बभूत की तिलक कर है। रता बाबा की जायगा गढ उपर मोतीमहल के नीचे जसलु कुर्वे के बोडे (है)। जसलमेर राबळ गादी बँडे तरें आटा की अर मण की मुद्रावा काना में पहरे नैं भगमो (भगवी) चादर माये छोडे न हाथ में छडो लेवे नैं रता बाबा का जागी प्राय बभूत की तिलक कर पछे गादी बँडे तरें चेलक का भाटी सिरदार प्राय कूकू की तिलक करे पछे निबर

नीधराबळ करं जैसलमेर तवा राबळ गादी बेंठे तर सरस्ती हैं, रतन नाथजी न रती बाबो वहे छ।”

जायपुर के शासक जसवतसिंह (प्रथम) के राज्यकाल में राठौड़ों की जैसलमेर पर घटाई युद्ध में काम आने वाले भाटी सरदारा की सूची आदि, उस समय की घटनाओं का वृत्तांत दिया है। उपरोक्त कृतियों में राजपूतों की अनेक स्थापना का वृत्तांत है जो अत्यंत दुर्लभ है। इसी प्रकार सयासिया, धारणा, लाल-पधिया और सिध आदि की रूपांत भी अनेक नई सूचनाएँ देने में सक्षम हैं।

ग्रन्थ अनेक व्यक्तियों के हाथ से लिखा गया है, लिखावट माधारण है। जीएण बपटे का वृत्तांत मढ़ा हुआ है। पत्र हाथ के बने प्रतीत होते हैं।

१८ उपाध्यायों की रूपांत (उपाध्याय जसराज की तवारीख)

१ उपाध्यायों की रूपांत (उपाध्याय जसराज की तवारीख) २ एम० डी० एम० संग्रह, ३ , ४ ८" × ६" इंच, ५ ६०, ६ २०, ७ वि०स० १६७५, ई० सन् १६१८ जोधपुर, ८ उपाध्याय जसराज, ९ हिं दी, देवनागरी, १० इसमें जायसी के समय उपाध्याय गणपतदत्त द्वारा जोधपुर दुर्ग की नींव दिलवाने तथा उसका नाम मेरानगढ़ दिये जाने का उल्लेख है। तत्पश्चात् जोधपुर शहर के निर्माण का विवरण दिया है। अन्त में वि० स० १६७५ तक जो भी निर्माण काम इत्यादि हुआ उसका विवरण दिया गया है।

भवन निर्माण पर शोध करने वाले विचारियों के लिए यह सामग्री बड़ी उपयोगी है।

१९ लूकड हुवा तिण की खियात

१ लूकड हुवा तिण की खियात २ एम० डी० एम० संग्रह, ३ ४ बहीनुमा, ५ १, ६ १०० ७ वि० स० १६००, ई० सन् १८४३, ८ अज्ञात, ९ राजस्थानी, देवनागरी, १० इसमें ओसवाल जाति के लूकड गौत्र का संक्षिप्त इतिहास दिया है।

२० महाराजा अजितसिंह सू बखतसिंह तक की रूपांत

१ महाराजा अजितसिंह सू बखतसिंह तक की रूपांत, २ जो० क० संग्रह, ३ १५८, ४ ६६ × १७४ सेमी० (बहीनुमा), ५ १८२, ६ ८० ४५ ७ १८वीं शताब्दी का उत्तरार्ध, ८ अज्ञात, ९ राजस्थानी, देवनागरी, १०

प्रस्तुत ग्रंथ में जोधपुर के शासक महाराजा अजीतसिंह, अभयसिंह, रामसिंह और बलरामसिंह के राज्यकाल का विस्तृत विवरण दिया गया है।

प्रारम्भ—

‘महाराज श्री अजीतसिंह १७३५ रा चंद्र वद ४ री जनम १७६३ रा चत वद १३ जोधपुर गढ तियो सवत १७८० रा भासाढ मुद १३ देवलोक हुआ।

सवत १७३५ पौस वद १० महाराज जसवतसिंहजी पंसीर में देवलोक हुआ पौस वद ११ राठीड रिणछोडदास, मूरजमल सग्राम उदसिध दुरगदास पचीली अणदरूप रूघनाथ हरकिणन ।”

महाराजा जसवतसिंह की मृत्यु की घटना से क्यात प्रारम्भ हुई है। क्यात में अकिन वहुत सी घटनाएँ जोधपुर की क्यात से मिलती जुलती हैं, कुछ महत्वपूर्ण घटनाओं का विवरण-क्रम इस प्रकार है—

(१) जसवतसिंह की मृत्यु का दुखद समाचार भेजना और राठीडा द्वारा पशावर से जोधपुर यह भी लिख भेजने का उल्लेख है कि बादशाह का भेजा अमान विरोडी आ रहा है उसे किसी प्रकार क्षति नहीं पहुँचाई जाय और अग्रर जोधपुर नहीं दे ता सोजत व जंतारण के लिए आग्रह करना।

(२) जोधपुर में अनेक राठीडा क एकत्रित होने तथा खोजा अग्रर द्वारा बादशाह को महाराजा के यहां अधिक सम्पति होने की सूचना देने का उल्लेख है।

‘पोजो अग्रर कदोम श्री माराजाजी री चाकर यो न उजण रा मामला में दोलत घणी नेनं भागी सू पातसाहजी रं हजूरिया में चाकर यो उण नू पृष्ठीयो राजा रं साथ नं दोलत कीतरीक छं इण साथ ही घणी बतायो न दोलत ही घणी बताई नें रुपया सतावन करोड पाछला गाडीया बताया नू पानमाहीजी नू भरम हुवी पातसाहजी सद अबदुलो अमवार २५० या मुलक री पवर मेतियो।

(३) राठीड सरदारो का पेशावर से प्रस्थान, लाखेर में पहुँचने वहाँ अजीतसिंह व दल्यभ क जन्म होने, राघोदास द्वारा मेहता में नवाब को तथा जाधपुर में सरदारों को खुणसवरी सुनान के उपलक्ष में इनाम मिला उसकी विगत इस प्रकार दी है—

‘नवाब मेहता सू बूच कियो सू चत वद १२ गाव पालासणी डेर हुआ तठै लाहोर सू रेवारी राधो आयो नवाब राजी हुवी, रेवारी राधे नें म्होर एक न बादलाई पाध १ दीवी ताहरवेग फावडा २ दीवी।

हुवी

राघो जोधपुर आय बघाई दीवी, घणी उछाव हुवी धरती री श्रीर ही नूर

- | | |
|-----------------------|--------------------------|
| १ महेला री तरफ सू | १ मीया फरासत |
| २ फावडा ५० रोकडा रु | १० रोकड २ धाम |
| १ पचोली केसरीसिध | १ राठीड सोनग |
| १ मोहर एक २० रोकड | ऊठ १ दिवी |
| १ ऊठ | |
| १ राठीड अणुदसिध भिवोत | १ राठीड उदैसिध |
| ऊठ १ | रु० ३० |
| राठीड सगामसिध चापा | राठीड तेजसिध वरण दुरगावत |
| ऊठ १ | ऊठ १ |
| ऊहड भगवानदास | साहणी दाणीदास |
| ऊठ १ | ऊठ १ |
| भाटी रुघनाय सुरताणोत | भाटी राकूमकरगोत सोना री |
| १०० रोकड १ ऊठ | साकळी २० रोकड ऊठ |
- (४) बादशाह को गुश रखने हेतु राठीडो ने निम्नलिखित उपाय किये—
- “चैत सुद पातसाही नू राजी करण वासत इतरा थोक किया—
- १ जोधपुर मे पातसाही अमल करायो ।
 - २ फौजदार ताहरबेग तलेटी रा महला रापियो असवार २३० सू ।
 - ३ काजी हामद सिपाई ५० नै तोपची ५० सू ।
 - ४ वाकानवीस कोटवाळ रहीमपा ।
 - ५ क्यामपानी वीनदारपा असवार १००० सू सहर बारै मदद नू रेयी ।
 - ६ तोल ४२ कीयी ।
 - ७ दाणा टके रु० किया ।
 - ८ भाग दारू मने कीयी ।

(५) जोधपुर दुग की जाच करन व बुछ घन इत्यादि मिलने का उल्लेख इस प्रकार है—

“नवाब बहादरपा आपरी इतवारी आदमी न ताहरबेग ऊपर मेलियो तिणा फोठार सोधीया नै इण मुजब लायो—

१ सिद्धक जुहार री तथा गहणा री पासो १ रोकड रु० २१०००, ३२ कवाणा, बडुका २००० गोला, दारू, २७ तोपा बडी नै श्रीर ही ताजी वुसत थी सू

राठौड सप्रामसिंह अरज कीवी—म्ह नवाब री राह देयता था नै हमे निवाजबेग म्हांन लेण धायो छै सो दस्तक दो सो बहोर होवा, रजपूत भूया मरै छै सो कोई उपाय करसी, तरै नवाब समजियो दस्तक दीवो, महा सुद १३ भोम पाछली दिन घडी चार यो तरै बूच हुवो, पहलो डेरो कोस एव उपर हुवो, महा सुद १४ नवाब मीरया सोग मजावण रा मेलिया ६ उमरावा रै धिरमा १ भवा रा घूम १ गोठ री सरजाम ।

महा सुद १५ पानदोरा री सराय कोस ५ डेरा, फागण वद १ कोस ६ डेरा नवाब सैर फागण वद २ कोस ७ फागण वद ३ कोस ७ अटक नावा रै वास्त पधोली जैकरण नू दरोगा उडदबग बनै नावा र वासत मेलीयो सू नावा थोडी छोडी तर दूजै दिन राठौड सप्रामसिध जाय न नवाडो सारो ले धायो उडतबवग डेरै धायो थो । फागण वद ४ नै फागण वद ५ मूकाम सहाणी जोगीदास अबदार अया नू दस नू चलाया—लडाई करजो मती मुल्हा रापजी । फागण वद ७ कोस ४ मधूर डेरा, फागण वद ८ कोस ४ भोगर रै नाळ डेरा, फागण वद ६ कोस ५ हसन भवदाल डेरा राह म हसबल हुकम आयो निजबेग नै तिण म लियोयो—राठौड सूरजमल नू सीहनद था प्रागे ले आयो । श्रीजी रा फूल पीरोहित कल्याणदास पचोली जसिध साडुलात राठौड साथे रुपीया १००० परच नू दीना था । फागण वद १० कोस ७ परबूजा री सराय डेरा फागण वद ११ भोम मूकाम नीवाजबेग री सराय नै काले पाणी रयात रै पचोली जैकरण नू मनावण मेलीयो थो तरै न आयो, पछै फागण वद १२ मुकाम राठौड सप्रामसिंह मनाय ले आया आपरै डेर रापीया । फागण वद १३ कोस ७ पालडो डेरा, वद १४ तथा कोस ७ खेत री सराय, फागण सुद १ कोस ८ पके सराय, फागुण सुद २ कास ८ गा(खड) ताल श्रीजी रै उमरावा नू फरमान आयो दिलासा री, फागुण सुद ३ कास ६ रोहीतास ग(ड), फागुण सुद ४ मेह हुवो मू पाचम ताई मूकाम रैबारी राधो साथ रुपीया १२८ गोरदिल्ल मैलिया था सू दन आसका प्रसाद ले आयो । फागुण सुद ५ कोस ५ नदी बहत डेरा, फागुण सुद ७ परीयारी सराहि, घाठम मुकाम फागुण सुद ६ कोस १० दोला री गुजरात, दसम मूकाम, फागुण सुद ११ कोस ५ उजीरावाद डेरा, फागण सुद १२ कोस ७ तलोली डेरा, फागुण सुद १४ कोस ६ नवी री सराय होली री सास्तर कीयो, फागुण सुद १५ कोस ८ लाहोर हवेली मे डेरा हुवा इतरी साथ लसकर मे थो तिणरी विगत—

सिरदार—

१ राठौड सूरजमल नाहपानोत आसोप री धरी, पटो ६० ४००००

१ राठौड सप्रामसिध जू जारसिधोत आउवा री, पटो २८०००

ले गया नँ दहरा आडी भीत चुणाई लसकर रा लोक नँ सहर म जावण दियो नही, नवाब अहुत अनीत कीवी ।”

(६) बादशाह ने जब किशनगढ़ प्रस्थान किया तब इन्द्रसिंह द्वारा १०० मोहरों व १००० रुपये बादशाह को भेंट किये जाने का उल्लेख है ।

(७) बादशाह द्वारा अटक पार करने का दस्तक भेजने तथा राठौड़ सरदार पेशावर से लाहौर और लाहौर से दिल्ली जिस माग से आये उनका विवरण दिया है साथ ही लाहौर में उपस्थित सरदारों इत्यादि की सूची दी है । सरदारों के बादशाह से दिल्ली में मिलने, राजकुवरो के लिए जोधपुर राज्य की माग करने, बादशाह द्वारा केवल सोजत व जंतारण देने, सरदारों को यह नामजूर होना, बाद की ओर से इन्द्रसिंह को जोधपुर का राज्य मिलने, महाराजा जसवर्तसिंह का हवेली खाली कर सरदारों के रूपसिंह भारमलोत की हवेली में डेरे डालने तथा उस समय उपस्थित सरदारों की सूची इत्यादि घटनाओं का वृत्तान्त दिया है जो स्यात में इस प्रकार लिपिबद्ध है—

१ लसकर री तरफ री हकीकत -

‘महाराजा जसवर्तसिंघजी देवलोक हुवा री पबर पातसाहजी न डाक चौकिया पोहती तरै फरमान लिपीयो—सोजत जतारण बहाल छै महाराज रँ बेटो हुसी तरै जोधपुर देसा । अटक उतरण री दस्तक नँ रु० २००००) बीस हजार रा दिया तिणरी सनद देनै पीसोर नँ आदमी रवानै किया तरै मीरपा रँ भाई रोहिलापा मू अरज पोहचाई, मीरपा पहाड में छ नँ राजा रो लोक उरो भावसी तो पठान फिसाद करसी जीण उपरै गुरजवरदार दीठायो मारग में दस्तक हुयँ तो पीछी ल भावसी गुरजवरदार येठ पीसोर में महा वद १४ आयी, अटक उतरण री दस्तक पाछो ले गयो, तरै पातसाही गुरजवरदार मू ईतराज हुय दूर कीयो महा वद १० पीसोर में फुरमान आयी तिण मू सगळा साथ म कुसी हुई । महा वद ५ मीरपा काबल मू पीसोर आयी श्रीजी रा उमराव कोस दोय सामा गया तर घणी दिलासा दीयो नँ हकीकत पूछी, पधोली हरराय जमरोद र घाणै यो सो श्रीजी री बाबी हुयो तोई नही आयी नँ मीरपा आयी पध महा सुद ८ न आयी, महा सुद १० री हितसगढ री फौजदार निवाजबग पाचसदी यो तिणनू हजरतो री हुकम आयी नू जाय नँ राजा रा सोबा नू लेन आवजे गो निवाजबग मीरपा नू बह्यो—अटक री दस्तक दो मू मीरपा दिवै नही तर निवाजबग श्रीजी रा उमराव नू बह्यो—ये नबाब रँ मुजरँ भावो न गाड करी जू दस्तक देवे, तरै सारा मीरपा रँ मुजरँ गया नँ

राठोड सग्रामसिंह अरज कीर्षी—म्ह नवाब री राह देषता था नै हमे निवाजवेग म्हान लेण आयी छ सो दस्तक दो सी वहीर होवा, रजपूत भूपा मरै छ सो कोई उपाव करसी, तरै नवाब समजियो दस्तक दीवी, महा सुद १३ भोम पाछलो दिन घडी चार थो तरै कूच हुवो, पहलो डेरी कोस एक उपर हुवो, महा सुद १४ नवाब मीरथा सोग भजावण रा मेलिया ६ उमरावा रै धिरमा १ मेवा रा पूम १ गाठ री सरजाम ।

महा सुद १५ पानदोरा री सराय कोस ५ डेरा, फागण वद १ कोस ६ डेरा नवाब सर फागण वद २ कोस ७ , फागण वद ३ कोस ७ अटक नावा रै वास्तै पचोली जैकरण नू दरोगा उडदवग बन नावा र वासते मेलीयो सू नावा घाडी छोडी तरै दूजै दिन राठोड सग्रामसिंह जाय नै नवाडो सारी ले आयी उडतकवेग डेरै आयी थी । फागण वद ४ नै फागण वद ५ मूकाम सहाणी, जोगीदास अबदार अथा नू देस नू चलाया—लडाई करजो मती सुल्हा रापजो । फागण वद ७ कोस ४ मधर डेरा, फागण वद ८ कोस ४ भीगर रै नाळे डेरा, फागण वद ६ कोस ५ हसन भवदाल डेरा राह मे हसबल हुकम आयी निजरवेग नै तिण मे लिथीयो—राठोड सूरजमल नू सीहनद था प्रागे ले आयी । श्रीजी रा फूल पीरोहित बल्याणदास पचोली जसिंध सादुलोत राठोड साथे रूपीया १००० परच नू दीना था । फागण वद १० कोस ७ परबूजा री सराय डेरा फागण वद ११ भोम मूकाम नीवाजवेग री सराय नै काले पाणी रयात रै पचोली जैकरण नू मनावण मेलीयो थो तरै न आयी, पछै फागण वद १२ मुकाम राठोड सग्रामसिंह मनाय ले आया आपरै डेरै रापीया । फागण वद १३ कोस ७ पालडी डेरा, वद १४ तथा कोस ७ खेत री सराय, फागण सुद १ कोस ८ पंके सराय, फागुण सुद २ कास ८ गा(खड) ताल श्रीजी रै उमरावा नू फरमान आयी दिलासा री, फागुण सुद ३ कोस ६ रोहीतास ग(ड), फागुण सुद ४ मेह हुवी सू पाचम ताई मूकाम रवारी राधो साथे रूपीया १२८ गोरदिल मेलिया था सू देनै आसका प्रसाद ले आयी । फागुण सुद ५ कोस ५ नदी बहत डेरा, फागुण सुद ७ धरीयारी सराहि, आठम मुकाम फागुण सुद ६ कोस १० दोला री गुजरात, दसम मूकाम, फागुण सुद ११ कोस ५ उजीरावाद डेरा, फागण सुद १२ कोस ७ तलोली डेरा, फागुण सुद १४ कोस ६ नवी री सराय होली री सास्तर कीयो, फागुण सुद १५ कोस ८ लाहौर हवेली मे डेरा हुवा इतरी साथ लसकर मे थो तिणरी बिगत—

सिरदार—

१ राठोड सूरजमल नाहपानोत आसोप री घणी, पटो ६० ४००००

१ राठोड सग्रामसिंध जू जारसिधोत आउवा री, पटो २८०००

- १ राठौड़ चन्द्रसेण सबलसिंघोत पोरकरण री पटो ४००००
- १ राठौड़ रिणछोडदास गोइददासोत पेरवा री पटो ३००००
- १ राठौड़ प्रतापसिंघ देवकरणोत बगडी री पटो २५०००
- १ राठौड़ उदैसिंघ लपघीरोत पटे पाली २५०००
- १ रावल हरीदास महेसदासोत मेहवा री २२०००
- १ रावल केसरी भारमलोत बापरे बदळे आपो महेवो २२२५०
- १ राठौड़ स्यामो सूजाणसिंघोत लवाद पटो २००००
- १ राठौड़ वीठलदास बीहारीदासोत कुडकी पटो २००००
- १ राठौड़ मोहकमसिंघ जगतसिंघोत वलू दौ पटो २०००० री
- १ राठौड़ वीठलदास गोकलदासोत आलणीयावास पटो १७०००
- १ राठौड़ दुरगदास आसावत भुवण पटो १७०००
- १ राठौड़ अणराज उदावत वीठारो पटो १६०००
- १ राठौड़ भारमल दलपतोत उदावत पटो १२०००
- १ राठौड़ अनोपसिंघ अजबसिंघोत बाती पटो ६० १४०००
- १ राठौड़ मुकदसिंघ गोरघनोत जोधो सेणी रेय १३००० री
- १ राठौड़ जू आरसिंह राजसिंघोत कूपावत रजलाणी रेय ८०००० री
- १ राठौड़ भोवसिंघ गिरधरदासोत चापावत पटे गगूरडी १००००
- १ राठौड़ हरनाथ भोवोत नै जसकरण हरीसिंघोत करमसोत पटे पीवसर ६० १६०००
- १ राठौड़ सबलसिंघ किशनसिंघोत कूपावत पटे कटाळियो १२०००
- १ राठौड़ चद्रभान द्वारवादासोत जोधो पटे पाचलो रेय ६०००
- १ राठौड़ अचलसिंघ जाकरणोत जोधो पटो गयो
- १ राठौड़ हरीसिंघ मोहकमसिंघोत चादावत रेय ७०००
- १ राठौड़ हरीसिंघ महेसदासोत चापावत पटे विराणी ५०००
- १ राठौड़ महेसदास नाहरपानोत रेय ६०००
- १ राठौड़ करमसेण भाधोदासोत कूपावत पटो राणावास रेय ७०००
- १ राठौड़ सिवदान वीठलदासोत चापावत पटे हरीयाढाणी १२०००
- १ राठौड़ विजयसिंघ मोहणदासोत पटे मेहवचो थोभ ६०००
- १ राठौड़ हीदुसिंघ सूजाणसिंघोत पटे नाहरसर रेय ८०००
- १ राठौड़ इद्रमाण उदैभाणात जैतावत पटे माढो रेय ६००० री
- १ राठौड़ हरनाथ केसोदासोत रेय ६०००

- १ भाटी जैसिध रामोत पट गाव रामपुरी रेप रु० १५००० री
 १ भाटी भीव रुधनाघोत
 १ भाटी उदैमाण केसरीसिधोत पट पजडला रप ८००० री
 १ मूरजमल नरहरदासोत रप ५०००
 १ भाटी सक्तसिध हरदासोत रप ५०००
 १ उहड अणराज जगनाघोत पटे गाव वाघावास रेप रु० ६०००
 १ गाड सग्रामसिध हिरदैनारायणोत रेप १०००० री
 १ लिपमीदास नाथावत पाप मडला रेप ५००० री
 १ व ११ जगतसिध विजमिघोत पट गाव अलतवी रेप ६००० री
 १ राठीड तुलछीदास मेघराजोत तोग भेले पेटीयौ वारगीर पावतो
 १ व ११ बिसनदास माघोदासात वाप रेप रुपीया ५००० री
 १ दिपणी अलीपा पट गाव बूडपीयो ३००० अर घणौ पावतो
 १ मिरजी बेहरवर अजमेरी पारो देस री सीप कर नै गया थो सो हजूर रा
 साथ मेलो पवर सूणी तरै पूठे आयौ वडौ चाकर थो मास १ रा
 रु० ७०० पावतो
 १ धारट भासो नाथावत चारण
 १ साडू मूरजमल नाथावत चारण
 १ केसरीसिधोत भीवोत चारण
 १ जोखू जैसो
 १ मडलो केसरीसिध करणात भोजासर री

४६ कामदार

- १ पचोली हरकीसन रामचदोत दिवाण थो
 १ पचोली रुधनाथ विहारीबसेत पानसामा थो
 १ पचोली हरीदास राघोदासोत
 १ पचोली अणदरूप करणोत
 १ पचोली जगनाथ रामचदोत
 १ पचोली हरकरण गोरधनोत
 १ पचोली जचद अखेराजोत
 १ पचोली जैवरण भगवानदासोत
 १ पचोली मुरलीधर टीकमदास री
 १ पचोली सबलसिध

- १ पचाला सीवराम कचरदासोत
- १ पचोली पचाइणदाम तीलोचदोत
- १ पचोली जगतराइ बलूजी रो
- १ पचोली हरराई दुलीचदोत चौकीनवेस
- १ पचोली जैराम जादोराय रो कानूगो
- १ पचोली दीनानाथ वछराज रो
- १ पचोली आणदराम दुलीचदोत
- १ पचोली जैराम अणेरजोत
- १ पचोली जगजीवणदास
- १ पचोली गोकलदास
- १ पचोली वसतराय घोडा रो मुसरक
- १ पचोली दीनानाथ जगजीवणदासात
- १ पचोली उदैकरण दपतर लिप
- १ पचोली गगाराम भीवाणी जात रो
- १ पचोली अजबसिध मुदरसिघोत
- १ पचोली सोभाचद
- १ सिधवी सूरदास प्रतापमलोत
- १ मडारी भगवानदास
- १ मडारी लालचद
- १ मूहथो भगवानदास रोकड रो दपतर लिखतो
- १ वेद राम राई
- १ भयो मुक्कनदास गोपालदासात
- १ कलो जीवण नै माडो
- १ पचोली जाल्पदास
- १ पचोली जैसिध मादुलोत
- १ पचोली आईदान दपतर लिख
- १ पचोली बाल्मुक्कनरूपजी रो
- १ पचोनी ताराचद
- १ पचोली उदैसिध
- १ पचोली गोपीनाथ तीपुगदास रो
- १ सिधवी मोहणदास प्रतापमलोत

- १ मडारी पतसी
- १ मुहतो अयो बीजावत
- १ मुहतो भगवान सीराहीयो
- १ कवाड देईदास
- १ वेद सामदास
- १ वेद लछाराम
- १ मूकीम मोहादास

३६ घास पासवान

- १ घासल उदकरण बीडा गगाजल धरोगाव
- १ आसाईच भागचद कोठार वागा रं
- १ गेहलोत जुगराज ढालवदार
- १ सा ११ उदैकरण
- १ पीची उदैकरण नीसाण तोगरी झालतो
- १ गेलोत चाघो ढालवदार
- १ घासन रघनाथ
- १ आसायच भारमल
- १ सा ११ राम
- १ घासल जसो
- १ पीची मुकनदास कलावत तरवार बघाव
- १ पवार नारायणदास सूदापाने
- १ गुजर लपमण मयापात्र
- १ सा ११ जगनाथ
- १ गुजर उदकरण
- १ पीची सीवराम
- १ आसाईच दुघी
- १ खबदार अयो
- १ घासल जगनाथ रसोडे
- १ घासल स्वाम
- १ घासल मुकददास
- १ घाधू दलो
- १ स ११ दयालदास

- १ गुजर गिरधर दोडो पासो
 १ वानर डूगरसी
 १ पलाणियो मनो
 १ पल्हाणियो भाटी बाली
 १ जादम पीपी महमदाग री
 १ वाघेला नरो
 १ गुजर बिसनदास वणीदास री
 १ पघार विठलदास
 १ पलाणियो भेरू
 १ नथमल राघादासोत सजवाने
 १ स ११ रूघनाथ
 १ जोगीदास कुसलावत मोदीपान
 १ वेसोदास भगवान री
 १ पलाणियो जोगी
 १ वानर चतुरभुज
 १ वानर देईदास

२२ विरामण रा साथ

- १ व्यास लिपमीचद द्रोणाचारज रो देरासर पटे गाव आगोळ्ढाई
 १ व्यास जगरूप मुरारदास री पजानी जोहारपानो हवालें
 १ जोसी गगाराम वसता री
 १ जोसी ब्रिदावन काह री
 १ जोसी गगाधर सिवराम री
 १ प्रोहित कल्याण
 १ बी० जोगेश्वर
 १ सुवल भानीदास
 १ जोसी धनो अयो कल्याण
 १ पाठक
 १ व्यास मुघरादास वेद
 १ फरसी निरपो गणेश री
 १ मु० ११ भागचद चोतरा री पोतो
 १ तिरवाढी बलराम काह री

- १ जोसी लालो सतीदास री
 १ स ११ लखो किसोर व्यास कलो जरजरपाणा री
 १ त्रिवाडी दयादेव सुपदेव चुनभुज
 १ जो १ मुरलीधर विद्रावन रा
 १ जो १ रामसिध
 १ चूरा धडीयाली हरदत धरणीधर
 १ त्रिवाडी रिणछाड पोकर री

३१ हीडागर

- १ राठीड देईदास हजूरीया री दरोगो
 १ राठीड भोजो भारावरदार
 १ ईर्दी गोकल परात री रीटी दव वरकंदाजा मे
 १ नथू नगारपाने
 १ अघोलीया हरनाथ तारतपाने
 १ चीतारी नगी वदर री
 १ पेस रुपीदरपान
 १ जलेबदार चादसाह मिरधीव मेर
 १ हरनाथ दाडी पासी
 १ घोधी मोटो
 १ गोड भगवान तोपपाने
 १ कबूतरवाज साह मेहमद
 १ जलेबदार मीयासाह
 १ चो रूपो मोहण री पासी दोडी
 १ चीतारी नारण बाधाबत
 १ छडीदार मीरधी मान तूलै
 १ जलेबदार मीरधी पीरपा डूगर दोडी बेसै
 १ दरजी काहो कला री
 १ चीतारो करीम
 १ सेंगवेला
 १ छडीदार अली मेहमद
 १ प ११ नारायणदास धोडी पासी
 १ वेद अपी दाडी सुघारै

- १ चीतारो नाथी
 १ ग ११ कलौ रतासी रो
 १ छडीदार पान महमद
 १ गरण हरावत पासी दोढी
 १ वेद दानो बीतो करतो
 १ तबोळी दलो
 १ स ११ जीलसी भोजायत
 १ डूगर दोढी वसे
 १ वजि लोव
 १ वधिलो नख गाव वधोला रो वासणी
 १ वा ११ देईदास गावती
 १ पु ११ बीठलदास
 १ वापेलो भगवान सेउद रो
 १ वा० डूगरसी गावेती
 १ मागलिपो वाघो गावेती
 १ गोड काहो चोया रो
 १ पडीयार रूपो पेता रो
 १ पीची भागचद
 १ घाईमाई गिरघर
 १ चो ११ रामो नारायण रो
 १ बस कल्याण भगवान रो
 १ व ११ चुत्रमुज
 १ पीची नरसिंघ गावेती
 १ तीवडकीयो केसोदास बल्लू रो गावेती
 १ वानर रामचंद्र
 १ कल्याण बीरदास रो
 १ व ११ हरीदास रो
 १ पचोली भानीदास भोजा रो
 १ चे ११ रिणछोड गोपाल रो
 १ चे ११ जगनाम बदा रो
 १ पचोली ठाकुरसी करमसी

- १ बे ११ रामा नारण रो
- १ तू ११ गिरघर ईसर रो
- १ दो ११ दुरगो रामदास रो
- १ पढीयार आसो वीका रो
- १ गोड राघो राम रो
- १ सोळपी रुघनाथ
- १ लपजी भीगी रो मारग म सूबो

११ मुसलमान हाजर

- १ दिलदार बेग दिली मे गयो
- १ हसन बेग पेसोर मे गयो
- १ सेर दिल बेग
- १ वहादर बेग
- १ म मारव
- १ मूस की नाजर
- १ ईलत फात पाजी
- १ उमेद पोजो
- १ माकूल पोजी
- १ साही बषा मिसरी रो
- १ मुराद बेग मुरतारण बेग रो

५ पढदार

- १ केमरषा
- १ मुरादपा
- १ नसीरषा
- १ सबाज
- १ ताज

५ नार्डक

- १ हबीब या पीलची
- १ लतीफ महमद
- १ जीवरण साहीबषा
- १ सूरजपान नरो
- १ लालू पीवा रो

पिसोर मू भावता पागण गुद १५ ताहोर ह्वेलो डेरा हुवा नरुकीजी र कवर होण री आमद हुई जीण मू मुमाम सीमा चैत वद ४ बुधवार पाछनी रात घडी ७ की तिण वेळा राणीजी जादमजी र कवर महाराज अजीतसिधजी तत मासीया जनमिया सिंयासी रिषसिध पुरी हरराम पुरी रो चेतो अक्कपय ही गुलाजजी रा हुवम या गोरणटी ले हुव न ममन १७३५ रा भादवा वद ६ पसोर मे भायो ।

राठौड दुरगदासजी माये श्री जी नू कह्यो—मोनू हुकम है हू धार पेट जनम लेसू मानू माटी दिरावो, निये दरसण नू भावो सू दरसण नू तो पिडा न गया न दुरगदासजी न मलिया सो धणो उछाध सू रिषसिध पुरीजी न समाध दिराई दुरगदासजी ने बेयो जादमजी र पेट भासू बभूत रो गोडो पोधी माळा सू पीछे च माग लेसू । महाराज अजीतसिधजी जनमीया पद्य घडी १ पल ४० सू नरुकीजी र कवर दलधभणजी हुवा नोवत बाजी, देस न बघाई देण सार रेवारी राधो गोरधने न मलिया चैत वद ५ पगलीया चारी तुलछा साये भेलिया कासीदा री जोडी पानसाहजी री हजूर मली मीरया वन सग्रामसिधजी रा कासीद भेलिया ।

जनम हुवा री भुजाई हुई तिणरी विगत

वाट	गुळ	धृत	
११	८	६	चैत वद ५ वीसपतवार हजूर री तरफ सू
१४॥	८॥	६	वद ६ मुकर जादमजी री तरफ सू
१५	८॥	६	चैत वद ७ सनिवार नरुकीजी री तरफ सू
१२	८॥	५	चैत वद ८ राठौड सूरजमलजी री तरफ सू
१२	८॥	५	चैत वद १० राठौड प्रतापकरण देवकरणोत री तरफ सू
१२॥	७॥	५	चैत वद १२ राठौड उदैसिध लपधिरोत री तरफ सू
१३	८॥	५॥	चैत वद ६ राठौड रिणछोडदास गोयददासोत री तरफ सू

तरं फुरमायो मुहम राजी छै परब मत कीजा म्है जाधपुर राजा रा बेटा नै देसा

सोनत, जतारण वगरा महाराज रा उमरावा कबूत नही कीया तरं पातसाहजी फुरमायो राजा गे हसम न पजानो सभळायी तर पचोली कंसरोसिध पजानो हसम सभळायो न कामत बराई पचोली रुपनाथ विहारीदासोत पानसामा घो साई कंसरोसिध रं नामल पातसाही कचेडी म मताह समलाय कीमत कराथ नै मू पता पचोली कंसरोसिध उठै हीज रहनो कपडा जूहार हाथी, घाडा, ऊट, तापा, कबाण, गाडीया, वगरे बारपाना मारा सभळायी, दबसधाना रा गाडा सभळायी, जगनाथ रामचदोत काजी मू बात वणाय धायी मारवाड रा परगना राजाजी रा बेटा न सगळा हो दबो नै छईम लाय २० २६०००००० म्है पसकसी रा दसा तिण न महारो माल पूगो हुवै सू मुजरं दणो बात वण गई थी डेरे प्राय नै जगनाथ बात कीवी, सो पचोली रुपनाथ पानसामा घो तिण रं दाय नही आई ना राजी न केम जायो म्है इण बात म नही छा जगनाथ रो क्या मत मानजी तर बात बणी नही । पछं देस रो दौलत रो भरम केमरोसिध न बतयो तर दौलत रो बूचल हई पातसाहजी रं दिवाण नह्यो—दस रा नै लसकर रा मारा कामदार हजूर लावा सो जाप आपरो जुवाव कर तर कंसरोसिध बहयो सारो हो मुदो मालया मोत्र था सो सारा म्हारा हुकमी था पूछमो जिण रो जवाव हू देसू बात सू सिधवी मझारी मुहणोत, मुहता, व्यास सारा रो छटको हुवो (मुक्त हुए) कंसरोसिध न कै* कीयो, सिधवी मु दरदास इद्रसिधजी रो मारफत पातसाहजी सू मिळ गयो घो माल बतयो, उमरावा मुतसदीया मू भगडिया यो दिन २५ पचीस कंसरोसिध बंद म रेयो तसती दिपाई तिण मू जेठ मुद २ जेहर पाय मूवो, तरं कामदार उकीला सूधा नाम गया । वगम सासतपा बहादुरपा मोपळी धरज कीवी पिण पानसाहजी मजूर न कीवी नै महरवान हाथ राव धमरसिधजी रा पोता राजाई इद्रसिध रायसिधोत ने दुतिक जेठ बंद १२ सोम जोधपुर इनायत कीयो । हाथी, घाडा, सोना रो सापत मू सिरपाव मोतिया रो जोडी पुणचीया रो जोडी, मोतिया रो माळा दुगदुगी, तरवार, पजर, नोबत इनायत कीया दिली रो हवेली म महाराज नसबतसिधजी रो साथ हो त्या नू दुबम पोहोतो हवेली पाली कर दबो तरं हवेली पाली बर दीवी नै राजा रूपसिध भारमलोत बिसनगढ रा रो हवती म जाय रह्या ।

महाराज नसबतसिधजी रो इतरो साथ दिली म राठीड रूपसिध भारमलोत रा हवती मे थका सबत १७३६ रा सावण बंद ३ ताई ।

या मुजरा कीयो मोर १ रुपीया ६ निजर रा दीया हकीकत पूछी दिलासा दीवी ।
 वैसाप सुद ५ सनवादली सू नूच कर दिन घडी १८ चढता दिली म हवली दापल
 हुवा वैसाप सुद ७ साम दसरी साथ भाटी रुघनायसिध पचोली कसरीसिध बगर
 वादरपा रा बेटा नवसरीपा साथ आया सू राजा र तळाव डेरा जुदा कीया, दस रो
 साथ सुद १३ कवरा रै पग लागो, बिसाप सुद १३ रिब (रविवार) बहादुरपा र
 बेटे दस रा साथ रा नू पातसाहजी री हजूर ले गया लाल कठेहडा म मूजरो कीयो
 घडी ११ जावी ताई १ वसाप १४ देसरा नै लसकर रा सगळा उमराव मुजरे गया
 जणा दस आम पास मे गया न जणा २ राठीड रिणछाडदास नै सूरजमल नव
 आम पास म बुलाय न सिरपाव दिया । ल्हसकर रो न देस रो साथ नला नामान
 सू घणी कूसीस नू दिली मे दारु चवडे पीवै ने अछक थका रव न बडरा रा साथ
 पातसाहजी र आव पास मूजर जाव, दीवाण वपसी बा मातूल पातसाही अमलीईजारे
 भळे मेथी राठीड रिणछाडदास सूरजमल दुरगदास बगर सारा असतपा दीवाणा ने
 सिरबिलदपा वपसी रै हमसा जावता सू इणा ने एक दिन कहया—पातसाहजी सोजत
 जतारण राजा रा बटा नू देव छ मा असवार ५०० पाचस सू हजूर री चाकरी
 करी न राजा रा बडा उमराव है त्या नू जूदा मुनसब तमा सो आ बात रजपूता
 मजूर नही कीवी, कह्यो—जिनगी ही दवा मो राजाजी रा बटा न दवो म्हे सगळा
 बाट पास नै राजा रा बेटा रा चाकर थका पातसाह री हुकम होसी तठ चाकरी
 करसा ओ मचकूर घणा दिन रह्यो महाराज रा उमरावा बहादुरपा न अजमर
 लिपीयो थे महामू कोल करने उतरा थोक कबूल कराया था नू अठ तो आ मूरत
 छै, माहसू कोल कीयो थो महाराज र बटा हुवा जोधपुर देसा तर नवाव बहादुरपा
 पातसाहजी नै अरज लीयो जसवतमिघजी रा बेटा नै जोधपुर दिरायो चाहीज म्हे
 तो हजरत रा फुरमावण सू इणा नू वचन दीयो था सू हजरत इणा न जोधपुर
 नही देसो ता हू मनसब छोड देसू हुकम हुवी तो हजूर आय मालम बरू तर
 पातसाहजी जठ सुद ४ कावलीपा नू फुरमायो बहादुरपा नै लिपी उठ होज रहै
 तरै काबिलीखा अरज करी बहादुरपा दलगीर होसी दिपण नू सोबा छोड उरो
 आयो था नू मनसब छोड उरो आवसी घणी केयो तर फुरमाया बहादुरपा नै
 लिपी छोडे हाथ हजूर आव जठ सुद ५ फरमाण चलयो सा दुतिक जेठ ब ११
 बहादुरपा दोली प्राय हजरत र पगा लागी पातसाहजी जोधपुर दण री अरज मजूर
 नही करी ।

राजा धनूपसिध करणीसिधात बीकानर रा राजा मानसिध रूपसिधोत राजा
 रमासिध रतनात इणा रा उकीला जोधपुर दि(रावण) सा(रू) अरज कीवी

तरे फुरमायो मुहम साजी वै परच मत कीजा म्है जापपुर राजा रा बटा नै दना

सोजत जैतारण बगैरा महाराज रा उमरावा कबून नही कीया तर पातसाहजी फुरमायो राजा रो हसम न पजानो सभळावो, तरै पचोली केसरीसिध पजानो हसम सभळावो नै कामत कराइ पचोली रुघनाथ विहारोदासोत पानसामा थो सोई केसरीसिध र नामल पातसाहो कचेडी मे भताह समलाय कीमत कराय न मू पता पचोली कसरीसिध उठै होज रहतो थपडा जूहार हाथी घोडा, उट, तापा, चवाण, गाडीया, बगरे चारपाना मारा सभळाया स्वस्थाना रा गाडा सभळाया, जगनाथ रामचदोत काजो मू वात वणाय धायो मारवाड रा परगना राजाजी रा बटा नै सगळा हो देवो नै द्राइम लाप ५० २६०००००० म्है पसकसी रा देसा त्रिए म महारो माल पूगे हुनै मू मुजरै दणो बात वण गई थी, डेरे आय न जगनाथ वात कीवो, सो पचोली रुघनाथ पानसामा थो तिण र दाय नही आई मा काजो न केय जायो म्हे रण वात म नही छा जगनाथ रो कया मत मानजो तर बात वणी नही । पछे देम री दौलत रो भरम केनरीसिध न वतायो तर दौलत रो तूचल हुइ पातसाहजी रै दिवाण बहो—देस रा नै लसकर रा सारा कामदार हजूर लावा सो जाप आपरो जुबाव कर तरै कसरीसिध कहयो सारो ही मुदो मालका मानू थो सो सारा म्हारा हुकमी था पूछमो जिण रो जवाव हू देसू वात मू सिधवो, मडारो मुहणोत मुहता व्यास सारा रो छटका हुवो (मुक्त हुए) केसरीसिध न कैद कीयो, सिधवा मु दरदास इन्द्रसिधजी रो मारफत पातसाहजी मू मिळ गयो था माल बतायो, उमरावा मुत्सदीया मू भगडियो थो दिन २५ पचीस केसरीसिध कद म रेयो तसती दिपाई तिण मू जेठ सुद २ जेहर पाय मूवो, तरै कामदार उकीला सुधा नास गया । वेनम सासतपा बहादुरया मोपळी घरज कीवी पिए पानसाहजी मजूर न कीवी नै महरवान हाय राव धर्मरसिधजी रा पोता राजाई इन्द्रसिध रायसिधात न दुतिक जेठ बद १२ सोम जोधपुर इनायत कीयो । हाथी, घोडा, सोना रो सापत मू सिरपाव मोतिया री जोडी पुणचीया री जोडी, मोतिया री माळा दुग्दुगी, तरवार फजर, नौबत इनायत कीया दिली री हवेली म महाराज जसवतसिधजी री साथ हो त्या नू हुकम पोहोतो हवेली पाली कर देवो तरै हवेली पाली कर दीवी नै राजा रूपसिध भारमलोत किसनगढ रा री हवेली म जाय रहया ।

महाराज जसवतसिधजी री इतरो माथ दिली म राठोड रूपसिध भारमलोत रा हवेली मे थका सबत १७३६ रा सावण बद ३ ताई ।

६० राजस्थान के इतिहासिक ग्रामों का सर्वेक्षण, भाग-३

८१८ सिरदार

पिडा	जसवार	ग्रामनाम
१७	२२५	लसनर रा साथ रा
४	६०	घाप कूपावत
१	६०	राठौड गूरजमल नाहरपाणोत
१	८	राठौड भूजारसिध राजसिधात काम घायी
१	६	राठौड महमदास नाहरपानात काम घायी
१	६	राठौड हिंदुसिध मुजाणसिधात काम आयी
१	०	राठौड मोहनदास धनराजात काम घायी
<hr/>		
४	६०	
३	५६	घाप जोधा
१	३०	रिणछाडदास गोइन्दासोत पातसाही चाक हुवी पछ काम घायी
१	२०	बीठलदास बीहारीदासात काम घायी
१	६	चंद्रभाण द्वारकादासोत पगारोत गांव सानहरी लडाई म काम घायी
<hr/>		
३	५६	
२	२८	घाप मेडतिया
१	२०	मोहकमसिध जगतसिधोत घायल हुवा
१	८	स्यामसिध मुजाणसिधोत मीत मूवी तिण रो साथ यो
<hr/>		
२	२८	
१	१२	घाप उदावत
१	१२	भारमल दलपतोत काम घायी
१	१७	घाप करणोत
१	१७	दुरगदास आसकरनोत घावा पडोया
१	४	घाप मडला लिपमोदास नाथावत काम घायी
१	७	घाप उहुड अणराज जगनाथोत

४	३८	पाप नाटी
१	१५	जसिध रामोत बदल सावण वद १ गयो
१	१०	नीव रुघनाथोत सावण वद १ गयो
१	८	उदभाण केसरोसिध काम आयी
१	५	सकतसिध हरदासोत काम आयी
<hr/>		
४	३८	
१७	२२५	जुमले २४२
१०७	८६६	देसरा साप रा
पिडा	घसवार	आसामी
६	३५	पाप कूपावत
१	१०	रुघनाथ गोरघनात
१	१२	महासिध जमिघोत काम आयी
१	५	पडगसिध फतसिघोत
१	४	मोहणदास धनराजोत
१	३	जतसिध हमीरोत
१	१	चुतरो भावसिघोत
<hr/>		
६	३५	
६	३०	पाप चापावत
१	१६	रुघो राजसिघात
१	५	महासिध केसरोसिघोत
१	१	महासिध जोगीदासोत
१	३	कल्याणसिध रुघनाथोत
१	४	नाहरपान मुयरादासोत काम आयी घोडो वारगीर पावती
<hr/>		
६	३०	
१३	६१	पाप जोधा
१	८	अपेराज हिरदनारायणोत
१	७	उदभाण रुघनाथोत
१	५	भूभारसिध कुसलसिघोत

६२ राजस्थान के पतिहासिक ग्रन्थों का वर्णन, भाग ३

१	५	श्री भाग्यसरोजिणीयात गगनरोष नाम प्रायो
१	६	महाविष जगन्नाथात नाम प्रायो
१	६	जगतविष तरनात नाम प्रायो
१	४	ईदाम हरणात
१	५	त्रिषीराज वानुवात
१	६	दीप वसादागोत नाम प्रायो
१	५	त्रिषीराज वीरमदयात नाम प्रायो
१	४	रामसिध स्यामसिधात नाम प्रायो
१	४	जोगीदास कल्याणदासात
१	२	द्वन्द्वभाण हिरदनारायणात
१३	६१	

११	६५	पाप सेइत्या
१	१०	भापरसिध गापालदासात
१	१७	वीठलदास गोरघनात
१	६	पीरागदास दूगरसीयोन
१	५	लाडपानगो कलाणदासात
१	५	चुनमुज विजसिपोत
१	५	किसनसिध वादरसिपोत काम प्रायो
१	६	नाया दईदासात
१	४	भीव वसरपानोत काम प्रायो
१	३	भीव करणोत
१	१	नूरसिध द्वारकादासात
१	१	जगरूप भीवोत
११	६५	

१३	६८	पाप उदावत
१	३०	रूपसि
१	६	गो
१	५	साद
१	५	रघना

१	३	आसकरण वाघोत काम आयी
१	३	जमू अजबसिधोत काम आयी
१	३	किसनराम मू दरदासोत
१	२	फरमराम मूरजमलोत
१	२	भिव साहिबपानात
१	२	कहीराम मूरदासोत
१	१	स्यामदास मनोहरदासोत
१	१	मानसिध जगमालोत
१	५	गौरधन मनरामोत काम आयी

१३ ६८

३	३	पाप करनोत
१	१	भोव राधोगासोत
१	१	दलपत राधादासान
१	१	बलू जसिधोत

३ ३

७	२२	पाप जतमाल
१	४	मूकददास पतसियोत
१	५	भेरुदास पतसियात काम आयी
१	५	सुरताज अमरावत
१	३	जोगीदास जसवतोत
१	२	पूरमल ठाकुरसीयोत
१	२	जगतसिध सेहसमलोत
१	२	डूगरसि लाडपानोत काम आयी

७ २२

६	१४	पाप पातावत
१	३	जोधो भगवानदासोत
१	३	राजसिध ईसरदासोत काम आयी
१	२	गौरधन जगनाथोत

१	२	अमरनाथ गोरधनाथ
१	७	हमराज नादरामात घामाड़ मुद १४ गयो
१	२	नाहरपान तजमाता
<hr/>		
६	१४	
३	५	पाप मडला
१	७	उदसिध दईदाता
१	२	नेमरोसिध तरणोत
१	१	मपराज हरीदामात
<hr/>		
३	५	
१	१	राठीड कुसलसिध सबलसिधोत नरी प्रसाड मुद १४ गयो
१	७	राठीड मू दरगस हरीदामात भाजराजोत काम आयी
१	३	राठीड रूपकल्याणदास ने नारमलोत
१	७	राठीड भोजराज जगमालोत वीदावत
१	२	राठीड परबतसिध सहवाणपानोत पुरवीयो
३३	१०७	पाप भाटी
१	३८	रघनाथ सुरताणोत काम आयी
१	३	अपराज रघनाथोत
१	४	नारायणदास मूजावत
१	३	भिरधरदास हरदासोत काम आयी
१	३	किसनदास भीवात
१	३	अनद साहुलात
१	३	द्वारकादास भाणोत काम आयी
१	३	साहाबपान भिवोत
१	३	राजसिध मोहणदामोत
१	३	गोईददास नाहरपानोत
१	३	राईसिध मोहणदासोत
१	३	सबलसिध फरसदामोत
१	३	जगनाथ विठलदासोत काम आयी—हजूरीया म
१	२	भावसिध द्वारकादासोत

१	२	उरजन भीघोत
१	२	करण मानसिघोत
१	२	रतनसौ माधादासोत
१	३	केसरीसिध फरसुरामोत
१	२	सबलसिध घासकरणोत आसाठ वद २ गयो
१	२	मनाहरदास उदसिघोत
१	२	गोरधन लपमीदासोत
१	२	स्यामसिध सुदरदामात
१	२	जोगीदास नरहरदासोत
१	१	पीथो पूरावत
१	१	सकतसिध कल्याणदामात काम आयी
१	१	द्वारकादास मानसिघोत
१	१	अपरराज जगनाथोत
१	१	सिधदास नरसिधदासोत
१	१	नाहरपान दयालदासात
१	१	हेमराज नरावत गयो
१	१	धनराज बीवावत काम आयी
१	१	जोगीदास करमसोत
<hr/>		
३३	१०७	
१	३५	भालो भावसिध रायसिघोत रोईठ रो पटो राणा पदवी थो
<hr/>		
१०७	४६६	
<hr/>		
१२४	६६४	जुमले ८१८

४३ फुटकर राजपूत वेस रा साथ माहला

पीडा	ग्रसवार	
१	१	वेस रामचद जगमालोत ऊठ चढण नू
१	१	सापलो मनी हररूपस्योत सावण वद २ गयो
१	४	चू ग फतेसिध पिथीराजोत
१	२	सोनगरी विठलदासोत दुरगदासोत
१	३	चगे मुरारदास हरीदासोत

६६ राजस्थान के ऐतिहासिक ग्रंथों का सर्वेक्षण, भाग ३

१	२	चौधरी प्रणराज कल्याणदासोत काम आयी
१	२	म ११ पीरागदास नतस्यात
१	२	म ११ पारधीराज दयालदासात
१	३	क ११ योद्रावन दवकरणोत
१	१	हुल मुन्कारसिध भानीसात नावण वद २ गयी
१	१	हु ११ सादुलसिध राधादासात
१	१	हु ११ जंतसी सावण वद २ गयी
१	१	गौड तूसला
१	१	पतस्यात नाथी नरहरदासोत
१	१	पतस्यात बीजा बलुवात
१	१	पीपाडा दलपत आसावत

१६ २७ जुमले ४३

११ चारण लसकर रा साथ माहला

पिडा असवार

१	२	साहू सूरजमल नाथावत पकणाणो सू पछ सूआ
१	२	दस रा नाथ माहला
१	२	चारण ईसर
१	१	साहू जोगीदास
१	१	विठु गोविन्द माधावत

४ ७ ११

१ मीया फरासत पोजो देस रा साथ माहला

१५ कामदार वारगीर सिरकार सू पावे

१० फाईथ

२ लसकर रा नाथ माहला—

१ पचोली पचायणदास तिलाकचदोत

१ पचोली जगतराय बलुवोत

१ पचोली हरराई हुलीचदोत काम आयी

१ पचोली अनदराम हुलीचद

१ पचोली मुरलीधर तीकमदासोत

- १ पचोली सबलसिध गगारामात सावण वद १ गयो
 १ पचोली जगजीवनदास गोरधनात सावण वद १ गयो
 १ पचोली उदैवरण गारधनात सावण वद १ गयो

२ देस रा माहला

- १ पचोली सिवदान विहारीदासो
 १ पचोली सिन्ध्यादास

२

५ बांणीया कामवार

३ लसकर साय रा

- १ नडारी भगवानदान रायमलोत नडारी
 १ नडारी लालचन्द मुपमलोत
 १ मुहता नगवानदास कीतावत सावण वद १ गयो

३

२ देस रा साय माहला

- १ सिधवी नथमल मुपमल रो घसाढ़ म गयो
 १ काठारी सिंहमल मोदीपान रो

२

३ फुटकर

- १ लसकर साय माहला
 १ मुहता भयो बीभावत ऊट चढण नू सावण वद २ गयो
 २ देस रा साय माहला
 १ मुहता बिसनदास केसोदासोत काम आयो
 १ मुहता धनराज भूजावत

२

१४ ब्राह्मण रो साय चारगोर पाव

- ६ लसकर रा साय माहला
 १ व्यास लिपमीचद द्रोणाचारज रो
 १ व्यास जगरूप मुरारदास रो गहणी ले गयो

- १ त्रिवाडी बलराम कान्हू रो
 १ जोसी लालो सतीदास रो
 १ जोसी गगाराम बसता रो
 १ जोसी गगावर सिवराम रो मोहल रो चाकर
 १ चुरा हरदत्त गोरधन रो
 १ छागणी फरसो गणेश रा निरपो
 १ मु ११ भागचद पिराग रो सावण वद १ गयो

६

५ देस रा साथ माहला

- १ व्यास श्री पत नाथावत सावण वद २ गयो
 १ सो १ लपो भलू रो
 १ से ११ केसो
 १ जोसी विद्रावन कल्याण रो
 १ छागणी देवजी मादीपान चाकर

५

१५ पवास पासवान वारगीर पाव

५ लसकर रा साथ माहला

- १ गहलात बाघो मनाहर रो ढाला रो वार हवाल
 १ साहणी उदैकरसतागा रो
 १ अबदार अपो राधा रो असाढ सुद २ गयो
 १ सोभावत जामीदास कुसलावत मोदीपानो हवाल दोढो हवाल
 की असाढ सुद २ पाभडी मोडाई
 १ धाधीया भेरू आनद रो पलाणीयो वारगार पाव

१० देस रा साथ माहला

- १ आसाईच जगनाथ जसावत भागचद गयो तर वागा रो कोठार
 सू पीया थो असाढ सुद २ गयो
 १ पीची सुदरदास घर रो घोडो रापती, मुकुददास गयो
 तर तरवारा रो कोठार सूपीयो थो असाढ सुद ८ गयो ।

- २ ढाला रो कार हवालें
 १ गेहलोत धनराज शूतरा रो
 १ गहलोत बीठलदास माधो रो

२

- १ पोची नरसिंघ सलेपान
 १ सहाणा जोगीदास आणुदात

२ फौजदार

- १ मधराज जगावत
 १ रामचंद जगावत

२

- १ भददार चूहाण सादो सादुल रो
 १ धा लू हरदास उरजन रो

१०

१५

६ चौधड महीनदार गावेती बारगोर पावे

दस रा साथ माहला

- १ देवराज वरसिंघ परबतोत महीनदार
 १ मागलियो भापत कमावत कोठार रा पोहराईत सावण बंद १ गयो
 १ म ११ सामो माधा रो ईसर रो कोठार चौकी
 १ मागलियो चदो कान रो गाव बरु रो कोठार चौकी
 १ राठीड भावसिंघ उदावत बेठवासियो महीनदार
 १ राठीड फतेहसिंह गोरषनोत राणावत घर रो ऊट धो पछे घोडो
 बारगोर भाटी रुघनायजी दिराया

६

१० रवारी ऊट वागोर

देस रा साथ माहला

- १ राधो रामदास रो

७० राजस्थान के इतिहासिक ग्रन्थों का सर्वेक्षण, भाग-३

- १ तेजो रायसिंह रासावत
- १ सूरजो देवो वीरम रौ
- १ जसो नित्तावत
- १ मुरताण नोज भाभर रौ
- १ देईदान वेरसल सागावत
- १ राघो दिदावत ऊट २ ले गयो भसाड सुद १०
- १ राणो
- १ आनद हीगोला रौ
- १ कू भो पाता रौ

१०

- १५ मुसलमान वारगीर पावे
- ८ लसकर रा साय माहला
- ५ पोजा
- १ ममारथ
- १ मुसकी
- १ इलफत
- १ उमद
- १ माकूल

५

- १ दिलदार वेग हज़ूर मया रौ चाकर
- २ पडदार छडीदार
- १ पडदार सेहवाज नाईया रौ
- १ पडदार नसीर केसर रौ

२

- ७ दस रा साय माहला
- १ अलेवरदी अवदाल रौ
- १ दलेल दिल
- १ सीदी नालब
- १ पीदरपा वसरू

१ वेग महमद

२ छडीदार

१ यामत तुलो घर री घोडो

१ अली मेहमद घर री घोडो

२

७

५ हीडागर वारगीर पावे

१ लसकर रा साथ माहला

१ गोड भगवान चोय रा तोपपाने

४ दस रा साथ माहला

१ अनद सामदास रा तबोलपान

१ भ ११ धनो सिलेपान पासो बगतर जापोडो लिय हालतो

१ चे ११ तेजा केसा रा सिलेपाने

१ चं ११ जेता केसा री

४

४१ वरकदाज वागीर घोडा चढ़

८ लसकर रा साथ माहला

१ तु ११ गिरधर ईसर री

१ गोड का हो चोथा री

१ भाटी वील्हो

१ नायक जीवण साहवपा री

१ वेहलीम चाद समसपा री

१ पडदार ताज मेहमद पूब महमद री

१ बानर देईदास

१ बानर रामचद

८

३३ देस रा साथ माहला

१ राठीड सुंदर रायपाल री

७२ राजस्थान के ऐतिहासिक ग्रन्थों का सर्वेक्षण, भाग-३

- १ म ११ बहादुर
- १ राठौड़ जीवो नारायण री
- १ दहीयो रिणछोड
- १ पीची बीजो
- १ घाघोलियो कमो सादा री
- १ इनायतपा पीदरपा री
- १ तुळछी
- १ मीर हुसैन कासमीरी
- १ पवार करमसी
- १ चे ११ मनाहर
- १ मू ११ जूठो वाधा री
- १ सापलो ग्रनद
- १ पचोली राजसी
- १ पडीहार जगनाथ
- १ पवार जोधो
- १ द ११ सेपो
- १ भायलईसर
- १ लसकर री अबदाळ वेग री
- १ हयातपा साहिबपा री
- १ मिरजो चाद
- १ सप जलाल
- १ उहड जीवो
- १ पडीहार जोधो
- १ आहडो वली लीपमीदास री
- १ तू वर रुधौ
- १ सापलो तेजो

६ नार्दिक

- १ लाडसा चादसा री
- १ सलेमान मुलतान री
- १ सादुलो अबदुला री
- १ दोस मेहमद दाउद री

१ केसरया सेषर री

१ सिकदर मुरताण री

६

३३

४१

(कुल) ११७

(८) हवेली से मुकददास पीची के साथ दोना राजकुवरो को गुम रूप से निकालने तथा सिरोही जाते समय रास्ते में दलघम की मृत्यु का उल्लेख है।

(९) बालक अजीतसिंघ को जयदेव नामक ब्राह्मण को सौंपने का उल्लेख इस प्रकार है—

“ गाव कालदरी में पुसकरणो विरामण जैदेव रहे सो वही मातबर नै उण रै लुगाई पिण बडी पत भरता (पति भक्त) सो जदेवजी नै सारी हकीकत कहने अजीतसिंघजी ने सू पीया (अजीतसिंघको) जदेवजी री बहू जापरो दूध पाय मोटा किया।

(१०) शाही सेना का वि० स० १७३५ श्रावण सुदि ३ को राठीडो पर आक्रमण होने, जसवंतसिंघ की रानियों का भरदाने कपडे पहिन लडकर मर मिटने तथा अनेक राठीड सरदारो क मारे जाने का उल्लेख है।

(११) छोटी छोटी टुकडिया में विभक्त राठीड सरदारो द्वारा मेडता, सिवाना तथा जोधपुर पर अधिकार करने पर बादशाह के चिंतित होने, तहूव्वहखा द्वारा पुष्कर में उदावत व मेडतिया राठीडा के साथ वि० स० १७३६ माह वदि ११ युद्ध होने का उल्लेख है युद्ध में लडे राठीड सरदारो की सूची दी है।

(१२) इद्रसिंह का जोधपुर किले में प्रवेश होने इत्यादि घटनाओं का विवरण इस प्रकार दिया है—

‘संवत् १७३६ रा भादवा सुद ७ मंगलवार तीजा पोहर रा घणो जलूस पा महाराज इ द्रसिंहजी जोधपुर गढ चढिया नीबत बाजी इद्रसिंहजी इतरा थोक किया देहरा पडाया, गाया बद्धुई गढ म्हेल पाडोया, दिपण दिसा ने मुरज री तरफ दोडी कीवी, सिणगार चौकी छोटी कीवी, जोधपुर र लागे वने दोय बार करने रुपिया ३७००० लीना, श्री आणदधनजी ठाकुरजी ने घन रे लालच

- १ म ११ वहा
 १ राठौड जीव
 १ दहीयो रिण
 १ पीची बीजो
 १ आधोलियो
 १ इनायतपा प
 १ तुळछी
 १ मीर हुसैन व
 १ पवार करमस
 १ चे ११ मनोह
 १ मू ११ जूठो
 १ सापलो अनद
 १ पचोली राजस
 १ पडीहार जगना
 १ पवार जोधो
 १ दे ११ सेपो
 १ भायलईसर
 १ लसकर री अबद
 १ हयातपा साहिबपा
 १ मिरजो चाद
 १ सेप जलाल
 १ उहड जीवो
 १ पडीहार जोधो
 १ आहडो बलो लीपमोदा
 १ तू वर रूषी
 १ सापलो तेजो

६ नाईक

- १ लाडसा चादसा री
 १ सलेमान सुलतान री
 १ सादुलो अबदुला री
 १ दोस मेहमद दाउद री

अकबर के भागने, दुर्गादास द्वारा उसके परिवार के भरण-पोषण हेतु कुछ धन देकर राठौड़ रथनाथ, पचोली जगनाथ इत्यादि को वाग्भर रखने का उल्लेख है।

(१८) मारवाड़ में राठौड़ सरदारों द्वारा उपद्रव करने, अजीतसिंह का सिंघाने पर अधिकार होना, विलाडे में उपद्रव करने, बीजापुर में शाही सेना को परास्त करना, बीजापुर अजीतसिंह का जालार पर अधिकार हाने तथा विभिन्न युद्धों में मारे गये तथा घायल हुए योद्धाओं की सूची भी अंकित है।

(१९) दुर्गादास के दक्षिण में अकबर के साथ अनेक युद्धों में भाग लेने, फिर मुकददास खीची के सदस्य भेजे जाने पर अकबर से विदा होकर दुर्गादास के मारवाड़ में आने, अजीतसिंह को प्रकट करने का उल्लेख है।

(२०) महाराजा के राजा गजसिंह देवलिया प्रतापसिंह जसलमेर रावल अमरसिंह, चौहान फतसिंह चौहान, चतुरभुज तथा चौहान महसमल के यहाँ आदिवा करने का उल्लेख है।

(२१) अजीतसिंह ने राज्यभिषेक के समय कुछ दस्तूर आदि किये जाने का उल्लेख इस प्रकार है—

“चैत वद १३ घड़ी ५ दिन चढीया वडे जलूस सू नौबत बाजता महाराज गढ वापल हुआ। गढ री कागरो पाघ रा पला सू भाडियो चत सुद १ वावड तूरज पधारिया नै सारो कोट दीठी महाराजा सहर माहै सू घुडला नै गवर मगाई देपी तिणा नू एक एक रूपीयो दियो देवस्थान श्री ठाकुरजी श्री महादेवजी श्री माताजी विराजिया पूजा झालर घटा बाजा सा बाजिया।”

(२२) महाराजा द्वारा विद्रोहियों को दण्ड इत्यादि देने तथा विसे में सेवा करने वाले सरदारों को प्रमुख ओहदों पर नियुक्त करने का उल्लेख है।

(२३) राठौड़ उरजनसिंह प्रतापसिंहों द्वारा नकली दलथभ (राजकुमार) बना कर बादशाह के पास ले जाने, वहाँ पर उनको किसी प्रकार की मायता नहीं मिलने, महाराजा द्वारा वि० स० १७६४ आसाढ सुदि ११ को नकली राजकुमार इत्यादि को भरवाने तथा इस अभियान में भाग लेने वाले विभिन्न सरदारों को १० रुपये से लेकर ४०० रुपये के इनाम दिये जाने की एक सूची दी है।

(२४) अजीतसिंह और बहादुरशाह (सन् १७०७ ई० से सन् १७१२ ई०) की सेनाओं के बीच हुए अनेक छोट मोटे युद्धों का वृत्तांत है।

सू नागौर ले गया, माताजी श्री नागणोचौजी की मूर्त नागौर पोहचाई जवाहर रौ डाबी (डिब्बा) व्याम जगरूप रै हवाल थो सू लीयी, राव जोधाजी र हात रौ पाडी थो सू लीया, फेर ही कोठार स नाळ नै धणी बसता नागौर पहु चाई ।

इन अमहनीय कार्यों से राठौड सरदारा की भावनाओं को बाधात पहुचाने का उल्लेख है ।

(१३) श्रीरगजेव का दिल्ली स अजमेर क लिए प्रस्थान व इन्द्रसिंह का अजमेर म बादशाह से मिलना तथा बादशाह को खुश करन हेतु भाटी राम का मरवाने इत्यादि घटनाओं का उल्लेख है—

“महाराज इन्द्रसिंहजी भाटी राम कू पावत नै पटा रौ उमदवार कर दया सू रापीपी, पातसाहजी रौ हजूर १७ माथा उमरावा मलणा कबूल किया था त्या म ओहीज हाथ प्रापी प्रधान साहिबपा जोधपुर म राठौड किसनसिंह कंसरीसिधोत पोस बढ ८ भाटी राम रा डेरा उपर मलिया गोळीया बाही तर भाटी राम रौ साथ तो कपडा धोवण गयी थो न राम एकलो वो राम पोत घाटी चढीयी उधाडी तरवार कर किसनसिंह राठौड सामी दौडियी सू गाळा तार सू राम नू मारियी माथा काट पातसाहजी रौ हजूर मेलियो ।”

(१४) राठौड दुर्गादास श्रीर सोनग द्वारा वि० स० १७३६ ज्येष्ठ वदि १० को बिलाडा धरन, घोडे और ऊट इत्यादि लूटन तत्पश्चात् ज्येष्ठ सुदि १० जाधपुर आने फिर ओसिया क खेतासर ग्राम मे ज्येष्ठ सुदि १४ को इन्द्रसिंह व अजीतसिंह की सेनाओं म युद्ध होन, दोनो ओर से मार गये योद्धाओं की नामावली इत्यादि लिपिवद्ध है ।

इस युद्ध म इन्द्रसिंह के हार जान और पुन जाधपुर लौटने का उल्लेख है ।

(१५) जोधपुर के आस-पास अनेक छुट पुट राठौडों द्वारा उपद्रव करने तथा शाही सेना व मवाड क राणा राजसिंह के बीच युद्ध हान का विवरण दिया है ।

(१६) शाहजादे अकबर का मारवाड म आने अनेक छाटे-मोटे राठौडों स युद्ध करने, राठौडों द्वारा तत्वरखा के माध्यम स अकबर को अपना ओर करने, राम खोड म अकबर के राज्याभिषेक के समय सरदारा को मनसब, लिताब आदि लाने का उल्लेख है ।

(१७) अकबर के राठौडों से मिल जान पर औरगजेव व चिन्तित होन औरगजेव व अकबर क बीच युद्ध कूटनीतिज्ञता से औरगजेव के विजयी होन

अकबर के भागने, दुर्गादास द्वारा उसके परिवार के भरण-पोषण हेतु कुछ धन देकर राठौड़ रघनाथ, पचाली जगनाथ इत्यादि को बाडमर रखने का उल्लेख है।

(१८) मारवाड़ में राठौड़ सरदारों द्वारा उपद्रव करने, अजीतसिंह का सिवान पर अधिकार हान, दिलाडे में उपद्रव करने, बीजापुर में शाही सना को परास्त करने, बीजापुर अजीतसिंह का जालोर पर अधिकार होने तथा विभिन्न युद्धों में मार गये तथा घायल हुए योद्धाओं की सूची भी प्रकृत है।

(१९) दुर्गादास के दक्षिण में अकबर के साथ अनेक युद्धों में भाग लेने, फिर मुकददास खीची के सदागं भेज जाने पर अकबर से विदा होकर दुर्गादास के मारवाड़ में आने, अजीतसिंह को प्रकट करने का उल्लेख है।

(२०) महाराजा के राजा गजसिंह, देवलिया प्रतापसिंह जसलमेर रावल अमरसिंह, चौहान फतेसिंह चौहान, चतुरमुज तथा चौहान महेसमल के यहाँ आदिया करने का उल्लेख है।

(२१) अजीतसिंह के राज्यभिषेक के समय कुछ दस्त्र आदि किये जाने का उल्लेख इस प्रकार है—

“चैत वद १३ घड़ी ५ दिन चढ़ीया वडे जलूस सू नीवल बाजता महाराज गढ दापल हुआ। गढ री बागरी पाघ रा पला सू आडियो चत सुद १ चावड वूरज पधारिया नै सारो कोट दीठो महाराजा सहर माहै सू घुडला न गवर मगाई देपी तिणा नू एक एक रुपीयो दियो देवस्थान श्री ठाकुरनी श्री महादेवजी श्री माताजी विराजिया पूजा आलर घटा बाजा सा बाजिया।”

(२२) महाराजा द्वारा विद्रोहियों को दण्ड इत्यादि देने तथा विश्वे में सेवा करने वाले सरदारों को प्रमुख मोहदों पर नियुक्त करने का उल्लेख है।

(२३) राठौड़ उरजनसिंह प्रतापसिंहों द्वारा नकली दलखन (राजकुमार) बना कर बादशाह के पास ले जाने, वहाँ पर उनको किसी प्रकार की मायता नहीं मिलने, महाराजा द्वारा वि० सं० १७६४ आसाढ सुदि ११ को नकली राजकुमार इत्यादि को भरणे तथा इस अभियान में भाग लेने वाले विभिन्न सरदारों को १० रुपये से लेकर ४०० रुपये के इनाम दिये जाने की एक सूची दी है।

(२४) अजीतसिंह और बहादुरसाह (सन् १७०७ ई० से सन् १७१२ ई०) की सेनाओं के बीच हुए अनेक छोटे मोटे युद्धों का वृत्तान्त है।

७६ राजस्थान क एतिहासिक ग्रन्थ का सर्वेक्षण, भाग ३

(२५) अजीतसिंह अमर नरस मवाई जयसिंह तथा उदमपुर महाराज अमरसिंह के प्रमत्न से शाही सनाजा का परास्त करन का उल्लेख है।

(२६) अजीतसिंह और जयसिंह क अजमेर क पास बादशाह से मिलन अजीतसिंह द्वारा माहरे व रुपय जादि नेंट करने तथा बादशाह द्वारा अजीतसिंह को मनसब आदि देने का उल्लेख।

(२७) अनदसिंह द्वारा नागसोचिया दबी का रुपय आदि नजर कर इद्रसिंह क पुत्रा को महाराजा के समक्ष ले जान, महाराजा अजीतसिंह द्वारा उह सिरपाव आदि देने का वतात इस प्रकार है—

‘पछ श्री आनदसिंहजी श्री नागसोचियाजी से सवा हथणी १, घाडा २, रुपिया एक लाख १००००० निजर कर राव इद्रसिंहजी बेटा पोता न ले पाव लागे कबरा नै सिरपाव दिया नागोर कूच कियो नागोर पधारता गाव लूटिया घोडे म हजार मण धान यो सो लियो।

नागार सु इद्रसिंहजी रा कबर दाय सो घाडा सु जोधपुर आया महा सुद २ असवारी म मसुरिया भापर कने पावा लागे गढ म जाय राज लोगे रे पाव लागे दिन च्यार रिया नै सिरपाव दिया।”

(२८) एक स्थान पर अक्षराज की पुत्री द्वारा तुलादान करन का विवरण इस प्रकार है—

“पोस सुद ७ माजी दवडीजी राव अक्षराज से बटी तुलाव कीवी सूरसागर रा मेहला म महाराज न महाराज न राज लाक सारा सूरसागर ही था १०८ गाया न रुप(या) दिन पनर पहेला विरामणा नै दीया था १ तुलाव बैठा रूपा से एक

४००० तुलिया रु०

१००० महाराज ओर मेलिया

७०० राज लोक साथे था तथा धालिया

१ तुलाव छब बीजी हुई—

१ सपत धान से

१ तिल से

१ कपडा से

१ लवण से

१ फिरत से

१ पाड चौणी से’

(२९) मझरी विठलदास क यहाँ महाराजा क भाजनादि करने तथा रुपय आदि नजर करने का विवरण इस प्रकार है—

“फागण वद १० मडारी विठलदास र घर श्री महाराज पधारिया न अरोगीया पहले दिन विठलदास नै तिरपाव ईनायत किया, श्रीजी रै मडारी विठलदासजी ६० ४६००० निजर किया तिका रो विगत—३१०० रोकड २००० कपडा निजर कीयो १३००० मोदिया मारुं दिया ।

श्री महाराज वीठलदास न हयणी १ राव इन्द्रसिंहजी निजर कीवी सु ईनायत कीवी सो मडारी रै घर मुई (मरी) पीळ मे गडाई ।”

(३०) वि० सं० १७६४ म विभिन्न ओहदो पर नियुक्त अधिकारिया की एक सूची देकर उमरावा की सूची दी ह ।

यथा—

- १ परधान राठीड मुकददास मुजाणसिघात पाप चादावत झाईदानोत पट पाली ।
- १ दिवाण मडारी विठलदास भगवानदासोत ।
- १ बपसी पचोली हरकिसन रामचदोत ।
- १ श्री हजूर रै दफतर दरोगो पिची सीवराम कल्याणदासोत मुकददास रो भाई ।
- १ दोडीदार गुजर बिजराम ग्रहीर ।
- १ पान सोमा प्रोहित रिणछाड जदेवोत ।
- १ मास पदवी व्यास दीपचद बालकीसन रो ।
- १ सिकदार सोभावत दयालदास वैणीदासात ।
- १ राजगुर प्राहित अपराज गाव तिवरी रो ।
- १ बारहठ केसरीसिंह ।
- १ मडत हाकम मडारी नारायणदास ।
- १ जतारण हाकम मडारी दयकरण जगनाथोत कू पावत ।

(३१) जाधा मुजानसिंह केसरीसिघोत न अजीतसिंह के विखे साथ नही दिया उसके पुत्रो को चूक से मरवाने का वत्तात इस प्रकार है—

‘जोधा मुजानसिंह केसरीसिघात पिसागण जुनीया रो धणी अजीतसिंह रा विषा मे पातसाही चाकर—सोजत सिवाणो पायो, महाराजा रा रजपूतो सू केई लडाई कीवी, मुजाणसिंहजी र एक हयणी छोटी थी सो महाराजा अजीतसिंहजी विषा म बालक यका था तर मगाई सो दीवी नही न कह्यो—मडता मे हाथी कुमारा रै चोपा हुवै छ सो मगाय नै रमो (खेलो) सो सबत १७६६ मुजाणसिंह रा

बड़ा करणसिंघ जु झारसिंघ नै जोधपुर बुलाय जेठ सुद १ रात आधी रा
सिरपाव दे विदा कीया नै हट भेरुजी रा तेहपाना उपर नै मारग री बार साता नै
पावडिया उबा रापीया तिणा चूक कर मारिया ।'
चूक करने वाले प्रमुख ६ सरदारों के नाम भी दिये हैं।

(३२) अजीतसिंह द्वारा इन्द्रसिंह के पुत्र मोहकमसिंह को मरवाने पर
(वि० सं० १७७०) फरुखसियर के नाराज होने का उल्लेख है। अजीतसिंह को
बादशाह से गुजरात का सूबा नहीं मिलने तथा अजीतसिंह द्वारा उपद्रव करने पर
फरुखसियर व महाराजा के बीच मनमुटाव होने पर हुसन अलीखा द्वारा विज्ञान
शाही सना लेकर अजमेर मड़ता के गांव इत्यादि लूटने का उल्लेख है।

(३३) मडारी खीवसी को दीवान नियुक्त करने तथा हुत्तेन प्रलोखा वे
सिंघ की बातचीत करने हेतु खीवसी को भेजने का वृत्तांत इस प्रकार है—
पछे मडारी पीवसी नै नवाब हुसन अलीपा कर्न मडते बात करण सारू
मेलियो सो इण तर ठहराई इदर कवर बाई नै पातसाह नै परणावणा न यटा री
सोबो कबूल कीयो न कवरजी अवसिंघजी न पातसाह बन चाकरी म रापणा -
नवाब री मडते सू चूक करायो न साथ कु बरजी अर्नसिंघजी नै मलिया सा"
मडारी पीवसी नै मेलियो ।"

(३४) आग अजीतसिंह द्वारा बनाये गये भवन निर्माण आदि कार्यों का
विवरण दिया है।

(३५) महाराजा द्वारा बादशाह फरुखसियर को मरवाने का वृत्तांत इस
प्रकार राजस्थानी भाषा में दिया है—

'सईदा अरज कराइ तोपपाना री दरोगाई नै लाल किला री किलादारी
माने बपसावो तो मारा दिल री पटको मिटे तरै तोपपाने री दरोगाई नै लाल किला
री किलादारी सईदा नै इनायत कीवी तरै अजीतसिंहजी बादशाह न पकडल
री विचार कियो सबत १७७६ रा फागण सुद १० नवाब अबदुलाया नै, हुसनअलीपा
कोटा रा हाडो भीवसिंघजी रूपनगर री राजा राजसिंघजी बगेरा दिवाण आम मे
जा बँटा नै पातसाहजी न पवर पहुँची सो जनाना म जाय यटा न नाजर र साथे
फुला री माळ्या महाराज अजीतसिंघजी नै मली जिण म रुको मेलियो—तिथियो
महारी पातसाहो नै ज्ञान धार दीवी रेवे इण बपत रो एसान भूलसू नहीं ।
नीवसिंहजी - महाराजा सू अरज कीवी पातसाह नै बचावो
तुरक पण कितराक सामल होसी आपाणो आछो लागसी
धी महाराज

फुरमामो सद्दो नू श्री हिंगलालजी विचे दीया है पातसाह म्हारा सू चूक विचारियो थो, नवाय डेरे नह आवतो तो म्हान कद छोडतो सईदा रा आदमी जनाना म नू पातसाह फरकसेर नू पकड लाय कंद कीयो सईदा न वहन बाईजी (इद्रकवर) न जोधपुर पाहचाय न उठारी सारी चीज वसत लेन आया पछ बाईजी आळी पीय नै मरीया “ पातसाह फरकसेर र गळे तात फेर न सईदा मारियो ।”

(३६) अजीतसिंह को गुजरात की सूबेदारी मिलन वहा महर अलीखा को नायक तथा नाहरखा को दीवान नियुक्त करन का उल्लेख है। फिर रफीउदरजात रफीउदोला तथा मुहम्मदशाह स महाराजा क सम्बन्ध का विवरण दिया है।

(३७) अजीतसिंह को मुहम्मदशाह क राज्यकाल म अजमेर की सूबेदारी मिलना, वहा भडारी विजयराम का नायब नियुक्त कर भेजना, अजीतसिंह की पुत्री मूरज कवरी की शादी जयसिंह के साथ हान, गुजरात व अजमेर की सूबेदारी स अजीतसिंह का हटाय जान, नारनोल जलवर इत्यादि स्थाना म लूटमार करन इत्यादि अनकानक घटनाओं का विस्तृत विवरण दिया है।

(३८) प्रन्त म वसंतसिंह द्वारा अजीतसिंह की हत्या करन की घटना दी है।

तत्पश्चात् महाराजा के रानिया कुवर कुवरिया, पासवाना इत्यादि की एक तम्बी सूची दी है। (पृ-१०३)

महाराजा अमरसिंह, बख्तसिंह तथा रामसिंह का वृत्तान्त -

इन महाराजाओं के पूरे शासन काल का विस्तृत विवरण दिया है। घटनाएँ जोधपुर की ख्यात से मिलती जुलती है, यहाँ केवल इनकी मुख्य उपलब्धियों का विवरण दिया जा रहा है—

प्रारम्भ म अमरसिंह के जन्म, राज्यारोहण व मृत्यु के सबत् अंकित है तथा महाराजा के जोधपुर सवाई जयसिंह की पुत्री से शादी करन, इस पर अनेक छठे सरदारा की सूची, राजकीय मोहदो पर भठारियो, सरदारो को नियुक्त करन बख्तसिंह की वि० स० १७८२ कार्तिक मास म नागौर देने, नागौर बख्तसिंह के साथ चले विभिन्न उमरावो चाकरा की सूची, वि० स० १७८४ म घाघला से पेशकशी क रुपये वसूल करने, अहमदाबाद सरखुल दखा को परास्त करन, युद्ध मे घायल हुए अथवा मारे जाने वाले योद्धाओं की सूची, वि० स० १७८७ से १७८९ तक विभिन्न परगना से प्राप्त होने वाली आय की सूची (तीन वष की कुल आय

८५३४००० ६० दिये हैं) सर्वाई जयसिंह व बखतसिंह के बीच गगराने का मुद्दा (वि० सं० १७६७) होने, बीकानेर पर चढाई करने तथा अभयसिंह के भवन निर्माण काय इत्यादि का वृत्तांत लिपिबद्ध किया गया है।

अभयसिंह के पुत्र रामसिंह के उत्तराधिकारी होने, उसका द्वारा विभिन्न ओहदों पर नियुक्तियों, राठौड सरदारों के साथ दुर्व्यवहार करने, बखतसिंह द्वारा रामसिंह से जोधपुर हस्तगत करने, अपने व्यक्तियों को विभिन्न पदों पर नियुक्त करने, सैनिक अभियानों तथा सतिया की सूची के साथ बखतसिंह के राज्य काल का वृत्तांत समाप्त हो जाता है।

ग्रंथ के अंत में रामसिंह का फिर से विवरण दिया है जिसमें उसके राज्याभिषेक के समय घायल भाई देवकरण व अग्र सरदारों को हाथी, घोड़े एवं सिरोंपाव इत्यादि इनायत किये उसकी सूची दी है तथा अभयसिंह का मृत्यु के दुःखद समाचार नागौर बखतसिंह को मिलने पर उसके द्वारा बहुत शोक प्रकट करने, पैदल चलकर तलाब में स्नान करने का उल्लेख है। फिर बखतसिंह व रामसिंह के बीच तनाव उत्पन्न होने की घटना दी है। अंत में उन ६ राठौड सरदारों के नाम दिये हैं जिनको महाराजा रामसिंह ने हाथी इनायत किये।

(पन्-८६)

ग्रंथ एक ही व्यक्ति के हाथ से लिखा गया है। लिखावट साधारण है। पन्ना हाथ के बने हुए हैं, कुछ पन्ना पानी में भीगे हुए हैं प्रारम्भ का पन्ना खण्डित है। ग्रंथ के एक ओर चमड़ का गुत्ता लगा हुआ है।

दूसरा अध्याय

विगत, हाल, हकीकत आदि

२१ राठीड राजाओं र वंशजों री हाल

१ राठीड राजाओं र वंशजों री हाल २ जो०क० सग्रह, ३ १५५, ४ १४×१७ सेमी०, ५ ११६, ६ ६-१३, ७ १९ वीं शताब्दी का मध्य, ८ अनात, ९ राजस्थानी, देवनागरी, १० प्रस्तुत ग्रथ म राव मालदेव तथा भूजा के पुत्र उदा और नरा के वंशजा का विवरण सकलित है। विवरण-क्रम इस प्रकार है—

(क) मालदेव र वंशजों री हाल -

प्रारम्भ म मोटा राजा उदयसिंह के पौत्र व दलपतसिंह के पुत्र महेसदास का वत्तात दिया है।

प्रारम्भ—

“अब बारा सू पोथी मगाई सो प्यात लिपते, महेसदास दलपतोंत पहिला साहिजादा पुरम री चाकर थो पछै रावळ कुडकी री पट्टो दियो थो सु स० १६८४ रा महा वद ४ माहवतपा रै मुहडा आगे दपिण मे पुरो लोह पडियो पछै महोबत मुओ पातसाहजी रापीयो, जाजपुर पटे बसी नु पछ जालोर गढ दियो सु स० १७०३ लाहार राम कियो।’

अब कुछ सरदारों का विवरण राजस्थानी भाषा मे इस प्रकार लिपि-बद्ध है —

(१) सूरजमल जूझारसिंह दलपतोंत रावळ स० १६७४ बलाहडी बसी नू राजसिंघ भेळो पछ सवत १६८४ रामसरी मढता री, पछ महेसदास साथे मोहवतपा रै बसियो सु स० १६४१ मोहवतपा रै काम आयो।

८२ राजस्थान के ऐतिहासिक ग्रन्थों का सर्वेक्षण, भाग-३

(२) राजसिंघ दलपतात बलाहडी स० १६७८ दियो जूनारसिंघ नळी १६८१ दक्षण काम आयो ।

(३) काहाराम दलपतात पातसाही चाकर १६८१ पातसाही र काम आयो ।

(४) घासीराम रावळ सु सोल हजार री रप मू दवाएँ पट दियो १७०८ ।

(५) राठोड हरोसिंह री बटा रतनसिंघ रावळ चाकर साथ थो उठ मानसिंह री बटा मारियो इण वर भार निसरियो सवत १६४६ रा काती वदी १४ ।

(६) जमरो जैतसिंघात स० १६८४ मडते लाबिया री सोव माह अमरपुरी वसाया ।

(७) किसनसिंघ उदसिंघात न सवत १६५१ माटा राजा आसोप पट दीधी पछ १६५२ मूरजसिंघजी दुघाड री पटो दियो ।

(८) सहसमल किसनसिंघोत भाला री भाणोज स० १६७८ बुरहानपुर माह राम कियो ।

(९) भारमल किसनसिंघात भाटीया री भाणोज जगमाल भारमल भेळ माराणा । स० १६६१ रा पोह सु० ४ भारमल री जनम ।

(१०) रूपसिंह १७१४ उजेण काम आयो हरोसिंघ पछे किशनगड पायो ।

(११) भावसिंह भोवसिंघ री पातसाही चाकर स० १६८६ जेठ सुद १३ दिपण काम आयो ।

(१२) स० १६३३ राव कला न नडूल भाह सेप वहम चूक कर मारियो ।

(१३) पूरणमल रामोत सोनगरा री भाणोज स० १६०४ आसाढ वद ८ सनि ज म । भोपत रामोत भाला री भाणोज स० १६१२ फागण सुद ४ बुध जम मोटे राजा नवसरा री पटो दियो ।

(१४) माधोसिंह अमरावत (राम का वशज) पातसाही चाकर स० १६८६ जेठ सुदि १३ काम आयो ।

(१५) महेसदास रामात कछवाही री स० १६१५ मिगसर सुद ६ सुक्रवार जम ।

(१६) जगनाथ जसवतोत पातसाही चाकर बधनार पटे दपण माह पातसाही र काम आयो १६८६ आसाढ वद ३ शुक्रवार ।

(१७) राव रायसिंघ चद्रसेणोत कछवाही री भाणोज स० १६१४ भाद्रवा सुद १ जम १६४० काती सुद ११ दताणी राव सुरताण मू वड कर मराणा ।

(१८) गोयददास पातसाही चाकर म० १७०८ फागण सुद लाहौर राम किया ।

(१९) कल्याणमल रायमलोत जुहर वर नाम आयो १६४५ माह वद १० ।

(२०) जतसी रतनसीघोत स० १६७२ रावळा सू गिररी रो पटो पछे १६७४ बुरहानपुर माहे छाडि साहजादा र राजो यो । (पत्र-५८)

(ख) उदावतो रो विगत -

इसम सूजा के पुत्र उदा व उमके वशजा का हाल दिया गया है जिसम बतलाया गया है कि किस ठाकुर व बाद वीन उत्तराधिकारी हुआ उह जागीर म कितन गाव मिले हुए थे । इन ऐतिहासिक व्यक्तियों के जन्म व मृत्यु सबत भी कही कही दिये हैं । मिलावें ग्रन्थाक ८१६०(७), रा० शो० स० ।

प्रारम्भ—

“उदो सूजावत मागलिनी सरवगदे रो बटो उदोजी सागोजी पिरागजी तीनू सगा भाई । उदोजी न जतारण दरावजी सूजाजी जुदा किया तर जैतारण आय वसीया घरती माहे सिधल था तिणा नै परा काढ़या ।”

उदा के वशजा सम्बन्धी कुछ घटनाएँ प्रस्तुत है—

(१) जतारण रावजी रतनसी पीवावत न दीवी सा स० १६१४ चत माहे धक्कर पातसाह रो फौज कासमपा अजमेर था ले आयी तरै रतनसी नै जैतारण मे मारियो ।

(२) मेडते जमलजी रो वेढ प्रथीराज काम आया तरै डूगरसी उदावत जमलजी भेळो यो ।

(३) पिरागदास भगवानदासोत बडो डील, राजा जयसिंह रो चाकर (धामर) स० १६४७ काती माह राम कयो ।

(४) मुकददास कल्याणदासोत बडो बटो रावळा सू पहला दातीवाडा रो पटो यो पछे म० १६६७ आसरलाई जतारण रो रो पटो ।

(५) गोयददास स० १६४६ गु दोच राम कियो, इण च्यार मामला सिधलो सू किया । (पत्र-६२)

(ग) नरावतो रो विगत -

राव सूजा के पुत्र नरा के वशजा का हाल दिया है । जिसम खीवसर के नरावत राठौडो का सक्षिप्त विवरण है ।

प्रारम्भ—

"नरो सूजावत लिपमी भटियाणी रो वागजी रो भाई ओ सूजाजी रो मलियोडो गुजरात पात्साह नू ।" (पत्र-१२)

ग्रन्थ के अन्त में राठौड़ राजाओं की पीढ़ियाँ और 'सखाणा' इत्यादि कृतियाँ संग्रहित हैं। जो बाद में अथ किसी व्यक्ति के हाथ में लिखी गई है।

उदावत, नरावत एवं जाधा राठौड़ों के इतिहास अध्ययन हेतु सामग्री उपयोगी है।

ग्रन्थ अनेक व्यक्तियों के हाथों से लिपिबद्ध किया गया है। ग्रन्थ पर कपड़े का गन्ना मढ़ा हुआ है, अनेक पत्र रिक्त पड़े हैं।

२२ सिसोदिया, शेखावत, भाटी, चहुवान तथा पवार सरदारों के जागीरों के गावों की रेषों की विवृत

१ सिसोदिया, शेखावत भाटी चहुवान तथा पवार सरदारों के जागीरों के गावों की रेषों की विवृत २ जो० क० संग्रह ३ ६२, ४ ३५ × २७ ५ मेमी०, ५ ५२, ६ ११-१३ ७ १६वीं शताब्दी का उत्तरार्ध ८ अज्ञात, ९ राजस्थानी, देवनागरी, १० इसमें मारवाड़ में विभिन्न सरदारों को मिले जागीरों के गाव, उसकी रेषा तथा ६७ पीढ़ियों के नाम अंकित हैं।

प्रारम्भ—

'सिसोदिया—

गाव भाटू दा प्र० गाडवाड गाव १ रेष ३०००)

भरे ३०००)

सादुलसिध, गुलाबसिध सेरसिध, उदभाण आदि।

भाटिया के एक गाव का उदाहरण प्रस्तुत है—

३ (गाव) माळूगो जोधपुर की रेष १०००) भरे १०००)

वपतावरसिध, छतरसिध, नाथूसिध, भवानीसिध, घनाडसिध, मोकमसिध, जगतसिध।

यह सामग्री एक ही व्यक्ति के हाथों में लिखी गई है। आधे पत्र रिक्त पड़े हैं, पत्र के सिरे हैं। राजस्व सम्बन्धी अध्ययन हेतु उपयोगी है। गावों की पीढ़ियाँ इतिहास की दृष्टि से उपयोगी हैं।

२३ रुपिया आया उपडिया री विगत

१ रुपिया आया उपडिया री विगत, २ जो० क० संग्रह ३ १०, ४ ४१ ५ × १५ सेमी०, ५ ३७, ६ १८-२० ७ १६वीं शताब्दी का उत्तरार्ध, ८ अज्ञात, ९ राजस्थानी, देवनागरी, १० विजैशाही रुपया की धैलिया जोधपुर राज्यकोष में आती थी उसकी विगत दी है। धैलियों पर व्यक्ति का नाम, रुपया की संख्या आदि लिखी रहती थी।

प्रारम्भ—

“॥ श्री गणेशायनम ॥

डेरा री विगत रुपिया आया री विगत रुपिया उपडिया री विगत री बही।
वरनी जो नाम १०००) री धैली माथे
आवडजी ओ नाम १०००) री धैली माथे
पूबडजी १०००) री धली माथ

१२००० जुमले रुपिया बार हजार विजसाही चम कोस दौयला माहे मेलिया
आसीया बाकीदास सवत १८८४ रा।

यह कविराजजी के निजी कोष की विगत प्रतीत होती है।
लिखावट अशुद्ध है, गत्ता कपडे का मढा हुआ है।

२४ सरकारी खर्च ने केफीयता री विगत

१ सरकारी खर्च ने केफीयता री विगत, २ जो० क० संग्रह- ३ ३८,
४ ४५ × १७ सेमी०, ५ ५० ६ १७-१९ ७ वि० स० १८९४, ई० सन्
१८३७, ८ अज्ञात, ९ राजस्थानी, देवनागरी, १० खर्च खाते सम्बन्धी इस बही
में निम्नलिखित कृतियां वर्णित हैं—

- (१) चाकरो री विगत
- (२) तीन महीने री परच
- (३) गाबो री पैदास
- (४) गाबा री रेपा न पीडा नै लाप पसाव
- (५) लालजी सा नै लाप पसाव
- (६) कागदो रा भेवाळ
- (७) हवाला रा आसामिया री विगत
- (८) जोधपुर कागदो री नकल

- (९) काणोचे माजी रँ हाथ खच री विगत
 (१०) मयाणिया री विगत
 (११) बुजावड र पान री विगत
 (१२) आयपूरा रा मेण री विगत
 (१३) मेनाजी रँ वाई री ब्याव री विगत
 (१४) रेमतुलापाजी अलीगढ पढण नै गया री विगत
 (१५) बुजावड रँ पान रो भाटो
 (१६) बासवाडा रा वीरणा री हिसाव
 आदि ।

यह सामग्री अनेक व्यक्तियों के हाथ से लिपिबद्ध हुई है। पत्र मटमैले रूप के हैं। ग्रन्थ में मारवाड की खानों, कुछ रीति-रिवाज आदि पर अच्छा प्रकाश पड़ता है।

२५ जोधपुर रा कमठो री विगत

१ जोधपुर रा कमठो री विगत, २ जो० क० संग्रह, ३ ८१, ४ ४० × २८ सेमी०, ५ ६६ ६ १५-१७, ७ १६वीं शताब्दी का मध्य, ८ अज्ञात, ९ राजस्थानी, देवनागरी १० इसमें जोधपुर के विभिन्न शासकों द्वारा बनवाये भवन निर्माण कार्यों व कुछ ऐतिहासिक घटनाओं का विवरण दिया है। पत्र लुप्त होने से सामग्री अपूर्ण है। इस प्रकार का विवरण अ य ग्रन्थों में भी मिलता है।

प्रारम्भ—

“स० १८३८ माघ वद ५ री सेवा री प्रतिष्ठा हुई पाछी पधराई वरस गाठ री दरबार सळा मडल महाराजा अजीतसिंहजी हेठे फेर बधायो बाबाजी घातमारामजी री मीद”

अन्तिम—

“ - पछ नवाब असत
 ग्रन्थ के ये खुले पत्र एक हैं।

”

६ राठी
 विग

१
 २३ सेमी०,

७ जनात, ९ राजस्थानी, देवनागरी १० ये खुले पत्र एक कप में बंधी हुए पाए जाते हैं। इनमें कूपावत, चापावत, उदावत, जतावत, मडलावत इत्यादि सरदारों की विगत दी है। जिसमें उनके शाखाओं प्रशाखाओं के मूल पुरुषों की सतति, पट्टे के गाव इत्यादि का विवरण भ्रकित है। साथ ही उनकी जीवन-घटनाओं का विस्तृत वरण भी दिया है।

सामग्री बहुत महत्वपूर्ण है परतु पत्र सब ग्रस्त-व्यस्त है व जीएँ होने के फलस्वरूप खण्डित होते जा रह है अर्थात् इनकी गणना करना भी सम्भव नहीं है।

पत्र मटमैले रंग के हैं जो अधिकशत एक ही व्यक्ति के हाथ से लिखे गये हैं।

जोधपुर के राठौड सरदारों के इतिहास अध्ययन हेतु सामग्री बहुत उपयोगी है परतु इसकी उपयोगिता तभी हो सकती है जबकि सभी पत्रों को क्रमबद्ध किया जाय।

२७ राठौडों की खापा और पट्टे के गाव की विगत

१ राठौडों की खापा और पट्टे के गाव की विगत, २ जो० क० सग्रह, ३ ४८, ४ ३५ × ३६ सेंमी०, ५ १५६, ६ १०-१५, ७ १८वीं शताब्दी का उत्तरार्ध, ८ अनात, ९ राजस्थानी, देवनागरी, १० निम्नलिखित राठौडों की विभिन्न खापा का वृत्तांत भ्रकित है—

खापा	पत्र संख्या
(१) चापावत	५७
(२) उदावत	३२
(३) जतावत	९
(४) बाला	१५
(५) करमसोत	१८
(६) जोधा	२४

इन खापा के राठौड सरदारों को प्राप्त पट्टे के गावा व उनकी रेख इत्यादि का विवरण दिया है। प्रत्येक खापा का अलग से वृत्तांत दिया है।

यह खुले पत्र एक से अधिक व्यक्तियों के हाथ से लिखबद्ध किये गये हैं। लिखावट साधारण है।

राठौडों की शाखाओं सबधी जानकारी हेतु ही नहीं अपितु राजस्व सबधी जानकारी के लिये सामग्री काफी उपयोगी है।

२८ जमींदारों के पट्टे के गावों के रेखों के विवरण

१ जमींदारों के पट्टे के गावों के रेखों के विवरण, २ जो० क्र० सग्रह, ३ १३३, ४ ६५ × २७ सेमी०, ५ १३३, ६ ३०-३२, ७ १६ वीं शताब्दी का उत्तरार्ध, ८ अज्ञात, ९ राजस्थानी, देवनागरी, १० प्रस्तुत ग्रन्थ में मारवाड़ के विभिन्न राजाओं के पट्टे के गावों के रेखों आदि का विवरण दिया है। जिसमें जागीरदार का नाम, निश्चित की गई रेख, भरी जाने वाली रेख, भूमि की उपज, एक साख व दो साख वाले गावों की संख्या और वीरान गावों के आंकड़े अंकित हैं।

प्रारम्भ—

‘पाप चापावत—

राव रिडमल १४४६ का माह सुद १३ की जन्म, उदपुर राणा पता र पवास का बेटा चाचो मेरा था तिणा राणा भोकल न चूक कर मारिया न राणा कू भा की अमल हुवी

रिडमल की चोपो

रेख कबीर, रेख भरे, पदास, आसाभोवार, कुलगाव-बुसापिया, एक साधिया, सुना।

इस ढंग से विवरण निम्नलिखित शाखाओं (खापा) का अंकित किया है—

- | | |
|---|-----------|
| (१) चापावत — विठलदासोत, आईदानोत, भोपतोत, रायसिघोत, खेतसिघोत, रायमलोत, हरभाणोत तथा हरिदासोत। | (पत्र-६३) |
| (२) कू पावत — महेशदासोत, ईसरदासोत, तिलोकदासोत, उदसिघोत, माडणोत। | (पत्र-२५) |
| (३) जैतावत — पृथ्वीराजोत, आसकरणोत, भोपतोत। | (पत्र-७) |
| (४) करनात — | (पत्र-१०) |
| (५) मडला — | (पत्र-७) |
| (६) रूपावत — | (पत्र-५) |
| (७) पातावत — | (पत्र-७) |

प्रथम एक ही व्यक्ति द्वारा लिपिबद्ध किया गया है। तत्कालीन राजस्व संबंधी जानकारी हेतु सामग्री उपयोगी है।

२९ रेख चाकरी के विवरण और वेद पुराण आदि

१ रेख चाकरी के विवरण और वेद पुराण आदि, २ जो० क्र० सग्रह, ३ ३३, ४ ३५ × २५ सेमी० ५ ६७, ६ २५-३०, ७ २० वीं शताब्दी

का प्रारम्भ, ८ घनात, ६ राजस्थानी दवनामरी, १० वि० स० १६६३ म जोधपुर महाराजा के अधीन भूमि की जानकारी देकर रख इत्यादि का विवरण दिया है।

प्रारम्भ—

॥ श्री हरि ॥

समत् १६६३ रा भादवा वद ५ मारवाड र कुल गावा रा पडा गाव छोटा मोटा पाच हजार कहीजे इण बपत ईतरा मौजूद है बाकी रा वीरान ही जाण सू पडा रो पतो नही। हमार वसता पेडा ४२३२ सुपा है प्राग दफतर श्री हजूर गाव मौजूद है।

श्री दरवार रे पालसे

६६२	गाव
१६६	जागीरी सरदार महाराजा रावराजा वगेरे
८८६	नामीचारा रा
५४३	सासन देवस्थान वगेरे
१६	जनाना सरदार पडदायतिया न
४६	मुसदी (यो)
७	मरजीदान
४६	पवास पासवान
२४	मीलटरी
२	कमीणा र

४२३२

१६०६ महाराजा तखतसिंहजी री सलामती मे हजार री रेप पर ओलीया निचै लिपीया मुजब वीराड रा नाव सु मुकरर हुवी

८०) राजपूत जागीरदार र

१२५) मुसदिया र

१००) पवास पासवान

राजपूत ने हजार री रेप लारे अेक घोडा री सवार, नै पाच सो री रेप बाळा नै अेक पँदल कदीम सु सासतो चाकरी म रापणी पडे है। जिण सू मुसदिया रै रेप री आक (प्राकडो) जादा कीयी गयी और पवास पासवान श्री

६० राजस्थान के ऐतिहासिक ग्रंथा का सर्वेक्षण, भाग ३

दरबार की नौकरी में सासता नजदीक रणो पड जीण सु उणा रं रप रो प्राक मुसदिया सू कम कीयो गयो है ।”

वेदा के श्लोक देकर उनका अर्थ लिखा गया है तथा वि० स० १६२२ के अर्थ का कुछ जमा खच दिया है। एक स्थान पर वि० स० १६०१ के अर्थात् मुकदमों का भी विवरण दिया है।

प्रथम अनेक व्यक्तियों द्वारा लिपिवद्ध किया है। लिपि अधिक पुरानी नहीं है।

३० गाम खेड की विगत

१ गाम खेड की विगत, २ एम० डी० एम० संग्रह, ३ , ४ बही, ५ ६ ६ ६०, ७ वि० स० १८८३-१९५०, ई० सन् १८२६-१८६३, ८ अज्ञात, ९ राजस्थानी, देवनागरी, १० गाव खेड (जि० बाडमेर) का आर्थिक विवरण वि० स० १८८३ से १९५० तक का दिया है।

तत्कालीन आर्थिक स्थिति की जानकारी के लिए ग्रंथ उपयोगी है।

३१ राठौडों के खापो की विगत

१ राठौडा के खापो की विगत २ जो० क० संग्रह, ३ १५७, ४ २७ x ३० सेमी०, ५ २९७, ६ १०-१३, ७ १९वीं शताब्दी का प्रारम्भ, ८ अज्ञात, ९ राजस्थानी देवनागरी, १० यह मारवाड़ के राठौड राजाओं से फटने वाली विभिन्न शाखाओं प्रयागाओं का समृद्ध संग्रह है जिसमें मारवाड़ के संस्थापक राव सीहा के पुत्र आस्थान से मोटा राजा उदयसिंह तक के विभिन्न शासकों से निकलने वाली राठौडा की खापो के नाम मूल पुरुष की मुख्य उपलब्धियों व उनके वंशजा की पीढ़ियाँ ऐतिहासिक टिप्पणियों सहित प्रकृत हैं। खापो की बड़ी खान होने के कारण इसका महत्व है। विवरण क्रमबद्ध नहीं दिया है।

१ (क) खापो के अनुसार राव सीहा के पुत्र आस्थान ने गोहिलों से खड हस्तगत कर वहाँ अपनी राजधानी स्थापित की जिससे उसका वंश खडवा कहलाय।

(ख) वि० स० १९८६ राठौड महारावल जगमान के समय नगर गाव से मिले लख के अनुसार सीहा के पुत्र सोनिग द्वारा गोहिलों से खड लिये जाने का उल्लेख है। इससे यह प्रमाणित होता है कि खेड आस्थान ने नहीं उसका भाई सोनिग ने विजय किया था। (जोधा जोधपुर राज्य का इतिहास प्रथम भाग पृ० १६०-६१ की पाद टिप्पणी)

राठौड़ अखेराज रिडमलत के वंशजों की विगत -

प्रारम्भ में मारवाड़ के शासक राव रिडमल के पुत्र अखेराज व उसके वंशजों का हाल दिया है।

प्रारम्भ—

“॥ श्री गणेशायनम ॥

॥ राठौड़ अखेराज रिडमलत वड़ी ठाकुर हुवौ, सोनगरा रो भाएजे ।' राव जोधो पाट बैठे तद आपरा भाया बटा नू घरती जाट देण लागी तर अखेराजजी नू बहयो—ये नही तिना ठोड घानू छा तर अखेराजजी बहयो—म्हे कहीक ठोड जोय अरज करसा पछ सोजतर परगने वड़ी ठोड वगडी दीठी तिका ठोड़, मागली बगडी सीघल बसता नू घरडा सीघल नू मार ने अपेराज बगडी लीबी ।

अपेराजजी रे बेटां री विगत ॥

१ पचायण	२ महाराज	३ राणो
४ रावल	५ सीघल	६ मूरो
७ सीही	८ मालो	९ नगराज
१० नरबद	११ देवो	१२ रायमल

पचाइए अखेराजोत री परिवार -

इसमें अखेराज के पुत्र पचायण व उसके वंशजों का हाल दिया है। पचायण के ६ पुत्रों की सूची इस प्रकार है—

१ अचला	२ जता	३ भदो
४ काही	५ भोजी	६ अरजन
७ सामदास	८ जाभण	९ रामी

१ अचला पचायण -

वर्णित है कि अचला की शादी मेवाड़ भाला अजा के यहाँ हुई थी उसने अपने समुराल जाने की घटना दी है। मालदेव ने इनको रडोद के घाने नियुक्त किया वही नागौर व खान से लडते हुए मारा गया।

२ जता पचायण -

इसमें पचायण के पुत्र जता तथा उसके वंशजों का हाल दिया है। प्रारम्भ में जता द्वारा मालदेव के यहाँ की गई अमूल्य मेवाधा का वृत्तांत है। जिसमें कूपा का भी जिक्र किया है। तत्पश्चात् जतावत राठौड़ा का सक्षिप्त विवरण दिया है जो राजस्थानी भाषा में इस प्रकार है—

३ मानसिंह जंतावत का वृत्तांत -

"मानसिंह जंतावत पाटवी, बहु टाकणों री बटा सारण रामर चुहाहड बलाच नू विप म बगडी उपर ले आया तर बगडी छोड नै नीसरियो राणाबास री नदी जाता वेड हुई तठै मानसिंह काम आयो "मानसिंह र बास कोइ नही ।"

४ उदसिंह जंतावत का वृत्तांत -

"उदसिंह जंतावत बडी वेड म पूर लाहडे पड उपडीया या न सिंयासी हुओ सा घणा दिा रहयो ।"

५ पृथ्वीराज जंतावत का वृत्तांत -

पृथ्वीराज जंतावत बडी आपड सिद्ध रजपूत हुओ, स० १६१० मालदेव मडता उपर गयो तठै काम आयो ।"

६ पूरणमल पृथ्वीराजोत का वृत्तांत -

'पूरणमल पृथ्वीराजोत बडी रजपूत हुओ, बगडी घणा गाव सू पटे हुई पख पिचीयाक पट हुई, मडते देईदासजी साये काम आयो ।"

७ सूरजमल पृथ्वीराजोत का वृत्तांत -

'सूरजमल पृथ्वीराजोत बडी रजपूत हुओ राव राम री चाकर थो । राव राम भासकरन कना सू उत्तरन दी थी मास ११ रही ।"

८ राघोदास सूरजमलोत का वृत्तांत -

"राघोदास सूरजमलोत—घरै बठी रहती चाकरी किए ही री न कीधी ।"

९ बंसल पृथ्वीराजोत का वृत्तांत -

"बंसल पृथ्वीराजोत बडो ठाकुर—राघसिंह चद्रसनोत नू सिरोही देवडे भारीयो पछै तिण दावै माट राजा स० १६४० गुजरात जाता सीरोही आया पछ जिका देवडा रामसिंह नू लोह कियो थो तिणा सू मिळिया सू बंसलजा देवडा नू आणिया देवडो तागो, पनी सावतसी तीहो नू मोटे राजाजी चुक कर मारिया पछ बंसल पट मार मुया सिरोही री गाव सागवाडा नीतोडा बीच बंसल प्रिथीराजोत री चीतरो छै ।"

१० बाप पृथ्वीराजोत का वृत्तांत -

'बाप प्रिथीराजोत बडी ठाकुर हुओ पातसाह री चाकर बगडी बिलाङ्गे पटे थो स० १६३६ पातसाहजी दिया था गुजरात जाता बीच मुयो बाप ।"

११ गोयददास वाघोत का उल्लेख -

“गोयददास वाघोत वगनी पटे । बु झैला री मुहम जाता मीच मुमो ।”

१२ कु भकरण वाघोत का वृत्तांत -

“कु भकरण वाघोत वडो रजपूत वगडी पटे, दिपणिय” सू वडी वेठ जीती पछे केहीक दिन सानीयो हूपी थो पगं वेडी थी मीच मुमा । (मृत्यु से मरा युद्ध म नहीं)”

१३ जगनाथ वाघोत का वृत्तांत -

‘जगनाथ वाघोत वू दी राव रतन री चाकर थो पछे स० १६८६ राव रतन पीचीया उपर गयो तठे काम आयो ।”

१४ देईदास जतावत का वृत्तांत^१ -

“देईदास जतावत वडो ठाकुर देस री थभ कहाणी १६१८ चैत्र सुद १५ मिरजा सरफदीन सू भडता माल गढ छोड नै निसरियो तठे काम आयो ।”

१५ आसकरण देईदासोत का वृत्तांत -

“आसकरण देईदासोत चौहाणा री भाणोज स० १६१५ रा वसाप सुद १२ बुधवार जम, आसकरणजी नू मालदेजी गाव १२ सू वगडी री पटो दीयो नै बीजी गाव देईदासजी रा पटा म था मु प्रिथीराजजी रा देईदासजी रा बीजा बेटा नू बाट दिया मोठे राजाजी नै सोजत हुई तरै राजाजी आसकरणजी नू खेरवो केई गावा सू दियो ।

श्रीजी आवेर परणिया तरै आसकरणजी साथे नाया, तर वगडी भगवानदास नू दीवी, आसकरणजी नू सबत १६५६ आउवा री पटो दीयो थो पछ वळे (फिर) राणा रै गया दवली जैतारण री री पटो दीयो थो १६८० मे ।”

१६ भोपत देईदासोत का वृत्तांत -

‘भोपत देईदासोत वडो ठाकुर पातसाही चाकर हुआ तरै पातसाहजी कटाळियो बापारी पटे दीया था ।”

१७ सकतसिंह भोपतोत का वृत्तांत -

‘सकतसिंह भोपतोत रावळ स० १६५२ बापारी सोजत री गावा २ सू थो पछे राम कह्यो, बाध पीची रै परणियो थो ।”

१८ साईदास पचायणोत री परिवार -

(पचायण के पुत्रों की सूची में साईदास का नाम नहीं दिया है, यहाँ इमरा प्रलय से वृत्तान्त देकर उसके वंशजों का नामोल्लेख किया है।)

“साईदास पचायणोत मेवाड राणाजी री चाकर थो स० १६३२ सावण वद १३ हळदी री घाटी राजा मानसिंह सू वेढ हुई तठै काम आयो।” (पत्र-३१)

१९ भोजराज पचायणोत -

पचायण के पुत्र भोजराज के सम्बन्ध में केवल इतना लिखा है।

“बड़ी ठाकुर हुआ, ओ सादी सो रजपूत बडो थो, कू पाजी री चाकर थो बडी वेढ कू पाजी साथे काम आयो।” (पत्र-३१)

अखेराज री परिवार

१ राणा अखेराजोत री परिवार -

इसमें अखेराज के पुत्र राणा के वंशजों की सूची प्रकृत है। (पत्र-२)

२ सिंघण अखेराजोत री परिवार -

इसमें वंशावली इस प्रकार दी है—

- | | | |
|----------|-------------|-----------|
| १ रिडमल | २ अखेराज | ३ सिंघण |
| ४ धनराज | ५ नारायणदास | ६ विसनदास |
| ७ वीरमदे | | |

३ माल अखेराजोत री परिवार -

अखेराज के पुत्र माला के वंशजों का नामोल्लेख है। पीढ़ियों इस प्रकार दी है—

- | | | |
|----------|----------|-----------|
| १ रिडमल | २ अखेराज | ३ माला |
| ४ करमसी | ५ सादूल | ६ राघोदास |
| ७ हरीदान | | |

फिर राघोदास इत्यादि के पुत्रों के नाम दिये हैं। (पत्र-१)

४ रावल अखेराजोत री परिवार -

अखेराज के पुत्र रावल के वंशजों के नाम लिपिबद्ध हैं। रावल के प्राये पीढ़ियों इस प्रकार हैं—

- | | | |
|-----------|----------|-------------|
| १ रिडमल | २ अखेराज | ३ रावल |
| ४ जोगा | ५ कत्तो | ६ नारामणदास |
| ७ मुदरदास | | |

फिर जगमाल, नारायणदास इत्यादि के पुत्रों के नाम दिये हैं।

५ राठौड सूरौ अखेराजोत रौ परवार -

अखेराज के पुत्र सूरौ के वंशजों का उल्लेख है। पीढियों इस प्रकार हैं—

- | | | |
|-----------|------------|-----------|
| १ रिणमल | २ अखेराज | ३ सूजो |
| ४ भानीदास | ५ गोपालदास | ६ जोगीदास |
| ७ उदसिंह | | |

इन मूल राठौड सरदारों के बाद की सतति का भी नामोल्लेख है। (पत्र-१)

६ राठौड सीहा अखेराजोत रौ परवार -

अखेराज के पुत्र सीहा के वंशजों का नामोल्लेख है। पीढियों इस प्रकार हैं—

- | | | |
|---------|----------------|-------------|
| १ रिणमल | २ अखेराज | ३ सीहो |
| ४ नैतसी | ५ बाघ नैतसियोत | ६ कल्याणदास |

फिर इनके सतति का नामोल्लेख है।

७ नगराज अखेराजोत रौ परवार -

अखेराज के पुत्र नगराज के वंशजों का नामोल्लेख है। पीढियों इस प्रकार

है—

- | | | |
|-----------------|--------------------------------|-------------------|
| १ रिणमल | २ अखेराज | ३ नगराज |
| ४ रायपाल | ५ जोगीदास—गुडो लूटीजतो काम आयो | |
| ६ रामा रायपालोत | ७ लपा रामोत | ८ भगवानदास लपा रौ |
| ९ सूरजमल | | |
| ९ किरतसिंह | ९ सकतसिंह | ९ अजबसिंह |

९ साहबवान, ए चार सूरजमल रे बेटा।

फिर इन उपरोक्त सरदारों के अलग से सतति का भी विवरण दिया गया है। (पत्र-१)

अपरराज राठौड -

इसमें अखेराज के १२ पुत्रों के नाम देकर उनका वंश फिर से दिया है। पर यहाँ कुछ अधिक जानकारी दी गई है। इस प्रकार पृथ्वीराज जैतावत, बाघ पृथ्वीराज, कल्याणदास बाघावत, कुम्भकरण बाघावत, देवकरण कुम्भकरणोत, साहिबखान कुम्भकरणोत, भगवानदास बाघोत, मुजार्णसिंह भगवानदासोत, उदभाण भगवानदासोत, गोपालदास बाघोत, बैरसल पृथ्वीराजोत इत्यादि का सक्षिप्त विवरण है। (पत्र-१०)

भदा पचायणोत्त -

पचायण व पुत्र भदा व उसके वंशजों का हाल दिया है। कुछ घटनाएँ उद्धृत हैं—

‘भदा पचायणोत्त दातीवाड बसी। राव मालदेजी विस दियो बीडा माह, दीवाळी रो भुजाई पा उठने बीडा देने कही—घरें जावो मू राते दातीवाँ गया सु जातसवा राम कही। भदो नै काही बहू नू भाण उहड घात घाली थी।’

१ लिपमण भदावत का वृत्तांत -

“लिपमण भदावत रावल मालदेजी रँ, लपमणजी र पटे कटालीयो पो स० १६२४ रा महा वद १० गुरुवार इसमाईल कुली लपमणजी रा गुढा उपर भूवीयो, मुगल नाठा हाथी ४ बढाया, अतरो साय लिपमणजी सावलदास रामोत कमी हुल सादुल रायसलोत ।”

२ जसा लिपमणोत्त का वृत्तांत -

“जसो लिपमणोत्त पटे स० १६४१ भीबलीया हीगाउस रो पछे भूपेलाव, पछ स० १६६६ हरियामाली पछे स० १६८० हामाउस नै सोनेई पाली रो पछ १६८७ वले हरियामाली पटे थो।”

इसी प्रकार अय भदावत राठोडा का संक्षिप्त विवरण दिया है। (पत्र-७)

कूपावत राठोडो रो विगत -

अखेराज के पौत्र व मेहराज के पुत्र कूपा तथा उसके वंशजों का विवरण दिया गया है। प्रारम्भ में दिया है—कूपा का जन्म किस प्रकार हुआ तथा वह महादेव का अवतार कहालाया।

प्रारम्भ—

‘मेहराज अपेराजोत्त रँ छोरे नही हो तो थेट गाव धनहडी सोजत रो रहता, सु गाव माहे हाळी हळोतियो कर नीसरीयो नै पहिलाई मेहराजजी साम्हा मिळिया तर हाळी पाछो वळीयो तर हाळी नू पूछीयो तू पाछो व्यू वळीयो तर कही—अउत रो मूडी न देपणी आ मुण मेहराजजी धनहडी माहे देव छ तिण महादेव कने आया कूपोजी हुवा महादेवजी रो अवतार पछ मेहराजजी सारण रामे मेरा सू वेड हुई तठे काम आया स० १५६० काती वद।’

तत्पश्चात् उसके द्वारा की गई राजघराने की सेवाओं का वृत्तांत है। उसको सोजत के माढा डीढवाना तथा फतपुर और भुम्नू वि० स० १६६७ में मालदेव से प्राप्त हुए।

१ मांडण कूपावत का वृत्तांत -

कूपा के पुत्र मांडण सम्बन्धी कुछ घटनायें राजस्थानी भाषा में इस प्रकार लिखित हैं—

‘मालदेवजी मांडण री पटो मांडणजी न दियो पछ मांडणजी रै बाळा हुआ सो पग उठ न सकै, चाकरी म धारै नही तरै पटा रावजी पालसे कियो । मांडणजी जाय उदसिध रै वसिया राणाजी पीड री पटो दियो पछै पातसाही चाकर हुआ अकबर पातसाह बेटी मागी, पिण न दीवी १६४३ पातसाहजी आसोप मांडणजी नै दीवी । आसोप माहे ऋरोपा री पीचतो माळीयो तिकै मांडणजी करायो थो पछ लाहोर माह राम कहयो ।’

२ पीवो मांडणोत का वृत्तांत -

मांडण के पुत्र पीवो का वृत्तांत इस प्रकार दिया है —

‘पीवो पातसाही चाकर पहला रामसिध चंद्रसेणोत री चाकर मेडता री गाव ईडवो वसी नू दीयो, पछै दपिण या स० १६६६ श्रीजी साथे अहमदाबाद आया १६७४ ब्रह्मानपुर राम कहयो ।’

३ राजसिध पीवावत का वृत्तांत -

राजसिह (सीवा का पुत्र) कूपावत को गाव जागीर में मिले इत्यादि घटनाओं के बाद उसका मृत्यु सबत् अंकित है—

‘दपिण माहे पीवजी साथे, पछ देस में जाया, श्रीजी री लिपीयो आयो जु राजसिह नू रापजो तरै देस माहे श्री कुवरजी गोयददासजी राजसिहजी नू स० १६६८ बाहला री पटो दे ने रापीयो १६७६ आसोप री पटो वधारै दीयो आसोप माहलो कोट तळाव जावडी कराया बडलू बडो वाग करायो, १६६७ रा पोस बड ५ सोमवार रात ऊपर घडी ४ गई तर राम कहयो । जोधपुर माहे वहु १ भटीयाणी ने खवास ३ आसोप माह सती हुई प्रवाडा १८ कीषा ।’

४ रतन राजसिधोत का वृत्तांत -

इसमें राजसिह के पुत्र रतन सम्बन्धी सन्निप्त वृत्तांत दिया है, जो इस प्रकार है—

‘पहला ही चडावल री पटो स० १६८७ दीया, पछ स० १६८६ देवली री पटो दीयो सु स० १६९१ कुवरजी श्री अमरसिधजी साथे गया स० स० १६९२

६८ राजस्थान क ऐतिहासिक ग्रन्था का सर्वेक्षण, भाग-३

बल राजसिंघोत आगर ले गया तर खेरवा रो पटो दीया । स० १६६६ रा प्रासाद सुद २ जम ।”

५ नाहरपान राजसिंघोत का वृत्तात -
इसम केवल उसके पुत्रा की मूची दी है ।

६ काहा पौवावत का वृत्तात -

पौवा क पुन का हा कू पावत का वृत्तात इस प्रकार है—
“काहजी बडा देवडा रा भाएज पछे पातसाही चाकर हुभा १६७७
पातसाही फौज दिपणीया कनै भागो बुरहानपुर लोहडे ३ दिन आराण माह पडिया
रह्या पछे भोमिये उपडिया । १६७८ पीपावड रो पट्टा दरावल रापिया
स० १६८७ बुरहानपुर माहे राम कयो ।”

७ मानसिंह पौवावत का वृत्तात -

खीवा के पुन माना कू पावत का खीवसर का पट्टा इत्यादि मिलन क उल्लेख है ।
“बडा देवडा विजाजी रा दोहिता, स० १६७५ मडत रापिया सु गाव रो
पटो रयो पछ १६७८ पीवसर रो पटो दीयो सु स० १६८१ छाडीयो पछ
स० १६८६ बले पीवसर रो पटो दीयो ।”

८ किसनसिंह पौवावत का वृत्तात -

खीवा के पुत्र किसनसिंह कू पावत का विवरण दिया है जिसे नाहुडसर ग्राम का पट्टा मिला हुआ था ।
‘देवडा रो भाएज रावले स० १६७५ नाहुडसर रो पटो दीयो
सु १६७८ जेठ सुद ८ देस माहे अबू साहजादो मेडते थो सो साहजादा रो वित मेर
ले लियो तिण रा दाम देणा किया था त्या माह अबू घाय नै नीबोस जंतरण रो रा
वौरा उपड ले नीसरियो त्यारी बाहर किसनसिंहजी नै रामदासजी काम घाया ।”

९ गोयदबास पौवावत का वृत्तात -

खीवा क पुत्र गोयददास जिस रतकूडिया सोयला इत्यादि गाव मिल हुए थे, का वृत्तात इस प्रकार है—
“भाटियो रो भाएज रावले १६७८ रतकूडियो सायलो कई गाव मू
पटे या सु स० १६८६ छाडीयो स० १६६१ कु० अमरसिंहजी घाय गयो, बरस १
रहियो ।”

१० पूरणमल माडणोत का वृत्तांत -

माडण के पुत्र पूरणमल द्वारा की गई राजघराने की सेवाया तथा दत्ताणी के युद्ध में मारे जाने का उल्लेख है।

“ मुरताण सू वेढ हुई स० १६४० काती सुद ११ तठै पूरणमलजी राव रायसिंह भळा काम आया ।”

११ माधोदास पूरणमलोत का वृत्तांत -

पूरणमल के पुत्र माधोदास कू पावत का वृत्तांत इस प्रकार अंकित है—

‘ घणाला री पटा दियो पछै १६६६ साजत रा माढा री पटा दियो आगानूर रा लोको सू पानाजगी तठै माधोदासजी र तीर लागी काम आया, पछै तिण बैर १६८८ किमनसिध जसवतोत आगानूर नू मारीयो ।’

१२ वणीदास पूरणमलोत का वृत्तांत -

पूरणमल के पुत्र वणीदास कू पावत सम्बन्धी कुछ घटनाओं का विवरण इस प्रकार दिया है—

“माढा री पटो था पछ मोडता स० १६१८ रावळ हुघो तद वणीदासजी नै भाण भाटी फौजदार गपिया था सु या यका कनीदासजी रा लोक धन रा पेडा काढ ले गया तिण दिसा या सू रीसाणा, पछै स० १६६१ श्रीजी देस पघारिया तरै भेढते आया तरै महदली नू बहयो—वणीदास न भाण पगै लागै तरै तु कहै वणी बाई भाण बाई पगै लागै छ । महदली कह्यो तिण उपर वणीदास भाण बेउ छाडिया पछ स० १६६८ रिडकली केई गाव सू, पछै स० १६६९ कालीऊ कई गाव सू, १६८१ पूरण या आवता राम किया ।”

१३ महस कूपावत का वृत्तांत -

कू पा वं पुत्र महसदास का वृत्तांत इस प्रकार अंकित है—

‘ राव मालदेजी राम कुवर नु देसवटो दीयो तरै पहला उपाव कर रामजी नू बहयो—राणी आपणी धरती उपर आयी चाहे छ थे साथ लेने जाय नु वोज थारण रहजो, तरै महसजी (कू पावत) नू ही राम कुवर साथे बिदा किया पछ बासा था बेरा (रानियो) ही राम री मल दी न कहाडीयो धानू देसवटो छै पछ राव राम रै टीके राव कला हवी सो कलो पातसाही चाकरी करण न जाय, पातसाही फौज आई स० १६३२ मिगसर सुदि १२ । पछ सोजत सद था त्या राव कला सू बढ की स० १६३२ रा माह मुद ८ तठै महसजी काम आया, गाव डीघोड वेढ हुई ।’

१०० राजस्थान के ऐतिहासिक ग्रन्थों का सर्वेक्षण, भाग ३

१४ सादूल महेसवासोत का वृत्तांत -

महेसदास के पुत्र सादूल नू पावत सम्बन्धी विवरण इस प्रकार है—

“ राव कलो न महसजो काम आया पछे सोजत सँद या त्या नू सादूलजो जोर मामलो कीयो न तुरके घरनू ही सादूलजो नू मारण नू कीयो पछे चद्रसन स० १६३६ डूगरपुर वागड था धरती माहे भायो तर सादूलजो मुहडा भागे हुमा पछे १६४० गाव दताणी वेढ म रायसिंह भेळो काम आयो ।”

१५ किसनसिंह जसू तोत का वृत्तांत -

जमवतसिंह के पुत्र किसनसिंह नू पावत द्वारा राजघरान म की गई सेवाप्र इत्यादि का विवरण इस प्रकार है—

‘ रावळ स० १६८० रीसाणीयो सोजत रो गाव ३ नू थो सु १६८८ छाडियो पछे स० १६९१ सोजत रा कटाळिया रो पटो द जाळोर फौजदार कर मेलियो सु स० १६९२ वणवीर देवल उपर रावळो साथ सिरोही रो राव भपराज चढ गया था तठे घाटी माहे वेढ की किसनसिंह काम आयो ।”

१६ गोवधन चावावत का वृत्तांत -

चावा क पुत्र गोवधन नू पावत का वरान इस प्रकार दिया है—

‘ स० १६६७ काकोणी दीवी केई गाव नू पछे स० १६७६ गजसिंहपुरो पछे स० १६७६ चडावळ रो पटो दीयो स० १६८० पूरव साहजादा पुरम रो वेढ लोह पडियो उजैण साहिजादा उपर मेलिया तठे काम आयो ।” (पत्र-३७)

अपेराज रो परिवार -

यहाँ अपेराज (रिडमल के पुत्र) के पुत्रो रावळ राणा, सिहा, नगराज, सीधल का वृत्तांत फिर से दिया गया है तथा पूर्व वर्णित नू पावत राठोडो इत्यादि का विवरण भी दिया है ।

माला अपेराजोत का वृत्तांत -

माला अपेराजात के वंशजो का सक्षिप्त विवरण दिया है जो पहले नहीं दिया था । यथा—

“करमसी मालावत स० १६३६ चद्रसेन विया था भाय न गाव सवराड वढ की सर्दा नू तठ काम आयो ।” (पत्र-२२)

रिडमल के वंशजो की विगत -

१ सादावत राठोड -

इसमे रिडमल के पुत्र सादा व उसके वंशजो का विवरण प्रकृत है ।

प्रारम्भ—

“साडो राव रिणमल रो साडा रो वेसणा बेव राव जोधा रो दीयोडी, साडो वाघेलो रो भाएजे ।” (पत्र-१)

२ राठीड वरा रिणमलोत रो परिवार -

इसमें रिडमल के पुत्र वरा व उसके वंशजों का विवरण दिया है जिसमें रामदास बंरावत का कुछ विस्तार से वर्णन दिया है, उसकी ८४ प्रतिज्ञाओं (घास्रडियो) की सूची दी है। (पत्र-४)

३ पेतसी जगमालोत रो परिवार -

इसमें रिडमल के पुत्र व जगमाल के पुत्र पेतसी और उसके वंशजों का हाल दिया गया है। इन्होंने नेतडा गांव बसाया। (पत्र-४)

४ भडवाल रो परिवार -

रिडमल के पुत्र भडवाल के वंशजों का नामोल्लेख है इनको जोधा की ओर से भासोप का गांव हीगोली मिला हुआ था। (पत्र-३)

५ जतमल रिणमलोत रो परिवार -

इसमें रिडमल के पुत्र जतमाल व उसके पुत्र भोजराज तथा उसके वंशजों इत्यादि का ब्यौरा दिया है। (पत्र-१)

६ सकतावत रिणमलोत रो परिवार -

रिडमल के पुत्र सकता व उसके वंशजों का नामोल्लेख है। (पत्र-१)

७ नाथु रिणमलोत रो परिवार -

रिडमल के पुत्र नाथु और उसके वंशजों का उल्लेख है। यथा—
“केहिक दिना नाथू रो परिवार बीकानेर नू थो नाथूसर बीकानेर नवो गांव बसीयो ककू पारी पटी रो गांव छै जोधपुर रो बू गडी था कोस ४ छै, बीकानेर र देस भजू चाही इणा रा उतन गांव था हमै भाटिया नै छै, चाही (गांव) अजेस नाथूमोता नू छै ।” (पत्र-२)

राव चूडा के वंशजों की विगत -

१ राठीड भौवोत रो परिवार -

चूडा के पुत्र भीव तथा उसके वंशजों का हाल दिया है। इसमें वरजाग भौवोत का वृत्तान्त देकर वंशावली दी है जो इस प्रकार है—

वरजाग भौवोत

सुरजन वरजागोत, कलौ, सूरजनोत

अपेराज कलावत, मेघराज अपेराजोत, राघोदास मेघराजोत, सुंदर

राघोदासोत ।

फिर इनके पुत्रों के नाम के साथ ऐतिहासिक टिप्पणियाँ भी दी हैं। बरबाण के वार में लिखा है कि वह सूजा के राजगढ़ का धानेदार था तथा बादशाह ने उसे हाथी सिरोपाव इत्यादि प्रदान किये गये। (पृ-८)

२ अरडकमल चूडा री परिवार -

इसमें चूडा के पुत्र अरडकमल के वंशजा की सूची प्रकृत है। अरडकमल व उसके पुत्रा चरडा व चादराव सम्बन्धी कुछ घटनाएँ उद्धृत हैं—

गागाद बीरमात नै भाटी राव राणगदे मारीयो धो तिणु रै वर अरडकमत भाटी सादा राणगदे रा बेटा नू मारीयो, पछै किण ही मूल गुजरात अरडकमत नू झौल दीया धो उठै अरडकमल माराणी। तिण अरडकमल रा बेटा चरडा नै चादराव हुवा तिकै राव रिणमल चूडावत रै वसीया, मेवाड म पठ राव रिणमत चूडावत नै चूक कर राणी कु भे चीतोड मारीयो तरै चरडो न चादराव भे जोषा रिणमलोत नू साथ ले निमरिया पछ भीलवाडा रै घाटे राणा री फौज जोषा बास आपडी तठै चरडो नै चादराव काम आया। जोधे धरती वाळी तर चरडा रा बंटा नू जोध सवराड ओलवी, कराडी (३ गाव) दीया।' (पृ-१०)

३ बरसल भीबोत री परिवार -

चूडा के पौत्र व भीब के पुत्र बरसल ने वंशजा की सूची दी है—

- | | |
|-----------------------------|-------------------|
| ३ बरसल भीबोत | ८ पगार बरसलोत |
| ५ बरसिध पगारोत राव फलोदी थी | ६ मुरताण बरसिध री |
| ७ मूजो मुरताण री | ८ नोजो मुजो री |
| ९ सामदास भोजो री | |

इस उपरोक्त वंशावली के प्रतिरिक्त इन राठोडा के पुत्रा प्रपुत्रा के नाम इत्यादि भी दिये हैं। (पृ-३)

४ राठोड सहसमल खंडायत री परिवार -

राव चूडा के पुत्र सहसमल के वंशजा का वृत्तान्त दिया है जो सहसमल राठोड कहलाते हैं। सहसमल का निरिपारी का पट्टा मिला हुआ था वह इन राजपूतों के हाथों मारा गया जिसकी घटना इस प्रकार की है—

‘सहसमल नू दावत बडो ठाकुर नुषी निरिपारी दो बा क राणु
दो धो मु सहसमल री राजधान सिरियारी, रा भर सिरियारी
भावर माहें। सहसमल रा भर सिरियारी
हुवा मु बामन एरें नु।’ सहसमल

सिरियारी की बाड़ी आप सहसमल उत्तरिणी तर कहण लागी जाजरी दिन भली न छै, राज सवारे गाव माह पधारजो । सवार की निपट भली दिन छै । तर सगळै कह्यो एके दिन माहे ब्यू ही पाटोमोळो हुवे नही छै वामण जाय हूला नै पवर दीनी सहसमल तो बाड़ी रह्यो नै रजपूत चाकर रात पोहर गई ।

आपरे घरे गया हुल जाय भूवीया सहसमल मारीयो गयो । एक भतीज एक भाएजे साथे परणीजीया या सु तिको पिण बाड़ी माहे मुहरत र वास्ते रह्या या सु माराणा, एक चारण काम आयो सँहसेलाव तलाव की पाळ ऊपर सहसमल की छत्री है, सती तीन हुई है सु सहसमल की छत्री माहे माडीयो छ आपरी वँर भावलई हाडी माडी छै भतीज भाएजे की नै चारण की वँर सती हुई छ सु पिण माडी (भक्ति) छै ।'

सहसमल के वंशजों की वंशावली इस प्रकार है—

- | | |
|-----------------------|-----------------------|
| २ राठोड सहसमल चूडा की | ३ रावत राघवदे सहसमलात |
| ४ पचायण राघवदे की | ५ रायमल पचायण की |
| ६ मानसिंह रायमल की | ७ नारायण मानसिंह की |
| ८ जगनाथ नारायण की | ९ मुकन्ददास जगनाथ की |

५ राघवदास का वृत्तांत -

सहसमल के पुत्र राघवदास को राणा कुम्भा नै सोजत का पट्टा दिया । राघवदास के राव जोधा से लडते हुए चौकडी के थाने काल कवलित होने का उल्लेख है तत्पश्चात् उसके पुत्रों की सूची दी है ।

' राव रिणमल नू राणी कू भे मार न मारवाड ली तर राणी राघवदे नू रावताइ दे टीको काड न सोजत पटे देने मडोवर वसावण नू साथे मेल्हीयो, तद सोजत म देहुरो । थो लीपमी नारायणजी की जोधपुर रँ फलसे रावत राघवदे करायो छै । पछै राव जोधो चौकडी रँ थाएँ राणा रा साथ नू भूवीयो तठ राघवदे उठ काम आयो ।

११ साप ११ हुहो राव जोधा की

जोधो विडियो जोध, चहू रावामू चौकडी टीला होडा तेथ, रहीया राघवदे

बटा की विगत—१ पचायण, देवीदास सायर, रामदास, भोजराज, गोपी, लपमण ७ बेटा राघवदे रा ।'

६ लूणा सहसमलोत के पुत्रों की विगत -

सहसमल के पुत्र लूणा के ५ पुत्रों की नामावली दी है जो इस प्रकार है—

फिर इनके पुत्रों के नाम के साथ ऐतिहासिक टिप्पणियाँ भी दी हैं। वरजाग के बारे में लिखा है कि वह सूजा के राजगड का धानेदार था तथा बादशाह ने उस हाथी सिरापाव इत्यादि प्रदान किये गये। (पन्-८)

२ अरडकमल चूड़ा रौ परिवार -

इसमें चूड़ा के पुत्र अरडकमल के वंशजा की सूची प्रकृत है। अरडकमल व उसके पुत्रों चरडा व चादराव सम्बन्धी कुछ घटनाएँ उद्धृत हैं—

‘गागादे वीरमात न भाटी राव राणगदे मारीयो घो तिए रँ वर अरडकमल भाटी सादा राणगदे रा वटा नू मारीयो, पछे किण ही मूल गुजरात अरडकमल नू श्रीळ दीयो यो उठ अरडकमल माराणो। तिण अरडकमल रा वेटा चरण न चादराव हुवा तिके राव रिणमल चूड़ावत रँ वसीया, मवाड मे पछ राव रिणमल चूड़ावत नै चूक कर राणो कु भे चीतोड मारीयो तर चरडो न चादराव अे जोधा रिणमलोत नू साथ ले निसरिया पछ भीलवाडा रँ घाटे राणा री फौज जोधा वासे आपडी तठै चरडो व चादराव काम आया। जाधे धरती वाळी तर चरडा रा वेटा नू जोध सवराड जोलवी कराडी (३ गाव) दीया।’ (पन्-१०)

३ वरसल भीवोत रौ परिवार -

चूड़ा के पौत्र व भीव के पुत्र वरसल के वंशजा की सूची दी है—

- | | |
|-----------------------------|-------------------|
| ३ वरसल भीवात | ४ पगार वरसलोत |
| ५ वरसिध पगारोत राव फलीदी थी | ६ सुरताण वरसिध री |
| ७ सूजो सुरताण री | ८ भोजो सुजा री |
| ९ सामदास भोजा री | |

इस उपरोक्त वंशावली के अतिरिक्त इन राठौडा के पुत्रों प्रपुत्रों के नाम इत्यादि भी दिये हैं। (पन्-३)

४ राठौड सहसमल चूड़ावत रौ परिवार -

राव चूड़ा के पुत्र सहसमल के वंशजा का वृत्तांत दिया है जो सहसमलोत राठौड कहलाये। सहसमल का सिरियारी का पट्टा मिला हुआ था वह हूल राजपूता के हाथों मारा गया जिसकी घटना इस प्रकार दी है—

“सहसमल चूड़ावत वडो ठाकुर हुम्रो राव चूड सिरियारी दी थी क राणे दी थी सु सहसमल री राजधान सिरियारी हुतो। सहसमल रा घर सिरियारी भापर माहे छ। सहसमल कठेवण परणीजण गयो घो सु हुले नै सहसमल दावो हुतो सु बामण एकै नु हुले हेरो जगायो थे सु कठै ही कि चेतो पात लागो नही नै

सिरियारी री बाडी घ्राप सहसमल उतरियो तरं कहण लागो जाजरी दिन भली न छै, राज सवारै गाव माह पघारजो । सवार री निपट भली दिन छै । तरं सगळै न्हयो एके दिन माह क्यू ही घाटोमोळो हुव नही छै वामण जाय हुला नै पवर दोनी सहसमल तो बाडी रह्यो नै रजपूत चाकर रात पोहर गई ।

आपर घरे गया हुल आय भूबीया सहसमल मारीयो गयो । एक भतीज एक भाणोज साथ परणोजीया था सु तिका पिण बाडी माहे मुहरत रै वास्ते रहया था सु माराणा, एक चारण वाम घायो सहसेलाव तलाव री पाळ ऊपर सहसमल री छत्री है, सती तीन हुई है सु सहसमल री छत्री माहै माडीयो छ घापरौ वर भावलदं हाडी माडी छै भतीज भाणोज री न चारण री वर सती हुई छ सु पिण माडी (भक्ति) छ ।'

सहसमल के वंशजों की वंशावली इस प्रकार है—

- | | |
|-----------------------|----------------------|
| २ राठीड सहसमल चूडा री | ३ रावत राघवद सहसमलात |
| ४ पचायण राघवदे री | ५ रायमल पचायण री |
| ६ मानसिंह रायमल री | ७ नारायण मानसिंह री |
| ८ जगनाथ नारायण री | ९ मुकन्ददास जगनाथ री |

५ राघवदास का वृत्तांत -

सहसमल के पुत्र राघवदास को राणा कुम्भा नै सोजत का पट्टा दिया । राघवदास के राव जोधा स लडते हुए चौकडी के घाने काल कवलित होने का उल्लेख है, तत्पश्चात् उसके पुत्रा की सूची दी है ।

‘ राव रिणमल नू राणी कू भे मार न मारवाड ली तरं राणी राघवदे नू रावताई द टीको काढ न सोजत पट देन मडोवर वसावण नू साथे मल्हीयो, तद सोजत म देहुरा । श्री लीवमी नारायणजी री जोधपुर र फलसे रावत रायदेव करायो छै । पछै राव जोधो चौकडी रै पाण राणा रा साथ नू भूबीयो तडै राघवदे उठ काम आयो ।

११ साथ ११ दुहो राव जोधा री

जोधा विडियो ओध, चहू रावासू चौकडी टीला होडा तेथ, रहिया राघवदे

बेटा री विगत—१ पचायण, देवीदास, सायर, रामदास, भोजराज, गापी, लपमण ७ बेटा राघवदे रा ।”

६ लूणा सहसमलोत के पुत्रों की विगत -

सहसमल के पुत्र लूणा के ५ पुत्रों की नामावली दी है जो इस प्रकार है—

१ करमसी	२ वीको	३ वीजो
४ सिवा	५ पूना	

(५५-३)

७ रणधीर चूडावत री परिवार -

चूडा के पुत्र रणधीर तथा उसके वंशज का विवरण दिया है। इसके वंशज रणधीरोत राठीड कहलाये। मडोर के शासक राव सता राठीड का राज-काज रणधीर द्वारा चलाने, भाटी राव राणगदे के पुत्र सादा को मारने इत्यादि घटनाएँ इस प्रकार लिखिबद्ध हैं—

‘१२ रणधीर चूडावत—रणधीर, सतो पूनो ए तीने ही भाई गहलोता रा भागोज तारादे रा बेटा, राव रिणमल रा सगा भाई च्यार भाई त्या माहे पहिला ही सतो चूडावत मडोवर टीके बैठो तरै राव सता रँ मुहडे आगे काम रणधीर चलावतो रणधीर, राव चूडा बँर माहे भाटी सादो’ राणगदे री पूगलीयो मारियो पछ सते जीवता हीज रणधीर राम क्यौ, तर सता था राज हाले नही तरै रिणमल नू टीको दीयो न सतो कायलारो वा रह्यो ।

१३ हरराज रणधीरोत	१४ सावत हरराजोत
१५ परबत सावतोत	१६ दूदो परबतोत
१६ घडसी परबतोत	१७ रामसिंह घडसोत
१८ रतनसिंह रामसिघोत	१८ देईदास रामसिघोत नू घोडे मारियो

आगे रणधीर चूडावत सम्बन्धी एक वार्ता दी है जिसमें मालदेव के इशारे पर नागोर के खान (दालतिया) के मेडता पर आक्रमण करने तथा इस युद्ध में जैमल की और रणधीर के मारे जाने का उल्लेख है। वार्ता संक्षेप में इस प्रकार वर्णित है—

वीरमद री वार माहे मेडतो मारण नू मेडते पवर कही छ। राव मालदे वीरमदे नू आय कन तेडायो थो न दोलतीया नू कहाडियो थो थे मेडते भूबो (आक्रमण करो) वीरमदे म्हा कने छै सु रिणधीरोत कटक री चडाई दीठी रिणधीरोत आपरी घोडो नजाणा ऊठ हुतो तिण चड नै उडायो नू बटक आवता पहला घडी २ आगे आय न पवर दी कोट री पोळ जडाणी साथ समायो वेड निपट सबळी हुई रिणधीरोत ठाकुर अपेराज रा मुहडा आगे वाम आयी, नागोर री साथ भागो। वेड अपराज जीती, ता पछ रिणधीरोत रा बेटा

१ अरदकमल चूडावत द्वारा भाटी राणगदे का पुत्र सादा के मारे जाने का उल्लेख है देखें ‘अरदकमल चूडावत री परिवार’ ।

पोता नतीजा नू आदर भाव घणी कर मंडतीया ठाकुर चाकर राखिया
कामलाणा माहे मोकल री बाडी छै, तठै चूको छै तिण उपर कीरयभ छै तिण थभा
माह रिणधीरोत चू डावत री नावो छै स० १६७५ रा रो सबत लिपीयो छ ।”

रणधीर चू डावत के अय पुत्रा नीवा रणधीरोत तथा नापा रणधीरोत के
वसजा की विगत दी है । नीवा के पुत्र मेता के वारे मे लिखा है कि उसे बीकानर
का गाव अमर मिला हुआ था (उत्तन) । (पत्र-१२)

८ राठीड काहा चूडावत री परवार -

- १ चूडा २ काही चूडावत ३ भारमल का हा री
४ घडसी भारमलोत

घडसी भारमलोत का वत्तात -

‘घडसी भारमलोत बडी ठाकुर हुआ राव मालदेजी री वार माह मेवाड र
केनवे कु भलभर कहले थाणो रहती, थावलो पट हुतो, केलवा मेवाड म जीलवाडा
या कास ७ आवलमाल भापर रहै छ । केलवो राम मालदेआत नू उदसिध पटे दीयो
थो ।’

घडसी के पुत्र महेस का वत्तात -

महेस घडसीयोत बडी ठाकुर हुआ राव मालदेव रा दीया अजमर पीपाड
पट हुता महेस राठीड देवीदास साथे १६१८ मंडते काम जायो । महेस बडा
ठाकुरा माहे थो पिण बडी यद जतो नू पो काम आया तठ नीसरीयो थो महेस ।”

आगे अ य काहावत राठीडा के नाम दिये हैं जिनको गाव इत्यादि पट्टे मे
मिले तथा क्व पुढ इत्यादि मे मारे गये उसका उल्लेख है । इन राठीडो का
सम्बन्ध मूल पुख्या से जोडा गया है । (पत्र-६)

९ राठीड पुनपाल चूडावत री परवार -

इसम राव चू डा के पुत्र पुनपाल तथा उसके वसजा का विवरण दिया है ।
पुनपाल सम्बन्धी घटनाए इस प्रकार दी हैं—

“१२ पुनपाल राव चू डा री गहिलोता री भारोज । सता, रिणमल रणधीर
नं पूनो ४ भाई वालीसा कहै मोहरा भापरा री पाणी जाय तलक तिण था
गोहू नीपजे छ या री भोग भू लेसा सता चूडावत र राज । तर हेक छाकरी बेटी
री नाठेर मेल न कहो में थानू परणावा छा ये जावो सु बीसलदे (वालीसा) जान
कर आयो सु पुता सु मिळियो तरै पूने मिळते हीज भीच न जीव काढीयो ।”

१३ डूंगो पुनपाल री	१४ दवा डूगावत
१५ लूनो दवावत	१५ लू भा दवावत
१६ वरजाग लू भावत	१७ जीरौ वरजागात
१८ जतसी जोणा री	१९ हरीदास जैतसी री”

आग पुनपाल के इन वंशजों के पुत्रों, पौत्रों, प्रपौत्रों की विगत दी गई है तथा पुनपाल द्वारा धीमलदे दूदावत का मारने का घटना का पुन जिक्र किया है जिसमें वीसलदे दूदावत का जालोर का शासक हाना लिखा है इस घटना से सम्बन्धित एक गीत दिया है—

गीत प्रारम्भ—

बळ मत करै गाट कर वालीसा, बळ म लाऊ आप बळ, पुना तएँ वषा म
मडियौ वीसल जीवण मतै बळ ।’

पुना चू डावत का रोहित १८० गावा से मिलन का भी उल्लेख है। (पृ-४)

१० राव सता चूडावत री परिवार -

राव चूडा के पुत्र सता जो काहा का उत्तराधिकारी हुआ उसके वंशजों का विवरण दिया है। पीड़िये इस प्रकार है—

१२ राव सता चू डावत	१३ नरबद सतावत
१४ वरसिध नरबदोत	१५ रायमल वरसिध री
१६ सागा रायमल री	१७ जतसी सागा री
१७ मूजो सागा री	१७ जमल सागा री
१७ पतसी सागा री	१८ भगवानदास पतसी री
१८ गोपालदास पतसी री	१९ जतसी गोपालदास री
२० कल्याणदास जतसी री	

इन राठौडा में से निकलने वाली शाखाओं प्रशाखाओं के व्यक्तियों के नाम एतिहासिक टिप्पणियों सहित दिये हैं। नरबद सतावत के बारे में लिखा है—

“राठौड नरबद सतावत एकरमा राणा री साथ लेने काठमेदेसर राव जोधा उपर विष म ग्रावो था मु नडो आयो तर राव जोध नू पवर हुई न नरबद पिण पवर दो तर जोधा जीमण री धाळी पुरसी थी मु मल नै अळगो निसरीयो, एक नाहो सी डावडा पिण पालणा म रही।

११ जोगा वरसलोत का वृत्तान्त -

सता के पौत्र व वरमल के पुत्र जागा व राव जोधा के बारे में एक घटना इस प्रकार दी है—

जोगो बरसलोत बडो हूओ, जिण राव जोध जाधपुर बंठा थका चोगान कहा या साडिया ली राव जोधा एक दिन पूड्यो—जोगा थार गाय भस कितरी एक मिळै छै, तर इण कह्यो—म्हार माणकी तरवार मिळ छ । पछ राव जोध कह्यो—हता थार माणकी मिळ तरै म्हानू धिपार छ इण कितराईक दिन प्राडा घाल न असवार ५०० करन साडा ली न राव जोधा नू असवार २ मल्ह न क्हाँ माणकी घ्राज मिळ छ ।” (पत्र-११)

१२ राठोड राजधर चूडावत री परिवार -

चूडा क पुत्र राजधर के वंशजो की नामावली दी है । पीडियेँ इस प्रकार अंकित है—

१ राव चूडो बीरमोत	२ राजधर चूडावत
३ उदसिध राजधर री	४ मुरजन उदैसिधोत
५ लपणी सुरजन री	६ किसनो लपणा री
७ गगो किसनावत	७ बाधा गागा री
८ हाथो बाधावत	१० सूरी हाथी री
११ तसा मूरा री	१२ लालो जमा री
१० लूहड जसावत	

(पत्र-३)

माला सलखावत री परिवार -

राव सलखा क पुत्र मल्लीनाथ के वंशजो का विवरण दिया है जा क्रमबद्ध नहीं है ।

१ जगमाल के पुत्र भारमल का वंशज -

अंकित है कि भारमल अपन पिता जगमाल द्वारा मारा गया ।

‘१२ भारमल जगमाल री, भारमल नू बाप जगमाल हीज मारियो । भारमल दातार थो नू चारण जगमाल नू कह्यो भारमल री बाप तिण मारियो नर चारण कहै—

पूत पियार मातलोक भी पूत पियारे ।

पूता कारण ताड्यो अवर हू तारे ॥

गोवाणचा राठोड—

वू पो राव माला री जिण रा गोवाणचा राठोड कहीज ।

फलसू डिया राठोड—

उदसो मालाउत जिणरा फलसू डिया राठोड कहीजै ।

कुमुमलीया राठोड—

घडवाल मालावत जिणरा कुमुमलीया राठोड कहीजें ।

२ मल्लोनाथ के पुत्र जगपाल का वृत्तांत -

जगपाल मालावत जगपाल न चद्रावन दवडी न बजक न लूठी जतमलोत रावल माल जलावदीन पातसाह र आळ रापीया छ । पछे पातसाह या नू कलमो भणाया । तथा पछला जगमाल रा पट रा पठीण छ । घाघरीया राठोड तिक जगपाल रा पोत्रा चाडा नराउत फलोदी रें गाव घाघर वसीयो तथा था घाघरीया कहीजें । ’

(पृ-२०)

जतमाल सलपावत री परवार -

राव सलखा के पुत्र जैतमल व उसक वंशजा का विवरण दिया है । इसक वंशज जतमलोत कहलाय ।

प्रारम्भ—

जैतमल सलपावत राव मलाजी न जतमालजी सगा भाई पडिहार रा भाणोज । रावळ माले महव थके सिवाणी जतमाल नू द सिवाणे वासीया, पछे जगमाल मालावत जैतमाल नू चूक कर मारियो ।”

पीढ़ियें इस प्रकार अंकित है—

११ हापो जैतमालोत	१२ हरभू हापावत
१३ भादो हरभू री	१४ राजा भादावत
१५ पातल राजा री	१६ दासो पातलोत
१६ भापरसी दामावत	१७ केसोदास भापरसोत
१८ कल्याणदास भापरसोत	१९ बाघ केसोदासोत

१ दासा पातलोत का वृत्तांत -

१६ दासो पातलात राव मालदेजी र दासाजी र पट साचोर थी, पछे पहला ही दासोजी जाय अकबर पातमाहजी नू मिळीया । पातसाह रा दरसन हुय रहा पछ पातसाह साचोर नै कालू भडता री दी ।”

२ भापरसी दासावत का वृत्तांत -

‘ १७ भापरसी दासावत पातसाहजी साचोर कालू वरकरार रापी ली छ १६५६ दक्षिण माह राम कयो ।”

३ केसोदास भापरसोत का वृत्तांत -

“ १८ केसोदास भापरसोत स० १६६४ लाबी परवा री पछे सिराणी ।”

४ कल्याणदास नाखरसोत का वृत्तांत -

“१८ कल्याणदास भापरसात स० १६६४ पाचपदरो भाद्राजण री पहिला स० १६५६ कुडल सिवाणा री दीया थो स० १६७५ भाडोला भाद्राजण री स० १६८४ पादू सिवाणा री सु स० १६८७ गाव ओछर । दपिण माहे राम कयी, रावल जगमाल पछ बीज दिन ।”

५ रावल उदा का हडदे का वृत्तांत -

जैतमाल का वजन, वजल का काहडदे तथा का हड का रावल उदा द्वारा मडता का गाव गगडाणा उसान इत्यादि का विवरण इस प्रकार दिया है—

“१३ रावल उदा काहडदे री उदै सिवाणा था जाया नै पहिला ही गाव गगडाणी मडता री वसायो तद मडती सूनी थो । पछ उदा री उठै जोरो हुग्रो फलीदी नागौर लार थो मु उद मडता लार की । तद मडतावटी माह सापला रजपूत रहै नै जतारण तद सीधला री जारो सीधल पीदान नरसिधोत बडो ठाकुर ।

दूदो जोदावत आय मेडता वसायो तरै उद आगे हुय या रा हाडा कीया ।”

६ अखेराज भदावत का वृत्तांत -

उदा का मोकल, मोकल का भदा, भद का अखराज जिसका विवरण इस प्रकार दिया है —

“१६ अखेराज भदाउत बडा रजपूत हुआ जैमलजी रै अपराजजी र पट लावीया पालडी नतडी धोलराव अपुवस, मुगदडी बडी था पछे राव मालदेजी कन परधीन मेलीया था सु प्रिथीराजजी दप न कह्यो जमला र अपराज कहीजै सु श्री भीव सु अतरो साभल न अपराजजी रीसकर न उठीया सु उठतै गळा माह पोतियो थो सू काटकीयो सु पोतिया रा आगुल रा टुकडा हुय न उढाया न प्रिथीराजजी नू कह्यो न श्रीहीज भीव छा हम थे वगा पधारजो । पछ राव मालदेजी स १६१० जमलजी उपर मडते गया तठै प्रिथीराजजी नै अपराजजी न बेउ ठाकुर काम आया ।”

(पत्र-१६)

सुहड र परवार री विगत -

सलखा क पीन सोमित क पुन सुहड तथा उसके वंशजा पूवजो इत्यादि का वृत्तांत है ।

१ सोमित सलखावत का वृत्तांत -

“१० सोमित सलखावत सोमित नै राव वीरमजी सगा भाई सोडा रा

११० राजस्थान के ऐतिहासिक ग्रन्थों का सर्वेक्षण, भाग-३

भालोज पछे व्याही नू राय माल महेया परा काडिया पछ सोभित ती विछ हिज रह्यो पोकरण र मढलें गाडा छोडोया नै विरम विठुई गयो ।”

२ सुहड सोभित का वृत्तात -

‘११ सुहड सोभित गो जिण रा सुहड राठोड कहीज सुहडा री बसरा गाव मढलो पोकरण री है ।’

छाडा री परिवार

१ काहडदे छाडावत का वृत्तात -

‘६ का हडे छाडावत सलपाजी री भाई महवे काहडदे ठाकुर हुती तरं सलपाजी न परा कडीया सु सलपाजी जाय गापडी गाव सिवाणा री रह्या, पछे सलपाजी रं ४ बेटा हुआ ।’

२ त्रिभुवनजी का वृत्तात -

‘१० त्रिभाणसी काहद री’ त्रिभाणसी रावत मालारा हीडा कीया चहुवाण मालद मुद्याळें अलावदी पातसाह आग घात घाली—जु माला र बर बेटी बहुत पुठरी छै, तिण उपर पातसाह रा लिपिया आया तर त्रिभाणजी नडुल जाय न सोनगरा री बहु बेटी हीचोले हीचली उपाड न घोडा री बल चढाय न अलाउदीन पातसाह कन ले गयो पछ मालद चहुआण नू पवर हुई—अ ती आपाणीज बहु बटी आणी पछ मालद पिसारण पडीयो तर त्रिभाणजी उवानू वेम पहिराय न सगलिया नू पाछी घरे पहुती कीवी ।”

सुहड राठोडो की पीडिये इस प्रकार अत्रित है—

१० सोभित सलपावत	११ सुहड सोभित
१२ लुभो सुहड री	१३ विजरावत सुभावत
१४ अल्हण विजराजोत	१५ सोहा अल्हण री
१६ नेरु सीहावत	१७ जमल भेरुदासोत
१८ वीरम जमलोत	१९ दुदो वीरमोत ।” (पत्र-६)

बठवासिया उदावतों री परिवार -

त्रिभावनसी के पुत्र उदा जो वि बँठवास आबर बसे इसलिये बठवासिया उदावत कहलाय इसके बदाजा का विवरण दिया है ।

पीडियेँ इस प्रकार है—

- | | |
|---|----------------|
| ६ उदी त्रिभाणसी | १० बिजो उदावत |
| ११ वीरम धीजावत (राव जाधाजा रै बीकानर रा गाव सउवा था अठ प्राय न वैठ वासैवमियो) | |
| १२ जैतसी वीरमरेत | १३ लूणो जतसी |
| १४ भगवान लूणावत | १५ आसी भगवानान |

तिलकसी वरजाग -

उदा का वरजाग वरजाग का तिलकसी

'११ तिलकसी वरजागान राव मालदजी रै नडून र धाण रहते ।

(पत्र-६)

फिटक राठीड -

राव रायमल का कल्हण, कल्हण का याथी तथा धाथी का फिटक इसक वंशज फिटक राठीड कहलाये । इसक वंशजा की केवल नामावली दी है ।

(पत्र-१)

सूडा राठीड -

रायपाल के पुत्र सूडा क वंशज सूडा राठीड कहलाय उनक वंशजा की विगत दी है, वंशावली इस प्रकार अंकित है—

- | | |
|--------------------------------------|------------------|
| ५ सूडा रायपाल जिण रा सूडा राठीड कहीज | |
| ६ उदैभाण सूडा रो | ७ सागो उदैभाण रो |
| ८ तोली सागावत | ९ कवरमी तोलावत |
| १० गैमल कवरसी रो | ११ उदा गैमल रो |
| १२ पती उदावत | १३ समर पतावत |
| १४ कूपी समर रो | १५ जमल कूपा रो |

फिर इनम स कुछ विशिष्ट व्यक्तिया की मुख्य उपलब्धिया आदि का विवरण दिया है, सागा क पुत्र तोला का विवरण प्रस्तुत है—

तोला सागावत का वंशात -

"८ तोल सागावत, तोली सूडी जिण गाव तोलीसर कोट करायी घणी सपत रो धणी थी सलपाजी रो तोली मासीयाई भाई सलपाजी सिवाणा रो गोपडी रह सलपा र बहू हेक पडिहारी हेक साडी सु त्पानू आधीन न सुवावड जोगो क्यू

११० राजस्थान के एतिहासिक ग्रन्थों का सर्वेक्षण, भाग ३

भाणोज पछ व्याही नू राव माल महवा परा काठिया पछ सोभित तो विछ हिज रह्यो पाकरण र मडलै गाडा छाडीया नै विरम विठुड गयो ।”

२ सुहड सोभित का वृत्तात -

‘११ सुहड सोभित गे जिण रा मुह राठोड वहीज मुहडा गे बसणी गाव मडलो पोकरण रो है ।’
छाडा रो परिवार

१ काहडवे छाडावत का वृत्तात -

६ वा हडे छाडावत सलपाजी रो भाइ महव काहडवे ठाकुर हुतो तर सलपाजी नै परा कडीया सु सलपाजी जाय गापडी गाव सिवाणा रो रह्या, पछे सलपाजी र ४ बटा हुआ ।

२ त्रिभुवनजी का वृत्तात -

१० त्रिभाणसी काहडे रो^१ त्रिभाणसी रावल मालारा हीडा कीया चहुवाण मालदे मुछ्छाळ अलावदी पातसाह आग घात घाली—जु माला र बर वेटी बहुत फुठरी छ तिए उपर पातसाह रा लिपिया आया तर त्रिभाणजी नडुल जाय न सोनगरा रो बहु वेटी हीचोले हीचलो उपाड न घोडा रो बल चढाय न अलाउहीन पातसाह कनै ले गयो पछ मालदे चहुआण नू पवर हुई—अ तो आपाणीज बहु वटी आणी, पछ मालदे पिसाण पडीयो, तर त्रिभाणजी उवानू बस पहिराय न सगलिया नू पाछो घरे पहुती कीवी ।”

मुहड राठोडा की पीढियें इस प्रकार अंकित है—

- | | |
|-------------------|-------------------|
| १० सोभित सलपावत | ११ सुहड सोभित |
| १२ सुभो मुहड रो | १३ विजरावत लुभावत |
| १४ आल्हण विजराजोत | १५ सीहा अल्हण रो |
| १६ भेरु सीहावत | १७ जमल भरुदासोत |
| १८ बीरम जैमलोत | १९ दुदो बीरमोत |

बठवासिया उदावतो रो परिवार -

त्रिभावनसी के पुत्र उदा जो कि बठवासे आकर बसे इसलिये बठवासिया उदावत कहलाये इसके बदाजा का विवरण दिया है ।

१ त्रिभुवनसी काहडवे का पुत्र नहीं बरन् भाई था, देखें बाकीगत रूपत पृ० ५

पीडियेँ इस प्रकार है—

- | | |
|---|----------------|
| ६ उदो त्रिभारणमी | १० विजो उदावत |
| ११ वीरम बीजावत (राव जाधाजी रै बीकानर रा गाव सउवा था अठ घाय न वठ वासवमियो) | |
| १२ जंतसो वीरमरेत | १३ लूणा जतसो |
| १४ भगवान लूणावत | १५ आसो भगवानात |

तिलोकसी वरजाग -

उदा का वरजाग वरजाग वा तिलकसी

'११ तिलकसी वरजागान राव मालदजी रै नडून र थाण रहता

(पत्र-६)

फिटक राठीड -

राव रायमल का केलहन, कलहन का धाधी तथा धाधी का फिटक इसक वशज फिटक राठीड कहलाये । इसक वशजा की केवल नामावली दी है ।

(पत्र-१)

सूडा राठीड -

रायपाल के पुत्र सूडा क वंज सूडा राठीड कहलाय उनके वशजा की विगत दी है, वंजावली इस प्रकार अंकित है—

- | | |
|--------------------------------------|-----------------|
| ५ सूडा रायपाल जिण रा सूडा राठीड कहीज | |
| ६ उदभाण सूडा री | ७ सागा उदभाण री |
| ८ तोली सागावत | ९ कवरसी तोलावत |
| १० गमल कवरसी री | ११ उदो गमल री |
| १२ पतो उदावत | १३ समर पतावत |
| १४ कूपी सगर री | १५ जमल कूपा री |

फिर इनम म कुछ विशिष्ट व्यक्तियों की मुख्य उपलब्धिया आदि का विवरण दिया है, सागा क पुत्र ताला का विवरण प्रस्तुत है—

तोला सागावत का वसात -

"८ तोले सागावत, ताली सूडो जिण गाव तालीसर कोट करायो घणी सपत री घणी थो मलपाजी री तोली भाभीयाइ भाई सलपाजी सिवाणा री गोपडी रह सनपा र वहु हक पडिहारी हक सोडी सु त्पानू आधीन न सुवावड जोगो न्यू

नहीं तर ताला ग था घाय ले गया तिण घा रायल मालीजी न चीरमजी जाया ।”

राव धूहड री परिवार -

१ वाडपेना राठीड -

धूहड के पुत्र जोगा के बगजा का हात दिया है ये वाडपेना के राठीड कहलाय इससे सवधित एन किस्सा दिया है—

जोइत र ताणमताण सीरप थी नलू एणो मस थी न वाडपे कुतरी (कुत्ता) थो, सु जोगाइत वाडपा कुतरी लाप पराजीया माह साह र जडाण राय आयो थो, पछ साह र चार पैठा तरं वाडपे जागीयो चार पकड़ीया च्यार लाप परोजिया री विस जातो रह्यो तर साह वाडपानू सीप दी नै जोगाइत नू चीर (चिटठी) लिप वाडपा रै गळे बाघो जुई सोप दी छै, सु परोजी लन जोगाइत वाडपा नू छुडावण हालीयो नू आगे वाडपा साम्ही आयो, जोगाइत रिसायन कंयो साम द्रोह म्हारी बोल गमीयो, इतरी साभळ वाडपे मुजो जोगाइत चीठी वाची घणा हो पिछतायो नै त्या हीज परीजीया री वाडपा रै नाप तलाव करायो नू वाडपे तलाव महेवा पर बाहडमर दिसा छ, उठै बस मु वाडपचारा राठीड कहीजै ।’

२ कटारमल का वृत्तात (वहड राठीड) -

राव धूहड का वेहड व वहड का कटारमल का विवरण इस प्रकार दिया है—

‘४ कटारमल वेहड धूहड री वेहड कटारी माथ बाघमी, तिण कटारमल कहीजतौ जिण रा वेहड राठीड कहीज ।’

३ पेथड राठीड -

धूहड के पुत्र पेथल (पीतल) के वसज पेथड राठीड कहलायें—

‘४ पेथड धूहड री पेथड रा तिण पेथड राठीड कहीजै ।’

(पत्र-१३)

उहड राठीडो री परिवार -

राव आस्थान के पौत्र व जोप के पुत्र उहड के वसजो की विगत दी है ।

पीढियें इस प्रकार है—

३ जोपसा आस्थान री

४ उहड जोपसा री

५ अरसी उहड री—बरी भूबीया तठ आ बहुआणो नै मारिया, तठै लोह

२० लागा पछ घाव फाट मुजो, वेदो नही

५ महाणसी उहड री	६ विजसी महाहणसी री
७ भ्रजंसी विजंसी री	८ धारड भ्रजसी री
९ तोलो धारड री—गाय एक नित देतो	
९ मानदे धारड री	१० दवसी तोला री
११ प्हथ देवसी री	११ मुहडपाल तोला री
१२ माडण मुहडपाल री	१३ दवसी माडणोत
१४ परहथ देवसी	१५ काजो परहथ री
१६ भाण काजावत	१६ नतसी कजावूत
१७ जमल नतसी	१८ गोपालदास जमलोत
१९ भोपत गोपालदासोत	२० गोइददास भोपतोत
२१ केसोदास गोइददासोत	

१ भाण कजावत का वृत्तात -

“१६ भाण काजावत नू राव गागो पहिला ही बावळली कोडणा री पटो दीयो पछे सगळा कोडणा री राव मालदेवजी दीयो भाण प्रधानगी माहे थो पछ भाणजी घात घाल नै रावा कना नू कानो नै भदो पचाइणोत बीडा माहे विस दे मराया था पछ सूर पातसाह आव न रावजी सोजत पधारिया नै साथ भेळो हो मु उठ भाण आयो नही तरै रावजी कह्यो—भाई भाण उहड अजे वयू न (आ)यो तरै जतोजी घात घाली पछे रावजी जगमाल ऊहड नू कह्यो—तू भाण नू मारा पछ भाण आयो मू सोजत री पाल चढता नू जगमाल भूदोओ मारीयो भाण नू ।”

२ नतसी कजावत -

“१६ नतसी काजावत राव मालदेजी कोडणो किसना भाणोत कना सु खेने नतसी नू दीयो ।

३ जमल नतसी का वृत्तात -

“१७ जमल नतसी री कोडणो जमलजी नू दीयो न नतसी पछे तुरकाण गोपालदास नै मुरताण नतसोत तुरकानू मिळ काडण हीज रहया न जमलजी राव चद्रसेनजी साथ बिपा म था मू स १६३६ थावण वद ११ सवराड सदा सु वेड की तठे काम घ्राया ।”

४ गोपालदास जमलोत का वृत्तात -

“१८ गोपालदास जमलोत स० १६४० कोडणो गोपालदास रामा नू दीयो पछ जोधपुर रा गड उपर रहता मू स० १६५५ जैसलमेर था रावळ भीव रै भाई कल्याणमल घ्राय कोडण मारीयो तरै गोपालदासजी जोधपुर चढीया जाय

११४ राजस्थान के ऐतिहासिक ग्रन्था का सर्वेक्षण, भाग-३

गामा रँ भाटीया सू बड़ की तठ काम आया पहेला उरजन गोपालदासोत न भोपत भाटीया री वित लाया था तिण वँर भाटी आया ।”

५ गोईदास भोपतोत का वृत्तात -

२० गोइदास भोपतोत स० १६७३ छासेलाई कोढाणा री स० १६८५ पाचपदरी सिवाणा री स० १६८८ , छाड माहबतपा र वसीयो पछ मोहबतपा मुग्रो तरँ १६९४ पड़े राव अमरसिधजी रँ वसीयो ।”

६ उरजन गोपालदासोत का वृत्तात -

“१९ उरजन गोपालदासोत किसनसिधजी (दूधोडके) री चाकर थो पछे गोपालदासजी काम आया तरँ स० १६५६ कोढाणा तीजा हैसा सू वाघावास री पटो दीयो पछे स० १६७६ रु० ४०००) पसकसी रा कर कोढाणा लीयो ।”

७ सुन्दरदास उरजनोत -

“२० सुन्दरदास उरजन री स० १६९४ वाघावास री पटो थो १६९५ छासेलाई वसी नू दीयो ।”

जैतमाल जैमलात माडण गोपालदासोत सुरताण नेतसोत, भोकल घरहथोत, हरदास भोकलोत जगमाल नीबावत, मानसिंह महेसोत इत्यादि उहड राठोडो पर भी ऐतिहासिक टिप्पणियँ अकित है। (पत्र-१४)

सीधल राठोड री परवार -

आस्थान के पौत्र व जोप के पुत्र सीधल व उसके वंशजो का विवरण लिपिबद्ध है, इसक वंशज सीधल राठोड कहलाये ।

प्रारम्भ—

सीधल नै उहड सगा भाई कबरीया जपाल री बहिन गानी रा बेटा जालोर रँ बालावाडे रहता पड़े उठे जलधरजी आया मिळिया ठकुराई हुई तरँ उठा था न सीधल भाद्राजण रँ धूमडे भापर आया रहयो भाद्राजण वसाय न उहड आय कोढणा री भापरी कोढणा वसायो सु स० १६९६ रा मालदेजी भाद्राजण बीरा सीधल कने ली ।’

पीढियँ इस प्रकार हैं—

- | | |
|----------------|-----------------|
| ५ आसल सीधल री | ६ नणो आसल री |
| ७ भीव नणावत | ८ करण भीवोत |
| ९ उरजन करणोत | १० भारमल उरजनोत |
| ११ सता भारमलोत | १२ मेया सतावत |

१३ मूजो मेपावत

१४ रतनो मूजावत

१५ भदो रतनावत

१६ अचलो भदावत

१७ सादुल अचलावत

इसमें महाजल जसावत, रावत जलावत, सीहो पगारोत इत्यादि सीधल राठीडा का भी विवरण दिया है। (पत्र-५)

जोलू राठीर री परवार -

इसमें जोप का पुत्र जालू के वधज जोलू राठीर कहलाये उनका विवरण दिया है।

राठीर सरदारों की विभिन्न खापा के मूल पुरुषों तथा उनकी सतति इत्यादि की जानकारी के लिये सामग्री बहुत उपयोगी है।

ग्रथ एक ही व्यक्ति द्वारा मोटे अक्षरों में लिखा गया है। ऊपर चमड़े का गत्ता चढ़ा हुआ है। अ त म काफ़ी पत्र रिक्त पड़े हैं।

३२ पोकरण तथा पटा रा गाव उपर मुकदमा री विगत

१ पोकरण तथा पटा रा गाव उपर मुकदमा री विगत, ३ पो० हा० सग्रह, ३ १६, ५ ३६५ × १६७ समी०, ५ १, ६ २४, ७ वि० स० १६३४, ६० सन् १८७७, ८ अनात, ९ राजस्थानी, देवनागरी १० इस परवाने में पोकरण परगन के मुलजिमों से जुरमाने के रुपये वसूल करने का निर्देश है। विगत से पटा चलता है कि अजटी पचायत की ओर से पशुधन आदि की चोरियों के फंसल पर सरकारी कोष से तत्काल रुपय अदालत में जमा करा दिये जाते थे, फिर अपराधी से रुपये मय ब्याज से जागीरदारों के मारफत वसूल किये जाते थे।

'उजल श्री नायुदानजी फजूलापा लिषावत जूहार वाचसी। तथा पोकरण पास उत्र तथा पटा रा गावा उत्र मुकदमा इण माफक है तीण री वीगत—

१ गाव गुडा उत्र जसलमेर रा राज री साड १ तोडीयो १ गाव लाठी सु दोग वरस पेत्ती चोरीयो गयो सु गुडा रा सेरा सु चारा टोळा मे चावा डुवा सु दीआ नही तीण री मुकदमो मारे गाव उत्र अजटी पचायत सु सावत होय रुपया ६०) री डीगरी हुय मुदे उने सीरवारी पजाना सु दीरीजी या सु ब्याज सुधा लावजो।

२ पोकरण पास उत्र जसलमेर इलाक रा वेड गाव रा जागीरदार आइदान मुकनसिध रा ऊट २ असबाव रोकड सुधा पहोकरण री वगसीयो चापावत नै गुमटीओ अरजन सीपाई पाडु फरीद पास पोकरण मे रेण बाळा पोस लीया ने

भ्राईदान नै दोनू ऊटा र तरवारा सु घायल कीया तीणरी मुकदमा भ्रजटी रो पचायत सु थारे उप्र साबत होय रूपया १७८) री डीगरी हुय सीरकार रा पजाना सु दीरिजीया सु ब्याज सुधा लावजी ।

३ पोकरण पास उप्र जंसलभर री भाटी लोछमण फलीदी वोरा न रूपीया देवण न जावता था सु धीरे सीव म देवडा वीरम री नाडी कने सदा नाडा न घाढवीया कोस लीया तीण री मुकदमो भ्रजटी पचायत सु थार उप्र साबत होय डीगर रूपया १२०) री हुय सीरकारी पजाना सु दीरीजीया ।

इण माफक मुकदमा है तीण रा रूपीया ब्याज सुधा मल देसा स० १६३२ रा ।”

उस समय की ग्रदालती ब्यवस्था की जानकारी मिलती है ।

३३ लूण रं आगार री विगत

१ लूण र आगार री विगत २ पो० हा० सग्रह, ३ १११, ४ ५३ × १७ ३ सेमी०, ५ १, ६ ३७ ७ १६वीं शताब्दी का उत्तरार्ध, ८ अज्ञात, ९ राजस्थानी, देवनागरी, १० इस पत्र में नमक की खानिया की विगत दी है । इसमें पढत एव चालू नमक की खानियों का उल्लेख करते हुए उस पर लगने वाले कर की जानकारी मन्नेज की सरकार को दी है ।

“श्री परमेश्वरजी सत्य छे

१ अपरच कागद राज री आयो नै पटारा गावा मे पारी लूण रा आगार री विगत मगाइ जीण री विगत तो साहब उठै आया नै साहब पुछी जीण मुजब विगत साहब बाहादुर नै भञ्जारी इमरतमलजी री मारफत मडाय दीवी ।

१ चलु आगार नग वार कीता है सो पास पोकरण र कन है जीण मे लूण पारवाल जमावे है सा पास पोकरण तथा पोकरण रं पापती रा गावा म सजै जीतरौ लूण नीसरं है इण सीवाय दीसाबर चढ़े नही ।

२ पडताल आगार म लूण हमार नीसरं नही नै आग नीसरतो हो जीके आगार कीता है सो गाव धाट १ भलारीये १ देडीयाली १ मे ईणा गावा म आगार तो है पीण लूण आज ताई पदा हुवो नही ।

३ आगार मे लूण कीता मण अदाजे नीसरं न पदास रा श्री दरबार म कीता रूपीया आवे सो मणगत री अदाजे तो आज ताई कदेई कादीयो नही नै पदास रा रूपीया म श्री दरबार मे तो कुई लागे नही न लूण आगार मे बीके जीण मे रूपया ५) म रूपया ३) तो मार आवे रूपया २) पारवाल रं आवे नै सर मे

पुटकर बीके पईसा १ री पायली २ लेये बीके जीण मे आधा तो मारे आवै न आवे
आधा पारवाल रै आवे न पारवाला रा घर १२ है बीके महीना म घर दीठू रा
सवा ६ डब उठारा चोपला रा गावा ने बेचण ले जावे जीण रा हासल रा घर दीठ
७ आना भर देवे सो रो मास १२ रा ६०) ईण अदाजे सीरकार मे जमा
हुवै ।”

पत्र की प्रतिलिपि अपूर्ण है।

३४ दरबार सु धान री नीरख राखण रै हुकम री विगत

१ दरबार सु धान री नीरख राखण रै हुकम री विगत, २ पो० हा०
सग्रह, ३ २२, ४ ३७ ५ × १६ ७ सेमी०, ५ १ ६ २६, ७ वि०
स० १६३४, ई० सन् १८७७, जोधपुर, ८ अनात, ९ राजस्थानी, देवनागरी,
१० यह पत्र सिवाने के हाकम को लिखा गया है जिसमें निश्चित की गई नाज की
कीमती का उल्लेख हुआ है। उस समय की अथर्वव्यवस्था की जानकारी
मिलती है।

प्रारम्भ—

‘नागद १ दीवाणी सीवाणा रा हाकमा रै नावे अपरच श्री दरबार सु
रैत री परवसी र वासत पास जोधपुर नै प्रगना म, तथा गावा मे इण मुजब सरब
धान री नीरख रापण री हुकम हुवै है तीण री विगत तोल जोधपुर रा सु

१) गोहू १)२ बाजरी १)२ मूग १)८ मोठ १)४ चीणा १)४ जवार

१)४ जव

ईण मुजब जारी हुवो है सु जोधपुर रीयासत रा परच वासत परीदण मुदै
सीरकार सु पीकरण रा ठाकुरा रा आदमी आया है सु उपर लीपीया मुजब
नीरख रा भाव सु उठारा प्रगना रा गावा रा बोपारीया रै धान हुवै जीण करै ईण
सरसत परीद करसी सु बोपारी जीण भाव सु धान परीदियो हुव तथा उनालु
सावणू आपरी आसामीया री धान जीण भाव सु लीयो हुव जीण री असल नीरख
देपनै ब्याज प्रा० ११) री नै कोठार री भाडो द मजुरी वगेरे लागी हुव सु तो
परच टाळ बाकी नफो रेव जीण म आधो नफो तो सीरकार म भाडा वगेरै परच मे
लीरीज सी न ईण मे कोई जूठ फरेव करसी सु सजावार हुसी न ईण नीरख
मुजब देण म कोई गावा बाळा उजर करै तो याने आप बाकब कर जठे थोडा
आदमी म्हेल धान हुवै सु मगाय लीजो ईण मे गाफली राधी तो भोलामो धारै
जुम है, १६३४ रा भादवा सुद ८ ।”

तीसरा अध्याय

बहियो का संग्रह

३५ राज रं हिसाब किताब री बही

१ राज र हिसाब किताब री बही, २ जो० क० संग्रह, ३ ७०, ४ ६२ × १७ सेमी०, ५ ६४, ६ ३० ३७, ७ वि० स० १६३१ ३८, ई० सन् १८७४ ८१, ८ अज्ञात, ९ राजस्थानी, देवनागरी, १० इसमे जोषपुर के महाराजा जसवतसिंहजी (द्वितीय) के राजकीय खच का हिसाब दिया है।

प्रारम्भ—

‘श्री नाथजी सत्य छै

कविराज मुरारदानजी उदपुर जाव तीणा ताईक री बगेर री—

५६४) पोडा रं गुढ ईक रोजा रा मास १ रा

२००) रसोडा परच रा मास १ रा

१४१) महीनदार आदि।”

राजकीय व्यवस्था सम्बन्धी कुछ जानकारी इसम मिलती है।

यह बही एक ही व्यक्ति के हाथ से लिखी गई। बहुत से पत्र रिक्त पड़े हैं।

३६ महाराजा श्री मानसिंहजी साहब के राजलोक श्री लाडी भटियाणीजी साहबा की सरकार तालुके जमा खर्च री सावो

१ महाराजा श्री मानसिंहजी साहब के राजलोक श्री लाडी भटियाणीजी साहबा की सरकार तालुके जमा खच री सावो, २ जो० म० संग्रह, ३ २१, ४ १५ × ४ सेमी०, ५ १२८, ६ ४७ ५०, ७ वि० स० १८८७ १८८८, ई० सन् १८३०-१८३१, जोषपुर ८ अज्ञात, ९ राजस्थानी, देवनागरी, १० इसम जमा खच का हिसाब वि० स० १८८७ श्रावण वदि १ स लगाकर वि० स०

१८८८ के असाढ़ सुदि १५ तक का दिया गया है। इसमें महारानी के पट्टे के गावों का उल्लेख भी हुआ है, वे हैं—सरलाई, सुवालिया, वालरवा। इसके प्रतिरिक्त श्री नाथजी का मंदिर गुलाबसागर पर बनवाने का वणन है।

प्रारम्भ—

“श्री नाथजी सत्य छ”

मीती सावण वदी ला० सुदी १५ सुधा दीन रो जमा परच रो साब्रो श्री लाडी भटियाणीजी रो सा० १८८७ रा ।

ग्रथ मे एक जगह श्रीनाथ के मंदिर का बनवाने के लिये दिये गये रूप्यो का वणन इस प्रकार हुआ है—

१०००) श्री नाथजी रो मीदर गुलाब सागर उपर हुब तीण ता० (तालकै) रूपिया १०००) हजार अके दीया ह० (हस्त) प्रो० सवाईराम पा० साहब-चद हजारो सालग सु कमठे जमा कराई ता० तीखाडी मोतीराम ता० रा रोज नावे ।

१०००)

ग्रथ मे जगह-जगह देवस्थाना मे भट स्वरूप दिये गए पसा तथा वस्तुप्रो आदि का भी वणन है। इसके प्रतिरिक्त कपडे, सोने के आभूषण, किराणा का सामान, कमीणो, चाकरो का रोजगार, भाडा पट्टे के गावों से आयी आय का वणन हुआ है। ग्रथ मे एक जगह श्री नाथजी महाराज का मंदिर तथा गुलाब सागर की पक्की मेढ बधवान पर दिये गए रूप्यो का वणन इस प्रकार हुआ है—

“१०००) ता० श्रीनाथजी माहाराज रो मीदर गुलाब सागर उपर हुवो नै तळाव रो पटा बधीजी तीण ता० ६० ४० १६०) तो आग आया नै फेर ६० १०००) दीया हा० प्रा० सवाईराम उमेद गगारा महाराज कुल रूपया ४११६०) दीया ।”

ग्रथ अनेक व्यक्तियों के हाथों से लिखा गया है। ग्रन्थ पर चमडे का गत्ता है। पत्र हाथ के बने हुए है। लिपि साधारण है। काफी पत्र कीट भक्षित हैं।

३७ बियाव तालके महाराज तखतसिंहजी की सलामती मे भावा श्री सिरदारसिंहजी साहब री बरात बुदी गई तिए तालके सफर खर्च

१ बियाव तालक महाराज धी तखतसिंहजी की सलामती मे भावा श्री सिरदारसिंहजी साहब री बरात बुदी गई तिए तालके सफर खर्च, २ जो० क० संग्रह, ३ १६, ४ ३६० × १७ सेमी०, ५ १, ६ २६३, ७ वि० स० १६२०

१२० राजस्थान के ऐतिहासिक ग्रन्थों का सर्वेक्षण, भाग ३

ई० सन १८६३, जोधपुर, ८ अनात, ९ राजस्थानी, देवनागरी, १० इन लम्बे पत्र में सरदारसिंह की बरात बुदी गई तब रास्ते में हुए खर्चों का उल्लेख हुआ है। पत्र का प्रारम्भ इस प्रकार हुआ है—

“श्री जलधरनाथजी मत्स्य छं”

मिती मीगसर वद १ गुर लग मुद १५ मुकर मुदा मा० १ रा दी० ३० रो
१९२० रा मीगसर वद १ गुर

मीग० वद २ मुकर

ता० बुदी बाभा सीरदारसिंघजी रो जान साये जावत रो”

इस पत्र में प्रत्येक दिन का खर्चा लिखा हुआ है। पत्र की संख्या एक है लेकिन पूरा पत्र ६ पत्रों को मिलाकर बनाया गया है। पत्र के दोनों ओर लिखावट है।

पत्र एक ही व्यक्ति के हाथ से लिखा गया है। पत्र हाथ के बने हुए हैं, लिपि माधारण है।

तत्कालीन विभिन्न वस्तुओं के मूल्यों की जानकारी के लिये उपयोगी है।

३८ महाराज श्री मानसिंहजी साहब के राजलोक श्री चावडीजी साहब
को सरकार तालुके दोडी तालके रोजनावा रो बही

१ महाराज श्री मानसिंहजी साहब के राजलोक श्री चावडीजी साहब को सरकार तालुके दोडी तालके रोजनावा रो बही, २ जो० म० सग्रह, ३ २७, ४ ६३ ५ × १६ मेमी०, ५ १२३, ६ ५०-५४, ७ वि० स० १८७३, ई० सन १८६६ जोधपुर, ८ अनात, ९ राजस्थानी, देवनागरी, १० इसमें जोधपुर, महाराज मानसिंहजी के कुवर छतरसिंह की माताजी के डपोडी के खर्चों का विवरण दिया गया है। इसमें वि० स० १८७३ माघ सुदि १४ से धावण वदि १५ वि० स० १८७४ तक का हिसाब है।

प्रारम्भ—

“श्री जलधरनाथजी”

स्वामूप श्री अनेक सकल सुभ आपमा वीराजमानान श्री राजराजेश्वर महाराजाधिराज महाराजाजी श्री मानसिंहजी महाराजकवर श्री छतरसिंहजी देव बचननाथ महाराजाजी श्री चावडीजी साहब रे दोडी तालक रोजनावा रो बही १८७३।

इस बही में जनानी डपोडी में होने वाले खर्च का उल्लेख हुआ है जिसमें डपोडी के मजदूरों की मजदूरी, घान लाने वाली बलमाडिया का किराया, बाजार

से खरीदी गई वस्तुओं की कीमत, मदिरा में चढाई गई भेंट, त्योहारों पर होने वाला खर्च जैसे सकरायत, जमाष्टमी। घास की खरीद जैसे—चीपटा, कडव का घूला आदि चीजा की खरीद का उल्लेख है।

एक स्थान पर बाळदीया वामणीया भाट के कणवारिया से लडने के फल स्वरूप लडने की तकसीर के ६) रुपये लिये जाने का वणन है।

इसमें महारानी के पट्टे के गाव सालावास की आय, किसानों पर लगने वाले भूमि कर इत्यादि का भी उल्लेख है।

ग्रन्थ एक ही व्यक्ति के हाथ से लिखा गया है। ग्रन्थ पर चमडे का गत्ता है। पत्र हाथ के बने हुए हैं। लिपि साधारण है। कुछ पत्र सडे हुए हैं।

३६ बडा महाराजाजी श्री मानसिंहजी रँ नित हकीकत री बही

१ बडा महाराजाजी श्री मानसिंहजी रँ नित हकीकत री बही, २ जो० म० संग्रह, ३ २६, ४ ६२ × १५ सेमी०, ५ १४२, ६ ३७-४०, ७ वि० सं० १८७३-७४, ई० सन १८१६-१७, जोधपुर, ८ अज्ञात, ९ राजस्थानी, देवनागरी, १० इसमें जोधपुर महाराजा मानसिंहजी द्वारा अपने कुंवर छतरसिंह को युवराज की पदवी देने इत्यादि घटनाओं का वृत्तान्त है।^१ बही में सवत १८७३ वैसाख सुद ३ शनिवार से लगाकर सवत १८७४ तक का हाल लिखा हुआ है।

प्रारम्भ—

“श्री नाथजी सत्य हैं

स्वरूप श्री अनेक सकल सुभ ओपमा वीराजमानान श्री राजराजेश्वर माहाराजाधिराज महाराजाजी श्री १०८ श्री मानसिंहजी महाराज कवार श्री १०५ श्री छतरसिंहजी वदे जनानी दोढी रा दरोगो हरचनराम न बेटो वीदरावनदास ईनायत १८७३ रा वैसाख सुद ४ हुई तीण तालक री बही”

बही में मानसिंहजी द्वारा अपने कुंवर छतरसिंहजी को युवराज पदवी देने का वणन इस प्रकार हुआ है—

१ मानसिंह की म्यात के अनुसार राजकुंवर छतरसिंह का देहान्त वि० सं० १८७४ चत्र यदि ५ को हुआ। ग्रन्थोंक १०६१० रा० गो० सं०

'स्वरूप श्री राजेराजेश्वर माहाराजाधिराज माहाराज कुवर श्री छतरसिंहजी साहवा ने श्री हजुर सु जुगराज पदवी दीवी स० १८७३ रा बसाप सुद ३ सन न माती मेहल मे बुलाय न रात घडी ४ गया पछ पाचवी रा अमल म श्री हजुर आपरा हाथ सु तिलक कवरजी र बीया नै तरवार बदाई, भीर थापिया, पुरमायो सेवा चाकर सीरदार रंत न सरख न आछीतरै मू परोटजो काम कुसी सु करो तरा पट्टे श्री कवरजी मुजरो करे नै दौलतपाना मे पधार न सीरदार वार कानी चौकी वीराजिया नै नीजर नीछावर हुई, घडी ४ वीराजिया नै पछे फतमल म जाया तीज थी तीण सु पाती पटे हुवो नै सीरदार पोकरण, आउवो, आसोप, नीवाज, रोपढे, पोवसर, चडावल, रास बुटसु, करनोन, जोधा, वगर सरख हाजर हा पछवातीयो वालिया पछ सीरदारा नै फुना री माळा दने तीप हुई सु थाप थाप र डेरे गया पछ पोर ऊपरे तीजी रा अमल म तोपखाना री सोलक हुई ।"

वही मे जगह २ गवर माता, नागण्डीया माताजी, मडोर के देवस्थाना आदि की पूजा, छतरसिंहजी का बपगाठ का उत्सव, हात्ती का उत्सव पर हुए खर्च का बखान है।

वही मे एक जगह छतरसिंहजी के व्याह का बखान है जो कि कालाणपुर के चौहान राव दुरजनसाल महोकर्मसिंघोत की पुत्री से हुआ था।

वही अनेक व्यक्तिमा क हाथा से लिखी हुई है, पत्र हाथ के बने हुए हैं निम्न माधारण है। वही पर एक तरफ चमड व दूसरी तरफ कपडे का गत्ता चडा हुआ है।

४० अदालत मुकदमा रै फौसला री वही

१ अदालत मुकदमा रै फौसला री वही, २ जो० म० सग्रह, ३ २, ४ ६५ X १७ सेमी० ५ ११४, ६ ३८-४०, ७ वि० स० १९३०, ८ सन् १८७३, ९ अनात, १० राजस्थानी देवनागरी, १० इसम जोधपुर इत्यादि परगना म चल रहे अनेक मुकदमो व उनके फसल आदि का विवरण दिया गया है। ग्रन्थ का शीपक इस प्रकार अंकित है—

'सदर अदालत दीवाणी रा मुकदमा फौसला त्या रो पड जमा परच री नकल री वही १९३० रा आ० लागतो ३ रा काती वदि १२ ताई।

प्रारम्भ—

“॥ श्री जलधरनाथजी सत्य छै ॥

सदर अदालत दीवाणी^१ ता रा मुकदमा रा फंसला हुआ—स० १९३०
आ(सोज) वद १ ला० दु० आसाढ वद १५ सुधा मा० ११ म दरोगा कवराज
मुरारदान

१३३ लण दैवण

२ आसोज रा

१ मुदई नागोर रो ननसाली जठमल मुदाय लँ उठारी चौ० पुनमचद
दावो अमल रा० रुपया १६० रो अरजी आ० वद ७ लवर फंसलो
आ० वद ११ विगत जठमल रा २८५ लण रो दावो साबत हुवो नी
(नही) 'आदि।”

इसमें अधिकांश मुकदमे लेने दन के हैं। उस समय कविराज मुरारदानजी
दरोगा पद पर नियुक्त थे।

ग्रन्थ एक ही व्यक्ति द्वारा लिखा गया है।

लिपि अस्पष्ट है, चमड़े का गत्ता बढ़ा हुआ है।

४१ खाता बही

१ खाता बही २ जा० क० सग्रह, ३ ९, ४ ६४ × १६ सेमी०,
५ ५१, ६ ७०-७२ ७ २०वीं शताब्दी का प्रारम्भ, ८ अज्ञात,
९ राजस्थानी, देवनागरी, १० यह जोधपुर के राजकवि चनदानजी के जमा
खच की निजी बही ह।

प्रारम्भ—

“॥ श्री परमेश्वरजी महाराज सत्य छै ॥

स० १९९८ रा भीती आसाढ वद २ सु पात भी (बही) कविराज
चनदानजी रै नदानगी रो जमा पच ।”

१ विश्वेश्वरनाथ रेड क अनुसार दीवानी अदालत वि० स० १८९६ म रजीडन्सी कायम होने के समय खोजी गई थी। इसके बाद वि० स० १९०० तक वो इसका काम मूरसागर मही होता रहा, परन्तु महाराजा तख्तसिंह क गद्दी पर बठने पर इसका दफ्तर वहाँ से उठा कर अहमदाबाद म चलाया गया। पहले दिवानी का काम कविराज मुरारदान को सौंपा गया था परन्तु वि० स० १९३८ म मेहता अमृतलाल शिंदानी अदालत का हाकम बनाया गया और उसी वर्ष मुरारदान महकमा अमील के हाकिम नियुक्त हुए। (मारवाड का इतिहास, द्वितीय भाग, पृ० ४६३ ४६४ ४६५)

१२४ राजस्थान के ऐतिहासिक ग्रन्थों का सर्वेक्षण, भाग-३

इस जमा खच से तत्कालीन भावों आदि की अच्छी जानकारी मिलती है।

लिखावट के अक्षर महीन हैं, पत्र चिकने व बारीक हैं। एक ओर गत्ता चढा हुआ है।

४२ जब्ती री बही

१ जब्ती री बही २ जो० क० सग्रह, ३ ७, ४ ६३ × १७ सेमी०, ५ ६०, ६ ३०-३१, ७ १६वीं शताब्दी का उत्तरार्द्ध, ८ अज्ञात, ९ राजस्थानी, देवनागरी, १० इसम जोधपुर, नागौर, जालोर, साचौर, मेडता, जतारण इत्यादि परगनों के विभिन्न गावों में जब्ती, चोरी, अदालती भूमि जादि की जानकारी दी है।

मूल ग्रन्थ का प्रारम्भ यहाँ से हुआ है—

‘जबतिया री नकल उतारी सावण वद १, १६१६ रा

मीती सावण वद, ११ १६१६ रा

नागौर रँ गाव भावडा म प्रो० मेसदास गुला री पाती री चौथ री पालो फादीसतै तथा ईण री पाती श्री दरबार में जबत हैं ए हासल मुकातो बगेर दाम अके इणा नै दीजो मती नै जावता सारू एवालदार मेलियो है ।”

किसी पूरे गाव या हिस्से के जब्त किये जाने पर क्या व्यवस्था की जाती थी इसका पता इस ग्रन्थ में चलता है।

ग्रन्थ एक ही व्यक्ति द्वारा लिपिबद्ध किया है। चमड़े का गत्ता चढा हुआ है।

४३ जमा खच की बही

१ जमा खच की बही, २ जो० क० सग्रह, ३ ३५, ४ १६ × १७ सेमी०, ५ ५३, ६ ३०-३३, ७ २०वीं शताब्दी का प्रारम्भ ८ अज्ञात, ९ राजस्थानी, देवनागरी १० इस बही में जोधपुर के राजकवि के कुछ गावा का जमा खच का हिसाब तथा हासल इत्यादि वसूल करने का विवरण दिया है।

प्रारम्भ—

“॥ श्री परमेश्वरजी साय छ ॥

महामहोपाध्याय कविराज श्री मुरारदानजी साहब कवरजी श्री नणोसदानजी साहब र लेणा में गाव पीयल रा जागीरदार उदावत रामसिधजी आप रँ पट्टे रँ गाव मडलो वरस ८ म कीड दीयो प्र० सोजत तीण रँ जमा खच री मळ समत १६६६ रा सावण वद १ मादि ।”

कज आदि लेने के लिए गाव रेहन रखने की ब्या पद्धति थी इसकी जानकारी विदोय रूप से इस ग्रन्थ के द्वारा मिलती हैं ।

ग्रन्थ एक ही व्यक्ति द्वारा लिखा गया है । लिखावट अशुद्ध है ।

४४ विसूद र लेखे रो बही

१ विसूद र लेखे रो बही, २ जो० क० सग्रह, ३ ३२, ४ ४८५ × १६ सेमी०, ५ ७, ६ २७ ३०, ७ वि० स० १६३०, ई० सन् १८७३ न प्रनात, ६ राजस्थानी, देवनागरी, १० इसमें उस समय के जमा खच का व्योरा दिया है ।

प्रारम्भ—

सवत १६१० रा वरस रो वीसूद रो लेपो इण म है ।

जमा

खच

४७) पोत बाकी

४७) या सतालीस (रुपयो) रो मोरा

३ तीन तीवी सो मार एक तो ब्यासजी

न दीवी नै मोर दोय पोते बाकी

आदि ।”

वि० स० १६१० में सोने की मोहर का भाव करीब १६ रुपये होने की जानकारी मिलती है ।

एक स्थान पर सोने व चांदी के गहना की सूची इस प्रकार दी है—

“॥ श्री नाथजी ॥

विगत पिंडा रा गूहणा रो सोनो गहणो

१ कठी एक मोटोडी ।

१ पु णची एक ।

१ डारो पाष माथलो ।

२ बीटिया दोय अष्ट पेल ।

१ मोतिया रो कठी दोलडी दुगदुगी बाळी जुमलै लडा च्यार ।

२ मोतिया रा चोकडा दोय जुमलै मोती आठ, लाला ४ ।

१ मोतिया रो काठलो पाच लडो ।

१ जामी एक घेरादार कसू बल भाभा र

१ कमरबघी १ तास रो

१ कटारी एक सोना रो

१ तरवार एक रूपा री मूठ बाळी
२ कडिया रूपा री दोय पडतला री नै, १ जरी री पडतलो
४ ढाला नग ब्यार ।”

कब किसको कितना गहना इत्यादि दिया गया उसका भी उल्लेख दिया है। गहनों इत्यादि के नामों आदि की रोचक जानकारी इससे मिलती है।

ग्रन्थ एक से अधिक व्यक्तियों के हाथ से लिखा गया है। लिपि साधारण है। बहुत से पत्र खाली पड़े हैं।

४५ चाकर राख्या अर हिसाब री बही

१ चाकर राख्या अर हिसाब री बही, २ जो० क० सग्रह, ३ १०५, ४ ५६ × १४४ सेमी० ५ ३३२, ६ २८ ३१, ७ वि० स० १८६४ १६१२, ई० सन् १८३७ १८५५, ८ अज्ञात, ९ राजस्थानी देवनागरी, १० इस बही में निम्न श्रेणी के रखे जाने वाले नौकरों की सूची दी है, जिनको माहवार करीब ३ रुपये मिलते थे।

प्रारम्भ—

“१८६४ रा बरस में आदमी रह्या जारी विगत—

चत सुद १ मोतियो चाकर रहयो रुपीया तीन मास रा पाया जासी।

चत सुद ३ दिन विलायती रहीमपा चाकर रहयो छाणगी रुपीया तीन रो मास री मास पावसी, सवाय उजर करण पावे नही ।”

इसके अतिरिक्त वि० स० १८६४ स १६१२ तक का हिसाब किताब लिखा गया है।

उदाहरण—

१-) ॥ बाईसा रै जूतिया ली

-) कु बरजी र ताळो लियो

४) पोथी लिखाई रा

उस समय नौकरों की आर्थिक स्थिति और वस्तुओं के भावों की जानकारी इस ग्रन्थ से मिलती है।

ग्रन्थ एक से अधिक व्यक्तियों के हाथ से लिखा गया है। चमड़े का गत्ता बँदा हुआ है।

४६ कागजों की वस्तु

१ कागजों की वस्तु, २ जो० क० संग्रह, ३ १०७, ४ , ५ २०० के करीब, ६ एकसी नहीं ७ १६वीं शताब्दी का मध्य, ८ अनात, ९ राजस्थानी, दवनागरी, १० प्रस्तुत वस्तु में विविध विषयों के अनेक पत्र संकलित हैं। राय सीहा से जोधपुर के महाराजा सरदारसिंह तक का एक वशवृक्ष अंकित है तथा दूसरा वशवृक्ष मोटा राजा उदयसिंह की सतति का है। इसके अतिरिक्त मुरारदानजी की जन्मकुण्डली, उदयपुर राणाग्रा की पीडिया, 'रामचन्द्रका रा छुटकर छंद', फैसला की नक्शें, तख्तसिंह की ख्यात (संक्षेप में) दिवानी अदालत के कानून तथा इसी प्रकार की वृत्तियाँ के पत्र संग्रहित हैं। यह संग्रह अनेक दृष्टियों से महत्वपूर्ण है परंतु सभी पत्रों का व्यवस्थित करके अध्ययन किया जाना आवश्यक है।

राठौड़ी की विभिन्न शाखाओं की जानकारी इत्यादि के लिए सामग्री उपयोगी है।

४७ कागदों की नकलें की वही

१ कागदों की नकलें की वही, २ जो० क० संग्रह, ३ ८ ४ ६३५ × १७ सेमी०, ५ ६८ (६२ पत्र रिक्त), ६ ३२ ३८, ७ १६वीं शताब्दी का उत्तरार्ध, ८ अनात, ९ राजस्थानी, दवनागरी, १० इसमें जोधपुर से पालेटिकल एजेंट इत्यादि को लिखे जाने वाले पत्रों की प्रतिलिपियाँ दी हैं।

प्रारम्भ—

'॥ श्री नाथजी सत्य छै ॥

अठारह सौ कागदों की वही नकलें की वही ।'

सीमा विवाद सम्बन्धी मुरारदानजी द्वारा एजेंट को लिखे एक पत्र की प्रतिलिपि इस प्रकार अंकित है—

'सिध श्री सरव अग्रमान लायक राजश्री मेजर उजीन कलटर बकइमणो साहब बाहदुर अजेंट मुलक मारवाड जोग्य कविराज मुरारदान लि० सलाम वचावसी, अठारह समाचार भला छ राज रा सदा भला चाहीज, सदा महरवानी रपावो हो जिण धा विसस रपावसी ।

अपरच मार गाव चवा र नै आवीर रा ठाकुर रै पटा री गाव सयलाणा र सरहद उपर पथर रोपीयोडा है जिणा माहे सु पथर र सयलाणा रै हवालदार

हमार उपल नोपीया है जिण री अरजी पत रै साथ भेजी है सो महरबानी फुरमाव ईनसाफ जलदो कराय दियो चाहिजै सो फीसाद नही वर्घ और मार लायक काम काज हुवै सो लिपावसी १६२८ रा फागण वद ५।”

प्रतिलिपिया एक ही व्यक्ति द्वारा की गई है। बहुत से पत्र खाली पड़े हैं। ग्रंथ पर चमड़े का गत्ता मढ़ा है।

४८ पट्टा वही

१ पट्टा वही, २ जो० क० सग्रह, ३ ३, ४ ६५ × १३ सेमी० ५ ८३ ६ ३८ ४०, ७ १६वीं शताब्दी का मध्य, ८ अज्ञात ९ राजस्थानी, देवनागरी, १० इसमें पट्टे के भाव तथा कहीं-कहीं उनकी रेख हुकमनामा^१ आदि का व्यौरा दिया गया है। इसके अतिरिक्त कुछ ऐतिहासिक पत्र परवानों की प्रतिलिपिया व राजस्व सम्बन्धी जानकारी दी है। यह लेखा-जोखा वि० सं० १६२६ से वि० सं० १६३६ तक का दिया है।

प्रारम्भ—

मीति भादवा वद १३ सरु वा १६२६ रा गाव काकेलाव रा मीठवे चीपा १६३३

४८) डागा सीताराम ने ।”

ग्रंथ एक ही व्यक्ति द्वारा घसीट में लिया गया है। ऊपर चमड़े का गत्ता चढ़ा हुआ है।

राजस्व सम्बन्धी जानकारी हेतु सामग्री उपयोगी है।

४९ कागदा रो कडियो

१ कागदा रो कडियो, २ जो० क० सग्रह ३ ८८, ४ कडियो का ३०-३१ सेमी०, ५ ६, ७ १६वीं शताब्दी का उत्तरार्ध, ८ अज्ञात, ९ राजस्थानी देवनागरी १० लाल कपड़े व कागज के गत्ते की

१ विश्वम्भर रेड के अनुसार वि सं० १६२८ में हुकमनामा (नए जागीरदारों के गद्दी पर बैठने के समय के राज्य का नजराने) का वानूल बना। हुकमनामा को एक साधारण तौर पर रेख का पौन हिस्सा नियत किया गया साथ ही ठाकुर के पीछे उसके लहके या पोते क गद्दी बैठने पर उस साल की रेख और चाकरी माफ करदी गई परन्तु भाइयो या बंधुवा में से गोल लिए जान पर लेना और चाकरी माफ करना निश्चित हुआ। (मारवाड़ का इतिहास द्वितीय भाग पृ० ४५७-४५८)

वनी इस सन्दूक में अनेक पत्र राजस्व व अदालत सम्बन्धी फोल्ड किये रखे हुए हैं। अधिकांश पत्र कविराज सुरारदानजी तथा भारथदान के नाम के हैं। इसके अतिरिक्त याददास्त के तौर पर लिखे पत्र भी मिले हैं। एक पत्र का थोड़ा अंश दिया जा रहा है—

प्रारम्भ—

“॥ श्री जलधरनाथजी सत्य हैं ॥

याद दास्त १ प्रगन गोडवाड में जवर (जोहर) हुवा चादिया हुई तिरण री विगत १६१२ रे वरस में।

१ गाव वाडवो सोकडो में अक डोकरी रोती माथो वाड जवर कीयो नै चादिया ३० हुई ।”

इसी प्रकार के पत्रों की एक और पेट्टी है जो इससे कुछ बड़ी है। इन पत्रों में बड़ी महत्वपूर्ण स्फुट जानकारी संकलित की हुई है। कई पत्र जीए भी हैं। इन पत्रों को पढ़ना भी बड़ा समय साध्य कार्य है।

५० हासल अर गेहूँ रँ बँचान री बही

१ हासल अर गेहूँ रँ बँचान री बही, २ जो० क० संग्रह, ३ ६, ४ ६२५ × १७ सेमी०, ५ ५३ ६ ५२, ७ १६वीं शताब्दी का उत्तरार्ध, ८ अज्ञात, ९ राजस्थानी, देवनागरी, १० वि० स० १८६२ में कितना गेहूँ बेचा गया उसका हिसाब लिखा है फिर जोधपुर आदि परगनों के गावा की आमदनी हासल आदि की विगत दी है। उधार अथवा पेट्टियों के रूप में दिये जाने वाले अनाज का भी उल्लेख है।

प्रारम्भ—

“॥ श्री रामजी सहाय हैं ॥

पोळा रा गाव री विगत

गाव परुक्कड कोटडी मायेला पोळा माटी मु गोहूँ बीके तणा री विगत समत १८७२ रा पास मुद १३ ।”

अथ से उस समय के अनाज के भावा तथा पदावार आदि की जानकारी प्राप्त होती है।

लिपि अस्पष्ट हैं। पत्र हाथ के बने हुए हैं अनेक पत्र बीच बीच में खाली पड़े हैं। एक ओर चमड़े का गत्ता है।

५१, दस्तावेजों की सूची की वही

१ दस्तावेजों की सूची की वही, २ जो० क० संग्रह, ३ ५
४ ६२ × १७ सेमी०, ५ १३७ (१२७ पत्र रिक्त), ६ ३५-३८, ७ वि०
स० १६६५, ई० सन् १६०८, ८ अज्ञात, ९ राजस्थानी, देवनागरी, १० इसमें
वेचान की जाने वाली भूमि, कृषि और मकान के दस्तावेजों की सूची दी है।
प्रारम्भ—

“॥ श्री परमेश्वरजी सत्य है ॥

तोसापान म पवार मगीया कने पेटो १ है जिण मे दस्तावेज इण मुजब है
१६५६ रा श्रावण सुद ५

७८ गाव टीकाईत रा

मोल लीयोडा वेरी नग ७ रा

लीपतु । ईसटाम रा पाना म गुसाई मोतीलालजी रै नाव रो कारकुट रो
१६४४ रा माह वद ४ रो मोती रो ।”

यह नकल अपूर्ण है, बाकी के पत्र सब खाली पड़े हैं। एक और चमड़े का
गत्ता मढ़ा हुआ है।

५२ जमा खर्च की वही

१ जमा खर्च की वही, २ जो० क० संग्रह, ३ १, ४ ६७ × १७
सेमी०, ५ ७४ ६ ३४-३६, ७ वि० स० १७१४-१७, ई० सन् १८५७-६०,
८ अज्ञात, ९ राजस्थानी, देवनागरी, १० इस वही में मुख्यतः जमा तथा
खर्च का लेखा-जोखा (वि० स० १६१४ से १६१७ तक) दिया गया है।

प्रारम्भ—

“पडदसन रो अदालत रो जमा खर्च रो नापोशो आसोज वद
आसाढ़ वद १५ रोव सुदा मास ११ रो ईधक महीना सुधो कबरज भारतदानजी ।”

प्रथम दो व्यक्तियों के हाथ से लिखा गया है और ऊपर चमड़े का गत्ता
मढ़ा है।

चारणों, ब्राह्मणों, सन्यासियों आदि की मिलकियत वगैरे के मुकदमा की
सुनवाई के लिये पडदशन नाम से न्यायालय कायम किया गया था। कविराजाजी
उसके प्रमुख अधिकारी (प्रध्यक्ष) के रूप में इन मुकदमा का सुनकर फैसले
दते थे।

५३ हासल री बही

१ हासल री बही, २ जो० क० सग्रह, ३ ४, ४ ६६ × १२ सेमी०, ५ ६१, ६ ४८-५१, ७ वि० स० १६२८, ई० सन् १८७१, ८ अज्ञात, ९ राजस्थानी, देवनागरी, १० इसमें जाधपुर इत्यादि परगनों के गावा की पैदावार और उसके हासल (निश्चित हिस्स) का व्यौरा दिया गया है। गाव के लोग द्वारा कविराजजी को नजराने म रुपये आदि देने का भी उल्लेख है।

प्रारम्भ—

स० १६२८ आसोज वद १

गाव रीसाणीयो री पहोस गुरा रो बतन हासल री पदास १६२८ रा वरस री

गाव के किसानों से दण्ड स्वरूप राजकीय कमचारिया द्वारा पैसे वसूल करने का भी उल्लेख है। तत्कालीन राजस्व सम्बन्धी अध्ययन हेतु उपयोगी है।

लिखावट काफी जीण है। ग्रथ पर चमड़े का गत्ता चढ़ा हुआ है।

५४ श्री महाराजाधिराज माहाराणीजी श्री श्री १०८ श्री श्री लाडी राणावतजी सायबा री सीरकार रा अन रा कोठार ता० रो पातो

१ श्री महाराजाधिराज माहाराणीजी श्री श्री १०८ श्री श्री लाडी राणावतजी सायबा री सीरकार रा अन रा कोठार ता० रो पातो, २ पु० प्र० सग्रह, ३ १७, ४ ६३ × १६ सेमी०, ५ ३८, ६ ५६-५६, ७ वि० स० १६११, ई० सन् १८५४, जोधपुर, ८ अज्ञात, ९ राजस्थानी, देवनागरी, १० इसमें जोधपुर के शासक तखतसिंहजी की रानी राणावत के कोठार (खाने पान की वस्तुएं) सम्बन्धी खर्चा एवं तीर्थस्थला इत्यादि पर किये जाने वाले खच खातो का विवरण फाल्गुन सुदि ४ से आसाढ सुदि १० (वि० स० १६११) तक का दिया है।

प्रारम्भ—

“श्री जलधरनाथजी सत्य है”

श्री महाराजाधिराज माहाराणीजी श्री श्री १०८ श्री लाडी राणावतजी सायबा री सीरकार रा अन रा कोठार ता० रो पातो फाल्गुण सुदि ४ आसाढ सुदि १० सुधा मास ने दीन मे जमा परच री ता० गगाजी री अस्वारी ता० रो १६११ रा

२२)४० पोते बाकी जोधपुर सु साथे जीनस लीवी सु

६६

११२

३।।)६ -) गोज़ आटा	१।।)६।। =) धान दाल	।।)७। -) गुळ
।। -)।।। फिटकरी	२)६। -) खाड बुरो	।)४।। मैदो
६८ श्रीफळ	१।।) नीमक	१।।)६। =)। वस्वार
'५०। सीगाडा आटो	'२ =)।। पीसता	'२।।। -)।। पारका
'१।।)।।। कु कम	'६।)।। दापा	'।)।। प्रपीजी
'३।। म्हैट	।।)।।। = बडीया	३ ≡) मैदो
'१०।।। सार्जी	।)३०। मीसरी	।) ≡ ।। तमापु
।)८।) मीठाई	२।। -) बु दा	।)२।। -)।। लसण
'५। -) राया	'८ =)।।। गरम मसाला	।।)१ - बीदाम
'३।।)।। - सुपारिया	'।३ अरेटा	'।।। =) गोटा
'।)। - बाजमार	'।। =)।।। मीजी	'५ घोडा रा मुसाला
२ पीपला	'।)३।।। काचरिया	'।)।। केर
१।)०।। मूठ	'। पीपरा	'१।।। -) प्रजमा
'।। - कायफळ	।)।। सागरिया	।०।। कुटेक
'५।। सीधो लूण	'। -) सोनमपी	'३ जसाळीयो
'१ =) हरड	२।।। जावळा	'१०।। नासीट
'। -) मैदा लकडो	११२ पीधीरा वाटीया	'।।) माणा
१ -) नोपगी लोल	'१ -) घनार दाणा	'१)।। मू प
-)१ दाणा मैथी	'१ -) हाग	'१०।। चास
६० माळीपनां	'।)।। वपूर	।।।)।। चनण
'२ मट रा मुसाला	'। ०।। सीदूर	'५।।)।। जीरा मुफेद
'१।। कठीडो	'१०।। सपल लूण	'५०।। ठाई रा मगाला
'२।)४ चावल चावल	४। =)।। घाबळो	१)। - तल
'।।) कापो	'२)।। मू द	'१ =)।। घापा दूळद
६।।)।।।		

२२)४०

६६ ११२

ग्रथ में जगह जगह पर रसोई बनाने के लिए चीजों का उल्लेख हुआ है और घोड़े, बैल आदि को घी, धान, दाल गुन आदि दिया जाता था उनका महीनेवार हिसाब दिया गया है। एक जगह पर महाराणी के गंगाजी जाकर वापस आने पर उजमणा (उत्सव) करने का उल्लेख है। एक स्थान पर दरवार में रहने वाले एक जाट के ब्राह्मण दुख आने पर उसे दी गई खाद्य सामग्री का हिसाब भी दिया गया है।

यह वही दो व्यक्तियों द्वारा लिखी गई है। पत्र हाथ के बने हुए हैं, लिपि आसानी से पढ़ी जा सकती है। वही के कुछ पत्र कीट-भक्षित हैं।

राजघराने में खान-पान की विभिन्न जिंसा पर कितना खर्च खर्च किये जाते थे तथा उस समय वस्तुओं के दाम क्या थे इत्यादि जानकारी के लिए सामग्री उपयोगी है।

५५ महाराजा श्री मानसिंहजी साहब के राजलोक श्री तीजा भटियाणीजी तालके गाव ४ री जमा बधी री नकल

१ महाराजा श्री मानसिंहजी साहब के राजलोक श्री तीजा भटियाणीजी तालके गाव ४ री जमा बधी री नकल २ पु० प्र० सग्रह ३ ३ ४ ६३ × २६ संमी०, ५ १६७, ६ ३८-४०, ७ वि० सं० १६०६-१६१५, ई० सन् १८५२-५८ जोधपुर, ८ अज्ञात, ९ राजस्थानी देवनागरी, १० इस वही में जोधपुर के शासक मानसिंह के भटियाणी रानी को मिले भाजासर, मेलासर इत्यादि गावा की पैदावार का विवरण दिया गया है। साथ ही राजस्व सम्बन्धी विभिन्न करों का भी उल्लेख किया गया है।

प्रारम्भ—

ब पटा रा गावा री पैदास राजमा पटे गाव ४ तिण री पैदास—

१ गड जोधपुर री गाव बावडी वासा सुधी

१ परगने गोडवाड री गाव डडा री

१ परगने फलीदी री गाव भोजासर री

१ परगने सोजत री गाव मेलावस री

तिण री पैदास राज मा

४

थावणू साख का लाटा लाटने तथा विभिन्न ग्रनाजों पर लगने वाली लागत इत्यादि का उल्लेख इस प्रकार हुआ है—

“पाईणो बाजरी मू ग मोठ तिल जवार री मण १ लारे पायली १ लाग ।

कणवारिया री गुमरी रो ताली १ दीठ पायली १ लागे, सु पु पा रो फरलो लेवे तरतो लागे नही सु भेस फरलो लीयो नही ।

चाण्ठी रा तौल कणवारिया रो लाग, खेत म कुछ नी देवे तथा कुछ ने घरमेला वे तर लाग भसल भोग मण १ लार १ उसके लागे ।

प्रग्ने फलीणी रो गाव भोजसरा री साप सावणु री लाटो लाटीयो सीरवार रो तरफ मु मबारी मानकरण, पीडीहार चुतरसिंह, हवालदार सीधा इदरचद, सोढकी जीवण कणवारिया जणा २ गोड उमो सीपाई अमसुप गाव रा चौधरी बीसनोई, गोकल कवरो, मयाराम सेवो पेमा रो, भूरो सुरताणो, पटवारी महाजन किसानो गोई और गाव रा समस्त सामल होने लाटो लाटिया गाव रो तौल पायली १ पईसा ७६० भर री तीण रो पायली ४० री मण १) गीणीज ने ताकडी रो तौल सेर ७१ पईसा २६ गुणतीस भर री तीण रो सेर ७४० री मण १) हुवे ।

विगत हैसो लागत री

१ हैसो ईण माफक लागे—

हैसो ४ गाव समस्ता बीसनोई देवाल बगैर मरव घान री कपास सुधी ।

हैसो ५ पाचमो

चौधरी पाग बाघ नै सीरवार मे रुपीया देवे तर १

हैसो ६ मू ग तील कपास री ।

हैसो ५ बाजरी मोठ री ।

ग्रथ मे एक स्थान पर घनाज लाने वालो की बैलगाडियो का किराया देने का उल्लेख इस प्रकार हुआ है—

१७) किरायो भाडो

५) आसोज वद ४ चीणा गोड (मेऊ) री गाडीया १३ नेजो तीणा रा भाडा रा असल हिसाब ।

१२) पोस सुद ५ घास रा गाडा ६ जोघपुर मेलीया ।

२) घासी लिखमो, २) घासी कानो २) घासी गोमो,

२) घासी जेसीग, २) सीरवी सवो, २) चाचक अणदा

एक स्थान पर सरकार द्वारा किसानो स लिया जाने वाले हासल व लाग लागत का उल्लेख है ।

हैंसो ईण मुजब लागे

हैंसो ३॥) साढा तीजो वाजरी भूग मोठ जवार री, गाव रा बसवाना समस्ता ने लागे । हैंसो ४ चौथी तील, कपास री नै फेर हवालदार रा लिपीया मुजब जवार चौपटो हैंसो ३॥) साढा तीजो ।

लार लागत इण मुजब लागे ससीरा माय सु

—लार असल भोग १) लार सर लाग समस्ता नै सरब धान री लागे ।

—कवर मटकी असल भोग १) लार १ सर एक लोक समस्ता नै लागे सरब धान री ।

—पाटणी असल भोग १) लार । पाव पटवारी री लाग पटवार पालस हुवँ तरै जमा हुवँ न पटवार ईजार हुवँ तरै ईजारादार लेवे सु

—कमीणा रा फडका ५ पाच चौधरी रा हाथ सु ताली मण ६०) री हुवँ तर ता घोबा २० कमीणा न देव ।

एक जगह किसानो पर लगने वाले परपर नामक (बेगार) कर का उल्लेख इस प्रकार हुआ है—

परपर रा

घर हळ रो इण मुजब घर दीठ देवेला न लाग—

११) हळ १ रो ६ आदमी री परपर री

३) २५ नाबो दाती टवार री

२) १)) २५

११) ६) २५

हळ भाडे कर नै बुलावै ती गने घर दीठ सु ॥) (घाठ आना) लागेला ।

एक स्थान पर शादी क समय लगने वाले कर का उल्लेख इस प्रकार हुआ है—

‘६१) साा पुरपारी बेटी परणी चत सुद १५ रै साबा जान गाव अडेल रा गुठा रा

३) दापा रा १) चबरी रा,) ७५ परणावणी री,

२) कासा रा

६॥॥) भी मे वाद १ -)॥॥ बाकी ६१)

एक स्थान पर सरकारी काम में भेजे जाने ब्यक्तिया की खुराक के खर्चों का बणन उल्लिखित है, यथा—

॥ -)॥॥ पाली हुडोया करावण गया त्या घास री वागर हाकमा न दीवी तीण रा रूपीया लेण नै गया तीणा आदमीया रै रोटीया रा ।

१) पाली जणा ४ गया तीणा नै रोटीया रा ।

=) हुडी करावण गया तीणा रा रोटीया ।

=)॥॥ वागर वेचण ने पाली गया तरै उपादिया गेहू वगर जणा ४ रै रोटीया रा ।

विभिन्न ग्रामीण लोगों से लिये जान वाले हासल का एक और उदाहरण प्रस्तुत है—

हँसो इण माफक लागे

गाव रा लोक रै हँसो ४ सरब धान री ।

गाव रा कु मारा नै हँसो ५ पाचमो सरब धान री ।

रले मे रजपूत तील जवार बावै तीण री मुधरी लाग न नेपकीरी हुवै न लाटा मे धान आवतो हैसो ३ लटे

एक जगह घासमारी के कर का उल्लेख है—

भँस १ रा टका ४।) सवा चार लागे

उट रो लागे नही ।

उनेवडे रा जीनावर री जीनावर ८० री १)

तफदारा रोजगार इण माफक

साप सावणु री करता ने ई १) लार -) लागे

साप उनालु री ई १) लार)॥ लागे

इस वही में तत्कालीन माप-तौल, सरकारी ब्यक्तिया को किसानों द्वारा दिए जाने वाले कर, किसानों पर लगने वाले अर्थ कर, शादी पर लगने वाले विभिन्न करा आदि की जानकारी मिलती है ।

वही अनेक ब्यक्तिया के हाथों से लिखी गई है, लिपि माधारण है । पत्र हाथ के बने हुए हैं । वही पर चमड़े का गत्ता चढ़ा हुआ है ।

५६ महाराजा श्री भीवसिंहजी साहब के राजलोक श्री जंसलमेरीजी साहबा सरदार तालुके दोढी तालके जमा खर्च री बही

१ महाराज श्री भीवसिंहजी साहब के राजलोक श्री जंसलमेरीजी साहबा की सरकार तालुके दोढी तालके जमा खर्च री बही, २ पु० प्र० सग्रह, ३ २०,

४ ६० × १५ सेमी०, ५ ३३, ६ ४६ ४६ ७ वि० स० १८५८-५९ ई० सन् १८०१-२ जोधपुर ८ अनात ९ राजस्थानी, दवनागरी, १० इस वही म जाधपुर महाराजा भीरुसिंहजी की महारानी जैसलमेरीजी क डबोढी के जमा खच का ब्योरा श्रावण वदि १ म जामाड सुदि १५ १८५९ तक दिया गया है ।

प्रारम्भ—

॥ श्री रामजी ॥

श्री महाराजाधिराज माहाराणीजी आ जसलमेरीजी साहवा ता जमा परच री दोडी ता री बही सा (सावण) वद १ नया न जासाड मुद १५ सुदा सा (सवत) १८५८ रा ।”

प्रारम्भ म रसोई मे काम आन वाली विभिन्न जिनसा की खरीद का विवरण दिया गया है जिससे उस समय की पाकशास्त्र सम्बन्धी सामग्री का बोध होता है । तत्पश्चात् कपडा की खरीद बह्नीश, मुजरा तथा दानगी^१ पर किये गये खर्च का ब्योरा भी दिया गया है जा राजघरान क रीति रिवाज को नमझने हेतु उपयोगी है ।

ग्रंथ दो यक्तिया के हाथ से लिखा गया है, पत्र हाथ के बन हुए ह । ग्रंथ पर लाल रंग के कपडे का गत्ता चढा हुआ है लिपि साधारण है ।

५७ महाराजा श्री तखतसिंहजी साहिब के राजलोक श्री बडा देवडीजी साहब की मरकार तालुके बीपारियो री लेखा वही

१ महाराजा श्री तखतसिंहजी साहिब के राजलोक श्री बडा देवडीजी साहब की मरकार तालुके बीपारिया री लेखा वही, २ पु० प्र० सग्रह, ३ ४ ४ ६४ × १६ सेमी०, ५ ८५ ६ ३६ ४० ७ वि० स० १६२९ ३०, ई० सन् १८७२ जोधपुर, ८ अनात, ९ राजस्थानी देवनागरी, १० इस वही मे जोधपुर महाराजा तखतसिंहजी की महारानी बडा देवडीजी के बीपारियो से खरीदे गए कपडे इत्यादि का हिसाब बरिणत है ।

प्रारम्भ—

‘श्री नाथजी सत्य छै’

वही मे खरीदी गई चीजा का मूल्य व उनकी सख्या का बरिण इस प्रकार हुआ है—

१ दानगी के रूप मे दर्जी बुभार नाई इत्यादि कमीणा को मजदूरो दी जाती थी ।

“६ =) धारणा १३ गुलाबी

६ =) कामळा ऊन रा १३

२) टुकडोया खरीद १) ’

कपडा की रगई एव उन पर लागत का (खच का) उल्लेख इस प्रकार हुआ है—

‘१) फुटकर बटका रगणा दीया

=) भवरा गज ।।। =

। -) वैगणीया गज ।।।।

। -) सोसनी गज २

।) भववा करे गज २।। = ”

एक स्थान पर कुछ गहरा के नाम भी जाय है। कातरीयो, तीमणियां, वेडिया, कान री पारी, तीवा कडोया, टोटी आदि। ५३) कपडा परीद मुलमुन रा थान परीद लवणा

२२।।) मुलमुला नग ६ डोसी कलारी प्रा० थान १ रा प्रति नग ३।।।) लप ।

१४।) मुलमुला रा थान नग २ परीद ६) थाना रा ६।) थान १ रा १४।) परीद डोसी कला री ।

२६।) मुलमुला रा थान नग ६ परीद ओरणा साठ पली तयार कराया सु परसन श्री आपजी सायबा र नही, तरा दूजी परीद ओरणा कराया तरा लीना परीद पीवसरा गोवल री प्रा० नग १२ रा ६० ६। =) लेप ।

५३)

राजकीय वपभूपा इत्यादि जानकारी के लिये सामग्री उपयोगी है ।

वही एक ही व्यक्ति क हाथ से लिखी गई है ग्रन्थ के एक ओर चमडे का गत्ता चढा हुआ है । लिपि साधारण है । पत्र हाथ के बने हुए है ।

५८ श्री महाराजा मानसिधजी साहब के राजलोक श्री तीजा भटियाणीजी साहबां के सरकार के बाजार बाळा री लेखो

१ श्री महाराजा मानसिधजी साहब के राजलोक श्री तीजा भटियाणीजी साहबा के सरकार के बाजार बाळा री लेखो, २ पु० प्र० सप्रह, ३ १०, ४ ३८ × १४ सेमी०, ५ ५३ ६ २८-३१, ७ वि० स० १८८६, ई० सन्

१८३२, जोधपुर, ८ अज्ञात, ६ राजस्थानी, देवनागरी, १० इसमें जोधपुर के शासक महाराजा मानसिंह की भटियाणीजी रानी का जो खर्चा होता था व बाजार से खरीदी गई चीजों का वृत्तांत है। वहीं में सन् १८८६ के माह जेठ से भादो तक का वृत्तांत है।

प्रारम्भ—

॥ श्री राम ॥

वही के प्रारम्भ के पत्र गायब हैं वही में वस्तु का नाम उसका मूल्य तथा तोल इस प्रकार दिया गया है—

२०) घीरत	॥ (आधा मण)
६॥) गुळ	१ (एक मण)
५) वाट	१ (एक मण)
॥॥) चावल	५ (५ सेर)

वही में कपड़ों का नाव मय नाप व सख्या सहित इस प्रकार दिया गया है—

- ३ =) जगनाथी हाथ २१
 ८ = ॥) अगोछा ४ नग ३
 ॥ -) लू गी हाट ८
 ४) दुपटा नग २
 ॥३) मुलमुल धान १ हात १ कीरमचीधो धारणा
 १ =) पोमचो १
 १५ =) गाधरा २ कसु बल
 ॥) रेजो हाथ १२

इस वही में मिठाइया का नाम, कीमत, तोल आदि इस प्रकार दिया गया है—

पतासा	
॥) पापड	१ (एक सेर)
- ॥) सीमोडा री सेवा	१ (एक पाव)
२) काजू	५ (पाच सेर)
=) मषाणा	१ - (पाच आनी भर)
॥॥) दही बडा	२ (दो सेर)

॥) जलब्री	'१ (एक सर)
१ =) बूरो	१ (एक सेर)
५॥) घेवर	॥) १ (पाव मण)
२) नुगती	६ (छ सर)
३) सेवा	'६ (नौ सर)
=) दूध	'२ (दो सेर)
॥) गुलगुला	१॥ (डेढ सेर)
॥ =)॥ खाजा	'२ (दो सर)
॥) पकोडा	'१॥ (डेढ सर) बसण रा
१) दाळ रा बडा	१ (एक सर)
१ -) पिसता	१ (एक पाव)

बही मे एक जगह कोडी नगरा सीचन का उल्लेख है इसस प्रतीत होता है कि पुण्य करन क लिये एसा किया जाता था ।

बही ग्रनक यक्तिया के हाथ स लिखी गई है पत्र हाथ क बन हुए ह लिपि साधारण है । ग्रन्थ क एक ओर चमडे का गत्ता है ।

५६ श्री महाराजा मानसिंहजी के राजलोक श्री तीजा भटियाणीजी साहबा की सरकार का जमा खच का रोजनामा बही

१ श्री महाराजा मानसिंहजी क राजलोक श्री तीजा भटियाणीजी साहबा की सरकार का जमा खच का रोजनामा बही २ पु० प्र० सग्रह ३ ६, ४ ५६ × १५ समी० ५ २१५, ६ ४३-४८ ७ वि० स० १६२३ ई० सन् १८६६ जोधपुर, ८ अज्ञात ९ राजस्थानी, दवनागरी १० इस बही मे सवत १६२३ पोस वदि १ अनिचार लगायत आसाढ तक का जमा खच का विवरण है । जो महाराजा मानसिंह (जोधपुर) का भटियाणी रानी से सम्बन्धित है ।

ग्रन्थ अपूर्ण होने से प्रारम्भ यहा से हुआ है—

“१०३॥ =)॥ मोदी गगाराम रा लेपा रा पोस वद १ लग सुद १५ सुधी रो लेपो रा सीरकार मे फुटकर म जीनस आइ तीण रा

इस बही मे दुरगा पाठ का उल्लेख इस प्रकार हुआ है—

१) ही रामै श्री माताजी री हाथा री पुजन हुब तीणा भ० दुरगा पाठ बीरामण छोमो पीजु कर तीण र मोत सादुजी स० मोदी गगाराम रा सु० पोथा १५) धोरत लेवे ।

भाज पर किये जान वाले खर्चों का विवरण है—

७०॥ =)॥ श्री लालजी सायबा गढ दापल हुवा तरा नोठ दीनी पोस वद १६ ने—

१॥ =) लापसी सादुका गगा करोवाट सेर '८ प्रगणा १) रो सर '५॥

लेप जीना १। -)

२५)। घोरत इण भात वरच म आयो ।

३॥ लापसी म घोरत घालीयो ।

७ सीरा म घोरत घालियो ।

६॥ भालपुडो म घोरत लाग ।

४ पुडोया मे घोरत लाग ।

१॥ पोचडी म घालियो

॥ -) पापड सलेवड म ।

। = बीणज म घालियो ।

। - हमैजी म घालीयो ।

॥)४ परत १ रा न० ४२) लेपे ।

जुमले पुरा २५)।

एक स्थान पर इन्द्रकुवरी के खर्चों का विवरण भी दिया है—

४३। =)॥ श्री इंदरवीर बाईजी सायबा र सालके

५१॥ =)॥ दा० फागण सुद १० श्री बाईजी रें दुपटा नग २

जंपुरे रग रा कराया तीण तार दा० मुदडो जमना पासु परीद पीवसर रा राजमल रा सु

२०॥ =)॥ सीकी गोटी तोला १२॥॥) की बधातर का ॥) पुरा तोला

१३) प्रा तोलो १) रा प्रा १॥)

राजकीय ग्रंथ खर्चों का विवरण प्रस्तुत है—

१२१) गठरी पडदा भु पोस सुद १५

४०) लालजी सा रें पग जालणी रा दिया

१४) लवरा रा पाग दुपटो मेलीयो र नीछावर कीयो

१४) श्री लालजी सायबा घरे पघारिया मायने तरें नीछावर किया

७) श्री परतापसीधजी सा र नीछावर कीया

१०) पालसा री डावडीया ने बिदाई रा दिया

- ३१) श्री चवाणजीसा रा लालजी रा हाथ म मोरा २) दीवी
५) नाजर करीमबगस ने दिया

१२१)

१॥ -)। लापसी कराई ।

॥ -)॥ बाट सेर '३।

॥) गुळ सेर २। ॐ

॥) ॥॥ तेल सेर ।

१

॥ -) बडा सेर '३)। जा० १ दोठ लय प्रा '४ लेय

२। ॐ ॥

१ =) मैवो परीद

॥ =) बीदाम '१ ।)दाया ॥ (आधा सेर)

। =) खारका '१॥ ०॥॥ चठोरी '।

'०॥ बीदाम कुळी

॥ =)।

वही धार्मिक पूजन पर बनाए जाने वाले व्यंजनो म लगने वाले समाप्त तौल, विभिन्न रीति रिवाज जानने के लिये उपयोगी है ।

वही अनेक व्यक्तियों के हाथ से लिखी गई है । लिपि साधारण है । पत्र हाथ के बन हुए हैं । वही पर चमड़े का गत्ता चढा हुआ है ।

६० महाराज श्री तख्तसिंघजी साहब की सलामती मे ब्याह के खर्च की वही

१ महाराज श्री तख्तसिंघजी साहब की सलामती मे ब्याह के खर्च की वही,
२ पु० प्र० सग्रह ३ १३, ४ ६० × १५ सेमी० ५ २०, ६ ३८-४०,
७ वि० स० १९१०-१९२०, ई० सन् १८५३-६३, जोधपुर, ८ अनात, ९ राजस्थानी, देवनागरी १० इस वही मे जोधपुर के महाराजा तख्तसिंघजी के (पासवानिय) पुत्र मोतीसिंह, सिरदारसिंह, मुलतानसिंह जयानसिंह के ब्याह म जो

रूप खच हुए थे उसका विवरण दिया गया है। वहीं में वि० स० १६१० से वि० स० १६२० के फाल्गुन वदि १३ तक की तिथि भ्रक्ति है।

प्रारम्भ—

‘श्री जलधरनाथजी सत्य छ’

बाभा रा बीहाव हुवा ने जान भ्रठा सु चढी तरै मारग मे परच पडीया तथा उठ सु पजाने जमा परच तिण री फडद’

वही मे मोतासिहजी के ब्याह का वत्तात इस प्रकार है—

“लालजी श्री मोतीसिहजी री बीहाव १६१० रा म हुवो तिण ता० री नावो पजानो दापल हुवो १६१२ रा पास वद २ तिण री विगत बीहाव ता० सीकर जान भ्रठा सु भ्रसाढ सुद २ चढीया सु जठा सा० वद सुधा मे परच उपाडीयो सु’

इस प्रकार ब्याह का कुल खर्चा १)७१६३॥ –)॥ रुपये बताया गया है।

इस ग्रंथ में सरदारसिंह के ब्याह का वरण इस प्रकार हुआ है—

‘लालजी श्री सीरदारसिंहजी री १६२० रा मीगसर वद १२ रा सावा हुवो तिण जान ता० री नावो पजान लग हुवो १६२० रा म्हा सुद ६ तीण री विगत जान वु दी गई सु साथे दीवाणा री तरफ सु मुा० कुनणमल न हरकरणजी जोसी सोवनारायण न पजाना री तरफ सु प्रो० पत भीवदान पोतदार मा० परमचद तीणा री जमा खरध ।”

इसमें बरात का खर्चा भी दिया गया है—

- ३४२।) ता० श्री दवसथान
- १४६०)॥ ता० श्री घरम द्वारे
- ७७४ =) जनानी दोढी ता० (तालुके)
- २४४१॥ =)॥ ता० भ्रान रा कौठार ता०
- ४६६॥) ता० वागर तग
- ५५) ता० परची रा
- ४६॥ =)॥ ता० पेमारा कारपाना
- १४०॥) ता० महीनदार

इसी तरह अन्य खर्चों का उल्लेख होते हुए सीरदारसिंह के ब्याह का कुल खर्चा १०६४६॥ –)॥ हुआ। ग्रंथ में इसी तरह के खर्चों का उल्लेख दूसरे स्थान पर भी हुआ है।

एक स्थान पर मुलतानसिंहजी व जवानसिंहजी के ब्याह का उल्लेख हुआ है—

लालजी श्री मुलतानसिंहजी श्री जवानसिंहजी री बीहाव १६२० फा० (फागुण) वद ७ रा सावा बीहाव हुबो जान दैवलीये प्रतापगढ गई तीणा० री नावो पजाने दापल १६२० रा आसाढ वद १३ तीण री विगत—जान अठा मु चढी म्हा वद १४ लम फा० वद १३ मुधा मा० १ मै जमा परच री नावो ह्मा० (हस्त) नाजर हरकरण पा जारावरमल ने पजाना री तरफ सु बोडा कुसालीराम'

इस ब्याह में कुल खर्चा ६०४८॥ =)॥ रुपये का बताया गया है ग्रन्थ में इसी तरह के खर्चों का उल्लेख दूसरे स्थान पर भी हुआ है।

यह वही तीन व्यक्तियों द्वारा लिखी गई है। इसके पत्र हाथ के बन हुए हैं लिपि साधारण है। वही के कुछ अतिम पत्र जजरित हो गए हैं।

वही तत्कालीन राज परिवार के ब्याह इत्यादि पर होने वाले खर्चों का ब्यौरा जानने के लिये महत्वपूर्ण है जहाँ एक ओर यह खर्च का विवरण देती है वहीं विवाह के रीति रिवाज भी जानने के लिये उपयोगी है। इससे जोधपुर राजघराने के सीकर बू दी, प्रतापगढ इत्यादि राजघरानों के ववाहिक सबधों का ज्ञान भी होता है।

६१ विहाव तालके—माहाराज श्री तख्तसिंहजी साहब की सलामती में बाईजी श्री किलयाण कवर बाईजी सा परणीजीया न सासरे बू दी पधारिया तथा वापस पधारिया तिण री जमा खच

१ विहाव तालके—माहाराज श्री तख्तसिंहजी साहब की सलामती में बाईजी श्री किलयाणकवर बाईजी मा परणीजीया न सासरे बू दी पधारिया तथा वापस पधारिया तिण री जमा खच २ पु० अ० सपह ३ १४, ४ ६७ × १८ समी० ५ १३, ६ ४०-४३, ७ वि० स० १६२०, ६० सन् १८६३ जोधपुर, ८ धनात, ९ राजस्थानी, देवनागरी, १० इसमें किलयाणकवर बाईजी की दादी होने पर बू दी जान व वापस जोधपुर आने तक के खर्चों का विवरण दिया गया है। प्रारम्भ—

श्री जलधरनायजी सत्य छ'

किलयाणकवरजी के ब्याह के खर्चों का विवरण इस प्रकार दिया है—

बाईजी श्री किलयाणकवर बाईजी माहा वद ६ रा सावा परणीजीया न अठा मु सीप कर न सासर बू दी पधारिया तरे मारण म परच पढीया न बू दी म देवता रें चेट तथा काज कीरीयावर हुई तरै परायत तथा बड वेडा म पानीया न

बू दी मु सोप करने पाछा षठ पधारिया तर मारग न परच उपडाया तीण रा जमा परच रौ नावो ई।० फागण मुद ५ जठ मुद ११ सुधी मात ३ दीन ६ म हा।० उदराज १६२० रा ।”

इसमें दक्खाना में लिये गए दान ग्राहणा को दान खाने का खर्चा, साधा को नोट दिये गए रुपया का बखान हुआ है ।

प्रथम एक ही व्यक्ति के हाथ में लिखा गया है, प्रथम पर गत्ता नहीं है । प्रथम हाथ के बने हुए हैं, लिपि साधारण है ।

तत्कालीन रीति रिवाज व अध्ययन हेतु प्रथम उपयोगी है ।

६२ महाराज मानसिंहजी साहब के राजलोक श्री बडा भटियाणीजी साहबा की सरकार तालुक जमा खर्च रौ नावो

१ महाराज मानसिंहजी साहब के राजलोक श्री बडा भटियाणीजी साहबा की सरकार तालुके जमा खर्च रौ नावा, २ पु० प्र० संग्रह ३ २८, ४ ६१५ × १५५ समी०, ५ १८८ ६ ३५-४० ७ वि० स० १८८१, ई० सन १८२४ जोधपुर, ८ अजात, ९ राजस्थानी दक्खनागरी १० इसमें जोधपुर महाराजा मानसिंह की महारानी भटियाणी के जमा खर्च का उल्लेख हुआ है ।

प्रारम्भ—

“श्री नाथजी सत्य छ

श्री महाराजाधिराज महाराणीजी श्री बडा भटियाणीजी साहबा तालुक जमा परच रौ नावो रीते रोज ई।० महा वद ४ लग चत मुद १८ री व सुधी ना० १८८१ रा

घासामी	जमा रुपिया	परच रुपिया
माह रा मास में	३७१३।।)	२८१६।।)
फागण रा मास में	१०३)२०६१०।।)	१०३)२०६६० -)।
चैत रा मास में	४)१३५८३।।)	४)८६८१।)

१०७)३७६०७।। -)। १०७)३२४६१ -)।

तिण में वाद रुपिया हसी मना किया सु जमा परच माह सु परा काढीया तिण री विगत

३०४७ =)।।

३०४७ =)।।

इसमें भी खरीद गए सोन के गहना का मूल्य, कपड़े, किराणा का सामान, चांदी के गहन आदि खरीदने का खर्चा दिया गया है। इसमें त्वजान के पैसे से त्वरानि स्थापना, भैरुजी, गणेशजी, माताजी, शिवरात्रि, हनुमानजी आदि का पूजन करवाने के का पूजन करवाने का वएन हुआ है।

इसमें विभिन्न गांधों जैसे सयलाणा, वीयल, कँकीद, सरवाड आदि की आय का उल्लेख है, एक स्थान पर स्वरूपकवर बाईनी के व्याह क खर्च का भी उल्लेख है।

प्रथम दो व्यक्तिओं के हाथ में लिखा प्रतीत होता है, प्रथम पर कपड़े का मत्ता चढ़ा हुआ है, लिपि साधारण है।

तत्कालीन स्नान पान, वस्त्र भूषण, रीति सम्बन्धी जानकारी के लिए सामग्री उपयोगी है।

६३ महाराजा श्री मानसिंहजी साहब के राजलोक श्री कछवाईजी साहब की सरकार तालुके जमा खर्च आकड़ा मेल

१ महाराजा श्री मानसिंहजी साहब के राजलोक श्री कछवाईजी साहब की सरकार तालुके जमा खर्च आकड़ा मेल २ पु० प्र० सग्रह, ३ २६, ४ ५६ २ × १५ ५ सेमो०, ५ ४४, ६ ३८-६०, ७ वि० स० १८७५ ७६, ई० सन् १८१८ १९, जोधपुर ८ अज्ञात, ९ राजस्थानी देवनागरी १० प्रस्तुत वही में जोधपुर महाराजा मानसिंह के कछवाई रानी के जमा खर्च का विवरण वि० स० १८७५ पोप मुदि ४ से वि० स० १८७६ आश्विन मुदि १५ तक का है।

प्रारम्भ—

‘ श्री परमेश्वरजी सत्य छे

श्री महाराजाधिराज राजराजेश्वरी महाराणीजी श्री १०८ श्री कछवाईजी साहब देव वचनानुसारी जमा परच रो आकड़ा मेल ईए १८७५ रा पोप मुदि ४ लग सा० १८७६ रा आश्विन मुदि १५ सुधी माह ९ दी १० मे जमा परच ।’

फिर इसमें १८७५ व १८७६ का जमा खर्च दिया गया है, जो इस प्रकार है—

	जमा	परच
स० १८७५ रा बरस मे मास	३२४४४।।।।।	३०४६२ - ।।
सवत १८७६ रा बरस मे मास ३	८८४२ = ।।।।।	९५७५ ३ ।।।
	४१२८७।)	४००३७)

हाथिया के लिय बनाय गये नोहर का उल्लेख इस प्रकार हुआ है—

२१ ता० षष्ठे न्होरे हाथिया राग भीत तथा होरे चूनो कराया तिए तालके

ग्रथ म जगह जगह गावा से आर्द माहवार जाय तथा खत्र का उल्लेख है ।

ग्रथ दो व्यक्तियों के हाथ से लिखा गया है, ग्रथ पर कपटे का गत्ता है, पत्र हाथ व बने हुए हैं लिपि साधारण है ।

६३ नित हकीकत की बही—महाराज श्री भीर्वासिहजी साहब की सलामती की

१ नित हकीकत की बही—महाराज श्री भीर्वासिहजी साहब की सलामती की, २ पु० प्र० नग्रह ३ २५, ४ ५८ × १४ सेमी०, ५ १५८, ६ ५०-५३, ७ वि० स० १८५० ५७, ई० सन् १७६३-१८००, जोधपुर ८ नाजर गागादास, सतोपीराम, ९ राजस्थानी देवनागरी १० इसमें जोधपुर महाराजा भीर्वासिह के जनानी ड्यौडी की नित हकीकत वि०स० १८५० से १८५७ तक की उल्लिखत है । प्रारम्भ—

“श्री परमेश्वरजी सत्य छे

स्वरूप श्री अनक सकल सुभ ओपमा विराजमाना नग श्री राजराजेश्वर हिंदवा सुरज छत्रपति महाराजाधिराज माहाराजाजी श्री श्री श्री श्री १०८ श्री श्री श्री भीर्वासिहजी त्रैव वचनायत पायत गढ जोधपुर री जनानी दोडी तालके री वही सवत १८५० रा ।”

इस ग्रथ में राज परिवार के खर्चे दिए गए हैं जिसमें महारानियों के पीहर व समुराल जाने का खर्चा, ड्यौडी में रहने वाले लोगों की मजदूरी इत्यादि का बणन है इसके अतिरिक्त विभिन्न देवी-देवताओं जैसे गणेशजी, सीलमाता, गणगौर माता गवर माता, ठाकुरजी, नागखेचिया माताजी हीगलाज माता, महादेवजी, गुजार रा भूरुजी, काला गौरा भूरुजी, चावड माता, गोगाजी आदि की पूजा व उसका खर्चा दिया गया है ।

एक स्थान पर मारवाड के राव रिडमलजी के परिवार की याददास्त दी गई है जो इस प्रकार है—

—याद दासत राव रिडमलजी री परवार पाप राठीड दानेसरा राठीड

१ राव जोधाजी मडोवर से पछ जोधपुर गढ करायो जोधपुर देवी हुवा, सा १४७२ वेसाप वद ४ जनम १५१५ रा जेठ मुद ११ जोधपुर गढ करायो

२ राव रिडमल मडोवर राजा

इस प्रकार इसमें जसवतसिंहजी तक गणावली भी हुई है, फिर इसमें राज लावा की याददास्त दी गई है।

प्रथम प्रकार की व्यक्ति का हाथ से लिखा गया है लिपि साधारण है। प्रथम जीण-शीण प्रवस्था में है।

६५ महाराज श्री मानसिंहजी साहब के राजलोक श्री तीजा भटियाणीजी साहब सरकार ता जमा खर्च की जमा बंधी

१ महाराज श्री मानसिंहजी साहब के राजलोक श्री तीजा भटियाणीजी साहब सरकार ता जमा खर्च की जमा बंधी, २ पु० प्र० सग्रह, ३ २४, ४ ६७ × १६५ समी०, ५ ५८, ६ ४५ ४८, ७ वि० स० १६०६, ई० सन् १८४६, जाधपुर, ८ अज्ञात, ९ राजस्थानी, देवनागरी १० इसमें जाधपुर महाराजा मानसिंहजी की महारानी भटियाणीजी की आय व्यय का व्योरा वर्णित है। यह व्योरा आदिबन वदि ११ स लगाकर आसाढ सुदि १५ तक का है।

प्रारम्भ—

“श्री जलधरनाथजी सत्य वृ

माजी श्री १०६ श्री श्री तीजा भटियाणीजी साहब सरकार तालके जमा परच की जमा बंधी १६०६ रा वरस की आसोज वद ११ सु आसाढ सुद ११ सुषा माह दीन में जमा परच की आकडा मल १६०६ रा।’

इस वही में प्रति माह में आय व व्यय का व्योरा प्रस्तुत किया गया है इसमें आसोज स आसाढ माह तक जमा ३४०५०।।) ६० तथा खर्च ३४०५०) ६० बताये गये हैं। अन्त में महारानी के पट्टे के गावों की बकाया रकम २४३८=) ६० बताई गई है।

प्रथम एक व्यक्ति के हाथ से लिखा गया है, प्रथम पर गता नहीं है पत्र हाथ के बने हुए है लिपि साधारण है।

६६ महाराजा श्री मानसिंहजी साहब के राजलोक श्री तीजा भटियाणीजी तोरथा पधारिया, धर्म पुन कियो तिण बाबत

१ महाराजा श्री मानसिंहजी साहब के राजलोक श्री तीजा भटियाणीजी तोरथा पधारिया, धर्म पुन कियो तिण बाबत, २ पु० प्र० सग्रह, ३ २३, ४ ४७ × १५ समी० ५ २२, ६ २०-२३, ७ वि० स० २६११, ई० सन् १८५४, जोधपुर, ८ अज्ञात, ९ राजस्थानी देवनागरी, १० इसमें जोधपुर

महारानी भटियारणीजी के तीर्थ यात्रा करने तथा वहाँ दिय जान वाले दान पुण्य का वखन हुमा है।

प्रारम्भ—

“श्री नायजी

श्री १०८ श्री श्री माजी सामबा ताा री वही पनरोतरे र सावण री वही १६११।”

इस वही मे महारानी के गंगा, हरिद्वार पुष्कर, मथुरा, यमुना, गोवधन पवत आदि तीर्थ स्थलों की पूजा व वहाँ दिय जान वाले दान का उल्लेख हुआ है। दान मे बाल, लोटे, कलस, परात, पीतल के बेलन, हटडी कुडछी, चकलोटी, लोहे की सीगडी, बडायलो, कडई, फासी के बतन, सोन व चादी के गहने कपडे आदि दिये जान का वखन है। ग्रथ मे ब्राह्मणा को भोजन व दान दन का उल्लेख भी हुमा है।

इसमे राजघराने की तीर्थस्थलों के प्रति आस्था का अच्छा बोध होता है।

ग्रथ दो व्यक्तियों क हाथ स लिखा गया है। ग्रथ पर चमडे का गत्ता चढा हुआ है, पत्र हाथ के बने हुए हैं। लिपि साधारण है।

६७ महाराज श्री मानसिंहजी साहब के राजलोक श्री कछवाई साहबां की सरकार तालुके परगने सोजत रौ गाव बीलावास री ग्रामदनी रौ चौपनियो

१ महाराज श्री मानसिंहजी साहब के राजलोक श्री कछवाई साहबा की सरकार तालुके परगने सोजत रौ गाव बीलावास री ग्रामदनी रौ चौपनियो, २ पु० प्र० सग्रह, ३ २२, ४ ६४×१७ सेमी०, ५ ३०, ६ ४५-५०, ७ वि० स० १८८५, ई० सन् १८२८, जोधपुर, ८ अज्ञात ९ राजस्थानी, देवनागरी, १० प्रस्तुत बहो म सोजत परगने के गाव बीलावास की ग्रामदनी का उल्लेख हुमा है।

प्रारम्भ—

“श्री नायजी सत्य छ

प्राग्ना सोजत रा गाव बीलावास री डोरी साथ सावणु री दीवी तफदार पाा बन्नीनाथ न पाा (पडित) मनसाराम हवालदार प्रो (प्रोहित) जसकरण नै लोढा श्रीराम री त्रैफ सु प्रा ऊदकीसन नै कणवारिया २ मुा मुजान नै म्होरौ रतो न गाव रा चौही पीडीयारी देवसी आकलेमो भगे पटवारी लूणावत भीय नै

१५० राजस्थान के ऐतिहासिक ग्रन्थों का सर्वेक्षण, भाग-३

और गाव रा बड करसा उगरम सा ईना भेळा होयन डीरी दीवी सा १८८५
मीगसर बद ७ सु

आसामी जुवार १ बीगा १ मकी १ मडवो १ कुरो कराग"

वही में गाव की आय के रूप में अनाज का उल्लेख हुआ है जिसमें व्यक्ति का नाम, उससे लिया जाने वाला अनाज व उसके मूल्य भ्रक्ति हैं।

ग्रथ में एक साख (सावणु) की आय १७६०॥) ६० और ५०६) वाकी बताये गए हैं, कुल आय २२६६॥) ६० बताई गई है।

ग्रथ एक ही व्यक्ति के हाथ से लिखा गया है, पत्र हाथ क बन हुए हैं, लिपि साधारण हैं, ग्रथ पर चमड़े का गत्ता चढ़ा हुआ है।

६८ महाराजा श्री तख्तसिंहजी साहब के राजलोक श्री लाडी राणावतजी साहब की सरकार तालुके कपडा रै कोठार तालुके जमा खर्च रौ नावो

१ महाराजा श्री तख्तसिंहजी साहब के राजलोक श्री लाडी राणावतजी साहब की सरकार तालुके कपडा रै कोठार तालुके जमा खर्च रौ नावो, २ पु० प्र० सग्रह, ३ ८, ४ ५६ × २३ सेमी ५ ६८ ६ ४८ ५० ७ वि० स० १६१०, ई० सन् १८५३ जोधपुर, ८ अनात, ९ राजस्थानी, देवनागरी, १० इस वही में श्रावण वदि से आसाठ सुदि १५ (मास १२) सवत १६१० तक का वरण है। वही में विभिन्न प्रकार के कपडा, गहना, उनका मूल्य मदिरों में दिए गए कपडा इत्यादि का उल्लेख हुआ है।

प्रारम्भ—

“श्री जलधरनाथजी सत्य छै

श्री महाराजाधिराज महाराणीजी श्री श्री १०८ श्री श्री श्री लाडी राणावतजी स्थायबो री सीरकार तालुके कपडा रा कोठार तालुके जमा खर्च रौ नावो ईण दावत सावण बद १ लगायत आसाठ सुद १५ सुधा, मास १२ रा दिन में जमा परच १६१० में धान १ गज १ तोला १ आसामी—

इस वही में महाराणीजी द्वारा बाजार से खरीदे गए कपडे तथा गहनो का वरण हुआ है, कपडो का नाम, गहनो की संख्या व मूल्य इत्यादि का वरण इस प्रकार है—

१० -)॥	७	२६ = ॥	०	टुकडीया घायी ६ गज ११ = ॥
११)॥	०	८१ = ॥	०	रेजा
११)॥	०	३॥ =	०	छोट कमु मल

३ -)॥	७	०	०	षोडकीया रा पेच
२३। =)॥	१	०	४१॥	तास
१०॥)।	१३	०	०	घुडीया कलाब तुरी
॥)	३	०	०	नाडा पोसापा रा सादा तथा रेसम रा
१३॥ -)॥	२०	०	०	मोजा री जोडीया १३॥ -)॥
१०॥)॥	१७	०	०	ओरणो कचा रग री
१ -)॥	०	१७ =	०	सेळो
५५॥ =)	०	२३८ =	०	मोळी लडी सोन री
६७)॥	०	०	५२)२॥	लपी सोने री १
३८॥)	०	८।	०	बनात दुरगीया
२१ =)॥	०	०	१२॥)१॥	लपी सुने री
२६८॥)॥	०	०	१६०॥)२	'१॥। पठाणी सोने री
१०१ =)।	०	०	५२॥)।	'१॥। सीकी सोने री
३६॥)	०	०	२४)॥	पठाणी रूपे री
१३॥)	०	०	८॥	कीरण बादलो
६)	०	०	३॥)॥	फीत कलाबतु री
११६)॥	०	०	६६॥)१॥	॥ सीकी रूपे री

बडा आपजी सहायबा के ।

एक जगह बडा आपजी सायबा के बप गाठ पर महाराणी भटियाणी की तरफ से लागा को कपडे वाटने का उल्लेख हुमा है—

'श्री बडा आपजी सहायबा रें बरस गाठ री बारो हुवी तीण री पुसी री उखव करायो तीण तालके श्री तीजा माजी सहायबा रा मीनपा नै देण सारू प्रोढणीया नग २० बैताई, आसाड बद ७ ।'

वही मे एक स्थान पर राखी भेजने का उल्लेख है—

'३॥ = ६॥)१॥ बाईजी चादकवर बाईजी सहायबा री रापी जंपुर सु आई तरै म्हेलीया, मीगसर सुद ५ सु बैताई मीगसर बद ४ साडी १ मुलमुल वसु बल री ।

३॥ = मुलमल कसु मल पाट १) प्र० ग० २॥। लेये मु० गज ३

१५२ राजस्थान के ऐतिहासिक ग्रन्थों का सर्वेक्षण, भाग-३

८ लपी सोने की चोफेर छोटकवा छंडा पटली टुट गज ६॥ -) तोला ८।
११) १॥ सीकी सोने की गज ६ श्रेक सीक न रोकड २० ५०) होरा मुन
काचली १ म्हाय मु ।”

एक स्थान पर देवस्थान में नई पोशाक भेजने का उल्लेख है—

तालके श्री देवस्थान

१०॥ श्री महादेवजी का मोदरा ता श्री मान बाबाचा का परच तालके
सोम की सोम श्री म्हादेव श्री की पूजन हुब तरं बीछायत सारू रेजो सग मुद सोम
लग काती मुद ४ सुधो रेजो गज १०॥ हा० बेदी पेलीगराम ५॥ भग बद १० गज
५ काती म बद ६ १०॥

श्री ठाकुरजी र मोदर तालके

ठाकुरजी श्री नरसिंहजी की सेवा बडा बाईजी श्री सीरकवर बाईजी का
तळाव ऊपर बीराज तीणरे पोसापा करावण सारू आगली पोसापा गड ऊपर मु
आई तीण मुजब नवी कराई मा बद १३ ।

उपरोक्त वचन से स्पष्ट है कि राजघराने की देवस्थानों के प्रति गहरी
आस्था थी और इसी प्रकार की पाशाके माताजी श्री नागणेशजी गणेशजी, भैरुजी,
जुजारजी सील माताजी के लिए बनवा कर भेजी जाती थी। कपडे का भाव भी
इससे पात होता है ।

ग्रन्थ एक ही व्यक्ति के हाथ से लिखा गया है, लिपि सुवाच्य है, ग्रन्थ के
मुख पृष्ठ का गत्ता गायब है लेकिन अन्तिम पृष्ठ पर चमडे का गत्ता सुरक्षित हैं
पत्र हाथ के बने हुए है ।

बही तत्कालीन आर्थिक व धार्मिक स्थिति जानने के लिए महत्वपूर्ण है ।

६६ नित हकीकत जनानी दोडी माय सू डावडीयां वगैरे घोज

बस्त नीचे ले जावे जिस बाबत याददास्त

१ नित हकीकत जनानी दोडी माय सू डावडीयां वगैरे चीजवस्त नीचे ले
जावे जिस बाबत याददास्त, २ पु० प्र० सग्रह, ३ १८, ४ ५६ × १५ सेमी०,
७ वि० स० १६२२-१६३१ ई० सन् १८६५-१८७४, जोधपुर, ८ अज्ञात,
९ राजस्थानी, देवनागरी, १० जोधपुर दुग की जनानी ड्योडी से आभूषण,
कपडे तथा बतन आदि बाहर भेजे जाते थे उसका ब्यौरा याददास्त स्वरूप दिया
गया है ।

प्रारम्भ—

‘ श्रीनाथजी सत्य छ

जनानी दोढी नग री बही माय सु दुयावतीया भाव त्या हकीकत माडे तीणा री बही १६२२ रा आसोज मुद ६ मु लार ।”

इस बही मे जनानी ड्योढ़ी मे रहने वाली डावडियो द्वारा बतन, गहने व भण्डे इत्यादि नीचे ले जाने का वणन इस प्रकार हुआ है—

याददास्त उपरा बासण १५ पनरै लेगी हसते पालस री, गगा लेगी—

३ थाळ उपरा नग ३

२ तासळा नग २

२ आणपीरा नग २

१ चोपडा नग १

१ गुलाबदानी १

६ गोळीया नग ६

नग पनरै गगा लेगी ।”

इसी तरह एक जगह गहने ले जाने का वणन हुआ है । यथा—

माजी सा श्री जाडेचीजी सा री सीरकार री गेणो न पोसाक श्री गोर माताजी री माय मु नोर लेगी डावडी हा० दवा लगे ईण भात गेणो—

१ तीमणीयो जडावु हेम री

१ कठी मोती री

१० पनडा नग दस बीदली री

१ नय भेक

१ मोतीया री जोडी

१ हाथ कडी भेक

१ कठी फेर मोती री

१ मुजबदां री जोडी जडावु

इतरी तो गदा री रकमा लेगी

यह ग्रन्थ अनक व्यक्तियों के हाथ से लिखा गया है, पत्र हाथ के बने हुए हैं, लिपि बहुत ही अस्पष्ट हैं ।

७० महाराजा भीमसिंहजी के महाराणी देवावरीजी भटियाणीजी रं
सरकार तालके गांवों की ग्रामदानी वगैरा की जमा खर्च

१ महाराजा भीमसिंहजी के महाराणी देवावरीजी भटियाणीजी रं सरकार तालके गांवों की ग्रामदानी वगैरा की जमा खर्च, २ पु० प्र० सग्रह, ३ ५, ४ ५८ २ × १५ समी०, ५ ७०, ६ ३० ३५, ७ वि० स० १८५१, ई० सन् १७६५, जोधपुर, ८ घात, ९ राजस्थानी, दयनागरी, १० इस वही में जोधपुर के शासक महाराजा भीमसिंह की देवावरी भटियाणी रानी को मिले गांवों की ग्रामदानी और खर्च का विवरण दिया गया है। यह विवरण चंद्र वदि १, १८५६ से भागशीप सुदि १५, १८५१ तक का दिया है, उसे सोडावास मालकोसणी, सीरामणी, मुखवासणी ग्राम मिले हुए थे।

प्रारम्भ—

“॥ श्री परमेश्वरजी ॥

महाराणीजी श्री देवावरीजी भटियाणीजी रं सरकार ता० गांवों की वगैरे
ग्रामदानी की जमा परच ई० (ईश माफक) मीठी चैत वद १ सागा(य)

मुधा

पोत बाकी

हाल जमा

श्री हज़ूर भू दीराया सू जमे

७७०) पास पिजाना रा जमा ह०

नाजरजी गगादासजी सतीकीरामजी

८०) हा० भा० गगाराम गाव सीरावण र पटे गावा रा जमा

गाव सोडावास रा परगने गोडवाड रा जमा

७५५ = ॥) साप सावणु रा घान रा जमा

इस प्रकार प्रारम्भ में होने वाली ग्रामदानी का लेखा जोखा लिखा गया है। जिसमें पट्टे के गांवों की विभिन्न शाख पर जो हिसल इत्यादि बसूल किया जाता था, उसका न्यौरा दिया है। तत्पश्चात् राणियों के लिये विभिन्न प्रकार की वस्तुएं इत्यादि खरीदी जाती थी उसका भी हिसाब दिया है।

एक स्थान पर देवस्थान के लिए किए जाने वाले खर्चों का विवरण इस प्रकार धकित है—

८८।। =)।।।

ता(लके) श्री देवस्थान

३४ श्री ठाकुरजी र तीवारा री भेंट परसाद

२) श्री ठाकुरजी र मिदर पवीतराई

८) श्री ठाकुरजी र रापडो रामुनमे

६) माहा मे ठाकुरे द्वारे चढाया

२) ठाकुरजी दुवारे

८)

× × × ×

२) श्री रामदेवजी र चढाया

२) श्री ठाकुरदवारे भासोजी दसरावा रा

१) श्री ठाकुरजी रा परसाद

३) श्री ठाकुरजी भेंट नीछरावळ रा ।

× × × ×

३) श्री लछमीनारायणजी र मिदर

१) जनम असटमी री

१) दिवाली री

१) धाली मगसर मे

३) हा० भगत मनीराम

महारानी न मागशीप को ठाकुरजी के महा पाल भेजा उसम उन्हाने ५) रुपये भेंट किये । ३ रुपये ७५ पसे ठाकुरजी के पोशाक के और करीब २२ रुपये का मिष्ठान्न आदि खरीदा गया ज्यवा कदोई से बनवाया गया था, उसका भी खर्चा दिया है—

यथा—

२१ =)।।। मिठाई कदोई रा मीति मुद १०

=) मीसरी १।।।) लाडु मेदे रा

३) पेडा ५) लाडू मोतीचूर

२।।।) हेसमी २) घेवर मेदा रा

- | | |
|---------------|--------------|
| १॥) जलबो | ॥ =) मादरळम |
| ३) मालपुरा | ॥) पवरपळी |
| = ॥) मजुरो रा | |

२१ =) ॥

माघ सुदि १५ का चंद्र ग्रहण व समय राता साहिबा की घोर से किय जान बाल दान पुष्य का विवरण इस प्रकार है—

५२॥ -) चंद्रग्रहण महा सुद १५ रो हुबो तरं ३०) सोनो, तोला २) परत १५) तप पुनदान सारू टोकडो कराय न गढ़ उपर मलीया अभागा नै बीरामण नु देवण सारू

४) बाजरी धान

२॥) कपडो टुकडी ४ मनसाराण री

१ -) पगरपी ४ पटवा मुवाई री

५) पायलिया रूपा री सत्ताक डगरी

४२॥)

६१॥)॥ सूरज मगल रा हाकत बीरामण जीमाया तथा दीपणा रा—

१) नीसपरी बिरामणी नौरे म झाई तरे

२) दान री

१०) रतनी री मा रा कारज उपरे

१ -) एकीरा सु पुन अरथ

२ -) मगल रा दान नै भोजन

१) १)

३) सूरज रा दान रा

२) मगल रा दान ग महीना म

१) गरीबदास रै अपाड

१) फकीर साएसा रै

२) पीरा पीन

१) बीरामणो बेटा नु

२॥) बी (रामण) सपत रै दान जीमाण रा

१) गगा गुरु नु परसाद रा

२) नीसपरोई बीरामण नै बुदा न

- १) सीरीमाली जसकरण नै
 १) बिरामण जीमाया तर दान री
 ३।। ३)।।। सूरज मगल रा सोनो मोती टका दान ।
 १) सुरज रा दान रा बी० जीमाया
 १) पुन परधबा भजान
 ४) डोढ़ी री भगतयरण री
 १।। -)। दान सारु भीती नु गीया
 १) सामी नीस पर ई न
 २) बी० अभागिता नु
 १) पगरपीया रा जोडा ४ देण सारु
 ।।।) पीरणी नागार री नै पडकाळी
 २) बी० (रामण) सनीसर रा जीमाया तर
 ५) बतरणी पूजत र दान रा
 १) धान गरीबा फकीरा नु
 २ -) मीठाई साधा न गरीब जीमे
 ।।।) दान सनीसर रो मिठाई बी० नु

६१।।)

ता० (लक) भीजमानी

८) चु सीमुदान रे मेली बहु नु

४) रोकड पगे लागण रा

४) दास अतर भीठाई

१) १) २)

८)

महारानी के आभूषण इत्यादि बनाने के लिये सोना, चादी खरीद कर सोनी को दिया, उसका विवरण दिया है। मादलिया, बीछुडिया, बीटी (भगुठी) चदणहार, टोटिया, बोरियो, भुटणो, चूडी इत्यादि गहनों के नाम आये हैं जो केवल ३८५) रुपये में ही बन हैं। आगे और कीरणफूल, तिमणिया, काकण री जोड़ी, गुजरिया री जोड़ी, बेडला, कडला दायणो आदि बनाये जाने वाले गहनों के नाम हैं।

१५८ राजस्थान के ऐतिहासिक घाटों का सर्वेक्षण, भाग-३

त्वोद्धार पर होने वाले घाटों का विवरण भी दिया है—

तीवहार का उद्भव उपर

१५१॥ -)॥॥ बसराया उपर

नीजर नीधरावळ उपर मढी

भोजन साह जीनस मोदी सरुप रा सु

३) गुळ मण १)५'॥॥

६) गेहूँ मण १)

१) चावळ

३) धीरत

३॥॥॥ कड़ाव री मजूरी रा

३) उगमहा ॥॥॥१॥॥

- ॥॥ नारेळ १

- ॥॥ गुळ ७॥॥

१) डुमा नै मोताद री

१५१॥॥॥

११ बीवाली

नीजर नीधरावळ उपर मढी टीका रा नायमि भोजन साह जीनस
मोदी सरुप रा सु

४) धीरत १)१॥

४१ -)॥ गुळ मण १)५॥॥

१) चावळ ८

२) गेहूँ काठा

=) नारेळ २

)॥ मजूरी री

१११॥ -)॥

१०२॥॥ होळी रो वेल

२६) नीजर

१४) होळी रं दिन परभात

१५) होळी री पेळ महि

२६)

२८१) बाग पघारिया न पाणी री पल हुवो, बालसमद राईजाबाग

२) श्री ठाकुर दरारे चढ़ाया

२६१) रोजवार तथा मुजरो मालुम करयो तर

६) नाजर गंगादासजी

४) नाजर सतुकीरामजी

५) घायभाई सीमुदान

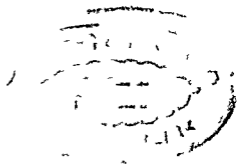
६) डोढ़ीदारा नु भेळा

१) जोसी ने

२) होळी रा वीका नु

११) गोठ रा तमासा म

१) पाणी सीच करण नु



२६)

६) मुताद रा

४) महरावा

२) राणी मगी भाईदान

१) माळी नु छाबडी रा

२) पीणीयारी

६)

१०) नीछरावळ

२॥) मीठाई कदोई अभा नै

॥) चीणी

२)॥ लाडू

२॥)

१०॥) = पर रा टका

६) भ्रसवारी बालसमद रा

२) राईका री भ्रसवारी मेरूव रा

२॥) भ्रसवारी राईक पधारिया तर

१०॥)

महारानी की नौकरानिया (डावडिया) के लिये कपडा इत्यादि खरीदा जाता था, उसका भी विवरण दिया गया है। उस समय अच्छी मोडनी के करीब २) रुपये लगते थे तथा कपडा हाथ से नापा जाता था।

कपडा की खरीद क पदचात रसोई से संबंधित विभिन्न जिनसो के खरीद का ब्यौरा दिया है, इसमें वस्तुआ की कीमत दी हुई है, मात्रा कही-कही दी है। यथा—

१) बदाम '१ =

॥) नाळेर ५

२) घोरत '२॥ =

३) गेहूँ मण १)

१) केसर तोला १॥ = १

—) खारका । =

इसमें विभिन्न वस्तुओं के मूल्य और विभिन्न उत्सवों पर किये जाने वाले खर्चों की जानकारी मिलती है तथा रानियों के देवस्थानों के प्रति आस्था व दान पुण्य की प्रबल भावना का भी अच्छा बोध होता है। सब मिलाकर जनानी डयोडी पर शोध करने वाले शोधार्थियों के लिये यह सामग्री बहुत उपयोगी है।

वही एक ही व्यक्ति के हाथ से लिखी गई है। उपर चमड़े का गत्ता मडा हुआ है।

'=सेर का चिन्ह, —=मण का चिन्ह

७१ महाराज मानसिंह साहब के राजलोक महाराणी भटियाणी सायबा के सरकार तालुके जमा खर्चों की वही

१ महाराज मानसिंह साहब के राजलोक महाराणी भटियाणी सायबा के सरकार तालुक जमा खर्च की वही, २ पु० प्र० संग्रह, ३ १ ५ ६२ × १६ सेमी० ५ ३५, ६ ४८-५० ७ वि० सं० १८६२ ई० सं० १८०५, जोधपुर ८ मनात, ९ राजस्थानी, देवनागरी, १० इसमें जोधपुर के शासक महाराजा

मानसिंह की भटियानी रानी को राज्य की ओर से जा गाव आदि हाथ खच के लिये मिले हुए थे उनकी आमदनी जीर जो खर्चा होता था उसका विवरण दिया गया है। यह वत्तत वि० स० १८६२ श्रावण वदि १ से आमाढ सुदि ५ तक का है।

प्रारम्भ—

“श्री जलधरनाथजी सत्य छे’

श्री माहाराजजी राज माराणीजी भटियाणीजी साहवा तालकं जमे परच रो मेठ स० १८६२ रा वरस रो ।”

एक स्थान पर भटियाणी रानी द्वारा निर्मित पदमसापर तलाव पर जलधर नाथ के मंदिर के खर्च का विवरण भी दिया है। उस समय गजधर की हाजरी एक रूपया थी। काय पूरा होन पर कारीगरा को इनाम और मंदिर की प्रतिष्ठा के समय उपस्थित नाथा को भेट स्वरूप रूपय आदि दिये उसका भी ब्यौरा दिया गया है।

महाराजा मानसिंह के समय नाथो को कितना सम्मान दिया जाता था उस की अच्छी जानकारी मिलती है।

ग्रथ एक ही व्यक्ति द्वारा लिखा गया है, पत्र हाथ के बने हुए हैं लिपि साधारण है। ग्रथ पर चमड का गत्ता मटा हुआ है।

७२ महाराजा भीरुसिंह के चावडी रानी के सरकार तालके जमा खच री वही

१ महाराज भीरुसिंह के चावडी रानी के सरकार तालके जमा खच री वही, २ पु० प्र० सग्रह ३ ६, ४ ५६ × १४५ सेमी०, ५ ४२, ६ २८-३२, ७ वि० स० १८५७, ई० सन् १८००, जोधपुर ८ अनात ६ राजस्थानी, देवनागरी, १० जोधपुर क शासक महाराजा भीरुसिंह की रानी चावडी के राजलोक के जमा खच का लेखा-जोखा वि० स० १८५७ श्रावण वद १ से ज्येष्ठ सुदि १५ (ईषक महीना) तक का दिया है। महारानी साहिवा को दुदा का बाडा और मोकला ग्राम हाथ खच के लिये मिले हुए थे।

प्रारम्भ—

“॥ श्री रामजी सत्य छे ॥

स्वरूप श्री माहाराणीजी श्री चावडीजी धचनायत जमे परच री वही १८५७ रा भीती सावण वद १

१६२ राजस्थान के एतिहासिक ग्रन्थों का सर्वेक्षण, भाग ३

जम रूपीया

७) पोते बाकी बीजसाईं रापी री नीजर सारु
७)

१५५) हाल जम

१२१) सा० १८१४ रा वरस री चोठी हूँ १५०) री मढता री
बचडी उपर मोकाले रा हासल री तीण मे वसूल २४)

आग जम हुवा न बाकी तीण रा ईण भात प्राया ।
४६) रोकडा विजसाही टका भी०

२७) ७) १२)

५०) ऊट नवो परी-

२०) प्रादमी मलियो तीण र रोजगार रा

६) अजमरीया रावटा रा

१२५)

७) हज़ूर रापी री दिन नीजर नीछरावळ बीजसाईं मुद १५

१७) रापी री दीपणा रा माथे दीना

६) व्यास प्रयाग

१) गोगी बाई

१) रतन बाई

१) उवका र रापी र घाली म

८) टका प्रा०

१७)

गाव दुदा क बाडे की प्राय का ब्यौरा इस प्रकार दिया है—

२१२) हाल जम गाव दुदा रा बाडे रा

१५२।।) गाव दुदा मुकाता आदे मुकाते रा प्राय न बादे मुकाते
बाकी छं

२२।।) =) माल रा लाटायता लोका रा

५।। नाव री कामदारा रा

१०।।) रूपी रा माट जीनां रा

- १०।।।) छाळीया रा पान चराई रा
३-) ऊट सांड री पात चराइ रा ।

- २०५। -) इण भात तीक वार
१७६) बीजसाइ २७) अर्पसाइ ॥ =) वट रा
२) गजमाई १) चवद सीदो

२०६)

- ६) घोरत दु० ७) री तुलावट पटे आयो टा० धरम
साथे घायो जमे तीण री विगत
५) रावळ
१) घायजी रं

२१२)

बही के अनुसार कुछ वस्तुधा क भाव इस प्रकार अंकित है—

- २) मोळीयो मोडणी एक
२) साडू '३॥ (साड़ा तीन सेर)
३) गुळ १)८ (एक मण आठ सेर)
२) दूप १।)
॥) चावळ '३
३॥।।) पातल दाना २००
१) घोरत १ सेर

पाटा भरने आदि के लिए जा खर्चा किया जाता था, उसका विवरण दिया है, यथा—

- ११) भादवा वद " (अमावस)
२) टका पाटा भरण सारै ह० (हस्ते) दीपो
१) लाडू देवता वा पीतरा र पाटा भरण सारू ह० दीपो
१) वडा महाराज श्री बीजसिंघजी र पुजापा भरण सारू ह० दीपो
२) वीरम भोज रा
५) कासीद री कावड लनै गायद जासी सीतामऊ गयो तीण रा

११)

कमीणा (नीकरा) का कपडा इत्यादि दिया जाता था, उसका भावसात है तत्पश्चात् छोटी तुवरजी क चूडा पहिने की रसम ग्रदा करन पर २) रूप्य खच हुए उसका भी हिसाज इस प्रकार दिया है—

- २) श्री छोटा तुवरजी बेंहूजा रो चूडी पहरीयो तरें नीछरावळ
 १) चूडा रो मोहरत काडीयो तरें जोसीया न
 १) गीतेरणीया न मारत २ पिन

२)

इसम रानियो क आय-व्यय की अच्छी जानकारी मिलती है। राजकीय रीति रिवाज सम्बन्धी अध्ययन हेतु भी सामग्री उपयोगी है।

प्रथम एक व्यक्ति द्वारा लिपिवद्ध किया गया है। एक धार कपडे का गत्ता चडा हुआ है। पत्र हाथ क वन प्रतीत हाते ह।

७३ महाराजा तखतसिंह की रानी राणावत साहिबा के कपडो के कोठार की बही

१ महाराजा तखतसिंह की रानी राणावत साहिबा के कपडा के काठार की बही २ पु० प्र० सत्रह ३ २, ४ ६० × १६ सेमी०, ५ ५० ६ ५० ५३, ७ वि० स० १६४१, ई० सन् १८८४ जाधपुर, ८ अनात ९ राजस्थानी, देवनागरी, १० इस बही में जीवपुर क महाराजा तखतसिंह की राणावत रानी के लिए बाजार से कपडा आदि खरीदा जाता था उसका विवरण वि० स० १६४१ थावण बदि १ दिया है।

प्रारम्भ—

॥ श्री जलधरनाथजी सत्य छे ॥

श्री महाराजाधिराज महाराजा श्री १०८ श्री श्री लाडी राणावतजा साहबा की सरकार ता० कपडा २ बत रो बही उपदायत सावण बद १ बार बुध स० १६४१ रा हाल जमा

बजार मु कपडा गाटो वगरे परीद हुम आवें मु जमा
 सावण म

१०० बद मुलमुल नग १ पडपनी परीत् पीवसर रा सुरजभाण रो ।

उस समय मुख्य रूप से मुलमुल, चठा, रेजा आदि कपडा खरीता जाता था। इसमें धोरणा, मगरखी, कुडती काचली पायजामा धोर साडी आदि वस्त्रों के नाम

प्राये है। रानी साहिवा के बच्चों आदि के लिए कपडा खरीदा जाता था, उसका भी उल्लेख किया गया है। इसके अतिरिक्त कपडे पर लगन वाले सोने चादी के गोट का भाव क्रमशः २२) रुपया और ६) रुपया लिखा है।

ग्रथ एक ही व्यक्ति द्वारा साधारण लिपि में लिखा गया है। एक ओर चमड़े का गत्ता चढा हुआ है।

७४ महाराजा भीमसिंह के राजलोक आडोजी (हाडोजी) साहब के सरकार तालके खर्च की बही

१ महाराजा भीमसिंह के राजलोक आडोजी (हाडोजी) के सरकार तालके खर्च की बही २ पु० प्र० संग्रह, ३ ७ ४ ५८ × १४ समी० ५ २२, ६ ३०-३५, ७ वि० स० १८५६, ई० सन् १८०२, जोधपुर ८ अगत, ९ राजस्थानी, देवनागरी १० प्रस्तुत बही में जोधपुर के शासक महाराजा भीमसिंह की रानी आडी (हाडी) के राज्य सम्पत्ती जमा खर्च का लेखा जोखा वि० स० १८५६ श्रावण वदि १ से लगाकर भाद्रपद सुदि २ (२ मास) तक का दिया है।

प्रारम्भ—

॥ श्री रामजी ॥

रोजनावो माजी श्री आडोजी साहब र मीती सावण वद १ ल० १८५६ रा २२२६ = ॥॥ पोते बाकी १८/८ रा आसोज सुद १५ री ॥”

इस प्रकार पहले क जमा रुपय और अर्थ आमदनी का उल्लेख कर फिर खर्च का हिसाब दिया है।

उर्चा मुख्य रूप से देवस्थान, खान-पान कपडे, आभूषण इत्यादि पर किया जाता था। बडारना को १ टके में १ रुपया दिया जाता था। सोनी को गहनो की मरम्मत के केवल ११ टका दिया गया था।

ग्रथ के एक ओर चमड़े का गत्ता मढा हुआ है। कुछ पत्र कीट भक्षित हैं। एक ही व्यक्ति द्वारा साधारण लिपि में लिखा गया है।

७५ बियाव शादी महाराजा श्री तखतसिंहजी की सलामती में— महाराज कवर बडा श्री जसवतसिंहजी साहब की

१ बियाव शादी महाराजा श्री तखतसिंहजी की सलामती में—महाराज कवर बडा श्री जसवतसिंहजी साहब की, २ पु० प्र० संग्रह ३ १५, ४ ४७ × १४ सेमी०, ५ २, ६ ४०-४३, ७ वि० स० १६२१ ई० सन् १८६४, जोधपुर,

१६६ राजस्थान के ऐतिहासिक ग्रंथों का सर्वेक्षण, भाग ३

८ अज्ञात, ९ राजस्थानी, देवनागरी, १० प्रस्तुत वही म जोधपुर के शासक तखतसिंह के ज्येष्ठ राजकुंवर जसवंतसिंह की शादी का विवरण दिया है। यह शादी वि० स० १९२१ भाद्रपद वदि ८ बुधवार का मठार के राव सगरामसिंह देवडा की पुत्री से जाधपुर (बालतमद) में हुई।

ग्रंथ एक ही व्यक्ति द्वारा लिखा गया है। लिपि सुवाच्य है।

७६ नजर निछरावल्ल सिरोपाव री वही

१ नजर निछरावल्ल सिरोपाव री वही, २ पौ० ह० सग्रह ३ ३
४ २९५ × १४ समी० ५ १६, ६ २५, ७ वि० स० १८८२, ८ स०
१८३५, ८ अज्ञात ९ राजस्थानी, देवनागरी १० जाधपुर क शासक मानसिंह
द्वारा पोकरन ठाकुर बभूतसिंह व उनक साथ क अच सरदारों का सिरोपाव इत्यादि
प्रदान करने का विवरण दिया है।

प्रारम्भ—

“श्री रामजी”

‘श्री १ आसाढ सुद २ वार गुर श्री दरबार सु ठाकुरा बभूतसिंहजी न
सोप री सीरोपाव हुवा

२)) ३०) माहाराज श्री रामसिंहजी माजी श्री चन्द्रावतजी न नीजर
नोछरावल रा २)) ३०)”

बभूतसिंहजी को हुए सीरोपाव का उल्लेख इस प्रकार हुआ है—

१ श्री ठाकुरा री सीरोपाव

१ मीमो सपत पासगो	१ पाघ चु दडीया
१ सीरपैच कलगी वाली कडा	१ दुपटो वाणारसी
१ रुमाल कारचोभा री काप री	१ दुसालो लाल
	१ हाथी पटो

बभूतसिंह क साथ जो सरदार थे उनको सीरोपाव इत्यादि दान का विवरण
इस प्रकार है—

- (१) मु० सुरतरामजी पाघ १, पारचो १ दुपटो १।
- (२) भायल पुसालसींधजी पाघ १, पारचो १ वाणारसी १।
- (३) चा हीमतसीध जबानसिंघात पाघ १, पारचो १, दुपटो १ वाणारसी १।
- (४) चा मदजी पीवसिंघोठ पीलव पाघ १, पारचो १, दुपटो १ वाणारसी १।
- (५) चा वाघजी जठत री पाघ १, दुपटो १, वाणारसी १।

वही में आग विभिन्न स्थानों से नजर निहारावळ के रूप में आये रूपों की याददास्त दी गई है और खच हुए रूपों का उल्लेख हुआ है। वही अनेक व्यक्तियों के हाथ से लिपिबद्ध है।

७७ व्याव रे रोकड नावा री बही

१ व्याव रे रोकड नावा री बही, २ पो० हा० सग्रह ३ ६, ४ ३८ × १८ सेमी०, ५ ६०, ६ ३२, ७ वि० स० १८६६, ई० सन १८३६, पोकरण, ८ अज्ञात, ९ राजस्थानी, देवनागरी १० पोकरण ठाकुर वभूतसिंह की शादी के समय विभिन्न रश्मा आदि पर हुए खचों का उल्लेख हुआ है।

प्रारम्भ—

“श्री परमेश्वरजी”

सिध श्री राज श्री वभूतसिधजी लीपावत तथा श्री ठाकुरा री वीहाव सामोद रावल बीरीसालजी री बेटी सु फागण वद १० रा सावा हुवो, तिण रे रोकड नावा री बही स० १८६६ रा हा० सुरतरामजी।

वही में विवाह के समय हुए खच का उल्लेख एक स्थान पर इस प्रकार हुआ है—

परणीजण पधारिया तर वद १०

१)) तोरण री मोहर

२)) सामू आरती मोहरा

३)) गठजोडा म मोहर

४)) चवरी में बीराजीया हा राधा ल गई नगे नुपता रा

५)) चामु रा हाथी ३ ऊपर असवार हुवा तर मावत नै

६)) पडलो ले गया तरै

७)) पग धोवाई रा

८)) परण में पाछा पधारता पालपी बीराजीया तर कळस म

मोहर ९)) लगन में माढा सु भाई सो दीनी

१०)) गाल गीता रा रावळा में मेलीया आदि।

वही में रास्त में खरीदी गई जीनस, पशुओं के चारे, धान, नजर-निहारावळ, देवस्थान, शराब, किराया आदि पर हुए खच का उल्लेख है।

वही से पोकरण के सामोद से सम्बन्ध तथा उस समय मारवाड में प्रचलित विवाह के रीति रिवाज का ज्ञान होता है। वही अनेक व्यक्तियों के हाथ से लिखित है एक लिपि सुवाच्य है। वही पर चमडे का गत्ता चढा हुआ है।

७८ तोसपांना र जमा घरच री वही

१ तोसपांना र जमा घरच री वही, २ पा० हा० सप्रह, ३ ५ ४
३६ × १३ सेमी० ४ ६ १ २८, ७ वि० म० १८६७, ६० सन् १८४०,
८ अघात ६ राजस्थानी श्रवणागरी, १० वही ना प्रारम्भ इस प्रकार हुआ है—

तोसपांना म जमा घरच १८६७ रा ।”

इस वही मे तोसपांना म पात बाकी कयवा ना उल्लेख इस प्रकार हुआ है—
मीती जेठ वद १८६७ रा

पीत बारी

ताबा रा ईगतीसदा

बोजोसाई

२१) पाता मत्त रा

नाडसाई

२०) हा० सीमुडा

मपेसाई

—

गजसाई

पोटा फेर

कीसनगढ़ रा

२) अयसाई हा० सीमुडा

सातमताई वरडा

३ प्र० ॥ =)

ईगतीसदा

कलदार

बु दीरा

सायपुरीआ

इस वही से हम मारवाड म उस समय प्रचलित विभिन्न सिक्का के सम्बन्ध
म महत्वपूर्ण जानकारी प्राप्त होती है ।

७९ निजर-निछरावळ मुकाता री वही

१ निजर निछरावळ मुकाता री वही, २ पो० हा० सप्रह, ३ ७,
४ ५३ × १८ सेमी०, ५ २३३, ६ ३५-४०, ७ वि० स० १६०५ ई० सन्
१८४८ ८ अघात, ९ राजस्थानी, देवनागरी १० प्रस्तुत वही मे गाव मजत
(पृ० १ से ७१) दुनाडा (पृ० ७२ से ८२) करमावम (पृ० ८२ मे ८६) मोर
दुदा का वाडा (पृ० ६० से ६६) के आय पदावार का हिसाब लिखा है । इसके
अतिरिक्त निजर निछावर के रूप मे जो रुपये प्राप्त होते थे, उसका भी उल्लेख
सपास्थान किया है ।

प्रारम्भ—

'श्री परमद्वरजी

मीती बैसाप बढ ११ सोम म० १६०५ रा
७६२) श्री पोते बाबी बहो डूजी मू उतारिया
२२) पोते हाजर"

प्रारम्भ म जा जाय होती थी तथा व्याज आदि स पैस प्राप्त होत थ उसका हिसाब लिखा है। पृ० ६ (ब) पर ठाकुर बभ्रुतसिंह के पावरण से जाधपुर जाते समय भाग म विभिन्न व्यक्तिया द्वारा नजर किय गय रुपया का उल्लेख हुआ है।

वधा—

६५) नीजर नीछरावळ रा

१४) मारग म

१३) तीवरी म रणजीतसिंहजी सीवनाथसिंहजी बालरवे बाला
रा निछरावळ बट रा।

५) ५) गाय चामू म

२) बभ्रुतसिंहजी

२) रावळा माय मू

१) दबरे माजनो नीजरे किया।

विभिन्न उत्सवा पर पोकरण ठाकुर का सरदारो व ग्रामीण जनता द्वारा रुपय (अखेसाही) नजर निछावर किये जाते थ, उसका व्यौरा है—

४०	उत्सव	बहो की पृष्ठ सख्या
७	रथाबधन	२१ (अ)
४	पगडी बधवाने	
	की रसम के	२२ (घ)
११	दसहरा	२५ (अ)
१८	दीपावली	२६ (अ)
१७	बाहर से घाय सरदारा	
	ने नजर किये	२६ (अ)
४	दूल्हे ने नजर किये	३२ (अ)
६३	माजी साहिबा	
	पर निछावर	३५ (अ)

१७० राजस्थान के ऐतिहासिक प्रथा का सर्वेक्षण, भाग-३

ठाकुर किसी व्यक्ति को पगडी बधवात तो पगडी बधवान वाला प्रौर उसके साथी भी अपनी हैसियतानुसार ठाकुर को रूपये नजर करते थे। इसी प्रकार नव वर-बधु के पक्ष से भी रूपय नजर करन की प्रथा प्रचलित थी।

जाग वही म पृ० ३७, ३८, ४५ ५४ और ५८ पर इसी प्रकार नजर निच्छावर क रूपया का उल्लेख हुमा है। प्रत्येक व्यक्ति से प्राप्त होने वाले एसे रूपया का वही म जमा किया जाता था।

अधिकाश गावा से हासल न लेकर मुकाता (रोकड रूपय) लिय जात थे। इसक प्रतिरिक्त ब्याज क जो रूपय प्राप्त हात थे उसका भी उल्लेख यथा स्थान किया है। उस समय ब्याज की दर ४ आन प्रति सकडा प्रति माह थी।

अकाल पडने पर मुकात की रकम कम कर दी जाती थी अथवा माफ कर दी जाती थी। मुकाता समय पर नहीं देने पर कडी कायवाही की जाती थी तथा उनसे मुकाते की रकम मय ब्याज से वमूल की जाती थी।

८० गाव दुदा रे वाडे तथा पाता र वाडे रे नाव रो जमा परच रो वही

१ गाव दुदा रे वाडे तथा पाता रे वाट र नाव रो जमा परच रो वही,
२, पो० हा० सग्रह ३ १ ४ ५ ६ ७ ८ ९ १० ११, ६ ४६,
७ वि० स० १६०६ ०७ ई० सन् १८४६ २० दुदा व पाता रा वाडा ८ प्रजात,
६ राजस्थानी दवनागरी १० इसम दुदा का बडा प्रौर पाता का वाडा नामक प्रारम्भ—

थी परमसरजी

गाव दुदा रे तथा पाता रे वाड रो जमा परच स० १६०६ सू १६०७ रा

प्रासाड मुद १५ मुधी'

इस वही मे ब्याह क समय लिय जाने वाले दाण (कर) का उल्लेख इस

प्रकार हुमा है—

१३॥ ३)। ब्यावा रे दाणा रा जमा

३॥) ३७॥ नडारी दत्ता रो बन रो ब्याव हुयो न जान पांडिय मु आर्द
जीण रे दाणे रा पोह वद १३

२) १२) २५ दाणा रा फगीया रा
२) १२) २५

३॥) १॥ चवरो रो दाण

२॥) १३) २५

२ ≡)। सोनार छजे री बेटो मङ्गवाहे परणार्ई तीण रा

१) ६) १२॥ दापो अधकर लाग

॥) १। चवरी दाणा री

१) ७) १२॥

५॥) ≡ ॥ सा० तीलोन री बेटो परखी न जान कटाळीय मु आई तीण रा

२) १२) २५ दाणा तथा फदीय रा

॥) १ चवरी री

२) ≡ १) २५ जान जान माठ री पटौया लाग तीण रा

॥ -) आटो

१॥) घोरत

=) पाढ '१

१) २५ गुड '१।

२ ≡) १) २५

४) १५

टका रा

५

१॥) बाभो दीपला र बेना गाव धुनाडे नातर दीवी तीण रा ।

॥ =) ॥ सालपी भोवला री वन गाव पातां र बाडे नातरे दीवी तीण रा

१३॥) १३७॥

बही मे विभिन्न व्यक्तिया पर लगने वाले कर, जुर्माना, माहवार पेशगी
आदि का उल्लेख इस प्रकार हुआ है—

१॥) नायक हीरा हमीर कने बाळध र पडाव रा

२॥) =) भाट सस्था वा० गमसिध वाले रा पोठीया क्लीयार आया तीके
पाछा दीना तरे लीना

३) बाभोया र कुड रा लाग सा लीना

। =) रवारिया र ऊन बाव रा लागे छाग दीठ ऊन '२ रा लागे

=) रवारी मानो =) रवारी ऊमो =) रवारी बीभ्रो

। =)

१७२ राजस्थान क ऐतिहासिक ग्रन्था का सर्वेक्षण, भाग-३

२५ कणवारिय रँ रोजगार रा म० ३॥ रा प्र० म० १ ह० ६) लेप २५॥)

रूपया ८) महीने रा ताग सो हमक वसती नादार तीण मु सात दीना
र० ॥) पगरपी रा

३) रवारी माने रँ मुसर रो परच कीनी तीण रा पेटोया दीना नहा तरे
र० ३) पेटोया रा कर चीना

॥) रवारी ऊमला रो बहु पू ख चोरिया तीण रा

मारवाड म प्रचलित रीति रिवाज, कर व्यवस्था आदि का ज्ञान प्राप्त करन
के लिये सामग्री उपयोगी है ।

वही एक ही व्यक्ति क हाथ स लिखो गई है एव गत्ता चढा हुआ नहीं है ।

८१ ब्याव रँ रीति-रिवाज रो वही

१ ब्याव रँ रीति रिवाज रो वही, २ पो० हा० सग्रह, ३ २, ४
५० × १७ सेमी० ५ ६, ६ ४०, ७ वि० स० १६११, ई० सन् १८५४,
८ उज्जल नाथू, ९ राजस्थानी, देवनागरी, १० प्रस्तुत वही म पोकरन ठाकुर
बभ्रूतसिंह की शादी मे हुए पत्रों का विवरण लिपिबद्ध है ।

प्रारम्भ—

श्री गणेशायनम

“श्री ठाकुर साहबजी रो ब्याव सोयतरे रा चवाण अजीतसिधजी रो बेटी रो
डाळो लेने चवाण अठ भाया तर हीरानद रो बगची म ब्याव कीनी तीण र नाव रो
विगत हा० उज्जल नाथू
सा० १६११”

इस वही म ब्याव के समय होन वाली विभिन्न रश्मा पर खच का उल्लेख
इस प्रकार हुआ है—

‘ परणीजण पधारिया तरे—

२) सामळें र घाल म

१०) कळस म

२००) पडळ सामल राकडे

४०) वडी आरती रा

१) चामक दीवे म

१) गठजोडा रँ पले

४) मादो वरसावण रा

- ५) नव गीरां भ
 १) रुद्र कलस री
 १) हपळेवे भ
 २) दस दाव रा
 ४) सेवरा रा
 २) कसारा री थाली भ
 २) हपळेवे री थाली भ
 ५) भुरसी रा २) पोवरणा न २) सेवगा ने १) सीरमाळी न
 १००) हा० बढारण माय ले गई
 ६०) स० बढारणीया न तथा २०) स० ढालणीया न कमीणा रा
 ५) जाता करण पघारिया तर देवळां ५ चढाया
 १) श्रीरामदेजी काटडी चढीयो
 नाळेर १६
 ७) सुधार न तारण रा
 १) माघी गु थाई रा
 १) पगरपीया रा
 १) लूण ३ वारण री”

तत्कालीन विवाह सम्बन्धी रीति रिवाजों को समझने के लिये यह सामग्री उपयोगी है।

वही पर गत्ता चढा हुआ नहीं है और पत्र पानी से भीगे हुए हैं।

८२ साढा री हाजरी री बही

१ साढा री हाजरी री बही, २ पो० हा० सग्रह, ३ ४, ४
 ३३ ५×१५ ५ सेमी०, ५ १७, ६ २६, ७ बि० स० १६१७-१६, ई० सन्
 १८६० ६२, कोमता री अरठ, ८ अनात, ९ राजस्थानी, दबनागरी, १०
 यह उटनिया की हाजरी सम्बन्धी एक बही है, इसमें नहीं ब्याने (बारबाड) वाली,
 ब्याने वाली (गियाव) तथा लगडी ऊटनियो आदि की सख्या है।

‘श्री परमेश्वरजी

श्री रावळी साढा री हाजरी लीनी री विगत १६१७ रा चतर वद ३ हा०
 ठाकुरा श्री बभ्रुतसिंहजी, जसोलीया धनजी हाजरी लीनी गांव कोमता री अरठ मे
 २३१ रायकै चुरा री टोळा री हाजरी लीनी

६७ साढा मुआ

५६ साढा मुआ ५६

११ साढा गोधावाणी वेतर मार्घ

५२ साढा ५२ वापड

३ ऊट ३ साढा मे साढ

१६ पागळी १६ वरमुदी

१६ तोरडा १६ वरमुदिया

३ पागळी ३ वरस दोय रं घासरे

५६ तोड वापड

२ साढ २ वदोतर

१ ऊट १ सडवानं

६ ऊट ५ तोरडो १ जु० ६

२ तोरडा २ वरमुदीया

२३३

वही में इस प्रकार १६१६ तक साढ़ों की ली गई हाजरी का उल्लेख हुआ है, इसमें केचे गए ऊट व ऊटनिमो का उल्लेख मय रकम (अखेसाई, बीजसाई) कं हुआ है।

वही पशुघन के बारे में जानकारी प्राप्त करने के लिये उपयोगी है। वही अनेक व्यक्तियों के हाथ से लिखित है।

८३ ब्याव री बही

१ ब्याव री बही, २ पा० हा० समह, ३ ४१, ४ ४५ ८ × १५ ४ सेयो०, ५ ४ ६ ३० ७ वि० स० १६१६, ६० सन् १८६२ ८ अज्ञान ९ राजस्थानी, देवनागरी, १० इस बही में पोकरण ठियान री एक पुरी को गादी में हुए सम्पूर्ण खर्च का ब्यौरा दिया है।

प्रारम्भ—

‘धीरजी बाई लाड कबरजी का ब्याव री तबबीज जागती बही देपर सीमो जीकी याद दास्त समत १६१६ का”

गणेशजी, कुतदेवी, नवग्रह कळस धारती तिलक, डोलण, बतोषी, सामला, चपाईं धीरोपाव, पढना देवतामा का पूजन, हयनेया दांड झाहण को, चबरी दायादि में दिव खर्च का उल्लेख है।

व्याय म दिये गए गहना व नाम इस प्रकार है—टोटी, नुमका, बेणी जडाउर, नथ, बाजुबघ, कानणी, मुदडी, बीटी, हथफूल, पीपल पता, मतलझी, पायजेव, गुजरा की जोडी, कडीया पग की, मादला की जोडी, तीब इत्यादि जडाऊ व सान के गहन ।

दहेज में दिये गए सामान का उल्लेख इस प्रकार है—सीमी दारू की, सुरमादानी, गुलाबदानी, ढोलिया का पागा, धाळी, पाळो, जल पीवा की बाटकी गोळ चादी की, पपी का डाढी, छवरी की डाढी, कतरणी नरणी, कळमा, लोटा चादी का, पाळो हाडीदार, पीकदानी, पानदानी, बाळकु ची इत्यादि ।

कासी तथा पीतल के बरतनों का उल्लेख इस प्रकार हुआ है—चरवा कळस, धाळ, पाळो, कु डी, रामभारी, पीकदानी रामरती डाबो, दुकडीयो चरी कटार-दान जरकरी, बलण चगलोटा, बाल परात, तीलोडी, लोटा कडछी बाटका ।

पूरी बही में विवाह के पहले दिन से प्राप्तिरी दिन तक खच जिसमें दहेज का सामान गहने, कपडे व खाने पीने का अन्य सामान का कुल खर्चा ₹५८१८) रु० लिखा गया है ।

उस समय की घरेलू सामग्री का पता चलता है तथा विभिन्न वस्तुओं के मूल्यों की जानकारी भी होती है ।

८४ गोडवाड रं परगने खीवाडे री ख्यात

१ गोडवाड र परगने खीवाडे री ख्यात, २ पो० हा० सग्रह ३ २, ४ २६ × १६ ५ सेमी०, ५ ३६, ६ १६ ७ १६वीं शताब्दी का उत्तरार्ध, ८ प्रागत, ९ राजस्थानी, देवनागरी, १० ख्यात में चापा के वंशज भेरुदास, जसा, माडण, गोपालदास, बिठलदास इत्यादि कापरडा व पाली के ठाकुरों का वंशज देकर खीवाड के ठाकुर जगतसिंह व उसके वंशजों का इतिवृत्त दिया है ।

प्रारम्भ में खीवाडे के ठाकुर गुमानसिंह चापावत के पट्टे के गावों की सख्या, रैख, रकबा, कुरव इत्यादि की जानकारी दी है फिर राव रिडमल से गुमानसिंह तक वंशावली दी है ।

प्रारम्भ—

'ठीकाणो पीवाडो प्रगने गोडवाड रं पटे पाप चापावत बीठलदासोता रं ठाकुर गुमानसिंहजी अजीतसिंघात तीण रा ठीकाणा री पीमात राव रिडमलजी मु फरीया पेला पाली थो न पछै ठीकाणी पीवाडे बदीयो समत १८३६ में आसोज

१७६ राजस्थान के ऐतिहासिक ग्रंथों का सर्वेक्षण, भाग-३

बद ७ राठौड़ गजसिंघजी ने माराज श्री वोजसिंघजी ईनायत कायो हाल ठाकुर गुमानसिंघजी है, पट रो बिगत नीचे नयसा म—

न०	नाम ठीकाणा	नाब गाव	नाब प्रगना	रकबो	भरदुम मुमारी	रेप	नाब जागीर दारा रो
१	पीवाडो	पीवाडो	गोडवाड	२५०००	१८०५	६०००)	गुमानसिंघजी

कुरवा नाम	तादाद गाव	पटा रो रेप	भरतु रेप	राज म रेप भरे प्र (१०००) तार ८)	तजवीर दाकी	घोडा	जट
हात रो कुरव	दफतर म गाव ११	१६०२८)	१३०२५)	१२८२)	०	१६	०

॥ श्री जलधरनाथजी सत्य छै ॥

१ ठीकाणो पीवाडा प्रगन गोडवाड रै पट चापावत वीठलदास तीणा रो पुनासो

कुरसीनावो

- | | |
|----------------|-----------------------------------|
| १ राव राडमलजी | २ चापोजी राव रीडमलजी रा मु चापावत |
| ३ भेरूदासजी | ४ जैसोजी |
| ५ माडणजी | ६ गोपालदासजी |
| ६ वीठलदासजी | ८ लपधरजी |
| ९ अंपेराजजी | १० राजसिंघजी |
| ११ पेमासिंघजी | १२ जगतसिंघजी |
| १३ नवलसिंघजी | १४ ग्यानसिंघजी |
| १५ गजसिंघजी | १६ हमीरसिंघजी |
| १७ भोजीतसिंघजी | १८ गुमानसिंघजी हमार ठाकुर है । |

१ चापा का वत्तात -

ख्यात मे वणित है कि चापाजी का जन्म वि० स० १४६६ कार्तिक शुक्ला १ को हुमा और वे मडोवर परित्याग कर वि० स० १४६६ म पूव दिशा की ओर चले गए ।

२ भेरुदास का वृत्तांत -

चापाजी के कुवर भेरुदासजी का ज म स० १४६७ को हुआ, वे कापरडा में स० १५२२ को पाट बैठे और उहाने जाधा की बंदगी में काम किया। (पृष्ठ स० ७) बाद में राव बीका इन्हें बीकानेर ले गए। राव जोधा एवं बीका ने जब सारगखा पर हमला किया (वि० स० १५४५) उस युद्ध में भेरुदास के घाव लगे।

मेड़ता के राव बरसिंह द्वारा साभर व अजमेर पर आक्रमण करने पर अजमेर के सूबेदार मल्लूखा ने सिरियाखा और मीर घडूला का साथ ले मेड़ता पर चढ़ाई की तो बरसिंह व दूदा भाग कर जोधपुर सातल के पास चले गये। मुसलमानी सना ने लूटमार की तथा पीपाड से तीजणिया को पकड़ ले गये, इस पर भेरुदास आदि ने उन पर चढ़ाई की इसका विवरण ह्यात में इस प्रकार है—

“भेरुदासजी कापरडे मू कोसीणो तुरका री फौज री भेद ले जोधपुर आय राव सातलजी सु अरज कीवी जद रोयट मू बरजाग भीवोत नै बुलाय फेरई सारा नाया ने ले चढाया मू अणीया कीवी १ अणी तो बरसिंहजी दुदाजी री दूजी अणी बरसिंह भीवोत री तीजी अणी भेरुदासजी चापावत री चौधी अणी राव सातलजी पुद री सा भारी भगडो हुवो तीजणिया दुडाई सातलजी काम घाया तिणा री चांतरी कोसीणा रा ताळाब उपर है। ओ भगडो सबत १५४८ रा चत सुद ३ न हुवो जिण दिन मू मारवाड में घुडला री भळो जारी हुवो सो हाल तक बाल है।”

(पृ० स० ८ १०)

३ जसा चापावत का वृत्तांत -

ह्यात में वर्णित है कि राव मालदेव की ओर से विभिन्न ५२ परगनों को हस्तगत करने में जसा चापावत का भी विशेष योगदान रहा। इन्होंने डोडवाना और नागौर पर अधिकार किया। फिर जसा चापावत राणा उदयसिंह के वहाँ चले गये वहाँ उन्हें ३ लाख का पट्टा मिला। शेरशाह की मारवाड पर चढ़ाई के समय राव मालदेव की ओर से जसा कूपा के साथ जसा ने शाही फौज का मुकाबला किया।

(पृ० स० १३-१६)

४ मांडण चापावत का वृत्तांत -

वि० स० १६१६ में जब मोटा राजा उदयसिंह तथा चंद्रसेन के बीच युद्ध हुआ तब मांडण ने चंद्रसेन का पक्ष लिया। १६४० में दत्ताणी के युद्ध में सुरताण देवडा से लड़ते हुए रायसिंह (चंद्रसेन का पुत्र) के साथ मांडण के मारे जाने का उल्लेख है।

(पृ० स० २१)

५ गोपालदास चापावत का वृत्तांत -

माडण का उत्तराधिकारी गोपालदास हुमा, वह माटा राजा उदयसिंह की मवा म रहा। वि० स० १६६२ म उस आउवा का पट्टा मिला। उक्त राजा द्वारा चारणो स सामणिक गाव छोन लेन पर गोपालदास रुष्ट होकर उदयपुर राणा का चाकरी म चला गया। (पृ० स० २७ २८)

६ विठलदास चापावत का वृत्तांत -

यह महाराजा गजसिंह की बंदगी म रहा फिर महाराजा जसवन्तसिंह की दक्षिण चढाइया म भी इसन नाग लिया (पृ० स० ३३) अन्त म घरमाट क युद्ध म रतलाम शासक रतनसिंह व साथ गत रहा। (पृ० स० ३४ ३६)

७ लखधोर चापावत का वृत्तांत -

बादशाह औरंगजेब व जोधपुर महाराजा जसवन्तसिंह की नियुक्ति काबुल म विद्रोही पठानो को दवान क लिए का तय महाराजा के साथ लखधोर भी था पठानो के इस युद्ध मे पचोली बछराज मारा गया तथा लखधोर पायल हुमा। वि० स० १७३५ म (पेशावर म) महाराजा की मृत्यु क बाद लखधोर, दुर्गादास, मुक ददाम खोचो इत्यादि के साथ दिल्ली जाया। इसके रणसी नामक गाव भी पट्टे मे था तथा १७२२ म पालो का पट्टा उस मिला था। (पृ० स० ३८-३९)

८ अर्खेसिंह उदयसिंह चापावत का वृत्तांत -

अजीतसिंह इह बडा सम्मान देत थ। वि० स० १७३६ म नवाब कासमखा औरंगजेब से मिलन जा रहा था उस समय इहान उसके नगारे निजान खादि छोन लिय धोर जब महमदखा मलय रामपुरा म आ पहुँचा ता इन चापावत व मय राठोडो ने उससे युद्ध किया जिससे अखराज पायल हुआ।

ख्यात मे वर्णित है कि इद्रसिंह को इहान जोधपुर का राजा स्वीकार नहीं किया जोर वे इद्रसिंह के विरुद्ध लडत रह। उदयसिंह चापावत के जयदेव प्राहित के घर अजीतसिंह को लाने तथा १७४३ म कालद्री ग्राम म उसका राज्याभिके इत्यादि करन का उल्लेख है तथा महाराजा अजीतसिंह का जोधपुर पर अधिकार होने के बाद अर्खेसिंह से पालो जवन कर मुकनदास सुजानसिंघात चापावत को देने का उल्लेख हुआ है। (पृ० स० ४१ ४८)

९ राजसिंह चापावत का वृत्तांत -

वि० स० १७६५ महाराजा अजीतसिंह व राजा जयसिंह द्वारा साभर भाऊ-मण के समय राजसिंह की वीरता पर मुग्ध होकर महाराजा ने उसको पालो का पट्टा इनायत किया। (पृ० स० ४९)

१० पनसिंह चापावत का वृत्तांत -

यह महाराजा प्रभनसिंह की सेवा में रहा। इन्होंने महाराजा की ओर से लड़े प्रथम युद्धों में भाग लिया। रामसिंह व बखतसिंह के बीच हुए युद्ध में पनसिंह ने बखतसिंह का पक्ष लिया। महाराजा विजयसिंह तथा रामसिंह के बीच हुए चौरासणा ग्राम के युद्ध में पनसिंह वीरता से लड़कर काम आया। यह युद्ध वि० सं० १८११ आखिर मुदि १३ को हुआ। इस एक बार नादाज्ञ का पट्टा भी मिला था।

११ जगतसिंह चापावत का वृत्तांत -

इन्होंने महाराजा विजयसिंह व यहा बदगी की ओर आत्माराम गुरु की मृत्यु पर विजयसिंह ने पोकरण मादि ४ ठाकुरों को कैद करवाया उसमें इन्होंने महत्वपूर्ण भूमिका भवा की जिसका विवरण इसमें दिया है। बागी मलय नामक व्यक्ति जो मारवाड में नुकसान कर मेवाड चला गया था जगतसिंह ने उसे मरवाया। इस पर महाराजा ने खुश होकर जगतसिंह को वि० सं० १८३६ में खीवाड़े की जागीर प्रदान की। वि० सं० १८८७ को मेडता में मराठा से लड़ते हुए जगतसिंह का मार जान का उल्लेख है। (पृ० सं० ६२-६३)

१२ नवलसिंह चापावत का वृत्तांत -

यह भी महाराजा विजयसिंह की सेवा में रहा। विजयसिंह के पश्चात् भीमसिंह की सेवा में रहा। जब वि० सं० १८५३ में भीमसिंह ने सिधवी प्रखेराज को जालोर मानसिंह पर भेजा उस समय नवलसिंह भी उसके साथ था। वि० सं० १८५७ में मानसिंह द्वारा पाली में खूटमार करने पर भी भीमसिंह ने फिर नवलसिंह को मारवाड में शांति बनाय रखने के लिये नियुक्त किया था। (पृ० सं० ६४-६६)

१३ ग्यानसिंह चापावत का वृत्तांत -

इन्होंने महाराजा मानसिंह की बदगी की। पोकरण ठाकुर सवाईसिंह को मार खाने में घावे से मारा वहाँ ग्यानसिंह भी काम आया। (पृ० सं० ६७)

१४ गजसिंह चापावत का वृत्तांत -

मानसिंह द्वारा वि० सं० १८७५ में गजसिंह से खीवाड़ा ग्राम जब्त करके फिर वि० सं० १८७७ में पुनः इनायत करने इत्यादि घटनाओं का विवरण दिया है। (पृ० सं० ६८)

आगे दो पत्र लुप्त होने में खीवाड़े के अन्य ठाकुरों की जानकारी प्राप्त नहीं होती।

यद्यपि जोधपुर के महाराजाओं के इतिहास पर प्रकाश डालने वाले साक्ष्य राजस्थान इतिहास में बहुत हैं लेकिन किसी गांव विशेष के इतिहास पर प्रकाश

१८० राजस्थान क एतिहासिक ग्रन्थो का सर्वेक्षण, भाग-३

डालन वाले सक्ष्य अत्यल्प है। प्रस्तुत ह्यात नाव खीवाडे क ठाकुरा की मारवाड क इतिहास म भूमिका का पान प्राप्त करन के लिय उपयोगी है।

८५ पोकहन चापावतो री ह्यात

१ पोकहन चापावता री ह्यात मादि, २ पो० हा० सग्रह, ३ १, ४ १० × १७ सेमी० ५ २८८, ६ ३५ ७ १६वीं शताब्दी का मध्य, ८ अज्ञात ९ राजस्थानी दवनागरी, १० प्रस्तुत ह्यात म गोपालदास, विठलदास सबलसिंह, सवाईसिंह, सालमसिंह इत्यादि चापावत ठाकुरा की मुख्य उपलब्धियो तथा उनके कुवर कुवरिया आदि का विवरण है। सवाईसिंह चापावत का वत्तात विस्तार से दिया है। प्रारम्भ म धनराज क पुत्र अमरसिंह के ६ पुत्र तथा पुत्रिया आदि की जानकारी दी है।

प्रारम्भ—

श्री परमस्वरजी”

१ याददासत

—पीरथराज वीठलदासोत र

—धनराजजी

—अनोपसिंहजी अमरसिंहजी दूजा वेटा ५ जणा ६ भाई

—चा० अमरसिंहजी धनराजात वेटा १० वीठलदासजी रा पोतरा

(१) हीदुसिंहजी — इदा रा भाएजे था

(२) मोकमसिंहजी भवानीसिंहजी सादुलसिंहजी इदा रा भाएजे था

(३) कीरतसिंहजी — उरजनोता रा भाएजे था

(४) सूरतसिंहजी — उरजनोता रा भाएजे

(५) चैनसिंहजी — उरजनोता रा भाएजे

(६) सूरजमलजी रा वटा पयारा भाएजे

(७) वाघसिंहजी पीया रा भाएजे

(८) समसिंहजी पीया रा भाएजे

(९) जवानसिंहजी अरुत गई छै उरजनोता रा भाएजे

१ विगत

२ इदा रा भाएजे

४ पीया रा

४ उरजनोता रा

अमरसिंहजी र बाई एक थी मु जसलमर रावळजी तेजसिंहजी न परणाई न तेजसिंहजी न मार न अपेसिंहजी पाट बैठा पछै अमरसिंहजी जसलमर री बीगाड करता।

पछ् अमरसिंघजी ठाकर म्हासिंघजी न कह पोकरन लीवी नै पोहरन लीवा तर पोकरन ऊपर नरावत पेमसिंघजी था, पछ् लवारकी रावळजी कना सु तेजसिंघजी रा बेटा परतापसिंघजी नै देराई सु परतापसिंघजी र वभुतसिंहजी नाराजी हुवा छै ।

१ गोपालदास चापावत का वृत्तात -

इसमे माडण के पुत्र गोपालदास के ८ पुत्रो की नामावली दी है ।

- | | |
|---------------|-----------------------|
| (१) वोठलदासजी | (२) बलुजी आगर काम आया |
| (३) हाधीजी | (४) हरीदासजी |
| (५) भोपतजी | (६) राघोदासजी |
| (७) दलपतजी | (८) पतसीजी |

२ बिठलदास चापावत का वृत्तात -

इनके १२ पुत्रो की नामावली अंकित है—

- | | |
|-------------------|---------------------|
| (१) जोगीदासजी | (२) दईदानजी |
| (३) लपधीरजी | (४) प्रथराजजी रणसगा |
| (५) सीवदानजी पीलव | (६) जोधजी |
| (६) अजवसिंघजी | (८) सोनगजी |
| (९) आसयानजी | (१०) कानजी |
| (११) गोपीनाथजी | (१२) भीवजी |

जोगीदास के दो पुत्र भगवानदास व सावतसिंह का नामोल्लेख है । फिर भगवानदास के पुत्र प्रतापसिंह जि हे दासपा मिला था उनसे पीढियें दी है जो इस प्रकार है—

प्रतापसिंहजी रा दासपा छ । प्रतापसिंघजी रँ दौलतसिंघजी दौलतसिंघजी रँ सिवदानसिंह, सिवदानसिंह रँ उदैराजजी, उदैराजजी र सादुलसिंघजी र अनाड-सिंघजी न, अनाडसिंघजी र नैलसिंघजी ।

जगतसिंघजी भगवानदासोत मजल रा चापावतो जर दीनो अऊत गई श्रीलाद नही छै ।

३ सबलसिंघजी चापावत का वृत्तात -

भगवानदास के प्रपौत्र व देवीसिंघ के पुत्र सबलसिंघ का नामोल्लेख है तथा देवीसिंघ के अय पुत्र पुत्रियो के विवाह आदि का भी उल्लेख हुआ है ।

४ सवाईसिंह का वृत्तात -

सवाईसिंघ (सबलसिंघोत) के ३ पुत्रो के नाम और उनकी जम तिथि दी है—

- (१) सालमसिंहजी स० १८३० रा भादवा रो जम ।
- (२) जालमसिंहजी स० १८३५ मे शीतला रँ कारण सु चल्या ।

(३) हीमतीसिधजी सं० १८३८ का आसाढ मुदि जनम छ ।

सवाईसिधजी के ४ पुत्रिया का जहा विवाह हुआ उस स्थान का नाम एव व्यक्ति का नाम उल्लिखित है ।

फिर ठाकुर सवाईसिंह का गाव जीभणवाली भाटिया के यहाँ विवाह होन, विवाह म हुए खर्च तथा दहज का विवरण प्रकृत है ।

(क) खूबचद सिधवी को मरवाने का वृत्तात -

ख्यात मे वि० सं० १८४८ मे खूबचद सिधवी व उसक भाइया को घोने से मारने का उल्लेख इस प्रकार है ।

मीगी खूबचदजी वीरधमानोत ने चूक सावण वद पासवानजी रा बाप म हुवा । पैला तो ठा० सवाईसिधजी चूक पासवानजी ने कहै ने खूबचदजी तेवडियो था पछे ठाकुर साणी पडीया भेरजी सु मीळिया पछ भेरजी पासवानजी न कहै न खूबचदजी ने चूक करायो पछ खूबचदजी ने मार न ठाकुर सवाईसिधजी सोजत चडीया सु उठे वनचदजी खूबचदजी रो भाई ने सिवचदजी पण भाई थो जीण न अर हरपचद खूबचदोत थो जीणा ने पकडीया ने उया रा वबोला पण सोजत था सु वनेचदजी हरपचदजी ने तो मारया ने खूबचदजी रो छोटे बेटो अमरचद थो जीवण ने अर ३ बाला न पकड जोधपुर लाया उरा ।'

(ख) महाराजा विजयसिंह के पासवान गुलाबराय को मरवाने का वृत्तात -

सरदारों द्वारा गुलाबराय पासवान को घोले से मारने का विवरण ख्यात मे इस प्रकार है—

"पीची गोरधनजी ने पण पासवानजी मारण तवडिया सु ठा० सवाईसिंहजी रे वपल कम थी तरै ठाकुर री डेरो पाली जगतसिधजी री हवेली म थो पछ ठाकुर चदण ने त्यार हुवा तर मामल जीवराजजी पूछयो जंपुर जावसा तर जीवराजजी कहो कीऊ तर ठाकुरा कहो—अठे रण री धरम नही मारीया जावा तर जीवराजजी अरज कीवी उठा रा राजाजी न लोक पूछसी कीऊ घाया काई हुवी तरै काई जाव देसो अफुटो ईण मे कोजो लाग, तर ठाकुरा कहो कीऊ करो तरै जीवराजजी कहो सिरदारा सारा ने भेजो तो हु कर लेसु घाप पुसी रयावो । पछे जीवराजजी पला तो भासोप री हवेली गया पछ सिवसिधजी भाऊवा रा ठाकुरा सु पकायत कीवी ने छाडमा सु पछे वनेसिधजी चा० सेवा करता था सु इंदरसिधजी मुणसोघोत जाम ने चूक कीनो, इंदरसिधजी रे काका लागता, पछे चूक करन सीरदारा कने परा गया ।

पासवानजी की नाव गुलाब कवर बाई नाव थी सु चूक हुवो, बाग म था सु रथ म बढाए गढ ऊपर ले जाता था सु पळी रै सीरदारसीध चूक कीनो । श्री दरबार सिरदारा न मनावण पधारीया था न लारे चूक हुवो सु जोधपुर पधारया तर दोडीदार पोवजी अरज कीवी न पासवानजी की बढारण रग सोभा हज़ूर घाई सु उण पण अरज कीवी—दोडी र बारण रथ ऊपर बसता न कटारी वुही, भासोप रा कामती कू पावत हरीसीधजी रथ र कन उभा था । ’

(ग) सूरसिंह सायतसिंह आदि राजकुमारों की मरवाने का वृत्तान्त —

इसमें जोधपुर के शासक भीरसिंह द्वारा अपने भाई भतीजा को धोखे से मरवाने का उल्लेख है ।

प्रारम्भ—

‘महाराज श्री सूरसिंहजी सायतसिंहजी का कवर उमर वरस सु महाराज श्री भीरसिंहजी चूक करायौ स० १८५१ का म । ठाकुर सवाईसिंहजी वारे था न लार श्री काम हुवो सु जनाना म श्री इंदरभाणोतजी कन था सु धाय भाई रामकीसन पा० सीवकरण भावरीयो नै अहीर छनगराज वगरे माय गया सु सूरसिंहजी न इंदरभाणोतजी गोद म छोपाया बठा था सु ईणा धको दे इंदरभाणोतजी नै नीचा नाप नै वारे लाय नै चूक कीनी । चूक गढ माथे कीनो दाग काये दीयो । न उणहीज सु० मुकनचद मातीचदोत पोकरण रा नै १८५१ म तोप रै मुठे दीनो न मरायो । श्रीर सेरसिंहजी सायतसिंहजी बीजीसीधोत न प्रतापसिंहजी अजीत सिधोत न ईणा सारा न श्री भीरसिंहजी चूक करायौ । मानसिंह गुमानसिधोत सेरसिंहजी रै पोळै था सु जालोर था सु वचीया, न सेरसिंहजी नै श्री विजेसिंहजी टीको देन जालोर मेलिया था पण पछ सरसिंहजी पाछा उरा आया । मुसदीया घालमल कर न बुलाय लीना नै जालमसिंहजी बीजसिधोत उदपुर था ।”

(घ) पोकरण ठाकुर सवाईसिंह चापावत और भीरसिंह के जोधपुर राज्य की सना से युद्ध करने का उल्लेख हुआ है—

प्रारम्भ—

“स० १८४६ का

महाराजा कुवर भीरसिंहजी न ठा० श्री सवाईसिंहजी जोधपुर म सु चत सुद ४ ने सुद ६ सुधो चौपासनी रहा नै सुद ८ चौपासणी सु ऋवर गया ने सुद ऋगडो हुवो श्री दरबार की फौज सेप ईमाम अली ने चढावल रा कू पावत हरीसिंहजी ने कुचामण रा मेढतीया वगरे सीरदारा की फौज सु ऋगडो हुवो उठे ।”

(३) टालपुरा के युद्ध का वृत्तात -

सवाईसिंह चापावत तथा सिंघवी शिवचंद द्वारा फतेखा अब्दुला से टालपुरे में वि० सं० १८३७ में युद्ध करने का विवरण दिया है।

“चोवारी महाराज श्री वीजसिंघजी फौज ले ने सीधी सीवचंदजी ठा० सवाईसिंघजी वगरे सीरदार गया सु टालपुरा में फतेखा अब्दुला मु भगडो हुवो १८३७ रा महा वद १२ न।”

आगे युद्ध में मारे गये सरदारों की विंगत दी गई है।

(अ) महाराजा विजयसिंह भोवसिंह व मानसिंह द्वारा सवाईसिंह को सिरपाव प्रधानगी देने का वृत्तात -

(अ) श्री सवाईसिंघजी ने महाराज श्री विजसिंघजी परधानगी दीवी १८३८ रा सावण वद १

(ब) सा० १८५४ रा चैत सुद ८ जाज नीवाजस फुरमाय महाराजाधिराज श्री भोवसिंघजी ठा० सवाईसिंघजी ने परधानगी री सीरपाव तीसरे पोर रा ईनायत करायो तीणरी विंगत

— सीरपाव ईनायत —

१ चीरी परकलाई तास री

१ पोतीयो परकलाई तास री

१ मोतीया री कठी धुगधुगी सुधी रा ६० २०००) रोकडा

१ कडा री जोडी जडाऊ

१ कवाय फरकसाई तास री

१ मोतीया री चोकडी

१ सीरपेच जडाऊ

१ तरवार सोना रे मूठ री जडाऊ

१ कटारी सोना री

१ हाथी

१ पालषी

२ घोडा २ बलीणा

डेरा तबु बीछायत—

१ तबु

१ कनात

१ रावटी

१ पाल

१ जाजम	२ गदरा
२ तकिया	१ चानणी
१ जाजमा नवी	

लवाजमो रोजगार पाबद चलु सदा मद रोजगार मान १ री पावे—

२५) नवीसदा २ रा

१५) ५० फतैचद

१०) ५० गाहडमल

२५)

३) चोवदार

३।।) फरास

२) चढवादार

३।।।) मसालची इत्यादि इत्यादि

(स) इसी प्रकार स० १८६० म महाराजा मानसिंहजी द्वारा ठाकुर सवाईसिंह को परधानगी का सीरपाव ईनायत करन व सिरोपाव मे दी गई वस्तुग्रा का उल्लेख है।

(ख) सवाईसिंह का पत्र हिम्मतसिंह नारथसिंह के नाम -

सवाईसिंह द्वारा लिखे इस पत्र की प्रतिलिपि मे धौकलसिंह को सकुशल लाने को कहा गया है।

“ ठाकुर सारी कागद मु १ सीध श्री रामगढ मु याने छोरू कबर हिम्मतसिंहजी नारथसिंहजी जोग्य परवतसर सू राज श्री सवाईसिंहजी ली राम राम वाचजो अग्रच जोघपुर जोसी सीभुदान न मलीया है सो हमे थे महाराज साहब नै ल नै सीताव आवणो और पेलाईज महाराज मानसिंहजी री फौज भाग गई आपसी फतै हुई कजीयो कोई हुओ नही, पेलाइज भाग गया, माल घणी लुटीजीयो, अठा री तरफ मु पुसी रापसी ओर सीभुदानजी न अठईज राख्या है सो महाराज साहब (धोकलसिंह) जावता मु लावजो, हजार असवार जावता नै मैल्या है सो आपसी तर मु लावजो और ऊट पचीस ता आपणे नार नै अर ऊट २५ दरवार रा भार न जु० ऊट ५० रायचदजी कने मु भलाया छ उम्मेदसिंह नारथसिंहजी री नै आपणी भार हुवै जीको सरच वरच ने ले आवजो १८६३ रा फागण सुद ७ ने।”

(ज) सर्वाईसिंह को मरवाने का वृत्तांत -

सर्वाईसिंहजी को मीरपा द्वारा घोर मे मार डालन का उल्लेख इस प्रकार है—

“ठाकुर श्री सर्वाईसिंहजी चैत सुद ३, १८६४ मीरपा सु मूडव मीळ पधारिया था सु नीबाव सु पाघडी बदल भाई हुवा नै सुद ३ प्रभात रा मीळण पधारिया सु नीबाव तो तबु मे आयो नही न नीबाव र कने स्या मैमदपा थो स ठाकुरा नै कहो—हू नीबाव नै बुलाय लाऊ पछै स्या ममदपा उठोयो पछ वासली न सारस हई जद तबु री डोरी कटीजी न ऊपर तोपा टुटी सु चूक हुवो, फेर ईत सीरदार भेळा था—पाली गेनसिंहजी, बगडी रा जैतावत केसरीसिंहजी चडावळ ठाकुरा रा छोटा भाई बगसीरामजी काम आया नै अठ पवर आई सु चत सुद सपाडो कर दीवो कीनी न अंकादसी सुद १३ स० ने ठाकुरा सालमसिंहजी आपरा हाथा सु सारीयो ।”

५ सालमसिंह चापावत का वृत्तांत -

ख्यात मे सालमसिंह के वि० स० १८६४ आसाड शुक्ला ८ को पोकरण क गही पर बैठन का उल्लेख है ।

जयपुर नरेश जगतसिंह द्वारा जाधपुर घराब के समय सर्वाईसिंह के साथ उसके पुत्र सालमसिंह का उपस्थित होना लिखा है—

“ठाकुरा श्री सालमसिंहजी जाधपुर घेरो दीनोडो थो महाराज धीकलसिंहजी नै जोधपुर दीरावण सारू जपुर महाराज जगतसिंहजी बीकानेर महाराज सुरतसिंहजी फौज तीन लाय भेळी करने पला गीगोली ऊपर भगडो हुवो सो मानसिंहजी भगडा मे सु नाठा सु जोधपुर आण बडघा लारा सु फौज लेने दोनू राजा नै ठाकुर सर्वाईसिंहजी जोधपुर घेरो लगायो उण फौज मे कुवर सालमसिंहजी साथे था ।”

जोधपुर की सेना द्वारा फलीदी पर आक्रमण करने तथा बीकानेर राजा सुरतसिंह व चापावत सालमसिंह का उनसे युद्ध करने का विवरण है—

‘सवत १८६४ आसाड सुद ८ फलीदी उपर जोधपुर सु फौज आई नै फलीदी बीकानेर महाराज सुरतसिंहजी री हुती सो ठाकुर सालमसिंहजी मदत करण न पोकरण सु असवार हुवा अर उगरास रा डेरा ठा० उमदसिंहजी गाम दीपणीया री फौज लडती थी सो जपुर री फौज मे ठा० उमदसिंहजी था सो तोपा ऊपर घोडा नापीया सु ठाकुर काम आया जीणा रा समाचार आया न सुणाया नै उठी ठाकुर हीमतसिंहजी पधारया सो रा ठाकुर लोक

मुसदीया बरजीया दानू भाई कजीया म मत पघारो तीन महीना म दोय सरदार बापणा काम आय गया सो भेक सीरदार पावरण पघार जावो पण मानी नही दानू भाई नगडा मे गया सो फतै हुई, जोधपुर री फौज भाग गई, फतै हुई घ्रापणी, सावण वद भगडो हुवा ।”

(६) चापावत मबुतसिंह का वृत्तांत -

इसमें केवल वि० सं० १८६७ म महाराजा मानसिंह तथा वि० सं० १९०० म महाराजा तपतसिंह द्वारा ठाकुर वभूतसिंह को परधानगी, सीरपाव आदि देने का उल्लेख है ।

(७) गीत राणाजी रे वशाजो री -

चित्तौड़ व उदयपुर राणाओं की वशावली से सम्बंधित ११ द्वाले का एक गीत लिपिबद्ध है ।

प्रारम्भ—

चौतौड़ राणा जवान वडे चीत, भीमसिंह १ गादी कुळभाण त्रप अडसी
३ जगतसी ४ नरपत ।

ख्यात मे विभिन्न स्थाना के ठाकुरा के विवाह, उनकी पुत्रिया के विवाह, पाकरण ठाकुरा के विवाह, महाराजा मानसिंह व उनकी पुत्रिया के विवाह स्थान, सवत आदि का व्योरेवार उल्लेख है ।

ख्यात म नजर निछावर, ब्रह्मभोज, मृत्युभोज तथा होम इत्यादि करने का विवरण है । सवाईसिंह, सालमसिंह, हिम्मतसिंह आदि के मृत्योपरात उन पर बनाय गए देवल आदि का भी वरण है ।

ख्यात पोकरण के इतिहास के अध्ययन हेतु उपयोगी हैं । इससे उस समय की राजनैतिक, धार्मिक, सामाजिक एव सांस्कृतिक स्थिति का भी कुछ पान प्राप्त होता है ।

ख्यात अनेक व्यक्तियों के हाथ से लिखित है । वस्तुतः यह ख्यात न होकर रोजनामचा है, जिसमे हर दिन घटित होने वाली घटना का उल्लेख बहिया, पत्रों आदि की नकल कर किया गया है । ख्यात मे घटनाओं को क्रम से नहीं लिखा गया है । ख्यात जजरित अवस्था म है ।

चौथा अध्याय

अहवाल याददाश्त संग्रह

८६ अग्नेजो रौ अहलवाल

१ अग्नेजो रौ अहलवाल, २ जा० क० संग्रह, ३ ५६, ४ ५४×२०
सेमी० ५ ८०, ६ २६-२८, ७ वि० स० १६१३ ई० सन् १८२६, ८
भारयदान, ९ राजस्थानी, दवनागरी १० यह एलफिलस्टन की अग्नेजी पुस्तक
का राजस्थानी भाषा म रूपा तर है ।

प्रारम्भ—

“॥ श्री गणेशायनम ॥

यूरोपियन लोक हि दुस्थान म आया प्रथम सू सा अहलवाल—इमा गुएल
नाम पातसाह पुरत के जारा देस म पातसाही करतो तिण वपत वास्कोडिगामा
नामे सरदार १४६८ म पुरतकाल देस सू नाव म वस न कालीकोट आयो न
काची मे थाणो वेसाणियो उण वपत दक्षिण रा राजा निबल हुता आदि ।”

अन्तिम भाग—

‘ हि दुस्थान रौ अतिहास ओ सोनामदार एलफिलस्टन साहब अग्नेजी म
किताब वणाई, इण इतिहास रौ अर बालगगाधर सा उण एलफिलस्तान रौ किताब
रौ तरजमा मराठी भाषा म कियो, रणछोडदास गिरधर भाई मरेटी किताब रौ
तरजमो गुजराती भाषा म कियो अर जीवणलाल अबालाल रा छापापाना म छपाई,
आ किताब अहमदाबाद म १८२३ छापो । सो वा गुजराती भाषा रौ छपियोडी
किताब राज भारयदान मारवाडी भाषा म लिपो स० १६१३ रा निगसर वद ८
किताब समाप्त हुई श्री स्तु कल्याणस्तु वाचे तिणने राम राम है ।’

इसम मध्यकालीन भारत के इतिहास की अच्छी जानकारी मिलती है ।
प्रथ एक ही व्यक्ति के हाथ स लिखा गया है । चमडे का गत्ता चढ़ा हुआ है ।

८७ दक्षिण री अहलवाल (मराठी पुस्तक का राजस्थानी मे रूपान्तर)

१ दक्षिण री अहलवाल (मराठी पुस्तक का राजस्थानी म रूपान्तर), कविराज भारथदान, २ जा० क० सग्रह ३ ७८, ४ ३१×२४ ५ सेमी०, ५ ४७६, ६ १३-१४, ७ वि० त० १६११, ई० मन् १८५४, ८ कविराज भारथदान, ९ राजस्थानी, देवनागरी, १० यह कविराज भारथदान द्वारा मराठी पुस्तक का राजस्थानी भाषा म रूपान्तर है। जिसम मराठा का विस्तृत इतिहास बणित है। इस कृति का प्रारम्भ ५४वें पत्र स हुमा है।

प्रारम्भ —

“श्री गणेशायनम

अथ दक्षिण री अहलवाल लिपत घाठ हजार फौज ले अलादुनी पिलजी दक्षिण म आय दवगढ़ घरियो, दवगढ़ री राजा मरहठा रामदेव राव जादव सुलह कर धन अलाउदीन न देण लागी इतर प्रादि।”

पुष्पिका—

“आ किताब समाप्त सवत १६११ रा फागण सुद ७ दसकत कवराज भारथदान रा छ आ किताब मरेटी भाषा म धी सो देस भाषा म प्रापा साहब कराई अर कवराज कीवी।”

अथ मराठी क इतिहास क अध्ययन हतु बहुत उपयोगी है।

एक ही व्यक्ति द्वारा लिपिवद्ध, लिखावट साफ, ऊपर कपडे का गत्ता चढा हुआ है।

८८ अब्दुल करीम पजाब रा अहलवाल री किताब री तरजमो

१ अब्दुल करीम पजाब रा अहलवाल री किताब री तरजमो, २ जो० क० सग्रह, ३ ६१, ४ ४२×१४५ समी०, ५ १७, ६ २०-२२, ७ १६वी शताब्दी का मध्य, ८ अनात, ९ राजस्थानी, देवनागरी, १० इसम अब्दुल करीम की पुस्तक ‘तोफेतुल अहबाब’ का राजस्थानी भाषा मे रूपान्तर दिया है।

प्रारम्भ मे कुछ सोने के गहनो आदि की विगत दी है फिर यह तुजमा लिखा गया है।

प्रारम्भ—

“श्री नाथजी

अथ अब्दुल करीम पजाब रा अहलवाल री किताब वणाई तिण री तरजमो लिपते, ‘तोफेतुल अहबाब’ किताब री नाम एक बार वाच बडा साहिब लोग री जबान सू अहलवाल मुण किताब वणाई।

८७ दक्षिण री अहलवाल (मराठी पुस्तक का राजस्थानी में रूपान्तर)

१ दक्षिण री अहलवाल (मराठी पुस्तक का राजस्थानी में रूपान्तर), कविराज भारथदान, २ जो० क० संग्रह, ३ ७८, ४ ३१ × २४ ५ सेमी०, ५ ४७६, ६ १३-१४, ७ वि० सं० १६११, ई० सन् १८५४, ८ कविराज भारथदान, ९ राजस्थानी, देवनागरी, १० यह कविराज भारथदान द्वारा मराठी पुस्तक का राजस्थानी भाषा में रूपान्तर है। जिसमें मराठी का विस्तृत इतिहास वर्णित है। इस कृति का प्रारम्भ ५४वें पत्र से हुआ है।

प्रारम्भ—

“श्री गणेशायनम

अथ दक्षिण री अहलवाल लिपते आठ हजार फौज ले अलादुनी पिलजी दक्षिण में आय देवगढ घेरियो, देवगढ री राजा मरहठी रामदव राव जादव सुलह कर घन अलाउदीन न देण लागी इतरै आदि।”

पुष्पिका—

आ किताब समाप्त सबत १६११ रा फागण सुद ७ दसकत कविराज भारथदान रा छै आ किताब मरेटी भाषा में थी सो देस भाषा में आपा साहब कराई अर कविराज कीवी।”

ग्रन्थ मराठी के इतिहास के अध्ययन हेतु बहुत उपयोगी है।

एक ही व्यक्ति द्वारा लिपिबद्ध, लिखावट साफ, ऊपर कपडे का गत्ता चढा हुआ है।

८८ अब्दुल करीम पजाब रा अहलवाल री किताब री तरजमो

१ अब्दुल करीम पजाब रा अहलवाल री किताब री तरजमो, २ जो० क० संग्रह, ३ ६१, ४ ४२ × १४ ५ सेमी०, ५ १७, ६ २०-२२, ७ १६वीं शताब्दी का मध्य, ८ अज्ञात, ९ राजस्थानी, देवनागरी, १० इसमें अब्दुल करीम की पुस्तक ‘तोफेतुल अहबाब का राजस्थानी भाषा में रूपान्तर दिया है।

प्रारम्भ में कुछ सोने के गहना आदि की विगत दी है फिर यह तुजमा लिखा गया है।

प्रारम्भ—

“श्री नाथजी

अथ अब्दुल करीम पजाब रा अहलवाल री किताब बणाई तिण री तरजमो लिपते, ‘तोफेतुल अहबाब’ किताब री नाम एक बार बाच बडा साहिब लोगी री अबान सू अहलवाल सुण किताब बणाई।

चौथा अध्याय

अहवाल याददाश्त संग्रह

८६ अंग्रेजों की अहवाल

१ अंग्रेजों की अहवाल, २ जा० क० संग्रह, ३ ५६, ४ ५४×२०
सेमी० ५ ८० ६ २६-२८, ७ वि० स० १६१३, ई० स० १८५६, ८
भारतदान, ९ राजस्थानी, दवनागरी १० यह एलफिन्स्टन की अंग्रेजी पुस्तक
का राजस्थानी भाषा में रूपांतर है।

प्रारम्भ—

“॥ श्री गणेशायनम ॥

यूरोपियन लोक हि दुस्थान में आया प्रथम सू सो अहवाल—इमा युएल
नाम पातसाह पुरत के जारा देस में पातसाही करता तिण बपत वास्कोडिगामा
नाम सरदार १४६८ में पुरतवाल देस सू नाव में वेम न कालीकोट आयो नै
काची में थापो बसाणियो उण बपत दक्षिण रा राजा निबल हुता आदि।”

अंतिम भाग—

हि दुस्थान की अतिहास ओ सोनामदार एलफिलस्टन साहब अंग्रेजों में
किताब वणाई इण इतिहास की अर बालगगाधर सा उण एलफिलस्तन की किताब
की तरजमो मराठी भाषा में कियो, रणछोडदाम गिरधर भाई मरेटी किताब की
तरजमो गुजराती भाषा में कियो अर जीवणलाल अबालाल रा छापावाना में छपाई
आ किताब अहमदाबाद में १८५३ छापी। सो वा गुजराती भाषा की छपियोडी
किताब राज भारतदान मारवाडी भाषा में लिपी स० १६१३ रा मिंगसर बद ८
किताब समाप्त हुई श्री स्तु कल्याणस्तु वाचे तिणने राम राम है।”

इसमें मध्यकालीन भारत के इतिहास की अच्छी जानकारी मिलती है।
प्रथम एक ही व्यक्ति के हाथ से लिखा गया है। चमड़े का गत्ता बना हुआ है।

चौथा अध्याय

अहवाल याददाश्त संग्रह

८६ अंग्रेजों की अहवाल

१ अंग्रेजों की अहवाल, २ जा० क० संग्रह, ३ २८, ४ ५४×२० सेमी०, ५ ८०, ६ २६-२८, ७ दि० स० १९१३, ई० स० १८५६, ८ भारतदाश, ९ राजस्थानी, देवनागरी १० यह एलफिन्स्टन की अंग्रेजी पुस्तक का राजस्थानी भाषा में रूपांतर है।

प्रारम्भ—

“॥ श्री गणेशायनम ॥

यूरोपियन लोक हिन्दुस्थान में आया प्रथम सु सो अहवाल—इमा गुएल नाम पातसाह पुरत क जारा देस में पातसाही करतो तिण वपत वास्कोडिगामा नाम सरदार १४९८ में पुरतकाल देस भू नाव में वम न कालीकोट जायो न कावी में थाणा बसाणियो उण वपत दक्षिण रा राजा निबल हुता आदि।”

अन्तिम भाग—

हिन्दुस्थान की इतिहास ओ सोनामदार एलफिलस्टन साहब अंग्रेजी में किताब बणाई, इण इतिहास की अर बालगनाधर सा उण एलफिलस्तान की किताब की तरजमो मराठी भाषा में कियो रणछोडदास गिरधर भाई मरेठी किताब की तरजमो गुजराती भाषा में कियो अर जीवणलाल अबालाल रा छापापाना में छपाई, आ किताब अहमदाबाद में १८५३ छापी। सो वा गुजराती भाषा की छपियोडी किताब राज भारतदाश मारवाडी भाषा में लियो स० १९१३ रा मिंगसर वद ८ किताब समाप्त हुई थी स्तु कल्याणस्तु वाचे तिणने राम राम है।”

इसमें मध्यकालीन भारत के इतिहास की अच्छा जानकारी मिलती है।

प्रथम एक ही व्यक्ति के हाथ से लिखा गया है। अमड का गता चढा हुआ है।

८७ दक्षिण रौ अहलवाल (मराठी पुस्तक का राजस्थानी मे रूपान्तर)

१ दक्षिण रौ अहलवाल (मराठी पुस्तक का राजस्थानी म रूपान्तर), कविराज भारथदान, २ जो० क० सग्रह, ३ ७८, ४ ३१ × २४ ५ सेमी०, ५ ४७६, ६ १३-१४, ७ वि० स० १६११, ई० सन् १८५४, ८ कविराज भारथदान, ९ राजस्थानी, देवनागरी, १० यह कविराज भारथदान द्वारा मराठी पुस्तक का राजस्थानी भाषा म रूपान्तर है। जिसमें मराठी का विस्तृत इतिहास वर्णित है। इस कृति का प्रारम्भ ५४वें पत्र से हुमा है।

प्रारम्भ—

‘श्री गणेशायनम

अथ दक्षिण रौ अहलवाल लिपते आठ हजार फौज ले अलादुनी पिलजी दक्षिण म जाय दवगढ घरियो, दवगढ रौ राजा मरहठो रामदेव राव जादव सुलह कर धन अलाउदीन न देण लागी इतर आदि।’

पुष्पिका—

‘आ किताब समाप्त सबत १६११ रा फागण सुद ७ दसकत कवराज भारथदान रा छै आ किताब मरेटी भाषा म थी सो देस भाषा म आपा साहब कराई अर कवराज कीवी।’

ग्रन्थ मराठी के इतिहास के अध्ययन हतु बहुत उपयोगी है।

एक ही व्यक्ति द्वारा लिपिबद्ध, लिखावट साफ, ऊपर कपडे का गत्ता चढा हुमा है।

८८ अब्दुल करीम पजाब रा अहलवाल री किताब री तरजमो

१ अब्दुल करीम पजाब रा अहलवाल री किताब री तरजमो, २ जो० क० सग्रह, ३ ६१, ४ ४२ × १४ ५ सेमी०, ५ १७, ६ २०-२२, ७ १६वीं शताब्दी का मध्य, ८ अज्ञात, ९ राजस्थानी, देवनागरी, १० इसमें अब्दुल करीम की पुस्तक ‘तोफेतुल अहबाब का राजस्थानी भाषा मे रूपान्तर दिया है।

प्रारम्भ म कुछ सोने के गहना आदि की विगत दी है फिर यह तुजमा लिखा गया है।

प्रारम्भ—

‘श्री नाथजी

अथ अब्दुल करीम पजाब रा अहलवाल री किताब वणाई तिण री तरजमो लिपते, ‘तोफेतुल अहबाब’ किताब री नाम एक बार वाच बडा साहिब लोग री जमान म अहलवाल सण किताब वणाई।

नानगसा (नानक) फकीर आपरी मत चलायो ही नू मुमलमान भाव सिप ही रो परज ना नानगसा रायतो नही । पजाब म सिप न लाग बहै छ नानगसा रा मत म भाया जिके सिप पहाव है ।”

इस प्रकार पजाब के सिमा का इतिहास दिया है जिसमें विशेष रूप से रणजीतसिंह व अंग्रेजों के बीच चल संपन्न या वृत्तांत प्रकृत है । रूपांतर प्रपूण है आगे पत्र खाली पड है । लिखावट से पात होता है कि यह रूपांतर कविराज भारघदानजी ने ही किया है ।

अंतिम—

‘पछे सारो काम होय नूको तर गुलाबसिप मु बजोरत उतार राणो लालसिप न बजोरामत दीवी आ बात लाठ र पसद नही पिण राणा राजा मन आवसी तिण कर्न काम करावसी ए घापर बोलनामा म था जिण मु लाठ (अंग्रेज) बोलियो नहीं ।’
(पत्र-११)

यह रूपांतर एक ही व्यक्ति के हाथ से लिखा गया है । प्रथम पर चमड़े का गत्ता बडा हुआ है ।

८६ बखतावरसिंघजी की श्रेहवाल

१ बखतावरसिंघजी की श्रेहवाल, २ पौ० हा० सपह, ३ ६१, ४ ५१४ × १७ २ सेमी०, ५ १, ६ २८, ७ वि० स० १८६६, ई० सन्० १८३६, ८ अनात, ९ राजस्थानी, देवनागरी, १० रावणिया ग्राम के बखतावरसिंघजी द्वारा लिखवाये गये इस अहलवाल में उल्लिखित है कि समेल पर प्रारम्भ से ही बखतावरसिंघ का अधिकार था । वि० स० १८८२ में भाटी गजसिंघ के प्रयत्न से समेल मुकन्दसिंघ को जागीर में मिली, फिर वि० स० १८६० में गजसिंघ के कर्द होने पर समेल पर पुन बखतावरसिंघ का अधिकार हो गया । फिर वि० स० १८६२ में मुकन्दसिंघ ने आयस देवनाथ के मारफत समेल फिर अपने पट्टे में लिखवा दी और वह रावणिया ग्राम में चूटमार करने लग गया ।

“श्री परमेश्वरजी

॥ रावणिया रा बखतावरसिंघ श्रेहवाल मढाय

—समेल आडु म्हारी छे अर १८८२ की साल गजसिंघजी भाटी मुकन्दसिंघजी न लीपाय दीनी ।

—सवत १८६० की साल गजसिंघजी नै कट हुई जद महीं पाछी हजूर में अरज कर म्हे लीपाय लीनी समेल ने ।

—सवत १८६२ री साल श्री आयेसजी महाराज ने केह र समल फेर मुकन्दसिंह लीपाय लीनी अर राणविओ म्हारे रेयो जीण मे बैठो छु ।

—सवत १८६६ रा आ० बद ५ रात मुकन्दसिंहजी समल सु रावणिआ न रात रा आब घेरीओ सो रात रा तो भगडो हुवो, आसामी ४ रँ गोळी लागी पछ प्रभाते चोपळा री ऊपर हुवो जद पाछा गया जद उजाड कीयो ।

—वेरा १० री तो मका तोड ले गया पछे बद ७ ने फेर आया सो रोही माय सु चरता घेरीया—

४५ मेसीया, २० गाया, १० बळध, १ घोडी

—वेरा री मका कपास सारो ले गया

—आदमी ४ रँ गोळीया लागी

—ईण भगडा सु गाव अजोत रेयो सो साय रो नाज मण ४०००) आवतो ।

—धीरत खीया ५) रोजीना रो भँस्या री ।

—पाछे म्हे म्हा को धन लेवा वास्ते समेल गया सो धन तो हाथ लागी नहीं ने भगडो हुवो सो म्हारा आदमी दोय रे गोळी लागी ।

—बेसाप म समेल सु फेर आया सो पीण घट घाटो लुटीओ सो बसती होती रेहे गई ने भोटीया ४ ले गया ।

—आसाड म हल जुता जद हलवाणी १० सजा सुधी ले गया ।”

ऐस जागीरदारी भगडा म ग्रामीण जनता को कितन कष्ट उठाने पडते हैं उसका चित्रण भी इसमें आया है ।

६० साहब बहादुर रँ लिखी शिकायत री याददासत

१ साहब बहादुर रँ लिखी शिकायत री याददासत, २ पो० हा० सप्रह, ३ ८६, ४ ५१ ४× १७ ६ सेमी०, ५ १, ६ ३७, ७ बि० स० १८६७, ८ सन् १८४०, ८ अज्ञात, ९ राजस्थानी, देवनागरी, १० अंग्रेज सरकार द्वारा जोधपुर राज्य को लिखे पत्र में पूब सधि की शर्तों को अमल में लाने तथा राज्य काम में लक्ष्मीनाथ आदि नाथों के हस्तक्षेप को रोकने के लिये कहा गया है ।

(क) साहेब बहादुर र कागद री याददास्त -

प्रारम्भ—

“श्री परमेश्वरजी सत्य छै

याददास्त साहेब बहादुर काक आ मुजब लीपी पो० मुद १२, १८६७

(१) कागद १ नावा का हमेक नाव लीया सा हकबी जनस देया अर वकील न बी कबुल कीया अर ईस कागद मे स्टाफ मुद्रा लीपमीनाथजी का पोहोचता है अर अन की बात कु बरकला फकर डीया अर जामती न लीया है के गुरदुवारा की बात सीवाय राज की बात मे बोलना नही अर अरे कागद उसके चाबक सवार ।

(२) के वासते लीया गया अरे दपल हुवा अर ये काम राज का अटकता है सो ईस सबब से अटकता है अर दीवान काम नही लेता है मोहोर नही लेता है । सा इस सबब से नही लेता है सो हमन वकील सु श्री म्हारराज साहेब के पास भेज दीया है ने हमारा सला सीवाय वपारा का गाव अर बीना चीठीया गाव दाब लीया सा जबत करो ।

(३) ओर अरेन की कलमा म कलमा बाकी रही चली नही सो जरूर चलाय दा ।

(४) जोर दीवाण कु काम का पुरा अघत्यार दो जीससे काम चलाय दो अगर अरे काम तुरत नही होयगा तो हम ईस कागद नावा वाला कु सदरलेन साहेब के पास भेजेंगे अर पलीता म्हारराज साहेब कु श्री लीपमीनाथजी म्हारराज कु नीकालने का भेजेंगे अर अरे जामती का रूपीया लेवेंगे ।

(५) सायत हम कु असा सुनने मे आता है के नाथा का ईन दीना मे डील पुल गया के ईस सबब से के परधान वगरे उसस बोहोत राजी होय गमा अर ऊचे जानता है के अरे हमसे बोहोत राजी है सो पुरा मदत करेगा अर राज का काम मे दपल करेंगे तो ईनका सबब से हमारे ऊपर बाने का नही लेकिन अछी तरे से समझो क अरे कागद जामती का दफतर मे है सो अरे सनद है अर उस म लीया है सो तुम से लीया जायगा ।

(६) अर अरे बी सुनन म आता है क कीसी कु नाथा न घोडा दीया, कीसी कु पण्डी दीया, कीसी कु हवली दीया, कीसी कु भाई का पीताब दीया लेकिन हमारा दानस म आता है जीस दोन ईनकी अरेब मे सवा साप रूपीया लीया जावेगा अर लीया जीनके ऊपर हरफ आवेगा अर जीस जीस के घर म लीपमीनाथजी का

दीया हुआ था है जिस को उसकी श्रेयज रकम बोहीत म्ही होयगा भर जानिगे के हमने कीबा सो दानाई से बाहर ओर त्रब से बात चहीये के दीवाण कु गाढ़ा रपी भर मदत रपी जिस से सब काम चलाय देवे अगर से दीवानी का काम अटकेगा तो ऊपर लीया जो कागद साहेब सदर लेन साहेब बाहादर पास भेजा जायगा भर जामना पास रूपिया लेन मे भर लीपमीनाथजी महाराज कु नीकालने कुछ देर नही होगा ।

(ख) गांव मडाया जबत करण ने -

(१) गाव पाटवी आगेवी नीवाज का सीवनाथसिधजी ने आयेसजी श्री लीपमीनाथजी री अरज सु दीराया ।

(२) गाव बासणी पंदास ५०००) री पेला धी ने कुचेरा पंदास २००००) री श्री आयेसजी री अरज सु दीरीजाओ न बीना चीठी करणजी दाबीया गाव कागल १ ने लवारी १ ।

(३) गाव मोघडो अमरसिधजी जाणीआणा वाळा रे ।

(४) गाव दुघोड पाकरण का ठाकुरा के ।

(५) गाव मोर नावडो भानजी करमसात रे ।

(६) गाव सारगवास बगडी ठाकुरा रे ।

(७) गाव मोरीआणो नीवाज रा ठाकुरा रे ।

(८) गाव कुलथाणी नारसिधजी जोधा रे ।

(९) गाव करमावस आयेसजी प्रीगनाथजी रे ।

(१०) गाव चोटीआळो महामीदर वाळा पातावता ने बीना चीठी दीराया ।

(ग) गांव १० माहामोंदर दाबीया

१ मढीआ	१ वणाड	१ पीधावास
१ ऊटावर	१ दुधीयो	१ पवाणली
१ लुणावो	१ रडोद	१ पुडालो
		१ बीरामी

१०

गाव चीमाणी रूपावत दीपजी रे ।”

६१ बागरा रा डेरा री याददासत

१ बागरा रा डेरा री याददासत, २ पो० हा० सग्रह, ३ १२, ४ ४७ ३ × १५ सेमी०, ५ १, ६ ३३, ७ वि० स० १८६८ ई० सन् १८४१

बागरा, ८ अनात, ९ राजस्थानी, दवनागरी, १० इसमें प्रशासनिक व्यवस्था सम्बन्धी कुछ भावी योजना पर प्रकाश डाला गया है।

“आद १ स० १८६८ री फा० वद १४ बागरा डरा

श्री सरूपा नै सीप द दणी या पपता मास ६ म पाछा बुलाय दणा नै अठा री सला मुजब बरतन रह्या १०००००) आजीविका रापणी या पपत वघती री मरजी माफक करावसी सायत अठा ताई

(१) दीवाण सला मुजब कर देणो

(२) बीसुद फुरमास आग मुजब न टग बघीया सु मरजी मुजब

(३) पटानवस धनजी न या पपता तो दाय चार म के दास दीन लाग तो मास २ म बुलाय लेंग।

(४) काले श्री हजूर म सीरदारा ने मुसदीमा दील रापण री अरज सोगन सुधी करी जीण दाबत रूको। सीरदारा स्मस्ता री न रूको। मुसदीमा री लीपाय ने रूको। पवास पासवाना री ने रूको। जनाना चाकरा री लीपाय नै नीच सारा हीरा दसकत कराय लीमा चाहीज।

(५) और मोटी सला हाय तथा नवो सला काठणा हाय जद तो सारा पच सीरदार मुसदी होय जीणा न बुलाय सला मौलाय करी चाहीजे।

(६) और नीत भीती सरदार मुसदी न अकेद पवास पासवान अघा ऊचाला री सला सु काम बीचार मालम कर काम चलावणो चाहीजे।

(७) ओषा हाकमी हुवाला सु लेर पोतदारी ताई मरजी मुजब सला मौलाय लायक चाकरी देप ने दीया चाहीजे।

(८) ईण मुजब कलमा मरजी म मजुर हुवा पास रूको। ठाकुरा र नाव ईनायत हुवै जीण मे लीपीजे ईण मुजब म्हे सामल रहेने काम चलाय दसा म्हान श्री जी री नै श्री बडा म्हााराज री आण है।’

६२ उमरावो मुतसदीयो खवास पासवानो आदि रै बदीवस्त री याददासत

१ उमरावो मुतसदिया खवास पासवाना आदि र बदीवस्त री याददासत, २ पो० हा० सग्रह ३ १०१, ४ ६७७×१७ सेमी०, ५ १, ६ ५०, ७ वि० स० १८६६, ई० सन् १८५२, ८ अनात ९ राजस्थानी, दवनागरी, १० इसमें प्रशासनिक व्यवस्था सम्बन्धी कुछ भावी योजनाओं पर प्रकाश डाला गया है।

प्रारम्भ—

श्री रामजी

माददासत पो० मुद ७, १८६६ रा

श्री सेवा मीदर सत्प जोगेसुर

—हमार दुवायती हुई सो

—फेर दुवायती दुतरफी सला मीलीया सु

—परगना बगेरे पेल कठे ही नहीं रह

१ श्री देवस्थान धरम बर वगर पकी टक ने फुरमास हाथ परच रो परबध प्रोधो यारो नही है ।

(क) जमाना तालके -

(१) राजलोका रै रूका मुजब बराबर करीयो चाहीजे ।

(२) बाभा रो सरसतो कर दीओ चाहीजे ।

(३) गायप्या पढदायता रो सरसतो बरोबर करखो ।

(४) रावणा रा चाकरा रा गाव जबत दोय च्यार रै मरजी मुजब ।

(५) जनानी डाडी ता० चाकर बडारणा रो घरडो मा० (मास) १२ रो

१२०००) ।

(ख) उमरावा र -

(१) वेतलबीया रो सरसतो हुवो चाहीजे ।

(२) सायरा रा थाणा बडा माराज रा राज मुजब रेया चाहीजे ।

(३) घोडा सारा रा बदगी मे सारा रा रपावा चाहीजे ।

(४) जो'क गाव मोठ मोठ जबत हुवा चाहीजे लाय पचास हजार रा ।

(५) चाकरी म नही रेवे जीणा कना सू दोय ६० लेणा ।

(ग) मुत्तसबीया र -

(१) परगना म हाकम बगेरे आघा रो परच बडा माराज रा राज मुजब (होसी)

(२) अठे ओघादार जीणा रो ही परच बडा माराज रा राज मुजब (होसी)

(३) ठावा चाकरा रै गाव आजीविका उनमान ही चाहीजे ।

(४) प्रगना बदोबस्त रापण लायक चाकरा न सूपीजे ।

(घ) पवास पासवाना मे -

(१) माहे छूट लायक नै छूट रहै न मरजी मुजब आजीवक रहे ।

(२) कीलादारो नै कीला रा परच बडा माराज रा राज मुजब ।

(३) कोटवाळीया तत्रेला बीरादरीया आग छोटा पवास पासवाना र रता जीण मुजब ।

(४) छूट म पवास पासवान ता सदाभद रह नै मुतसदी काम सोर रह न दुजा मोकुव ।

(५) छूटवाला कन बेली आदमी बडा माराज रा राज म ता नही था नै १८७० रा बरस म था जीण मुजब ।

(ड) परगने -

(१) हाकम बगर आधादार ता बडा माराज रा राज सरस्त जावता ।

(२) रसाला रा ता घोडा उठ रेवे ।

(३) जमीता रा घाढा रव

(४) पाळो लोक परदेसी तथा जतीता बगर

(५) परगना स परच मही उदार १८३१ ताई तो आवता सो पास दसपत हुवा रूपीया दीरोजता पछ दुवायती हुई जीतरी सला बीचार फुरमाव

(च) कारवाना -

(१) कपडा रो कोठार बगर छूट वाला रेया चाहीज ।

(२) कीतराक कारवाना छोटा पवास पासवाना न रहै ।

(३) रसाला सागरद पसा रा परच रो मोपउ पको बधीयी चाहीज ।

(छ) परदेसी लोक -

(१) आदमी ५०० तोप ४ उगवले परगना मे रेवे ।

(२) आदमी ५०० जाळोर बगरे आयुषा रेवे ।

(३) ग्रंठ सवारी ता० रेवे इसडो बडोबसत उ रेवे ।

(४) कीला ता० रो परच मोयउ (सू) बीचार न बधाव—

जोधपुर, नागोर जालोर देसुरी, सीवाणो, सिव गीराब, दौलतपुर,
फलौदी, परबतसर, थावलो ।

(५) उकीला ता० गाव पीजमत प्रभारी पुराक ।

१ १ १

(६) महापुरसा रं नागोर थावलो जाळोर

(७) सारी बीगतवार बरज हुबै जीण रो पुलासो फुरमावे ।

(८) जुनी बाल रा घोडा तथा छोटा पटायता रा घोडा अठ सरे ता० रेवे ।

(९) बीसनस्यामी सर रा दरवाजा तथा रा बदोबसत नै रह ।

(१०) तोपपाने दादु गालो बळधा (वैल) री तयारी चाहीजे भ्रोक दोय
घाधादारं ता० यारो रह ।

(११) मामला ता० साभर सुन रेप माय सु दीरीजे ।

(१२) जुना बोरा री जमा जामी सा दीरीजी चाहीजे ।

(१३) हमार बोरा रा लेव देव जीणरी जमा री बदोबसत चाहीज ।

(१४) सायरा री काम बदोबसत सु जमा बधाई चाहीजे ।

(१५) लारला लया माये दोय तीन ठावा चाकर रया चाहीजे ।

(१६) टकसाला मे मोर रूपीया चोपा पड ।

(१७) पालसा हवालो ह० च्यार पाच लाप री पालसो हुव सा ठावा
चाकरा ता० लाप लाप री रयो चाहीजे ।

(१८) भ्रदालत म ईण काम लायक ठावा रया चाहीजे ।

(१९) नीत काम हुवे सो हुकम सू तो हुव पीण साहेव सू नीत जाहर
हाय नै सलामी मीलाई चाहीजे ।

(२०) कसबा म बरा पत ईनायत ज्यादा हुवा सो जबत हुवा चाहीज ।

(२१) जमा परच बरोवर हुवो चाहीजे ।

तत्कालीन प्रशासनिक एव आर्थिक व्यवस्था के अनेक मुद्दा को समझने हेतु
सामग्री उपयोगी है ।

६३ अदालत दीवानी व फौजदारी रा नवा दस्तूर री याददासत

१ अदालत दीवानी व फौजदारी रा नवा दस्तूर री याददासत, २ पो०
हा० सग्रह, ३ १२६, ४ ३३ १×२३ ५ सेमी०, ५ ६, ६ २२, ७ वि० स०
१९०६, ई० सन् १८५२, ८ अज्ञात ९ राजस्थानी देवनागरी, १० इसमे
दीवानी तथा फौजदारी अदालत के नये कानूनो आदि की रूपरेखा दी गई है ।

प्रारम्भ—

“श्री रामजी

याददासत आई नवा दस्तूर अमल अदालत दीवानी वा फौजदारी को भीती
फागण सुद ८ १९०६ का ।

अदालत दीवानी को दस्तूर -

(१) बलम पैली अबल तो सीरकार सु ईसतहार पोकरण पास मे वा
ईलाका रा गावा मे जारी हो जावे, लेणा देणा को तगादो आपस मे नही कर सके

दसतूर माफक माने जो दे देवे जवा तो ठीक अरु नहीं देवे तो सीरकार मे माफक जो बतावे नालस करे सीरकार करज को सलीको मकदुर माफक कराय देवे ।

(२) कलम दूसरी लेणा बाबुत - तलवा सीरकार का तालकदार वे हुकम अदालत के परभारी नहीं कर सके अरु हीमायेत कीसी की सुणी नहीं जावे ।”

इसी प्रकार दीवानी अदालत और फौजदारी अदालत सम्बन्धी क्रमशः १४ और २३ कलमे उल्लिखित हैं । उस समय के अदालती व्यवस्था का समझन हेतु सामग्री उपयोगी है ।

६४ रेख चाकरी सरणागत रं मुद्दो री याददासत

१ रेख चाकरी सरणागत रं मुद्दो री याददासत २ पो० हा० सयह, ३ ८६, ४ ५४ ८ × १७ ५ सेमी०, ५ १, ६ ४२, ७ १६वीं शताब्दी का मध्य, ८ अज्ञात ९ राजस्थानी, देवनागरी, १० इसमे रेख चाकरी अदालती तथा शरणागत आदि मुख्य तथ्यों पर आवश्यक सुभाव देत हुए उह अमल मे लाने की इच्छा प्रकट की गई है ।

‘श्रीरामजी सत्य छ

आददास्त आयन र सुवाला म ईता हरफ फेर मडीआ चाहीजे—

(१) पेला सुवाल मे मुय ओघा ५ जीके धेहेलकार पुसतदर पुस्त नू करता आया होय ज्यान लायक चाकरी देप दिआ चाहीजे ।

(२) चोरी ग्यारा गुणी भरावण री औल म १- ग्यारा गुणा भराय २ ओघा मु मोकुप कीओ चाहीजे ।

(३) रेप री ओळ' में -

श्री बडा महाराज रा राज मे रेप लागती जीण रीत लीरीजे अरु रेप मुजब चाकरी अरु रेप भरणी दोनु बखे नहीं

(४) सीवाम परच कर आय पडे तो साबक राज जनाना पालसा सुधा तजबीज बीचार ने कीओ चाहीजे ।

(५) अदालत परधान रा याय मे नीसाफ पाओ नहीं तो परधान दीवाण बपसी सामल होय नीसाफ ता ले अरु पछ धी हजूर मे अरज नीसाफ कराय देणा

(६) पेडा दीठ रुपीओ छदामी श्री बडा महाराज री सीलामती मे धो जीण मुजब रपाओ चाहीजे

(७) श्री हजूर सु पुलासे फुरमावणी भोळ मे -

प्रथम तो प्रधान, दीवान, बपसी उगेर पर उतर करे जीकोय उतर पेस नही चढे जीण री श्री हजूर न पुलासा फुरमाई चाहीज ।

(८) जोलो नही रापण री भोळ मे -

श्री बडा महाराज री सीतामती १८५० री साल म पेहला रं हेतो प्रायो जीण मुजब रापीओ चाहीज ।

(९) सरणा री भोळ मे -

१- सरणे बेस जीण कने लूट पोस दीराय देणी फेर करण देणी नही जीण री जामनी लीवी चाहीज अर मीनष मार आवे जीण री पचायत कराय तीसाफ बीचार श्री हजूर मे अरज कर हुकम मुजब सझ्या दीराई चाहीजे ।

(१०) भाई गनायत रापण री भोळ मे -

१- रापणो पीण उजाड दीराय देणो आगा न उजाड नही करण री जामनी कराय देणी अर फेर उजाड करे तो सझ्या दीरावणी

(११) रत सु बाव श्री बडा महाराज री सलामती मुजब लेणी

(१२) बरसोदा वाली भोळ मे -

१ मरजी पावदा री ईपत्यार है बाकी दूर होय अर रहै जीणा न लायक चाकरी भोधा पीजमता दीरीज सो बे तो नीभ जाय अर बरसोदारी री हजूर मे फायदो ।

(१३) हाकम रा मुवा मे -

१- सीरकारी रकम श्री महाराज राज मलणा जीण सीरस्ते लेणी पदायत सदामद परगना मे रेता प्राया जीके रेहेसी ।

मळा री निजर गाव सु लेवे जीका बीना हुकम नही लेव ।

(१४) चोरी धाडा री भोळ मे -

१- पोज आधी नही चाले जीण जायगा सु चोरी लेणी पीण नीरधार करण री करार धाम अर साग मुदो पाछाय चावी कीभा जागीरदार अर भेभीआ सीरस्ता मुजब दोनु देवे ।”

६५ तबेला रं सामान री याददासत

१ तबेला रं सामान री याददासत, २ पो० हा० सग्रह, ३ ४६ ८
३२ ६ × १२ १ सेमी०, ५ ८, ६ २५, ७ वि० स० १६२०, ई० सन् १८६५,
८ अज्ञात, ९ राजस्थानी, देवनागरी, १० इस ग्रंथ म तबेले के सामान, ऊट व
घोडा के शृंगार की वस्तुप्रा का उल्लेख हुआ है ।

प्रारम्भ—

“श्री परमेश्वरजी

११- घोडा री रपत वडे तबेला ता० री सनालीयो ह० दरोगा रावत १६२२
चत वद ५ ।”

ग्राम सामान, उसकी सूख्या, रग इत्यादि का वणन है सामान का नाम
इस प्रकार उल्लिखित है—

टापरा—रग भगवो, गुलेल, भववा, लगीरी, मीसरू इत्यादि । घासीया
जीणपोस तग, पीलाण, कडा, कतरणीया, पागडा हाना, पागीर (खागीर), बाला,
पापर गदा, लगामा गुरलीया बाग, पुस तग, जेरबध उगटा, फराकीया, बागडोर,
भवर कडीया, मोरो गादी, गुलमपा, जीणपास, फराकी, कडी भुल डळी, छेवटीया,
पडछी, वाकबुध, साकडा, काठी, मोरी, लगाम इत्यादि ।

उस समय घोड के तबेले की विभिन्न वस्तुप्रा की जानकारी इत्यादि के लिए
मामग्री उपयोगी है ।

६६ राज रं ओधा री याददासत

१ राज रं आधा री याददासत, २ पो० हा० सग्रह ३ ६८, ४
३० ४ × १६ ७ सेमी०, ५ १, ६ १६, ७ १६वीं शताब्दी का उत्तरार्द्ध, ८
अज्ञात, ९ राजस्थानी, देवनागरी, १० राजकीय विभिन्न पदा का उल्लेख करते
हुए कुछ महत्वपूर्ण सुभाव दिये हैं ।

प्रारम्भ—

“याददासत

१ पीडा सनमदी

१ ओधा मोकुप कर कंद कर पाच रूपीया लेणा

१ शोधार्थी मुजब

परधान वपसी

दीवान उकील

कीलादार

(१) हाकमीआ कोटवाली वीर कीतराक मोटा छोटा शोधार्थी वमुनासब है सो मरजी माफक ग्रामा सामा कराय दणा ।

(२) श्री सदुणा जोगसरा रो कराय दीआ जीण माफक पाया जावे सीवाय जुलम जाजती हुव नही तीण रो पकावट रापणी ।

(३) पाच शपीया परच पडे सु दीरावणा ।

(४) नित दरबार करावणो ने सारी समाल करावणी ।

(५) काम सारा जागो चाले जिमा पुलासे फुरमावणो हुयवो करे ।

(६) सीरदारा तथा चाकरा रो काइ बात रो अदसो हुव तीण रा फुरमाय न मनरी गल अे हुवै तो मीटाई चायजै ।”

फुटकर संग्रह

६७ अर्पासिध री कही हकीकत री नकल

१ अर्पासिध री कही हकीकत री नकल, २ पो० हा० संग्रह ३ १००, ४ ५० × १७ ८ सेमी०, ५ १, ६ ३७ ७ वि० सं० १८६७, ई० सन् १८५० ८ जनात, ९ राजस्थानी, देवनागरी, १० यह हकीकत बाला राठीड अर्जेसिंह (खाडप ग्राम) न लिखवाइ। इसके अनुमार वि० सं० १८६७ कार्तिक वदि ८ निबाज ठाकुर शिवनार्थासिंह व उसके सहयोगियों न एक योजना बनाई कि जालोर से प्रयागनाथ को लाकर लक्ष्मीनाथ की जगह नियुक्त किया जाय और लक्ष्मीनाथ और जसरूप का कैद किया जाय फिर मानसिंह (जोधपुर महाराजा) काबू म नहीं आता है तो नकली राजकुमार को गद्दी पर बिठा दिया जाय।

थी रामजी

१ नकल हकीकत मालम हुई तथा बाला अर्पासिंह गाव पडप बाळा उतराई सं० १८८७ रा कातो वद ८ न निबाज री हवेली सला हुई जीण सला म ईतरा जणा।

१ सीवनाथसिंहजी नावाज	१ कूपावत करणजी
१ जोशी फतचद	१ सी० मूलचद
१ चाकर ग्यानी	१ बाला अर्पासिध

ईतरा जणा सला म बैडा नै आ सला करो—जालोर मु पीरागनाथजी न लावणा ने गढ ऊपर चाड ने फतेमैल म डरो राप ने गढ री बढोबसत पीरागनाथजी कना मु करावणो न लीपमीनाथजी महाराज न मु० जसरूप न पकड लेणा तीण रा वपीया इण मुजब ठेराया २० ०००) बाग हजार तो कयो कीणी न दणा है सा

देणो तीण मे रुपिया साढा वारे हजार (१२५००) तो दीआ, दीना दोये च्यारा पछै सीवनाथसिधजी रै पले ह्वेली मे घालीया मु० मुकनचद लीपमीचदजी रा वटा हसते तीण मे ईतरा आदमी सामल ने रुपिया १०,०००) दस हजार तो ठा० वभुतसिधजी न दीना ने २०००) दोय हजार भायल पुसालसिधजी ने दीना ने रुपिया १०,०००) दस हजार ठा० सीवनाथसिधजी करणजी नु दीना, ने रुपिया १०००००) अक लाप फीतुर कानो देणा ठेहेराया ने सोनगरो जालो ने सावतसिध ने भाटी दोलो तोडीआणा से तीणा ने ऊदेमीदर मे भाटी पुसालसिध री जायगा मे दीन १० रापीया ने ६० लाप देणा ठेहेराया था तीण मे रुपिया २५,०००) पचीस हजार तो पले घाल दीना हा० सी० मुकनचद ने अठा सु चढीया तरै करणोत डूगरसिध ने वालो जीवराज अरे पीरागनाथजी री तरफ सु पोछावण ने गया ने पछै फेर आ सला हुई कीला री बदोवसत काने श्री दरबार हाथ नही लाग तो आपणो कयो नही करे तो फीतुर रा वेटा ने गढ चाढ देणो पछ श्री दरबार ने पवर हुय गई पीरागनाथजी आया री तरै दरबार असवारी कर ने बाग ताई सामा पघार गया ने लीपमीनाथजी सु मीळ नै गाव १२ कुचेरो न आगे थो नै कुरब दोवडा लीना नै पोकरण रा ठा० नै परदानी दीराय दीनी ईण मुजब सला हुई सो ईण बात मे काई भूठ होय तो मने नै उणा ने रूबरू कराय दीरावसी श्री हजूर मुढा आगे ठा० पुसालसिध बैठा ।”

महाराजा मानसिंह के विरुद्ध रचे गये एक महत्त्वपूर्ण पदयत्र का पता चलता है ।

६८ साहेब बहादुर कलमा लिखाई जीण री विगत

१ साहेब बहादुर कलमा लिखाई जीण री विगत, २ पो० हा० सग्रह, ३ ४६, ४ २२ १×८ सेमी०, ५ १, ६ ३३ ७ १६वीं शताब्दी का मध्य, ८ अज्ञात, ९ राजस्थानी, देवनागरी, १० इसम पोलिटिकल एजेंट द्वारा स्थानीय व्यवस्था सम्बन्धी कुछ शिकायतों का उल्लेख हुआ है ।

‘साहेब बहादुर कलमा कही जीण री विगत—

१ याहा का काम बिल्कुल नही होता है अर हम कु कुछ कहता है और वहा कुछ होता है ।

२ किसी जगे हाकम भेजण कहता है अर रवाने नही होता है ।

३ हाकमी कसुर के सबब से जबत होती है और फेर वसी की वसी रहती है, जसे जतारण की हाकमी बखराज मेहता सु जबत करी अर अब तक दस महीने से उसका बेटा काम करता है ।

४ कोई कोई गांव जागद्वारा या अर सीरदारा का मुतसदीया वगैरे का जगत हुवा अर आमदनी उनका मोलता है ।

५ हवाला के गांव व मुतसदीयु क तालके है तो जगत करणे वासत कहते हैं जब माहाराज साहेब कहते है ईन्के रुपय बाकी हैं जीसा मुदो छाडे नही से स्पीया उनकु दीरा दीया चाहीजे जोर गांव दूसरे के जीम कर दिया चाहीजे ।

६ पालस के गावा की फरद रावजी सु भागी सा हाल तक हाजर नही करी अर कुछ हमारा कहणे का पयाल नही करता ।

७ अदेव जासी कु पाली की हाकमी नायु के करणे से व ईतला हमारी के दीवी ।

८ साहब अजट का कहणा य है क जुवाव २२ प्रगनु का पुछणा और लेपा लेणा दीवाण कहान मे हुवा चाहीजे तो सबको ईसकु मानेगे लेकिन कीसी की अरज स दिया जाता है ता इस तर दणा मुनासब नही सीरफ सीरकार का फायदा दप दिया चाहीजे । ईसी तर नागोर मडता नीव मारोठ की हाकमी दिया गया ।

१ १ १ १

९ आज पुबचद का आदमी ने जाहर किया कोई परगना हमारे आदमी कु जमा परच बतलाता नही ।

तत्कालीन प्रशासनिक व्यवस्था और अनियमितताओं की जानकारी हेतु सामग्री उपयोगी है ।

६६ महाजना कलमा मडाई

१ महाजना कलमा मडाई, २ पौ० हा० सग्रह, ३ २०, ४ ५२ ८ × १६ २ मेमी०, ५ १ ६ ४४, ७ १६वीं शताब्दी का मध्य, ८ अनात, ९ राजस्थानी दक्कनागरी १० इसमे महाजना द्वारा लिखवाई गई अनेक शर्तों का विवरण दिया है ।

प्रारम्भ—

“॥ श्री परमेश्वरजी सत्य छे ॥

महाजना कलमा मडाई —

(१) धटे महाजना री केणावटे ईउ है—पोर चवव हजार री चीजो घालीयो सो वो तो बाजबी घलायो नही गरीब री न धींग री अक तरसते घलायो सो उण

म धाग था जीणरा घर ता बचीया न गरीब हा जिणा रा घर मारीया गया, सो इजारो कीयो जीण सु म्ह तो वाकब नही न छव जणा तथा आठ जणा वाकब है न म्ह कोई दुजो जणा गाय रा वाकब नही, नै हम राज रुपीया माने सो उणा आठा जणा कन मानीया चाहोज नै उणा रै बदळे म दवा नही नै उणा सु पडूतर कर लेसा ।

(२) माठा साध उधार वाव लवो मा मासु तो उधार वाव वण आवै नही सा देवा नही न हासल आव सो चुकाय देसा ।

(३) राज म वसत वानी लेवमी उधार ता दवा नही न रोकडा लेसी नै दसी ।

(४) परणा पुरा लेवा नही ।

(५) घोरत राज म धीहाव सावा म ता रुपीया साट भाव विगत सु वारा सु मगावे सो रुपीया लार भाव बता परो देसा न आडे दीन मगावे तर देसा नही ।

(५) हासल री चारी म आवसी जीणा कनै गुनैगारी इग्यार गुणी देसी सवाय देवा नही ।

(७) चाम चारी हाट ऊपर पकटे जीका पर सारू गुनगारी दसी ।

(८) माचा राली देवा नही ।

(९) कढाया छाटा माटी आडे दीन रात न मगाव सो तो देवा नही न वीहाव साव नव पुराणे मगाव तो परी दसा, न रात रा बसारू देवा नही आग ही मगावता नहा ।

(१०) चौथाई पाकरण कराव सा तो पोकरण भर दसा न भणायारो करावे सो भणीयारो भर दसा पण पोकरण तो चौथाई करावे नै फेर भणायारो नराय लेवे सो दाय जायगा भरा नही श्रेक जायगा रुपीया दीराव जठे भरसा ।

(११) काई लवणा देवणा वासते धरणो दसो माहाजन र पापती तो माहाजन वस जाय न कोई नीच जात र पापती बसाण सो बसा नही ।

(१२) वारे गाव म कोई वासामी हुव जीकण र कासीद मेला जीकण री राज सु कोई केणो कर नही ।

(१३) कोई ओसर मोसर री जीमण करै जीको जळेवीया तथा लाडू कर जीको तो राज मे छावा ४ घर लाग जीण रा रुपीया २) परा दसा न छावा मला नही ।

(१८) सीरो करसी जीकण रा दुकडीया ८ लागे सो तो मला नही न रूपीयो १) परो देसा ।

(१५) लाफसी करसी जीण रा दुकडीया ४ लाग सो तो मेला नही न न जाना परा देसा ।

(१६) जाना रा कासाला र ददबडा करसी सो तो नव सेर परी देमी बचा सेर मु न सीरो करसी सो छव सेर पका सेर मु देसा नाणा री दावो नही ।

(१७) कामदारा कासा सदामल आग लाग सो कामेनीया री ऊपर आय वेस जीणा रा तीन सेर पका दहीबडा करसी सो ते ददबडा न सीरो करसी जीक सीरोय री देसा नाणा री दावो नही ।

(१८) दूसरा कादारा री कानुगा री पाचोळोया री न सीपाया री न कोटवाळा री अे पाच कासा आगला सदामद लागता हा सो हमार देवा नही ।

(१९) चोरी री माल जाण नै तो लेवा नही नै अजाण लीरीजे तो रूपीया लेन माल परो देसा नै गुनैगारी देवा नही, गुनगारी तो चोर देसी ।

(२०) आसामी नै कीणी नै बीज भात देवा सो तो पैली चुकसी नै जुने ल्हण पछ चुकसी ।

(२१) कोई महाजन रा हाट घर हुवे जीण मे राज री तरफ मु कीणी न रापणा नही ।

(२२) कोटवाळ लाठा घणै ताळी तथा वासण बीणी री ले जाय सो वरज दीयी चाहीजे ।

इस लिखावट के अनुसार महाजना में आई जायति की सूचना मिलती है साथ ही उस समय की सामाजिक व्यवस्था पर भी प्रकाश पड़ता है ।

१०० पोलिटिकल एजेंट जॉन लडलू रं नाम ठाकुरा री शिकायत री नकल

१ पोलिटिकल एजेंट जॉन लडलू र नाम ठाकुरा री शिकायत री नकल,
२ पौ० हा० सप्रह ३ ७५, ४ १२८८ × १७ सेमी०, ५ १ ६ ८३
७ १९वीं शताब्दी का मध्य, ८ अनात ९ हिंदी राजस्थानी मिश्रित, देवनागरी,
१० इस अजदाशत में जामीरदारा द्वारा जोधपुर के शासक मानसिंह को तग करने का उल्लेख हुआ है । लेखक ने पोलिटिकल एजेंट जान लडलू को बताया है कि

जागीरदारा क घातक स महाराजा सत्यन्त दुःखा हैं, व आपका नाम लेकर उनका यातनायें पहुँचात है अत महाराजा ना कुछ हा गया तो इसकी जिम्मादारी आपकी ही होगी। दुखी महाराजा न रनयास म जाना नी बन्द कर दिया है अत महाराजा के पुत्र हान की नी आशा भ्रम न रहो। राजकुमार छत्रसिंह व जय राजकुवरा की मृत्यु हा चुकी है।

प्रारम्भ—

“नकल कागद १ डाक मडता री नाथ लन ढाकपाली जयान लडलू साहब बाहादर न दीपा मीनी आसाड बंद १४ स० १७६६ रा न जीण री नकल साहब कना मु उतारो।

कफीयत १ मारवाड क रईसा क घेवान की तथा मुलक मारवाड म राठोड रजपूत सनस्त भाया वा वारादरी सब बराबर हे पीण श्री माहाराजा साहब मुलक क सब राठोड के मालक है जोस कीसी न श्री माहाराजा साहब की बदगी म पर पाई की तन मन नू बरी जोनकु जागीर दब ठाकुर वणाय जागीरी नै ठाकुर पणा वासी की बापाता नही है फकत श्री माहाराजा साहब की बदगी पोचणे का है। बदगी बीना जात वीरादर म सब राठोड बराबर है घर का घणी कोई श्री माहा राजा साहब की बदगी पाछ जोसकु माहाराजा साहब नवा पटा ईनायत करे बोई जागीरदार ठाकुर हो सक्ता है कोई उसक दरजा मुलायजा जगत कर तो हो सकता है। ईसम कीसी का कमूर दपनर जागीरी जबत कर ता हो सकती है ईसम कीसी का ऊजर पच नही पोचता है। कीस बासते बदगी मु जागीर ईनायत करण का नक मुरत तकसीर साबन हुवा जबत करण का सरसता नमाम सीरकार मे है जीण मरसत मारवाड की सीरकार म है सो इण ठाकुर लाग मसु कीतनेब श्री माहाराज साहब का बुजर काफी न इनकी कदीम मु बदगी पर पाई करी न फेर उमद पर पाई की वरण की रपता है जोन मु माहाराज की रजाबद हुती आई न कीतनेक ठाकुर लाब श्री माहाराज साहब क बुजर काफी न माराज साहब की कदीम मु बद पाई नै जान की दुसमनी करते आय फेर बीयई उमेद रखत हैं सा सब पलक ऊपर जार है सो थोडा सा इसारा इसम जरज करू हु सा आप अछी तर दरीयाफत कराग। समत १८७४ का वरस श्री माहाराज साहब कु कद करके माहाराज कुवार छत्रसिंघजी कु राज ऊपर बठाये व पीछ कबरजी तो फेत हुब जद ईन ठाकुर लोग नै सन् १८७८ ईसवी म दीली जाय क मटकळप साहब बाहादर मु जरज कीबी श्री माहाराज तो राज की लायब है नही नै श्रीलाद इनके है नही सो कीसी कु पोळ लाएँ की आप मु जरज है सा उस बपत म सीरकार अग्रेज बाहादर की

मुनसफ़ी के राह सु न कोलानामा की लीपावट के पकावट सु न अपनी दानाई न अकल वदी न दूरदर्सी परणा सू मटकलप साहब बाहादर न साफ जवाब इन ठाकुर लोग कु दिया—हमारी सीरकार अग्रेज बाहादर की का कालनावा श्री माहाराज साहाब की न माहाराज साहब की श्रीलाद क साथ हुवा है सो जाद अत तई इनकी ई सात साबत रहगा राज श्री माहाराज साहब न माहाराज साहब की औलाद करेगी दूज कु पोळ लागे कुछ जरूर नही पीळ अरणे अरणे सीरकार के कोलनामा के लीहाज सु उसी वपत मदर मे लीपावट अरन बलडर साहब बाहादर कु जोधपुर भेजकर माहाराज साहब कु बारे कद माय सु नीकाल कर राज करण का कया । जब माहाराज साहब न कहा हम कु कीस वासते राज पर बठाते हो हमारे दुसमण हम कु राज तो करण देवेगा नही जब बलडर साहाब बाहादर अपना दानाई सु अरणी पुव तर सु माहाराज साहब रा अहेवाल दरीयाफत करके जरनल लुणी अरतर बाहादर की मारफत सदर मे लीपावट करके श्री माहाराज साहब कु राज कु राज करण की पातरी ने सीरकार अग्रेजी सू मदत रणणे की पातरी मगाय दीवी सो सीरकार अगरेज मे है । पछे सुदर की पातरी अणै सु माहाराज साहब ने राज ने राज का बदोबसत पुव अछी तर कीया सो उस वपत मे दूजे राजस्थान मे इन बरोबर किसी का बदोबसत नही था फेर माहाराज साहब न पातर जमा सु जनाना मे पधारणा सरू कीया सो कुवर भी हुवा था सो आप जोधपुर आये जीण दीना म फोत हुवा । सो ये सब वाता पलक ऊपर जाहर है सो व ठाकुर लोग ने बद पाइ ने दुसमनी सू मटकलप साहब बादर कन जाहर करी थी सो सब भूठी हुई जीण मु पछे मानसिंह सरमिदे हुवे नै अब इन ठाकुर लोग का दुसमणी का वपत फेर आया सो पाच बरस हुवे सो श्री माहाराज साहब कु तर तरै सू तकलीफ पीछाई जीनसु जनाना मे जाणा ही बध हुवा सो कोई कबर पदा हुवा नही जीसकी ये हरकत हुई न दुसमणा की मनचाई बात हुई फेर ये दुसमण माहाराज साहाब की ज्यान ऊपर घात करणे के उपाव म है सो ये बात ठाकुर लोग आपके मते सु कर सो तो इतना इनका मकदूर नही न आपका नाव लेके माराज साहब कु तकलीफ पीचाते है सो इस बात सु श्री माहाराज साहब के ज्यान के उपर घात आणा वाला है । सो ये हमारे लीपण के पली वाका अहेवाल आप कु मालम है कदास माराज साहब की ज्यान घात होय गया तो दुसमणा का तो बदला हुवेगा, ये दुसमण बदनामी आप कु दवेगा कीस वासते अरे आपका नाम ले के माहाराज कु तकलीफ पीचाता है फेर पलक ऊपर ये ही बात इना नै जाहर कर रपी है सु बदनामी का हरफ ये दुसमण आप ऊपर दवेगा, आपकी पर घाई जान के आप सु इस वासते

इतना कीबी है इन ठाकुर लोका न आगे इसी तर सु दुसमणी करनी बीचरी धी जीस वपत के मटकलफ साहब नै जरनेल साहब ने वेलधर साहब बाहादर हाजर नही है उनके भेवज कायम मुकाम आप होने सीरकार अगरेज बाहदर की वो ही मुनसफ है, वो ही सीरकार का कोलनामा मुजबूत है नै वो ही श्री माहाराज साहब है नै उवेई ठाकुर लोक माहाराज के दुसमण हैं ॥ सो बडा ताजुब री बात है ॥ किस वासते इन दुसमणा कु आगा मुजब नै ऊमदी का जुबाब नही मिलता है न माहाराज कु दुसमणा का हाथ सु नही छुडाता हो अब तो ये दुसमण ठाकुर लोग नै इनकी सामलायत का मुसदी आपके मुक्त्यार होय के आप सु मीठी मीठी वाता करके आपके नाव से माहाराज साहब कु तकलीफ पींचात है सो माहाराज साहब के बदन म हलावत ताकत नही रही है सो सबके ताई पाप है सो इस तकलीफ पोचणे मे श्री माहाराज साहाब के जीव की जोपम होय गया तो इस बात का पीसतावा सबकु तो होयगा, पीण सीरकार अगरेज बाहदर के भेलकारा कु वोहत होयगा ने सब सू जादा आप कु होयगा फेर इस बात का ईलाज कुछ नही हा सकेगा आपके पेर पाही क लीप्या है ॥

१ और कोई आपके पास मुफ्तियार है जीना न आप कु बकाय रध्या है श्री नाथजी क सबब से मुलक का बदोबसत नही होता है सो इनका फक्त फरेब की बात है, आप पीयाल तो करो ये लोक आप कने मुक्त्यार हुब है जीण पेहल्या इतना अवाजा पीसाद का नाथजी के नाव का मसुर नही था पीण ये लोक आप कन मुक्त्यार हुब है जीना न माहाराज साहब कु तकलीफ पींचाणे वासते नाथजी माहाराज के नाव का फीसाद का वाजा जादा किया न आप कने नालस करवो किया न तो इस बात कु श्री नाथजी माहाराज समज न ना समजै श्री माहाराज साहब बहुत तरफी लीहाज सु तकलीफ अपणी ज्यान ऊपर भुगती सो इस दरजे कु पुतै इस सबब से माहाराज साहब के न आप के सला मीली नही दील म फरक रहा जिस सु मुलक का बदोबसत पातर वार हुवा नही सो आप कु माहाराज साहब की पातर की रजाबदी रप कर मुलक का वदाबसत करणा मजूर होय तो य लोक आप कने मुक्त्यार है जीनकु सबकु मोकुब करके माहाराज साहब न आप फक्त दोनु साहब बदोबसत की सला मीलावो न सला मे कीसी तीजे का दरमान नही हुवे ने माहाराज साहब ने आप सला मीलाय कर श्रीनाथजी माहाराज कु रोटी देणी मजूर होय जीतनी तो ऊनकु ने वाकी का मुलक था बदोबसत माहाराज साहब को ने हुने आपकी मरजी मुजब होय जावे श्री माहाराज साहब की सब तकलीफ मीट जावे जद जनाना मे पधार जद कबर भी पैदा हुवे जद भस बात

की नेकनामी न कुसी सब पलक उपर जाहर होय ये हकीकत आपके मते दरीयाफत करी नही न माराजा साहब अपनी जुबान से फुरमावे नहा न कोई सीरदार मसदी पवास पासवान नीसप री पणा सू आप जाहर कर नही जद हमन श्री माहाराज साहब को न आपकी परपाई जाण न थोडा सा इसारा अरज किया है सो आप इस पर जमल करके इसका जुबाव फुरमावो तो श्री माहाराज की दोडी उपर भेजाय दबोगे तो हम कु आप पौवेगा जोधपुर म श्री माहाराज साहब की डोडी ऊपर हाजर हुय जाय हुकमा ॥”

इसम महाराजा मानसिंह के अतिम दिना की भलक मिलती है ।

१०१ रेप री भरोतिया री नकल

११ रेप री भरोतिया री नकल, २ पो० हा० मग्रह, ३ ११४, ४ २८ × १८ ५ समी०, ५ १ ६ ८, ७ वि० स० १६२१ ई० सन् १८६४, जोधपुर, ८ अनात, ९ राजस्थानी देवनागरी, १० इसमे पोकरण परगन की रख राजकीय खजाने मे जमा करने का उल्लेख हुमा है ।

“श्री जलधरनाथजी सहाय छ

मुहताजी श्री मुकनचदजी लिपावत ।

रा० बभूतसिंह सालमसिंघात पाप चापावत र पट जाधपुर री गाव पोकरण वगैरे रेप ६६६०८) री रा स० १६१८ रा ५५६८॥ =) वरस १६१६ रा ५५६८॥ =) वरस २ री रेपा रा प्रा० १०००) लार ८०) लेप १११३७। अउरे इगयारे हजार एक सौ सवा मतीस रुपिया सु पासे पजान जमा पोस मुद १५ न स० १६२१ रा पोस मुद १५ ।”

रेख लागत की जानकारी मिलती है ।

१०२ ठरडे रा पोकरणा लीपत कर दीनी उण री नकल

१ ठरडे रा पोकरणा लीपत कर दीनी उण री नकल २ पो० हा० मग्रह, ३ ४० ४ ४० ५ × १६ समी० ५ १, ६ ४०, ७ वि० न० १६२२ ई० सन् १८६५, पोकरण, ८ भानीबगस, ९ राजस्थानी, देवनागरी १० इसम अपराधी द्वारा पोकरण ठाकुर बभूतसिंह को जुर्माना देने की व्यवस्था का उल्लेख हुमा है ।

‘ ठरडे रा पोकरणा लीपत कर दीनी सो श्री दरबार सु पीयो तीण री नकल इण मुजब स० १६२३ रा पोह मुद ४

१ लीपत १ ठरडे रा पाकरणा समसता कर दोनो ठाकुरा राज श्री वभूत-सिंहजी कवरजी श्री गुमानसिंघजी पोकरणा धणीया ने पोकरणा गावा री चोरीया वीगाड कीनो तथा जमादार भरजणपा रा वेटा काला ने मारीयो तीण र बैर गुनैगारी माल असबाव तथा माडवै रा नरवदा रा पत गावा रा पाकोडा सो वीगडिया, बाळीया गोहू ले गया तीण वीगाड रा रुपीया १०००१) अपरे दस हजार एक ठेरीया सो रुपीया हाथ घाया नही जद ईणा रुपीया जमी कुट री कारकुट कर दीवी सो ईण जमी रा पदास मुष भाल माष सावणु, ऊनहालू बैरा, पेत नाडीया ईण जमी म है जीण री मुष लाभ ठाकुरा साहव री छ । मारो दावा नही । जमी रा सडा री विगत —

१ बाजू उगवणे तो सीरदारसीध री डाणो री सीव न अगूण सु उतराद पास उतरादे पीडता री डोळी तथा नरवदा री सीव तथा माडवै री मारग घाट आव जीठा ताई तो उतरादे पासो नै पास आवणवे घाट री सीव न दीपणादे पासे जमला री सीव सुधी इण सडा बीचली उनमानु पाच कोस ईस नै पास कोस उपले है तीण रा नेपम रोपाय देसा ।

इण सडा तथा बीचली जमीन नीव सीव सुधी दीधी है सो इण जमी री हासल मुकातो पडोटो आसी सो पोकरणा ठाकुर लेसी पोकरणा ठरडे रा कोई नाव लेण पाव नही, घो लीपत मे मोरी राजी कुसी सु जोधपुर म कर दीना है हसत सीवदानोत जसो समलसिंघ रा ।

इण लीपावट म कोई बात री उजर करा तो राज दरवार अग्रेजी सीरदार पचा पचायती मे भूठा पडा, सा० १६२१ रा वरस सु पदास पोकरण री सीरदार म लेसी में कीणी बात री दावो करण पावा नही सा० १६२२ रा मीती भाद्रवा वद ७ अदोतवार दा० भानीबगस हरीसिंघोत रा पोकरणा समसता र कहै सु लीपत वचायने कीना छै ।

पत्र म आग साप (साप) देने वाले व्यक्तियों के नाम उल्लिखित है ।

१०३ पोकरण री रेख भरिया री नकल

१ पोकरण री रेख भरिया री नकल, २ पो० हा० सग्रह, ३ ६, ४ २५ ६ × १५ सेमी०, ५ १, ६ ७, ७ वि० स० १६३०, ई० सन् १८७३, ८ अज्ञात, ९ राजस्थानी, देवनागरी, १० इसम पोकरण की सालाना रेख राजकीय खजाने म जमा करने का उल्लेख है ।

“महैताजी श्री हरजीवणदास लिपावत राव बभ्रुतसिंह सालमसिंघोत पाप चापावत रै पटे जोधपुर री गाव पोकरण वगरे पटा री रेप ६६६०८) री रा स० १६३० रा वरस री रेप रा रूपीया १०००) लार २६०) लेप ५५६८॥=) अगरे पचावन सौ अडसठ रूपीया दस घाना सु पासे पजाने जमा जेठ वद ८, १६३१ रा जेठ तक ।”

१०४ महाराजा तखतसिंह व अंग्रेज सरकार रै कोलनामा री नकल

१ महाराजा तखतसिंह व अंग्रेज सरकार रै कोलनामा री नकल, २ पो० हा० सग्रह ३ १२८, ४ ३४३ × २१७ सेमी०, ५ २, ६ ३०, ७ वि० स० १६२५, ई० सन् १८६८, जोधपुर, ८ अज्ञात, ९ राजस्थानी, देवनागरी, १० वि० स० १६२५ का लेफ्टिनेंट कनल कीटिंग (ए०जी०जी०) ने जोधपुर आकर महाराजा तखतसिंह और ब्रिटिश सरकार के बीच एक नया अहदनामा तयार किया उसकी धाराये उल्लिखित है ।

यथा—

पेहली श्री माहाराजा साहब बाहादुर नीचे लीप हुए मुसाहबा कू रयासत की इतजामी की करवाई के वासते मुकरर फुरमाते है—

- (१) जोसी हसराज—दीवान
- (२) महता बीजेसिंघ—फौजदारी अदालत (हाकिम)
- (३) महता हरजीवण—दफतर (हाकिम)
- (४) सिंघवी समरथराज—दीवाणी अदालत (हाकिम)
- (५) पडत सीवनारायण

और चू कि अब राज का पजाना पाली है सो माहाराज साहब बाहादुर रूपीया १५,००,०००) पदरा लाप रूपीया रयासत के परच के वासत इन लोग के हाथ नीचे रपना कबुल फुरमात है आदि ।’

१०५ बभ्रुतसिंह रै नाम पटा री नकल

१ बभ्रुतसिंह रै नाम पटा री नकल, २ पो० हा० सग्रह, ३ ११२, ४ ३४ × २०४ सेमी०, ५ १, ६ १०, ७ वि० स० १६३३, ई० सन् १८७६ जोधपुर, ८ अज्ञात, ९ राजस्थानी, देवनागरी, १० इसमे पोकरण ठाकुर बभ्रुतसिंह को रोईचा ग्राम (परगना सिवाणा) जागीर म मिला उसका उल्लेख हुआ है ।

“महता श्री विजयलजी लिपायत गढ़ जोधपुर र प्रा० सीवाणा रो गाव रोईचो बगो तर्फे दुनाबा रा चौपरिया लोका दिम तथा गाव राव बहादुर रा० बनुतसिंह सालमनिध सवाईसिधोत गाव चापायत र पटे हुवो है मु स० १६३३ री साप उनहाचू पा भमल दीजा गाव म विना हुरम सासण डाहलो देण न पावै डाण जमा बपी वगरे बाब दरवार रा है रेप १५००) पनरे गो री गाव एक इनायत पालसा री । स० १६३३ रा जेठ वष ।’

१०६ अरजीया लीपाये जीण रा मसोदा री नकल

१ अरजीया लीपाय जीण रा मसोदा री नकल २ पो० हा० सप्रह ३ ५, ४ ३४७ × १२४ समी० ५ १ ६ ३३ ७ १६वीं शताब्दी का उत्तरार्ध, ८ अनात, ९ राजस्थानी देवनागरा १० जोधपुर के शासक मानसिंह को लिखी गई अजदान्त म घाणेराम ठाकुर का पडय प्रकारी व राजद्रोही बत- लाया है ।

अरजीया लीपाय जीण रा मसोदा री नकल

तथा पादी नाम बाज सिरदारा भापरा बडेरा री पर नालका छाडन दसतूर ने राज री रसम पीलाफ दरवार री अदुल हुरुमी करने लोका र सीपावण सु माथो उठायो है नै घाणेराम री ठाकुर दरवार री हरामपोर हुवो है । जीणा साथे सामल हुवा है जीण सु म्हा सारा र वळक लगायो न मालवा नै अदेसो है कै धे लोक सायद जाहर करता हुसी के सारा मारवाड रा सिरदार वारे सामल है सु श्री पावदा सु मालम हुवै के ईण तर री अफवा सु म्हा सारा रै काळस लाग है न मा सारा री सरवस बीगडे है न श्री पावदारा दील मे भरम पडण री जायगा है जीण सु पांनाजाद री अा अरज है के पानजादा र श्री पावदा री धणीया पसवाय दुजो कोई आसरे हैं नही ना कीणी तर री लेस राजस री घाणेराम रा हरामपारा सु है सु व भापरा कीया भाप भुगतसी नै सजा पासी म्हाने तो श्री पावदा री परवस धणीया सु भाज ताई कीणी बात री सीकायत है नही ने श्री पावद हर तर पत्नीकारी परवरस रापी नै मायतपणो वरतीयो है नै म्हारा अनेक चूक हुवा है परत पावद ता पावदी फुरमाई है श्री पावदारी छतर छाया मे सुपी हा कीणी बात री दुष दरद है नही ना कीणी फीसादी घाणेराम रा हरामपोरा सु जसास है सु आ पावद भलाई नीचे जो कराय लेवे ।”

१०७ आत्मघात, सती-समाधि आदि रं हुकम री रूका री नकलो

१ आत्मघात, सती-समाधि आदि रं हुकम री रूका री नकल, २ पो० हा० संग्रह, ३ ८०, ४ ७६८ × १७ सेमी०, ५ १, ६ ६२, ७ १६वीं शताब्दी का उत्तरार्ध, ८ जोशी हसराम, ९ राजस्थानी, देवनागरी, १० इन हुकम के रूका की प्रतिनिधियां मजोधपुर राज्य की ओर से कुछ महत्वपूर्ण आदेश दिये गये हैं, जिनमें प्रचलित सामाजिक बुराईयां को रोकने के आदेश भी हैं।

१ गाव र बंदोबस्त री रूको -

'श्री परमेश्वरजी सत्य छ

१ मीती फागण वद २ हुकम री रूको माहा वद ३ री मीती री आया तीण मे लीपीयो । तथा प्रमुलक रा काकड सीवा भेठो हुवे जठे रा जमीदारा नु आछी तरै समजाया चाहीजे कोई कोई प्रमुलक रा पाज लेनें आव तरै उण गावा रा जमीदारा नु पाणी आपरी साथे लेनें तुरत पोजा ऊपर गयो चाहीजे न बार वाळा पोल लेनें आया हुवे सु देप नै लारला पोजां नु मीठ लेणा सु अक्सा पोज नीसर आवे तो आपरा गाव वाळा नु साथे लेन तुरत पोज आगा चलाय देणा न पोज लारला पोजा सु मीळता नही हुवे तो दोय च्यार दुजा गावा वाळा न बुलाय न आपरा काकड रा पोज नै लारला पोजा री तपास करनै फरक हुव जीण मुजब विगतवार मेहजर सारा आदमीओ कने लीपाय लेवे नै सापा घलाय लेवे पण भुठी तकरार करने सागे पोज आधा वाढण म जेज करणी नही न पोज आगा चलाव तर मारग मे आपरा ईलापा रा गाव आव जीतरा गावा वाळा री रसीद लीपावता जावे न अके गाव सु च्यार ऊट तथा च्यार घोडा तथा चार आदमीया रा चाले नै अके गाव मे एक ऊट तथा एक घोडा तथा एक आदमी रा रं जाव तो उण गाव वाळा कने रसीद लीपाय लेणो न बाकी रेव तो पोज उठा सु जागा चलावे न मारग रा गाव वाळा रसीद लीपावता जावे सु पोज जीण गाव नै थाके जीण गाव वाळा री रसीद लीपाय लेवे नै दोय गाव वाळा रं मावोमाय पोजा री तकरार हुवे तो उण ही बपत दानू गाव वाळा री हकीकत लारला गावा वाळा री हकीकत साईदारी लीपाय नै दोनू गाव वाळा नू अठे मल देव न पोज आपणी सीव मे आवे जीण दीन उठा ही बपत मुदेई री ईजार नै माल लुटीजीयो हुवे तथा चोरीजीओ हुवे जीण री विगत साईदारा मुधी लीपाय सापा घलाय लेवे न उण हीज बपत सारी हकीकत जोधपुर लाला ईसरपरसाद कने लीपाय मेले नै बार वाळा पोज पोचाय न पाछा आवे जीण बपत सारी हकीकत लीप नै आपरा पणिया नै तथा बारवाळा न आछी तरै सु काकड कर देजा कोई ईरपा सु तथा लोभ लालच सु कौणी री भुठी

उमप लगावला तो नासा पाता सु सारा बारवाळा नु सजा दीवी जावेला नै हाकम री गफलत समजी जावसी नै हाकम कर्नै जरीवाना लोरीजसी न सारी बार रा आदमीया नु साता री जायगा सु पाज थाके जठै ताई आपर साथे रापणा न कोई आपणा ईलापा म चोरी घाडा हुव ता तुरत बारदात री जायगा माथे जाय न पोज चलाय नै पाज चलाय दणी मुदेई री ईजार लीपाय लेणी न पोज चलावण री विगत ऊपर लीपी जीण तरा सु पाज थाके जठा ताई पोछाय दव, ईण म कीभी १ तफावत हुवेला न हाकम री गफलत रही न जोधपुर नै तुरत लीपावट आई नही ता हाकम ऊपर जरीमानो हुसा न हरेक गाम मे श्रेक श्रेक जायगा मुसाफरा र उतरण रै वासते कराय देवे न उण जायगा र चौभीता तथा बाड चोफेर कराय दरवाजो वणवाय देव नै चौकीदार चौकी पोरी देवण सारू मुकर कर दव नै चौकीदार री हक लीपीजीया जीण मुजव ठेहराय देवे न चौकीदारा कर्नै श्रेक लीपत कराय जामनी उरी लीजा ईण जायगा चारी हुय गई ता थाने देणी पडेला नै हुसीयारी रापणी सु कोई मुसाफर चौकीदारी देवण म हुजत कर तो उणा न समजाय नै दीराय देव न नहो दव उण मुसाफर री नाव न जात न उतन जठा सु आयो हुवे नै जावे जीण री सारी नीरणे कर जोधपुर लाला ईसरीप्रसाद नै लीप मले सु उण कन चौकीदारी री दसतूर मगाव न दीरावण म आवसी न जीतरा गावा मे मुसाफरा रै उतारा री जायगा तयार हुय गया री विगत अठे लीपने पवर पोचसी जठे श्रेक श्रेक परवानो अजट साहब बाहादुर री सारी चौकीदारी रा दसतूर री लीपाय मलण म आवसी सु हाकम हरेक गावा म वदोबसत करनै गाव री नाव लीप मले तो उण मुजव परवाना कराय मलण म आवे ।

- १ मुसाफरा कर्नै चौकीदारी दीरावण री विगत
 ६ आदमी दीठ छदाम
 २५ गाडी श्रेक दीठ पईसो
 १२॥ श्रेक घोड तथा ऊट तथा श्रेक पोढ़ीया दी अग्रला

न कोई मुसाफर आ गयो तथा बेगारी मागे तो ईण मुजव दीरावणो
) २५ बेगारी तथा आगवो ने कोस श्रेक लार २५ पईसा श्रे दीरावणो
 ॥) गाडी १ बेगार म ले जाव तो कोस ६ छव री रुपीया ॥) आधो रुपीयो
 दीरावणो

ईण मुजब गावा मे परवाना कर बंदोबसत कर विगत पाछी तुरत लीपजो श्री हज़ूर रौ हुकम छै ।

द दीवाण जोसी हसरजजी ।

२ आत्मघात रोकण सारू रूको -

प्रारम्भ—

“परगना मे पटदरसन रौ मकाम तथा गाव हुवे जीण तमाम ने कचेडो बुलाय वाकबी कर दणी—कोई आदमी चादी कीवी तथा जवर कीयो तो सजावार हुसी न उण री आजीवका जबत हुवी सु फेर ऊमर ताई मीलसी नही ईण तर वाकबी करन सारा कनै लीपत दसकत कराय मेलजो ईण री गफली रापी तो ओल्भा पावसो, तीण रौ हुकम रौ रूको जेठ वद ३ रौ ।”

३ सती समाध न रोकण रौ रूको -

प्रारम्भ—

परगना म तथा गावा मे जा कोई सती हुवे तथा समाध लेवे जीण न सती होवण देवो मती ना समाध लेवण देवा और तमाम थाणादारा नै पबर कर देवो जीण बपत पबर सती होवण री सता समाध लेवण री सुणो उण हीज बपत चढ न उठे जावै नै जठे हाकम रेवे जठा सु जायगा नजीक हुवै तो हाकम पीडा जाय न बंदोबसत करनै सारा ही गावा मे पबर कर देवो जीण बपत सती समाध होवे जीण री कचेडी मे नही करै तो कसूरवार होसी न उण कनै गुनगारी सबाय जरीवानो मुकर कीयो है जीण सु ईजाफे लीरीजसी न कदास कोई जवरदसती सु सती होय जावे तो तुरत श्री हज़ूर मालम कराय दीजो ईणरी तुरत पबर नही कीवी तो न ऊपर लीपीया मुजब बंदोबसत नही कीयो हाकम थाणोयत कनै गुनगारी लीरीजसी न ओघा सु दूर हुसी सु तमाम बंदोबसत लीपीया मुजब आछी तरा सु कीजो गफली रापजो मती श्री हज़ूर रौ हुकम छ ।”

४ बावरियो न काढण रौ रूको -

प्रारम्भ—

हुकम रूको ५ जेठ वद ७ रौ तथा परगना रा गाव म सु बावरी काढ देण रौ आमे हुकम दीया हुवे तीणरी तो विगत लीपजो न हमे कठै ही परगना रा गावा मे बावरी हुवे तो अक बार तो उणा ने केवाय देणो न अक बार रा केणा लीपणा सु बावरी नही काढे तो जठे बावरी देपो जठै पकड लेजो पकडता कोई हुजत करै तो अठै लीपजो सु गाव जबत होसी न आगा सु ही हरेक ठीकाणा मे

देपो जठा सु पकडाय मगावजो जीण रो घाणो वगर सारं लीपावट कर दीपो ईण काम रो नराई रापजो मतो ।”

सामाजिक एव आर्थिक व्यवस्था की जानकारी हेतु सामग्री उपयोगी है ।

१०८ रामदेवजी महाराज रं विगत री नकल

१ रामदेवजी महाराज रं विगत री नकल, २ पौ० हा० सग्रह, ३ १३२, ४ ४२२ × १५६ समी० ५ १, ६ ३० ७ १८वीं शता०दी का उत्तरार्ध, ८ प्रगात, ९ रात्रस्थानी, दवनागरी १० इसम रामदेव तु वर व उसके पूवजो की कुछ जानकारी दी है ।

‘श्री रामजी

घार श्री रामदेवजी महाराज री विगत मगाई सो अठे रामदेवरा सु पीडता न बुलाय नै पूछीयो सु ईण मुजब मडाई—तु वर अबजी री राज दीली उपर हो नै अबजी राज भाणेज पीरधीराजजी नै सुप तीरथा परा गया न अबजी र वेटा रणसीजी हुवा सो रणसीजी भगतीवान हा न नराण रहा नै रणसीजी र वेटो अजमालजी हुवा सो नराणा सु कासमेर रहा न कासमेर सु दुवारकाजी दरसण गया तरै उठे अजमालजी पूछीयो—भगवान कठ, तर पीडा कही—भगवान मीदर म है तरै अजमालजी कही—आ तो भुरत पथर री है सागे भगवान कठ है, तर पीडा कही दीरीयाव म है तर अजमालजी समद मे बूद गया सो भगवान दरसण दीयो न कही—जा मैं घार पधारसा । जद अजमालजी कासमेर उरा पछे मास बाहरे नै अजमालजी रं वटा वीरमदेजी हुवा पछ मास एक पालणा मे बरोबर प्राय रामदेवजी सुता जद बडारण जाय अजमालजी ने कही वीरमदेजी रं पापती बाळक फेर सुतो है जद अजमालजी कही—श्री दुवारका र नाथ वचन दीयो सु पधारिया है न नाव रामदेवजी दीरायो नै पछ बाळपणा म परचा दीया । नै पछ पीकरण री डोड राकस थो सो गाव पेडा सूना कर दीया सो राकस नै भार नै पीकरण बलाई, बाळक पणा मे, न पछ बन नै परणाय नै पीकरण महेचा नै डायजे दीनी ने आप रामदेवरो वसायो नै वीरमदेजी वीरमदेवरो वसायो सो उठे ई रेवता नै परचा मोकळा दीया न पछे बालनाथजी जोगी रा चेला हुवा जिण सु जीवता समाद लीवी न पछई परचा माकळा दीया ने फेर प्राज सुधी परचा दीया ई जावे है । तन मन सु भाव रापे तीण री कामना सीध करे है । अर गाव रामदेवरो वीरमदेवरो सासन है नै दरसण करण नै आवे नै बोलवा कर नै चढावे सो उणारी श्रीलाद रा पीडत दे सु लेवे है, आ आजीवका है ।”

रामदेव तु वर के चमत्कार व लोकमायताओं की जानकारी मिलती है ।

१०६ पोकरण ईलाके की चोरियों की कवल

१ पोकरण ईलाके की चोरिया की कवल, २ पो० हा० सग्रह, ३ २१, ४ ३५ ५ × १३ २ सेमी०, ५ ४, ६ २६, ७ १९वीं शताब्दी का उत्तरार्ध, ८ अज्ञात, ९ राजस्थानी, देवनागरी, १० इसमें पोकरण परगने में होने वाली पशुओं आदि की चोरिया की सूची दी है।

ग्रन्थ का आरम्भ इस प्रकार हुआ है—

‘चोरिया पोकरण ईलाका के गावा की तथा पोकरणजी की जसलमेर का गावा में मागा जीण की कवल भादवा सुद ७ की साहब के अरु बरु ठेरीयो सो ईण मुजब माल धणीया नै मेल दीजो आदि।’

चोर का नाम, जाति, चोरी हुए पशुओं के नाम, सख्या, वस्तुओं के नाम इत्यादि का ग्रन्थ में उल्लेख हुआ है। पशुओं को या वस्तु के वापस लाने पर मालिक को राज्य को पुरी (खुरी) देनी पड़ती थी जो एक तरह से मेहनताना होता था।

११० चाकरी की लीपत

१ चाकरी की लीपत, २ पो० हा० सग्रह, ३ १२६ ४ ३२ ३ × १७ सेमी०, ५ १, ६ १८, ७ वि० स० १८७८ ई० सन् १८२१, ८ भाटी उमजी, ९ राजस्थानी देवनागरी, १० चुतरीया नामक बलाई को पोकरण में बसाने से सम्बन्धित यह एक लिखावट है।

आरम्भ—

“सिध श्री राज श्री सालमसिंहजी लीपावत तथा बाभी चुतरीयो परभे की जात का दइया आदुवासी परडाणा का न हमार बास पोकरण रहे जीण न रावळी बसी की कीनो, ईण की झाल झोलाद श्री शबली बसीरा है सो चाकरी धणी फुरमासी जठे देस-परदेस में दौड नै भली भात सु करसी। ईण की घुस रजा सु फौज में जमीत गाव मु ड्यला के डेरा आय नै रहो जर राजी पुसी सु लीपत कर दीनी है। ह० भाटी ऊमजी मीजल बाळा स० १८७८ का आसाढ़ सुद ६।”

पत्र में आगे साक्षी देने वाले व्यक्तियों के नाम अंकित हैं।

किसी नये व्यक्ति को गाव में बसाने की मायता किस प्रकार मिलती थी उसकी जानकारी मिलती है।

१११ डूंगजी बाबत लीपावट

१ डूंगजी बाबत लीपावट, २ पो० हा० सग्रह ३ ४७, ४ १६७×
१६५ सेमी०, ५ १, ६ १०, ७ १६वीं शताब्दी का उत्तरार्द्ध, ८ अनात,
९ राजस्थानी, देवनागरी, १० अंग्रेज सत्ता को आतंकित करने वाले डूंगरसिंह
सेखावत^१ सम्बन्धी यह एक लिखावट है।

प्रारम्भ—

श्रीर जोधपुर सू डूंगजी बाबत अठें लीपावट आई सु उठें थानें ई लीपे तो
ईण मुजब जाब लीपजो।

१- श्रीर डूंगजी बाबत साहब मूलचदजी नें कयी इनका बदोबसत ठाकुर
साहब करै तो हुय सकता है ईणरी जाब इण तरै देणो क मुलक मे चोरी धाडा रो
बदोबसत करावो तो सारा सीरदारा नें बुलाय कर फुरमायो सो सीरदार आप कु
पाधी अरज करसी, अकल ठाकुर नें फुरमाया हुवे नही।”

११२ गुमानसिंह चापावत रें खोळे लेवण री लीपत

१ गुमानसिंह चापावत र खोळे लेवण री लीपत, २ पो० हा० सग्रह,
३ १३१, ४ ६६५×१८५ सेमी०, ५ १ ६ ७५, ७ वि० स० १६१६,
ई० सन् १८६२, पोकरण, ८ अनात ९ राजस्थानी, देवनागरी, १० यह
पोकरण ठाकुर बभुतसिंह द्वारा गुमानसिंह को गोद लेन की लिखावट है।

प्रारम्भ—

“श्री परमेश्वरजी

लीपत १ ठाकुरा साहब राजश्री बभूतसिंहजी नें राठौड गुमानसिंह समल-
सिधात कर दीनो। तथा मने श्री ठाकुरा साहब मेहरवान होय नें पोळे लीनो है सो
श्री ठाकुरा साहब री नें श्री नाथावतजी साहब री श्री भटियाणीजी साहब, श्री
चवाणजी साहब री मरजी माफक चालसु नें श्रीजी महाराजा श्री ठाकुरा साहब
रें कुर देसी तो दोय रफीया रोजीना री पैदास रा गाव तथा रोकड मने पावण नें
कर देसी सो लेसु नें चाकरी सदामद करा जीवु कीया जासु ने कदास राज गत
देई बगत मने सो वरस पुग जाय तो मारा भाई कीणी बात री दाईयो करे नही,
नें हु चाल कुचाल चालु नही नें कदास मरजी मवाय कोई काम करू तो श्री ठाकुर

साहब मन भ्रष्टगो कर देव तो मन कबुल है न दूजो पाळो कर सा सावत रसी मारे कीणी बात री दावो नही। और मीरवार रा पांग भ्रादमी ठाकुर लोक नामदार कामती चाकर बहारण सोरकार रा तालकदार वसी पसावता र वगर नं श्री ठाकुर साहब रा फुरमावण माफक वरत मु ने श्री ठाकुर मने चाकरो दस परदस भालावसी जठे ही वरमु, ना मुकर फरु नही, और श्रीजी माहाराज ठाकुर साहब न कवर दसी जद तो ऊपर लीपीया मुजब मने सहो छै नं नही तो उमरजी माफक रै जामु तो श्री ठाकुर साहब ठाकुराणीया न पावद कर दीवी है राबड तथा गाव ३ करमावस, दु दा रा बाडो, पाता रा बाडो बगर पटोया पीडा रा तथा उणा रा मीनपा वगर रा तथा रावणे सरवरा पटोया नपडा पावद सरव दीया जामु फरगत पाडु नहीं और श्री ठाकुर साहब भ्राप री मरजी मु गणो कपडा रोकड ससतर पाती जमी जागा पुरण पाव तण वगेर तथा श्री धरमपुर सासन डोळी पटोया वगर देव तथा श्री ठाकुर साहब हरक काम कावळ सावळ मरजी मु करसी सो कीया मुजब रसी कीणी बात म तफावत पडसी नही और ठाकुर साहब मने पावद राजी हुय न कर देसी सो कवरपदे लीया जामु और भ्रादमी चाकर मारे वन मरजी मु रापसी सो रसी न मारा मता मु रापु नही। मारे कनलो आदमी रावळे मरजी म नही भ्रासी जीण न सीप परी दमु मरजी सवाय काई बात री घाल मेल करमु नही, श्री लीपत राजी पुसी मु कर दोनी छ लीपत मुजब चालसु ऊपर लीपीया मुजब फरक धालु नो मने मारा ईसट देवजी री न श्रीजी री भ्राण है लीपत मुजब नही चालु तो पच पचायती राज दरवार अग्रेजी सोरकार हीदवाणे तुरकाणे कठे ही ऊजर करु ता लाप दरजे भुठो, स० १६१६ रा मीती फागण वद ५ रविवार।”

पत्र मे आगे स्वयं भुमानसिंह के हस्ताक्षर व महत्वपूर्ण व्यक्तियों द्वारा साखें डाली गई है।

इसम गोद सम्बन्धी नियमों की अनेकानेक जानकारीयाँ मिलती हैं।

११३ जोधमल री अरजदासत

१ जोधमल री अरजदासत, २ पौ० हा० सग्रह ३ ६२, ४ ५० × १७ ३ सेमी०, ५ १ ६ ३५, ७ १६वीं शताब्दी, ८ जोधमल, ९ राजस्थानी, देवनागरी, १० जोधमल द्वारा लिखी गई इस अरजदासत में साढेराव व कीयेलाव ने बीच स्थित दावडी पर श्रीजी का मन्दिर बनवाने की इच्छा प्रकट की गई है।

“श्री जलधरनाथजी सत्य छ

श्री श्री श्री १०८ श्री हूर मे पानाजाद जोधमल री भरज १ तथा गाव साडेराव नै कोयिताव कोस ३ री उजाड धी नै रन छ तठ मैणा री धको करती नै मो मारण पणो बहै मारगु तथा तीरध बासी तीसा भरता तठ आध मग बरस १५ म पानाजाद पवट कर बावडी १ नयी पीणाय वधाय उप्र भरठ मडाय पेळीया मवाळो करावो छ सु मारगु न तीन गावा री गाया पीव छ तिण री प्रतसटा महा सुद १० हुई कीरधन श्री मनदाताजी रा नाव रो बहाली सु हाकम ओधा वगरे बुलाय पासकत करी ईण बावडी हुता मारग नीरन हुवो न हजार मीनप गउवा पपर जळ पीवे सु श्री मनदाताजी मायवा नै दुवा देव छ, पानाजाद रा जीव जाया रा धणी श्री मनदाताजी छ न ईण बावडी बनै पत १ गाव पीवाडा रै राणावत मालै दीया छ तीको माली गाया पाव छ, अवालो भरीआ राध छ रूप वीरय री छाया हुय गई छ, उजाड म जायगा रेवास जु हुइ गई छै, आबुजी गिननार दुवारका री मारण पाणी छै, सु जोगीराज भावै सु दाय च्यार दीन सु टेहर रह जाय छ गोड-वाड मे रणपुर १, बरकणि १, पीवाणदी १, वगेर जईन मीदरा तो बरस म आठ दस मळा मड छ तठै हाकम मुतसदी नगारो नीसाणा भाव छै सु ईण बावडी उप्र धीजी री मीदर हुवै जीसी जायगा छै सु रुपीया १००) छापर सु नै रुपीया १००) कचेडी सु जु २००) बी सुद भय सु पानाजाद हसते वाली सु दीरीजै तो मीदर हुय जाय नै श्री चरण पादका मकाराणा सु तयार हुय न पधरीज न पुजा री हसते रुपीया ५) री महीनो छपर केसर प्रसाद धुप दीप री सरू छापर सु पधरावण री हुकम भाव तो धी तो म्हा पुरस देसा, पुजा हुयवो करे न कचेडी हुकम हुवै तो बरस म दोय वार उछव कर मळो करणी सरू हुय जावै नै आ जायगा सदाबरत सरू हुवै जीसी छै सु नाडोलाई रा पटा री गाव पागडी कोस १ ईण बावडी सु छ नै पागडी म घर भेपियारी छ सीवाय बसती तो छ नही, न पापती गावा वाळा पाच च्यार भरठ कर ता रुपीया सो सवा सो ताई जागीरदार र आव, नै ईणा बरसा म तो जागीरदार री पवट न रही तीण सु कीट्ट भावै न छै सु जो गाव ईण सदा बरत तालक तावा पतर हुय जावै ता पानाजाद पवट कर भरठ पाच सात पापती रा गावा वाळा न पातरी कर करायवो करै तो सो सवासो पदास हु जाव न सदा बरत सरू हुय आव तो आ जायगा श्रीजी री धाम पको बघै जीसी छ ईतरी पदास सु सदा बरत अचळ रहैवो वर श्री मनदाताजी री अपी पुन रेवै सु पानाजाद तो तुछ बुधी उपजी सु लीपी छ पछ श्री मनदाताजी री मरजी मे आव जु हुसी । पानाजाद गुलराज नै चुक हुवा पछ आजीवका पाई नही न ऊदम कर गुजारी करतो थो सु

फतेराज बीगाड दीयो । तठा पछै लहेणाई अटव गयो बीना उप्र कोई देवे न छै । श्री अनदाताजी दीय वार आद फुरमाय पवर लीवी पीण दानतदार चाकर न कोई कामेती चावै नही, तीण सु आवद हुई नही उलटा कारसारी रा करज मैकळ गयो वडो भाई अपेमल सु म्हेरवान हुय अरठ पेत ईनायत हुवा था सु ई फतेराज परव घाल दीया । पानाजाद बीना खायै पराव हुय गयो छै सु आसारा फकत चरणारबीदा, रो छ सु श्री अनदाताजी वेगो पवर लीराव तो पानाजाद री हुस्मत रसी ।”

धार्मिक विचारधाराओं को समझने हेतु उपयोगी है । साथ में कई एक अन्य जानकारियाँ भी मिलती हैं । पत्र महाराजा मानसिंह को लिखा गया है ।

११४ इदराज री अरज बभूतसिंहजी र नाम

१ इदराज री अरज बभूतसिंहजी र नाम, २ पौ० हा० सग्रह, ३ १८, ४ ३८ ८ × १४ ७ सेमी०, ५ १, ६ १५, ७ १९वीं शताब्दी का उत्तरार्ध, जोधपुर, ८ इदराज, ९ राजस्थानी, देवनागरी, १० इदराज द्वारा लिखी गई इस अरजी में पोकरण ठाकुर बभूतसिंह से यह प्रार्थना की गई है कि मथानिया में स्थित कुएँ की पदावार की (निश्चित) रकम उसे नहीं मिल रही है ।

श्री श्री श्री १०८ श्री ठाकुरा राज श्री बभूतसिंहजी स्थावा रै हजुर में प० इदराज री अरज मालम हुवै ।

तथा मथानिया रा वारा बीसनदास री बेटो मारे भोगळाऊ साठ बरस सु है रुपिया ७०३) मैंने मारे घर री करसो करतो ही सु बारठ गगारामजी रै बेटे आसकरण बीसनदास रा बेटा कर्कट करायो । सु मारा भोगळाऊ रा रुपिया चुकाया नही ने बेरा पोस लीनो सु आप घरमातमा हो इसो जुलूम आप री सीरकार में हुवो नही चहीजे सो हमे कागद आपरा लीपाय दीराव के तोणता मुजब रुपिया चुकता परा दीजो नै रुपिया नही देवो तो बेरी पाछो सुप दीजो गुणरी देण री मुदो काई बेरो रुपिया रा धणी आगे सदावद पता मुजब कगवत जीव करावसी रह बेरो सु प देणी इण री पाछो फेर केवणी पडे नही नाथुरामजी र नाव ने आसकरणजी रे नावै । स्थायबजी राज में जबत कराय देसु ने पडऊतर करणी मारे हात तुही नही आप सीरवार हो, घणा आदमीया ने रोटी देवी हो ।”

११५ तिलवाडे रा सोढा रो कुर्सीनामो

१ तिलवाडे रा सोढा रो कुर्सीनामो, भाट कुभा अजीता, २ एम० डी० एम० सग्रह, ३ , ४ वहीनुमा, ५ २ ६ ६०, ७ वि० स०

१६००, ई० सन् १८४३, ८ अनात, ९ राजस्थानी, देवनागरी, १० इसमें सोड़ा रावपूता का केवल वशावृत्त दिया है।

११६ मालाणों की कुर्सीनामों

१ मालाणों की कुर्सीनामों, २ ए० डी० ए० संग्रह, ३ , ४ बहीनुमा ५ २, ६ , ७ वि० सं० १६००, ई० सन् १८४३, जसोल, ८ अनात, ९ राजस्थानी, देवनागरी, १० इसमें खेड के शासक मल्लिनाथ से जसोल के ठाकुर भूलराज (महेचा) तक की वशावली अंकित है।

११७ जोधपुर, ईडर, अहमदनगर, बीकानेर और किसानगढ़ की कुर्सीनामों

१ जोधपुर, ईडर, अहमदनगर, बीकानेर और किसानगढ़ धणिया की कुर्सीनामों, २ पो० हा० संग्रह, ३ २६, ६४७ x २४८ सेमी० ५ १, ६ ४४, ७ १६वीं शताब्दी का मध्य, ८ अनात, ९ राजस्थानी, देवनागरी, १० विवरण रूप इस प्रकार है—

१ जोधपुर राजाओं की पीढ़ियाँ -

इसमें सेतराम से महाराजा भानसिंह तक राठौड़ राजाओं की पीढ़ियाँ दी हैं तत्पश्चात् इससे सम्बन्धित एक कवित्त दिया है।

२ महाराजा अजीतसिंह व राजकुमारों की याद -

इसमें जोधपुर महाराजा अजीतसिंह के १६ पुत्रों के नाम दिये हैं। जिसमें १३ पुत्रों के निःसंतान मरण का उल्लेख है।

३ महाराजा बिजयसिंह व राजकुमारों की याद -

इसमें उक्त महाराजा के ७ पुत्रों का नाममोल्लेख है।

४ ईडर की पीढ़ियों -

इसमें भानदसिंह से जवानसिंह तक वशावली दी है।

५ अहमदनगर की पीढ़ियों -

इसमें भानदसिंह से तखतसिंह तक की पीढ़ियाँ दी हैं। तत्पश्चात् भानदसिंह के पौत्र जालमसिंह को मोडसा व बावड तथा इन्द्रसिंह को सुर की जागीर मिलने का उल्लेख है।

६ बीकानेर की पीढियों -

राज जोधा से रतनसिंह तक वशावली है।

७ किशनगढ़ की पीढियों -

मोटा राजा उदयसिंह के पुत्र किशनसिंह से पृथ्वीसिंह तक पीढियाँ अंकित हैं।

११८ खवरों की चोपनियों

१ खवरा की चोपनियों, २ पो० हा० संग्रह, ३ , ४ १२ × ३२ सेमी०, ५ १५, ६ २०-२५, ७ वि० सं० १८२५, पोकरण, ८ अज्ञात, ९ राजस्थानी, देवनागरी, १० प्रस्तुत ग्रंथ में तत्कालीन महत्वपूर्ण घटनाओं का उल्लेख हुआ है। पत्रों एवं सदेशवाहक आदि से जो समाचार प्राप्त होते थे उसका विवरण इसमें लिपिबद्ध किया गया है। मुख्य घटनाओं का विवरण क्रम राजस्थानी भाषा में इस प्रकार है—

(१) सा० सुद १ १८२५

महाराज श्री बीजेसीधजी के पवास की बेटी दीराव राज उम्मेदसीधजी के पवास का बेटा ने असाठ सुद ६ का सावा परणार्थ। वू दी सु जान आई थी ब्याव नौराट आछो कीनी, बाई ने इतरो डायजा दीयो—

६० ८०००) हाथी १

३५०००) घोडा २२ मोटा

४००००) गेहणो बाई न तथा वीद ने दीयो

८३०००) रो डायजो

आसोपा गुलाबराय न श्री महाराज कडा मोती ने सीरपाव भारी दीना।

(२) सा० सुद ४

६० २००) ठा० सवाईसीधजी ने परची सारू बीसा हरलान साथे मेलीया

(३) सा० सुद १५

श्री सवाईसीधजी को लोडते के डेरा सु आयो सु बागद म लीपीयो म० छत्रमलजी के गुरा रीधबीजी के उपासरे जाय ने मोरत जोबाय ने लीबजो सो उण मोरत कीलो दापल हुवा, सो छत्रमलजी गुरा के उपासरे जाय ने गुरां ने धरज कर मोरत दियो सु सावण वद १ का घडी ४ गया कीले दापल हुवणो सु पाछो बागद लीय न ठाकुर सा ने दीयो।

(४) सा० वद १

ठाकुर श्री सवाईसिधजी सामो साध गया न रात घड़ी ४ गया ठाकुर साहब पोकरण गढ पधारीया, पहली पोळ भेंसो कीना श्री नागरोचीयाजी रे पाजरू कीना मोणगर चौकी बीछायत कर धीराजिया, अमल गाळीयो नीतर नीछरावळ हुई ।

२) मु० छजमलजी	तीजर	नीछरावळ
	१	१
२) मु० तीलोकचद साभाचदात	१	१
२) प० तीपमीचद	१	१
१) प० सीरदारमल	१	१
१) गहलात प्रपराज	-	१

सा० वद २ ठाकुर पदारिया जीण मु जीमण कीना रावळे म
लापसी चावळ मूग

(५) सा० वद ६

जोधपुर सु समाचार आया महाराज बीजेसिधजी जोधपुर सू कूच कीनो सो चोवडे डेरा हुवा

(६) सा० वद १०

आज पवर आई महाराज बीजेसिधजी रा पाली डेरा हुवा, बाकी फौज रा डेरा भागेमर है । आज मह घणो हुवो, सावते देस म हुवो, काळ भागो ।

(७) सा० वद ११

आज पवर आई अजमर दीपणी था जीण ने राणा रतनसीधजी बुलाया सो गनीमा गाव भीलाडो मारियो, माल घणो लुटाणो ।

(८) सा० सुद ३

आज तीज रो तमासो हुवो ठाकुर सवाईसिधजी मेळे पधारीया, घोडा दोढाया ।

(९) सा० सुद १५ रापडी

श्री ठाकुर साहब रे रापी सदामद व्यास मनजी रा बटा पेला बाघे छ ने हमके सेवग जगनाथ पाचेजी रा बेटा ने सावत रामसीध इणा मतो कीनो, हमके ठाकुर साहब रे रापी पेला म्हे बाघसो सो सेवग तीलक करने रापी बाधता था तद व्यास देवदत्त बोलियो पेला रापी म्हे सदामद पेला बाधा सो घणी म्हा कना सु बघासी तद तो ठीक ने पेला म्हा कने नही बघासी तो अठे उभो रहेन पाखी ई

पीऊ नहीं, परो जासु, जद ठाकुरा सेवगा न मन कीना सदामद पेला घे रापी बाध छ
सा थान पला क्यू बाधणी पडे, सेवगा न मना कीना न पला रापी व्यास दवदत
बाधी न पछे सेवग ।

(१०) भा० वद २

चो० सेरजी अमरसीघोत न धरा री सीण दोवी रात घडा २ गया तर
दीरायो—

१) भीठाई ३) दारू "१० अमल

(११) भादवा ३ वडी तीज

आज वडी तीज रो तमासो मडीयो बाल नाथजी रा मठ कने

(१२) भादवा वद ४

ठाकुर श्री सामसीघजी रा कामदार मुहुता मोतीचद छजमलात रा कागद
आयो जीण म लीपीया भरथपुर डीग रा घणी जाट राज जुहारसीघजी हाथी लडावण
न गया सा आगरा म नागार रा राजा अमरसिघजी गजसिघोत रो नवो महेल जडे
हाथी लडावण पधारीया सो हाथीया री लडाई कराय न रात घडी ४ गया महल सु
उतरने पालपी म बठला था सो रजपुत जात रो गौड जीण चूक कीनो सो एक
भटका सु काम सज गया । सा० वद १३ चूक हुवा न जुहारसिघ रो भाइ राव
रतनसीघ गादी वेठो छ ।

(१३) भादवा वद ६

घाणोराव सू कासीद आयो जीण कहो राणा रतनसीघजी पाछा कु भलमर
आया न दीपणीया न मवाड रा गाव घणा मारीया न दीपणी गाव मजीरा कन
पडीया है सो घाणोराव रो लाक दीपणीया रा डर सू सारो पाला परो गयो न
घाणोराव रो घणी मडतियो वीरमद कीसनसीघोत रो साथ गढी सभाय वेठा छ ।

(१४) भादवा वद १४

गाव पाली सू महाजन आया तीणा कहो—दीपणीया गाव भीलाडो न
न अमरायपुर गाव मारीया माल घणो लूटीया । पाली सू समाचार आया ।
सर कोट री नीव पीणता थासो न पानो १ नीकलीया जीणा म श्री पारसनाथ जी
री मुरता ५० पीतल रा तथा पघर री नीकली ।

(१५) भादवा सुद ४

बीकानेर राजा गजसिघजी रो उकील सागर धारीवाल ने भीया गुलाम
सडोगरा कने मलीया सु आज पाकरण आया तद ठा० सवाईसाधजी ६० ६) बड
रा मलीया ।

(१६) भादवा सुद १२

बीकानेर राजा गजसीधजी जीणा रो दीवाण मु० बपतावरसिध फतेचदोत फौज लेने जसलमेर रा गाव भाटी मालदेवोत गाव टेकरे बरू बाळा मारण पडे जीण सु फौज लेने भाटीया उपर आया सो वाप सू बपतावरसिधजी रो कागज ठा० सवाईसिधजी रे नावे आया छै जीण मे लिपीयो—ठाकुरा सू मीलणी है ने मालदेवोतो र गाव रा आदमी आपरा गावा म कोई आवण देसी नही । राव बपतावरसीधजी रे सावे बीकानेर फौज थी सु गाव वेगटी सु वजीयो कीनो गाव सीडा रा रजपूत वीत वापर लेने गाव वेगटी मे वडीया सो इणा कहो इणा न काढ देवा सु सासण गाव (है) सु ईणा काढीया नही जीण सु कजीया हुवो आदमी ४ सीडा रा मुवा ने वेगटी रो वित परो गयो ।

श्री ठाकुर साहब भाटी पीवजी रतनसिधोत रे डेरे पघारीया डेरा वालनाथजी रे मठ मे थो ।

घोडो १ ६० ६७५ मे ठा० सवाईसिधजी रे असवारी ने परीद कीनो ।

(१७) मीगसर वद ३

आज पबर आई उदपुर रा घणी राणा जडसी माला राज राघोदेजी ने मारीया, राघोदेजी देलवाडे रा घणी राणा रतनसीधजी राजसीधोत देवारी भेळी सो राणा अडसीजी रे मन मे फेर हो राघादेजी मेल न देवारी भेळाई जीण सु राघोजी ने चूक कीनो छै ।

(१८) महा वद १३

ठा० सवाईसिधजी सूर रा सीकार पघारीया सु भाटी मालदान ऊठ सू पडीयो सो चोट घणी लागी ने श्री ठाकुर साहब सूर दौय मार लाया ।

(१९) महा सुद ८

आज पबर आई—दिपणी जसवतराय राणा अडसीजी रे मदत हुवा सो राणीजी इणा न कहो थे देवारी रो मोरचो जायने जावतो रापो सो अरे देवारी रे मोरचे था ने राणा रतनसीधजी रे मदत म दीपणी पानुजी ने मीया दोलो था जीणा ने रतनसीधजी कयो जसवतराय न थे कवाय ने देवारी रो मोरचो घापणै कायम करो तो बीस लाय रुपीया देवा । जद पानुजी जसवतराय ने लिपीयो देवारी रो मोरचो राणा रतनसीधजी तालके करावे तो रतनसीधजी बीस लाय रुपीया देवी जद इणा पाछो लिपीयो थे बीस लाय रो नीसा कर लीजो न म्हे ओ मोरचो छोड उदपुर परा जासा । अरे तो उदपुर गया ने पानुजी रतनसीधजी देवारी रो मोरचो

कायम कीनो ने राणा अडसीजी न वडा फीकर हुवो, पछे रुपिया बीस लाप दीना रो अडसीजी ने पवर हुई जद अडसीजी कहो—बीस लाप रुपिया तो देवारी पाछो ल देवा ता म्ह थान दसा ने रतनसीघजी न पकडाव देवो तो चालीस लाप फेर देसा इण तरे सु दीपणी जसवतराय अे लीया ने कही जद इणा कही बीस लाप रो नीसा दा । जद राणोजी कहो दस मे सु उपाव लो, जद भाले राधोजी राणाजी सु अरज करी—दीवाण र तद दीपणीया न सु पी तो मुलक सारो पराव हुय जाती जद दीपणीया जाणीयो ज्ञालो राधोदजी आदमी कुवधी है सो अे म्हान पईसो लेण कोई दवे नही जद जसवतराय राणाजी सु अरज कीवी राधाजी तो रतनसीघजी सु मीठीयोडा है ने चालीस लाप रुपिया हुवेली न भेळ कर म्हे लेसा राणाजी न मार ने कहन राधोजी ने चूक कर मारीया जठा पछ सारो चलण दीपणीया रा हुवो पछ अडसीजी जसवतराय न कहा—रतनसीघजी न पकडाय देवो तो चालीस लाप रुपिया देसा जद अडसीजी कहा म्हे कबुल छा थे पकडा देवो थान चालीस लाप रुपिया देसा जद जसवतराय न अेनीये दीपणी पानुजी मीया दोला न लीपीयो—म्ह राणाजी सु इण तरे वात ठेराई छै रतनसीघजी न पकडाय दसा न चालीस लाप रुपिया अडसीजी आपा न देसी सा थारे म्हारे आधो ग्राध छ न रतनसीघजी न पकडावणा जद पानुजी न मीय दाले लीपीया ये भलाई आ वात ठेराय लीजे मा थारे भेळा छा पद जसवतराय अडसीजी कहो आपरी फोज मलो न म्ह साथ जासा सो रतनसीघजी न पकडाय देसा जद राणाजी आपरी फौज इणा साथे मली ।

। राजा उमदसीध भारथसीघोत सायपुरा रो धणी

॥ मडतीयो वीरमदजी कीसनसाघोत धाणोराव रो धणी

॥ रावत पाडसीध जोधसीघोत सलुबर रो धणी, बगरा फोज दन दीपणीया साथे मेलीया सो दीपणी उजीण माधजी सोबदार बने था रतनसीघजी उठ जावण लागे ने जसवतराय अनीया दीपणी पानुजी मीया दोलो इणा भेळा हुय सोबदार माधजी ने कहायो—म्हे आपरा चाकर छा आपरा मेलीया अडसीजी कन बठा था न अडसीजी सु आ वात ठेराई छै चालीस लाप तो अडसीजी कन जरा लेणा न रतनसीघजी न पकड न अडसीजी न सूप देणा इण तर कीवी छ तद माधजी कवायो आ वात थे आछो नही कीवी राणे अडसीजी तो उदपुर बठा छै न रतन सीघजी तो आपणे भरोसे बठा छ, आपणे पाळ छ सो आ वात करा तो हादुसयान न आपणे आछो लाग नही । जद जसवतराय पानुजी सु इणा कीचार कीना आप रतनसीघजी सु कजीयो करसा ने माधजी ने केवायो म्ह तो अडसाजी न बचन द आया छा सु पुठा कीण तर जावा राज सभावजो म्ह कजीयो करण न आया छा

सु भाईजी ने माधजी जाणीया म्हारा चाकर छ सु म्हा सु बजाया काय करे नही न इणा तां बजीया रा वोचार कर भजाण चरता आया सा भगडो हुवा, सोवदार माधजी रा पग टुटा, घादमा घणा काम आया सिफरा उपर—

अडसीजी री फौज रा काम आया—

॥ उमदसिध भारथसीघात सायपुरा रो राजा

॥ सलुचर रा घणी रावत पाडसीघ

बोरमजी र लाह २ लागे सा नास न धरे आया न फौज रा लाक घणो माराणो । माधजी सोवदार रा पग छुट गवा मीनप घणा मुवा राणा रतनसीघजी कन सामी नागा हजार ५००० या जीणा न माजी घणी भळावण दोवी न साम्या दीठा मारे ता कोई रोवण बाळा नही सा घणी रोवणु सु जावणा सा नागा बडी राड कीवी रतनसीघजी न कुसला निवाळिया ।

ओ भगडो सफरा उदो वद १२ उजाण हुवा ।

(२०) फागण वद ११

भाज समाचार आया सवाई जपुर म भडारी हुकमचल सवाई रामोत सवाई राम रतनसी दोनु जणा रा परच हुवो २५००० परच न लागे । (अ) महाराज रामसीघजी रा दोवाण है । महाराज श्री रामसीघजी भ० बनचद सवाई रामोत न दिया—

सिरपाव	कडा	माती	पालपी	राव पदवी रो पीताव
१	१	१		

(२१) चत्र वद १

भाज पवर आई महाराजा श्री बीजसिधजी रा राजलोक राणावतजी कवर जालमसीघजी उदपुर धा सा उदपुर दीवणी आय लागे तर उदपुर सु चढीया सो राणीजी ने कवरजी जोधपुर आया न नाजर दौलतरामजी री बाबडी उतरीया । आज सुणी राणो रतनसीघजी न दोपणीया री फौज न साव

॥ सतपाल कामती फौज उदपुर उपर लावता था सु जावद रे उली कानी श्रेक जती मूठ चलाई सु साव सतपाल मूवा, तीण उपर कह छै जती ने इ परो मारीयो ।

॥ दावद पोतरा ममारपपा कना सु आदमा फा० सुद १३ आया था ने ठाकुर न उणा सौरपाव मलीयो थो ने उणा रा आदमी जाया था जीणा न पाछी सीप दोवी ।

२३० राजस्थान के ऐतिहासिक ग्रन्थों का सर्वेक्षण, भाग ३

ममारपवा ने मेलीया—

पीनपाप चीरो जरी रो, मेमुदी, कारचोस रो पातियो

१

१

ऊठ १ जाकोडो घणी, कीमत रो पलाण पीतले रो

हयायतपा ग्रठे आयो जीण ने दीया—

चीरो जरी रो, मसुदी, फारवांस रो पातिया

१

१

१

(२२) चत सुद ५

आज रामदेहरे रे तलाब है सु पाणी लोळी कु कु री कार छ, चोफेर ने पाणी भरे जीता घाट दोळी का नही ।

तत्कालीन ऐतिहासिक जानकारी के लिए सामग्री बहुत उपयोगी है ।

११६ कूता रो बहो

१ कूता रो बहो, २ पो० हा० सग्रह, ३ ८, ४ १६ × ३२ सेमी०
५ १४६, ६ २२-२४, ७ वि० स० १८५५, पोकरण, ८ अनात, ९ राज-
स्थानी, दवनागरी १० इस बहो म सावणू शास्र की कुता का हिसाब दिया
गया है ।

प्रारम्भ—

श्री परमेश्वरजी सत छै

श्री गरुडेशजी

श्री पोहकरण रा कसवा रा खेतो रो कुता किया सबत १८५५ रा काली
सुद ४ रविवार

वाजरी मू ग मोठ जवार तिल

खळो गुमानो भोजराज रा है

वाजरी तिल जवार मू ग मोठ

॥) १) १॥) १-) १) १=

छीपो पमलो परबत रे

॥) ५ वाजरी ४॥ जवार

मू ग

१।

माली बख्तो कसरा रो

१)५॥ ॥)॥ बाजरी

हमराज कासीराम

बाजरी जवार तिल

१६) १॥)५ ॥)२॥॥

मोठ

५। =

१२० श्री रामदेवजी रे मेळा ऊठा रे डाण रो बही

१ श्री रामदेवजी र मेळा ऊठा रे डाण रो बही २ पा० हा० सग्रह, ३ ५, ४ ७० × १३ समी०, ५ १५१, ६ ३८४१, ७ वि० स० १८५१ स १८६१, पोकरण, ८ जनात ९ राजस्थानी, दबनारी, १० प्रस्तुत ग्रथ म वि० स० १८५१ से १८६१ तक जिन-जिन गावा के ठाकुरा न पोकरण ठिकान मे रामदेवजी के मळे के लिए ऊठ भञ ५ उनका विवरण है। साथ म जिन दलालो न ऊठ तय किय ५ उनका नाम व दलाली क पसो का विवरण है। राजाभा के प्रादेश पर अधीनस्थ ठाकुर ऊठा का प्रघथ करत ५।

प्रारम्भ—

श्री परमसरजी

सवत १८५१ रा वरस मे ऊठो रो बही बधी मोति भादवा सुद ४ वार सुकरवार १८५१ रा पठाण वीरामखान वास ह्दरावाद ऊठ एक रुपिया ५६०० हाली रो किना

अगरवालो रामनिसन मातीराम ऊठ २ रुपिया १११०० हालीरा वास बाडमर दलाल आसाराम परवातिया।

दुलपा मदन खा रा नागौर ऊठ एक रुपिया ७७५० जखेसाई रा हस्ते दलाल जमालखा सामी वभूतगिरि वास जसलमर ऊठ एक रुपिया २४०० अखेसाही

पलीवाल दूबो पनजी रो गाव भणीयाणा हस्त दलाल देदो दुरगादास रो दलाली क ५० पते दिए।

माटी मोहनसिधजी वास चापासर ऊठ एक लागत ७६०० रुपया दलाली रोकडी दीवी दलाल गुलाब लाल न।

१२१ गैरा कपडा तरवारो वगेरा की बही

१ गैरा कपडा तरवारो वगेरा की बही, २ पा० हा० संग्रह, ३ ३, ४ १३ ५ × ५८ सेमी० ५ २१३, ६ ३७, ७ वि० सं० १८६२ से १८७१ तक पोकरण, ८ अज्ञात, ९ राजस्थानी, देवनागरी, १० इस बही में वि० सं० १८६२ से १८७१ तक के ठिकाने में गहना कपडो तरवारो आदि का बणन है जो एक रिकाड रूप में अंकित है।

प्रारम्भ—

श्री गणेशायनम

श्रीरामजी साय छ

श्री हरमायनम

श्री सरस्वतेनम

श्री राम

श्री राम

सिध श्री राज श्री सवाईसिंहजी कवर श्री सालमसिंहजी लिखावत तथा तोसाखाना रा कोठार रा नावा रो बही सबत १८६२ रा फागण सुदी ५

गहना वगेरे—

हेम रा खलीची मोती मे

४ डाल रा फूल हाथी रा चेहरा रा

१ तेहनाळ

१ मादळीयो

१ कठी भीणीया री मकोडीदार

सिर पेच ने प्रुचीया जडाळ

वाजुबद मोतीयो सुदो

नखलीया

मोतीयो रो हार चीलडो

वेडीया

लकडा री डवी मे हेम रा गहणो—

हथफूल हम रा गुधरा ८० रो

माळा रा भीणीया ३२

लकडी री डवी मे—

कठी डुलडी मोती टुगडुगी री

कठी चीलडी मोती पना रो हीरा रो जडाळ

डवा म—

बीलगी मुधा सरपच बेसकीमत रा
बाजुबध रा नेढडा जगऊ
सिरपच हीरा रो जडाऊ

तरवारों—

गुलतानसाई मूठ करणसाई
तरवार तुरकाणो नाळ चवरस मूठ वेलदार
तरवार तुरकण तेनाल रूपा रो मूठ सानरण
तरवार सुलतानसाई नाळ नथडी हूम रा मूठ रो
तरवार मानसाई मूठ सानेरण
चीमचो जनऊरो मूठ सोनेरण
चीमचा जोधपुर रो मूठ सोनेरण
तरवार जनऊ रो मूठ वेलदार
तरवार मुज रो मूठ वलदार
तरवार जडाऊ मीना रो

कटारिया—

ओढारी वेलदार सोनो चाढीयोडो
कटारी जोधपुर रो तारकस सोनो चपरास मुख सोना रो
कटार तनसी सोनारो मुखडा रो

बरछियां—

बरछो चार फोफळीया रूपा रो पाती छडी रूपा रो

उपरोक्त गहना, तरवारो कटारिया व बरछिया के नामो के अलावा कई प्रकार के कपडो के नाम भी इस वही म आये हैं जिनका अणुन प्रयाक नम्बर ४ म हुआ है।

१२२ तोपाखाना रे कपडो रो वही

१ तोपाखान रे कपडो रो वही, २ पो० हा० सग्रह, ३ ४, ४ १५ × ५१ सेमी०, ५ १७८, ६ २३-२७, ७ वि० स० १८७४ पाकरण, ८ अज्ञात, ९ राजस्थानी, दवनागरी, १० इसमे तोपाखाना के कपडो आदि की सूची दी गई है।

प्रारम्भ -

श्री परमसरजी साय छ

श्री राम

श्री राम

सिध श्री राज श्री सानमसिंहजी लिखावत तथा तोसाखाना रा कोठार रा कपडा री वही सवत १८७४ रा मीगसर वद १ सोमवार सु—

कपडा री वही—

रावळा मे सवा रे लाया

३ रुमाल

२ जेपुर रा जाकतारी रा

१ पोकरण री रगत रो मोटो बुटा रो

घोतीया—

घोतीया सिरोही रा लाल पटा रा घोतीया रेसमी कोर ग

पायजामा, रजाइ, गुन्नीवद, वरडी दुपट्टा दुपट्टा समदडी का खेसला, पाध, दुस्साला, नेरणियो, लुगी, बमरबन्धो रुमाल खाव नैकण रो, अमरखा, खखावरीयो घोफोरा उपरणीया, सेली, कागसिया चदनरा सिख पवरणा, फेटा, पाध, फेटा पचरगा वाकबध गाधरा, थिरमो बुगचा, ओढणिया इत्यादि ।

इन कपडों के नामों के बखान के साथ ही प्रस्तुत वही में उन सभी गहणों के नामों का भी उल्लेख हुआ है जिनका बखान ग्रन्थों में नम्बर ३ में हो चुका है ।

ग्रन्थ की भाषा आसानी से समझ में आने वाली है । ग्रन्थ पर चमड़े का कवर लगा है तथा कपडा के नामों व मारवाड में कपडा उद्योग की दृष्टि से उपयोगी है ।

१२३ वही तोसाखाना तालके जमा परच री

१ वही तोसाखाना तालके जमा परच री २ पा० हा० सग्रह, ३ ४ ७१ × १८ सेमी०, ५ १०६ ६ , ७ वि० स० १८६८ ६६ पोकरण ८ अनात, ९ राजस्थानी, देवनागरी, १० यह पाकरण ठिकाने के तोसाखाने सम्बन्धी जमा खच की वही है ।

प्रारम्भ—

श्री परमेश्वरजी सत्य छै

जमा परच री जमा बपी तासापांना ता० स० १८६६ बरस री मीती

सावण वद १ ना घसाढ़ मुद १५ तार्ई

जमा रूपीया

१) १०६८॥ =)॥ पाते बाकी १८६८ रा घसाढ़ मुद १५ री

१३) ५१८८१॥ =)॥ हाल जमा

२) पाछलो बाकी स० १८६८ म उधार दिया सा पाछा जमा किया

२) सावण म नामावतजी पाछा मतीया

बीछायत की ब्यवस्था हुतु रु० ७६॥ =) लगे उसका ध्यौर इस प्रकार

दिया है—

७६॥ =) मीमनद मुपमल री रातकी

५४) मुसमल गज ६ प्र० ६

२१) दरीया गज ३ प्र० ॥॥)

२०॥ =) फुटकर

७६॥ =)

इसी प्रकार पालकी के बीछायत हुतु रु० ६५॥ =) लगे उसका विवरण

इस प्रकार दिया है—

६५॥ =) पालकी रे बीछायत

४२॥॥) तकीयो भागसी घाट मुपमलमलरो गज ४

६॥) मीसरू गादी न घान १

१ =) लोपी घान ॥॥

॥) रेसम रा डोरा

३॥ =) रुई सेर १)

४१॥ =) ठठरी ने

६५॥ =)

घोडा के शृ गार हेतु ७५ रु० लगे उसका विवरण इस प्रकार दिया है—

५०) वनाती सभाई १

वनात गज

रेसम रा डोरा
चकमा
लोमी
डोरा सूत रा
पाल आवपान
मेनत
तग
कटा पागडा

- १५) वारगी सभाई
पीलाण
चकमा
छोगी
पाल
कटा पागडा
तग
मेनत

७५)

अंग्रेज सरकार तालुके जो रुपये खच हुए उसका एक उदाहरण प्रस्तुत है—
५३१। ~)। सीरकार अंगरेज ता०

- १७) चोपदार चौपडासीया ने
३००) पवरनवीस मीर ईमोमप्रलीजी ने दिया
८०) मीजमानी सायब अजट जान डलडू सायब अर
सायब री चेत म कीवो जद दिया ।
५०) पातरीया ने ३०) भगतणीया ने

१३४। ~)। कृपावत सावतसीधजी ने अजभर सामलायत रापीया
जीणा रो प्रभारी पुराक रा आघा नीबाज री सरकार
सू दीया ने आघा अठा मु दीना चत म ।

५३१। ~)।

२२ रुपये के बतन खरीदे गये उसका विवरण इस प्रकार है—

२२) बासण परीद

६) दवात

२०) कासी रा बासण सयलाणा सु परीदीया

तासलीया बड़ी ४ तासलीया ५

तासलीया छोटी ४ कटोरदान २

२२)

शस्त्रागार तालुके शस्त्र एवं बारूद आदि खरीदा गया उसका विवरण इस प्रकार है—

४६॥ =) सलेपाना ता०

५) तमछो ६ नाळीया र सचा करायो जीण रा चादीया लवार न इनाम रा दीया

१०) तमचो १ अगरेजी बीळायत सु कराव मगायो ह० साहब अजट फीरच साहब जीण री लागत रु० २२३ जीण बरस ११०१ रा बरस म दीया २०८॥) = कलदार २१३) वाकी १०) हमार मूरसागर गीराट हेड साहब न दीया माह म ।

२५) बडूक १ दिली री परीद लवार चादीया जोधपुर वाळा री ह० रामसीधजी

६॥ =) बडुक छोडण रो सोर ॥) ५ तोल जेपुर रे ह० मु० सायबचद जयपुर सु लायो

४६॥ =)

पोंकरण ठिकाने मे रुपय जमा हुए उसका

३०१) सुनारा रे प्रापस मे भगडो बाबत लिया

१००) सुनार कसु रा

२०१) सुनार बुडो ब्रीज सु आयो ने टटो बदायो

३०१)

- १३७५) गावा बाळा रा काम कराय दीना
 ६५०) गाव सरेडे रा जागीरदारा रा
 १००) बडगाव रा देवडो रा
 १००) देई पेडा रे चौघरी पटवारी नजर कीना
 २००) पोपरी रा जागीरदार चीमनजी रा
 १२५) राइसर रा गोमादेवा कने पदरोडा री सगाई बावत
 २००) धणलो लीपायो जद स० १८६७ म ठरीया
 ह० मुकनचद तीण म १८६७ म आया
 ३५०) बाकी १५०) हमार ने व्याज रा ५०) जु २००)

१३७५)

- ६६) सायब अजट लडलु सायवरी बडी मीजमानी करी हवेली आया जद
 व्योपारीया री नीछरावल रा आया ।
 ७१०) साढीया चोर ले गया था जीण मु तलबा करायने
 ३६ साढ तथा रूपीया लीया मारपाई रा ।
 ८३२) पतरी समसता री कुबुलायत ह० १००१) छूट १६६)
 बाकी ८३२)
 ४२५) मुनारा समसता री कुबुलायत ह० ४५०) छूट २५) बाकी ४२५)
 १०१) मोची समसतो री कुबुलायत रा ह० १३१) छूट ३०) बाकी १०१)
 इसके अतिरिक्त नजर नछरावल के जो पसे आते थे उसका भी ब्यौरा
 दिया है ।

तत्कालीन आर्थिक व्यवस्था की जानकारी के लिये सामग्री उपयोगी है ।

१२४ बही तोसापाना तालके रोकड जमा परच री

१ बही तोसापाना तालके रोकड जमा परच री, २ पो० हा० सग्रह,
 ३ , ४ ५६ × २२ सेमी०, ५ १३० ६ ७ वि० स०
 १८६८, पोकरण, ८ अनात, ९ राजस्थानी, देवनागरी, १० यह पोकरण
 ठिकाने के तोसाखाने सम्बन्धी जमा खच की बही है ।

प्रारम्भ—

रोजनाबो मीती असाड मुद ५ ला० मुद १५ सुकर रा १८६८ रा
 जमा रूपीया

१) १८१७॥३)। पोत बाकी दूसरी वही रा जमा परच सु
 ६४६) जोष० २०) अण० १६७) गज० ७८) ईग० ६८) साय०
 २१) माघो ४१) पोटा ८८॥३)। परभारा
 ३८४६ हाल जमा

१६ नीजर नीछरावळ रा जमा

३ असाड मुद ५ म

१) तीरडिया दौला रा वेटा बजासाही

२) मु० कीसतुरचद गुमानचद तोगावत न दुनाड रो सुपीया
 न पाध बघाई जीण रो नीजर रा बीजेसाहा

—

३)

४) २) असाड मुद ७ म

१) ० कछ्वावा सीवजी परणीज ने आयो जद ईगतीसदा

० २ मडला रा इगतीसदा

१) ० मु० बुधा दुनाडा रा बीजेसाइ

१) ० जाट मनरूपो मीजल रो अपसाई

१) ० उत्तसर रा चोघरीया रो बीजेसाई

४) २) बीजेसाई अणसाई इगतीसदो

२)

१)

३)

हवन के लिये खरीदी गई विभिन्न वस्तुआ मूल्य इस प्रकार दिया है—

३५) होम तालके सराजाम—

५।) उदपुरी हुसत

३॥॥) कीसतुरी मासा ४॥॥) १) पगरपी जोडी १) लूण

६॥॥)॥ पसारी धनजी रा

१) नालेर ५, १) चावल '२॥, =) मोली ' =

१ =) हीगलु पुडीका, १) गुळ '१ १) जायफल ' =

१) गुलाल '॥ =), ॥॥) बीदामा '१॥ =),

॥॥ लूण ' =, ३) इलायची ' =,

॥॥ =) मीसरी '१, ५ =)॥॥ मेदी '१ ३) सुपारी '॥

१ ३)॥ जगाल =, ॥॥) पोपरा ।

४॥॥)॥

- ७)। सरावगी गोकल रा
 २॥ ३॥) सेला २, कमुमल नागोरी
 १ =)॥ मलमल हाथ ४ सफेद, ॥३ ३) पाथ १ गुलाबी,
 १ -) सेला २ सुफेद, ॥३ =) टुकड़ी १
 ॥३ ३ ॥) वोढणी १ छोट
 ॥) १ ३)॥

७)।

- २)॥ गोकल सारडा कना सु
 १ =) कपुर ' - -) सीदुर ' = =) सीरसु =
 १) केसर १॥, ३ १) चदण ' १, - १) मीरचा ' =
 =) पारका ३)॥ पीसता ' = दापा ।
 =)॥३ नाळेर १

२)॥

- १ -)॥ भया मगनीराम दाल मसुर री '॥ कुकु ' १
 -)॥ १)

- ३)॥)। मोदी कीसनाराम सु
 १ -)॥ तील ५, =) जव '२॥, -) मुग '१,
 २) उडद ॥ २। दाल चीणा री '१। १२५ परायतचुन
 ३) घीरत '५।

३)॥)।

- ३)॥ ३) दात रो चूडा नगा पुनमचद रो
 ३ =)॥ नाथु सुनार रा थाळी ० लोटीयो १,
 १॥३ =)॥३ ॥३)॥३
 वलस्यो १ अरधीयो १
 २) पाड चीणी ५ रामनारामण फतपुरीया
 २ ३)॥ ह० वीदयाराम री हाट रो
 ॥३)॥३ वेढा '१। २ २५ प्रवीर '॥ =) २। दापुआ ११

॥ ~) कावला १, २१ फुल, १, नीबू ११
 । =) ॥ लागी हाप ६, १ पान २५ छडो ?

१॥॥)। ६।

३५)

ब्राह्मणों के भोजन हेतु दी गई विभिन्न जिनसा का मूल्य इस प्रकार प्रकृत है—

२५) वीरामण भोजन ता० दीराया

१०) रोकडा उदेपुरी गुसाया न दीराया

जीनस पाड रो सीरा कोरे

३॥) घीरत ७ ॥) चावळ '३॥

२॥) पाड '६। । =) आटो '

३॥) मीठाई '।) १) तरकारीया ५

॥॥) भेदा '६ ॥॥) मेनत मुगधणा सुधा

=) फूल पान

१३)

२५)

तत्कालीन विभिन्न वस्तुओं के मूल्यों की जानकारी हेतु सामग्री उपयोगी है ।

१२५ जैन मन्दिरों के प्रतिष्ठा सम्बन्धी विवरण

१ जन मंदिरा के प्रतिष्ठा सम्बन्धी विवरण, २ फलोदी (ताराचद वंश)
 ३ , ४ ५ १, ६ , ७ १६वीं शताब्दी का
 उत्तरार्द्ध, ८ अज्ञात, ९ राजस्थानी, देवनागरी, १० इस पत्र में कुछ जन
 मंदिरों के प्रतिष्ठा सम्बन्धी जानकारी दी गई है । विवरण इस प्रकार है—

(१) २०८ माघ सुदि ७ वाष्पनाग गौत्र शा० महीपाल भा० मायदे पु० अरजुन
 केन श्री महावीर विम्ब करपित प्र० रत्नप्रभा सूरि मि० ।

(२) २४३ फागुन सुदि ११ सुचति गोत्रे शा० आना मानकेन श्री पार्श्वनाथ
 विव करापित प्र० कक सुरिमि ।

(३) २६७ जेठ सुदि ५ गौत्रीय मन्त्रीश्वर हरपाल जसदेव केन श्री आदिनाथ
 प्रतिभा करापित ।

- (४) ६८३ वैशाख सुदि ३ गुरी श्रेष्ठि भोपाल केन श्री पाशव विम्ब करापित ।
 (५) ८४२ फागुन शुक्ल ३ भाद्र गोत्रे सा० लखू भार्या ललतादे पुत्र सारग केन श्री पाशवा विम्ब करापित ।
 (६) ९६६ माघ शुक्ल १५ उपकेशपुर वास्तव्य उकेश वशे तप्त भट्ट गोत्रे सा० नानग भार्या नानोद पु० धरण पूरण केशव खेमा आदि कुटुम्बेन श्री बास पूज्य विम्ब करापित ।
 (७) ५१३ माघ सुदि ३ उपकेश वशे चोरदिया गात्रे सा० छाड भाय छाडद पु० नोडा भा० नागणदे केन स्व० माता छाहडी श्रेयाथ श्री महावीर देव विम्ब करापित ।

१२६ सिवाना और फलोदी के वंश मेहता (ओसवाल) का सुर्शी नाम, ज्ञान सुन्दर

१ सिवाना और फलोदी के वंश मेहता (ओसवाल) का सुर्शी नाम, ज्ञान सुन्दर २ फलोदी (ताराचद वंश), ३ ४ , ५ १२ ६ ८-१०, ७ २०वीं शताब्दी का प्रारम्भ ८ अज्ञात, ९ हिन्दी, देवनागरी, १० इसमें सिवाने के (मेहता) ओसवाला की वंशवली लालचद से रासाजी तक दी है। प्रारम्भ में उल्लिखित है कि ओसवाला के नवें श्रेष्ठि गौत्र में लालचद प्रतापी पुरुष हुए। वे ओसिया से सिवाना जा रहे। चित्तौड़ के राणा ने वि० स० १२०१ में १२ ग्राम उहे प्रदान किये तथा वंश की पदवी दी। अनन्तर उसके वंशज सभी वंश कहलाये। इन्हीं के वंशज रासाजी सिवाने से फलोदी आये। विवरण इस प्रकार है—

- (१) लालाजी वि० स० ११६६ में ओसिया से सिवाना आये।
 (२) भाभण। (३) जतसी—सिवाणा में महावीर का मन्दिर करवाया।
 (४) धरमसी—इनके पुत्र तागदेव ने आचार्य देवगुप्तसूरि से शिक्षा प्राप्त की।
 (५) सुलतानसिंह। (६) कुशलसिंह—सिवाणा में पाशवनाथ का मन्दिर बनवाया।
 (७) भूपतसिंह। (८) माहर्नसिंह। (९) कल्याणसिंह। (१०) जगतसिंह।
 (११) हिम्मतसिंह। (१२) जालसिंह—इन्होंने वि० स० १४६५ में पठानों से लड़ाई की। (१३) सहसकरण। (१४) दलपत। (१५) त्रिभुवनसिंह—यह बड़े वीर एवं दानी पुरुष हुए। (१६) सवाईसिंह। (१७) ठाकुरसिंह। (१८) अनोपसिंह। (१९) प्रतापसिंह। (२०) राजसिंह। (२१) रासाजी—यह सिवाणा से फलोदी आये। इसके बाद रासाजी से घेवरचद्र तक फलोदी के

ओसवाला की पीढिया दी हैं जो काफी लम्बी हैं। देवरचंद्र ने दीप्ता ली और शान सुन्दर नाम से विख्यात हुए। उन्होंने ओसवाल जाति एव जैन धर्म का अध्ययन किया।

सिवाना एव फलोदी के ओसवालो सम्बन्धी जानकारी के लिये सामग्री उपयुगी है। लिखावट अधिक पुरानी नहीं है।

१२७ चोरा री बही

१ चोरा री बही, २ पौ० हा० सग्रह, ३ ६, ४ १६ × ५८ सेमी०, ५ १४१, ६ ३०, ७ वि० स० १६०७ से १६१६ तक, पोकरण, ८ अज्ञात, ९ राजस्थानी, देवनागरी, १० वही का प्रारम्भ इस प्रकार है—

प्रारम्भ—

श्रीरामजी

श्रीरामजी

श्रीगणेशाय नमः

श्री परमसरजी सत्य छै जी

श्रीरामजी

स्वास्ति श्री ठाकुराराज श्री वसुदेवसिंहजी लिखावत तथा पोकरण रा महाजना रे चोरा री बही सवत १६०७ रा महा सुद ५ वार गुरुवार

श्री परमसरजी साय छ

चोरा रा रूपीया जमा

६३१७ ०० हाल जमा

पोकरण रा महाजना रे महैसरीया रे ईजा रे रता तरा रूपीया २५०००) ठहरीया तिण पट चोरो एक घाल दीना जिण चोरारी विगत सवत १६०७ रा महामुद ५ वार गुरुवार—महाजन बास बास मे दोय चार जणा बस ने न्यारो पारो चोरो कर दीनो सो उतारियो हस्ताक्षर चापावत पीरदानजी उजळ नाथूराम जीचे चोरा री विगत छै

३१ ०० सुरजमल पेमजी

२१ ०० तिलोक मुरलीधर रे

२१ ०० हीरो खेताणी

३ ०० सतोका ऊदाणी

५ ०० रामकिसन उदाणी

३० ०० कदोई केसर सालगाणी

२ ०० चुतरो मालकाणी

पाददास्त—२

नतो कोई सटपट सुपरो देखी तोइ म तो बीना मलीका देवा नहा ।

हरीयाद्वारा रो हुकमनावा बदीम सु लागे नही ।

तलवा दीवाण अदालत सवाय मातीसीघजी घोर जनान रा मु वेठ वात्रबी हुवे सु माने पुरख नही ।

महाराज बवरा रा जुलम बडे तर रा हुवे मोर कोटवाळा रा जुलम केई तर रा है । मोनपा रा ऊट गाडीया बीना भडु पास वूट ।

जनाना गाव चारे है जीण रा हुवातदार बीरयई यारी करावे ने पोस यारा लेवे ने तलवा करे ।

ठरडा रा गाव म चारीया धाडा हुवे जीण रो बदामसत नही ।

राज रो दुकान आज ताई बंदे हुई नहा ने हमे दुकान राज रो तथा जनान सोरकार रो पठे बजार म तथा परगना म पडी कर दीवी न जमीदारा रा जुना पत मोल लेर उगरावे न तलवा कर ।

पेडी रो दुकान म राज रा लापा रूपीया मू पीज जीण र लेपा रो ठाह नही ।

कारपाना तालके लापा रूपीया परच म मडे है कारपाना म मुज बालो काई वएँ नही जो चणावे तो उनको उमर कुछ नही ।

फोज रो परची चुकं नही जीण सु मुलक रो बदामसत नही ।

पोजा रो कलम बधी जद तो ओर तराज बधी थी न हम बरते थार तर ।

स० १८६६ रे बरस म जमीदारा र गाव लीपाजीया जीण म कौताक जवन है ।

साडीया रे टाळा सु मुलक रो बीगाड करावे ।

थी हजुर साहबा रो मोसर हुवे नही बोइ मालम करावे जीण ने जाब मन आवे जेडा ई द दव ।

साहब लोक अक परगना म आव ने सरभरा सारा परगना मे उगराम लेवे बरमा बरती ।

ऊट गाडीया गरीबा रो पोस लेवे जीण रो भाडो दवे नही ।

रेप बाव माफ हुवोडी मरू हूय गई ।

घाठ पार म अक वोर दरवार हम मोसर दीराया चाहीजे ।

हाकमीया कोटवाळीया वगेरे ओघा मावारीया ईजारे सु दीरीजण लाग गया जीण सु जुलम जादा बघ गयो ।

पट दरमण रो अदालत इजारे हूय गई जद नीरधार कीण तरे हुवे ।

- २१ अगरेजी मुकदमा रो जाव तुरत लीपीजे नही ने पाछो जाव पुछीजे जद सावत हुय जाय जद जमीदारा सु ब्याज सुधी भरीज जाय जद जमीदारा रो नीभाव नही ।
- २२ राज रे काम रो परवथ छोटा काम सु लगाय न मोटा मोटा काम रो पटकणा बधीयो चाहीजे ।
- २३ माय सु हुकम फुरमावे सु बीचार फुरमायो चाहीज ।
- २४ छानवे री कलम बधी सो सावत हुई चाहीजे ।
- २५ तीबरी, माहामीदर मे वासो वगरे सदामद गुर धरम रहो जीण मुजब रहो चाहीजे ।
- २६ साधरा सु दाण री पचल सवाय म हुवण लागी ।
- २७ कचेडी म लागत सवाय लागण लागी ।
- २८ मोतीसिधजी बाभा रे तलवा वे ऊ वाजबी री सरू हुय गई ।
- २९ पोळा री कलमा बधी चाहीजे ।
- ३० कुडकी रो लाठो ठीकाणो जीको पीण बीगड गयो है ।
- ३१ मीठडी पण लाठो ठीकाणो जीका पीण बीगड गयो है ।
- ३२ रोयडी पीण ईण सरसते बीगड रहो है ।
- ३३ बाबरो पीण कदीमी ठीकाणा पण बीगड गया है ।
- ३४ पालीयासणी छीपीया रे भेवज रो ठीकाणो पीण बीगड रहो है ।
- ३५ सदामद ठीकाणा री रीत है भाईपा रा ठीवाणा भेळा हुय पाग बवावे सु सही रेवे पण राज बाळा ठाकुराणीया न तथा भाईपा बाळा ने वकाय न पडा कर सो ठीकाणो पाछो लीपीजे नही जद पालसे रेव ।
- ३६ मारवाड म फोज का बदोवसत नही सो अनाडी पातमावा र वगत मे मारवाड री फाज तीपी थी लेकन आगली रीत रसम नहीं, जीण सु ब बदोवसत है ।
- ३७ कानु गा हरपा न पाली म हाकम मार नापीयो ।
- ३८ हरीयाडाणा भापरवास रो जाव करणो ।
- ३९ रायपालोत मुरजमल रो लीपत वचावणो ।

- 1 -
शुद्धि पत्र
914192

पृ० स०	पक्ति स०	प्रगुद्ध	शुद्ध
२४	३	(ई)	(इ)
२५	२७	सिपल	सिपल
३३	२६	ग्र घ	ग्र व
३७	१४	१७	१०
३९	२८	इतिहाम	इतिहास
७४	१४	घाटी	घाटी
१३१	२०	खानपान	खानपान
१३६	२९	सरदार	सरकार
१३८	२६	जो	जो
१४७	७	६३	६४
१६५	६	भोमसिंह	भोमसिंह
१६५	६	साहव	साहिवा
२१०	२२	लोपत	लोपत
२१३	८	सीपावे	सीपावे
२२३	२	राजपूतो	राजपूतो



- ★ जन्म सन् १९३०, माळूगा ग्राम (जोधपुर)
- ★ शिक्षा एम ए, एल एल बी, पी-एच डी
(राजस्थान विश्वविद्यालय)
- ★ सस्थापक निदेशक राजस्थानी शोध सस्थान,
चोपासनी, जोधपुर (१९५५)
(जोधपुर विश्वविद्यालय सभायता
प्राप्त शोधकेंद्र)
- ★ सम्पादक 'शोध पत्रिका परम्परा' (१९५६ से
वर्तमान तक)
- ★ सम्पादित ग्रन्थ इतिहास की सामग्री—धीम ग्रन्थ
प्राचीन राजस्थानी साहित्य—पचास ग्रन्थ
- ★ ग्रन्थ लेखन डिगल गीत साहित्य, राजस्थानी
साहित्य कोष व छद्म शास्त्र आदि
- ★ राजस्थानी के युग प्रवक्तक मूषक कवि
ग्यारह काव्य कृतिया प्रकाशित
- ★ केन्द्रीय साहित्य अकादमी तथा अनक सस्थाग्री
से पुरस्कृत व सम्मानित
- ★ शोध निदेशक इतिहास व राजस्थानी विषय
(जोधपुर विश्वविद्यालय)
- ★ प्रोजेक्ट निदेशक भारतीय इतिहास अनुसंधान
परिषद्, नई दिल्ली
- ★ महाराजा मानसिंह पुस्तक प्रकाश (फोट
जोधपुर) के सम्पाय निदेशक